MAHN403CCT

जनसंचार माध्यम एवं हिन्दी

एम.ए.

(चतुर्थ सेमेस्टर के लिए)

पेपर – 15

दूरस्थ शिक्षा निदेशालय

मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी

हैदराबाद-32, तेलंगाना, भारत

© Maulana Azad National Urdu University, Hyderabad

Course : Jansanchar Madhyam Evam Hindi

ISBN: 978-81-9XXX-XXX-XX

First Edition: November, 2024

Publisher	:	Registrar, Maulana Azad National Urdu University
Edition	:	2024
Copies	:	500
Price	:	313/-
Copy Editing	:	Dr. Wajada Ishrat, MANUU, Hyderabad Dr. L. Anil, DDE, MANUU, Hyderabad
Cover Designing	:	Dr. Mohd. Akmal Khan, DDE, MANUU, Hyderabad
Printing	:	Print Time & Business Enterprises, Hyderabad

Jansanchar Madhyam Evam Hindi

For

M.A. Hindi

4th Semester

On behalf of the Registrar, Published by:

Directorate of Distance Education

Maulana Azad National Urdu University

Gachibowli, Hyderabad-500032 (TS), Bharat

*Director:*dir.dde@manuu.edu.in *Publication:* ddepublication@manuu.edu.in

Phone number: 040-23008314 Website: manuu.edu.in

© All rights reserved. No part of this publication may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronically or mechanically, including photocopying, recording or any information storage or retrieval system, without prior permission in writing from the publisher (registrar@manuu.edu.in)

संपादक

Editor

डॉ. आफ़ताब आलम बेग
सहायक कुल सचिव,
दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, मानू

Dr. Aftab Alam Baig
Assistant Registrar
DDE, MANUU

संपादक-मंडल
(Editorial Board)

प्रो. ऋषभदेव शर्मा
पूर्व अध्यक्ष, उच्च शिक्षा और शोध संस्थान,
दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, हैदराबाद
परामर्शी (हिन्दी), दूरस्थ शिक्षा निदेशालय,
मानू

Prof. Rishabha Deo Sharma
Former Head, P.G. and Research
Institute, Dakshin Bharat Hindi Prachar
Sabha, Hyderabad
Consultant (Hindi), DDE, MANUU

प्रो. श्याम राव राठोड़
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
अंग्रेज़ी और विदेशी भाषा वि.वि.,हैदराबाद

Prof. Shyamrao Rathod
Head, Department of Hindi
EFL University, Hyderabad

प्रो. गंगाधर वानोडे
क्षेत्रीय निदेशक
केंद्रीय हिन्दी संस्थान, सिकंदराबाद, हैदराबाद

Prof. Gangadhar Wanode
Regional Director
Central Institute of Hindi
Secunderabad, Hyderabad.

डॉ. आफ़ताब आलम बेग
सहायक कुल सचिव,
दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, मानू

Dr. Aftab Alam Baig
Assistant Registrar, DDE, MANUU

डॉ. वाजदा इशरत
अतिथि प्राध्यापक/असिस्टेंट प्रोफ़ेसर (सं)
दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, मानू

Dr. Wajada Ishrat
Guest Faculty/Assistant Professor
(Cont.)
DDE, MANUU

डॉ. एल. अनिल
अतिथि प्राध्यापक/असिस्टेंट प्रोफ़ेसर (सं)
दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, मानू

Dr. L. Anil
Guest Faculty/Assistant Professor
(Cont.)
DDE, MANUU

पाठ्यक्रम-समन्वयक

डॉ. आफ़ताब आलम बेग

सहायक कुल सचिव, दूरस्थ शिक्षा निदेशालय

मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी, हैदराबाद

लेखक **इकाई संख्या**

- **डॉ. एल. अनिल,** अतिथि प्राध्यापक/असिस्टेंट प्रोफेसर(सं), दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, मानू, हैदराबाद 1,5,6
- **डॉ. शशिबाला**, पूर्व हिन्दी अध्यापक, केंद्रीय विद्यालय, राष्ट्रीय पुलिस अकादमी, हैदराबाद 2
- **डॉ. वाजदा इशरत,** अतिथि प्राध्यापक/असिस्टेंट प्रोफेसर (सं), दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, मानू 3, 4
- **डॉ. इबरार खान**, असिस्टेंट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष,हिन्दी विभाग, मिर्ज़ा ग़ालिब कॉलेज, गया. 7, 8
- **डॉसुपर्णा मुखर्जी .,** प्राध्यापक, हिंदी विभाग, सेंट एन्स जूनियर एंड डिग्री कॉलेज फॉर गर्ल्स एंड वुमेन, मलकाजगिरी, हैदराबाद. 9
- **डॉ. बालाजी** 10
- **डॉ. अनीता शुक्ला** 11, 12
- **प्रो. करण सिंह उटवाल**, हिंदी विभाग, मानू, हैदराबाद 13, 14
- **डॉचंदन कुमारी .**, संकाय सदस्य, डॉबीआर अंबेडकर सामाजिक विज्ञान विश्वविद्यालय ., अंबेडकरनगर (मध्य प्रदेश) 15, 16

8

विषयानुक्रमणिका

संदेश	:	कुलपति	7
संदेश	:	निदेशक	9
भूमिका	:	पाठ्यक्रम–समन्वयक	11

खंड/ इकाई		विषय	पृष्ठ संख्या
खंड 1	:		
इकाई 1	:	जनसंचार : अर्थ, परिभाषा और माध्यम	13
इकाई 2	:	पत्रकारिता और संपादन कला	23
इकाई 3	:	समाचार: परिचय, परिभाषा, स्रोत और लेखन	39
इकाई 4	:	हिंदी के विकास में पत्रकारिता की भूमिका	58
खंड 2	:		
इकाई 5	:	रेडियो की विकास यात्रा	70
इकाई 6	:	रेडियो के कार्यक्रम	79
इकाई 7	:	रेडियो लेखन -1 वार्ता एवं फीचर	86
इकाई 8	:	रेडियो लेखन -2 विज्ञापन एवं अन्य	100
खंड 3	:		
इकाई 9	:	टेलीविजन की विकास यात्रा	119
इकाई 10	:	उपग्रह चैनल	131
इकाई 11	:	टेलीविज़न लेखन वृतचित्र ,धारावाहिक :	155
इकाई 12	:	टेलीविज़न लेखन : विज्ञापन एवं अन्य	172

खंड 4 :

इकाई 13 : सिनेमा (फिल्म, चलचित्र, चित्रपट) की विकास यात्रा 185

इकाई 14 : सिनेमा (फिल्म, चित्रपट, चलचित्र) के प्रकार 216

इकाई 15 : सिनेमा पटकथा लेखन 247

इकाई 16 : सिनेमा संवाद लेखन 260

प्रूफ रीडर:

प्रथम : डॉ. वाजदा इशरत, अतिथि प्राध्यापक/असिस्टेंट प्रोफ़ेसर(सं), दू. शि. नि., मानू

द्वितीय : डॉ. एल. अनिल, अतिथि प्राध्यापक/असिस्टेंट प्रोफ़ेसर (सं), दू. शि. नि., मानू

अंतिम : डॉ. आफ़ताब आलम बेग, सहायक कुलसचिव, दू. शि. नि., मानू.

संदेश

मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी की स्थापना 1998 में संसद के एक अधिनियम द्वारा की गई थी। यह NAAC मान्यता प्राप्त एक केंद्रीय विश्वविद्यालय है। विश्वविद्यालय का अधिदेश है: (1) उर्दू भाषा का प्रचार-प्रसार और विकास (2) उर्दू माध्यम से व्यावसायिक और तकनीकी शिक्षा (3) पारंपरिक और दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से शिक्षा प्रदान करना, और (4) महिला शिक्षा पर विशेष ध्यान देना। यही वे बिंदु हैं जो इस केंद्रीय विश्वविद्यालय को अन्य सभी केंद्रीय विश्वविद्यालयों से अलग करते हैं और इसे एक अनूठी विशेषता प्रदान करते हैं, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी मातृभाषा और क्षेत्रीय भाषाओं में शिक्षा के प्रावधान पर जोर दिया गया है।

उर्दू माध्यम से ज्ञान-विज्ञान के प्रचार-प्रसार का एकमात्र उद्देश्य उर्दू भाषी समुदाय के लिए समकालीन ज्ञान और विषयों की पहुंच को सुविधाजनक बनाना है। लंबे समय से उर्दू में पाठ्यक्रम सामग्री का अभाव रहा है। इस लिए उर्दू भाषा में पुस्तकों की अनुपलब्धता चिंता का विषय रहा है। नई शिक्षा नीति 2020 के दृष्टिकोण के अनुसार उर्दू विश्वविद्यालय मातृभाषा / घरेलू भाषा में पाठ्यक्रम सामग्री प्रदान करने की राष्ट्रीय प्रक्रिया का हिस्सा बनने को अपना सौभाग्य मानता है। इसके अतिरिक्त उर्दू में पठन सामग्री की अनुपलब्धता के कारण उभरते क्षेत्रों में अद्यतन ज्ञान और जानकारी प्राप्त करने या मौजूदा क्षेत्रों में नए ज्ञान प्राप्त करने में उर्दू भाषी समुदाय सुविधाहीन रहा है। ज्ञान के उपरोक्त कार्य-क्षेत्र से संबंधित सामग्री की अनुपलब्धता ने ज्ञान प्राप्त करने के प्रति उदासीनता का वातावरण बनाया है जो उर्दू भाषी समुदाय की बौद्धिक क्षमताओं को मुख्य रूप से प्रभावित कर सकता है। ये वह चुनौतियां हैं जिनका सामना उर्दू विश्वविद्यालय कर रहा है। स्व-अध्ययन सामग्री का परिदृश्य भी बहुत अलग नहीं है। प्रत्येक शैक्षणिक वर्ष के प्रारंभ में स्कूल/कॉलेज स्तर पर भी उर्दू में पाठ्य पुस्तकों की अनुपलब्धता पर चर्चा होती है। चूंकि उर्दू विश्वविद्यालय की शिक्षा का माध्यम केवल उर्दू है और यह विश्वविद्यालय लगभग सभी महत्वपूर्ण विषयों के पाठ्यक्रम प्रदान करता है, इसलिए इन सभी विषयों की पुस्तकों को उर्दू में तैयार करना विश्वविद्यालय की सबसे महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है। इन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए मौलाना आज़ाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय अपने दूरस्थ शिक्षा के छात्रों को स्व-अध्ययन सामग्री अथवा सेल्फ लर्निंग मैटेरियल (SLM) के रूप में पाठ्य सामग्री उपलब्ध कराता है। वहीं उर्दू माध्यम से ज्ञान प्राप्त करने के इच्छुक किसी भी व्यक्ति के लिए भी यह सामग्री उपलब्ध है। अधिकाधिक लोग इससे लाभान्वित हो सकें, इसके लिए उर्दू में इलेक्ट्रॉनिक पाठ्य सामग्री अथवा eSLM विश्वविद्यालय की वेबसाइट से मुफ़्त डाउनलोड के लिए उपलब्ध है।

मुझे अत्यंत प्रसन्नता है कि संबंधित शिक्षकों की कड़ी मेहनत और लेखकों के पूर्ण सहयोग के कारण पुस्तकों के प्रकाशन का कार्य उच्च-स्तर पर प्रारंभ हो चुका है। दूरस्थ शिक्षा के छात्रों की सुविधा के लिए, स्व-अध्ययन सामग्री की तैयारी और प्रकाशन की प्रक्रिया विश्वविद्यालय के लिए सर्वोपरि है। मुझे विश्वास है कि हम अपनी स्व-शिक्षण सामग्री के माध्यम से एक बड़े उर्दू भाषी समुदाय की आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम होंगे और इस विश्वविद्यालय के अधिदेश को पूरा कर सकेंगे।

एक ऐसे समय जब हमारा विश्वविद्यालय अपनी स्थापना की 25वीं वर्षगांठ मना चुका है, मुझे इस बात का उल्लेख करते हुए हर्ष हो रहा है कि विश्वविद्यालय का दूरस्थ शिक्षा निदेशालय कम समय में स्व-अध्ययन सामग्री तथा पुस्तकें तैयार कर विद्यार्थियों को पहुंचा रहा है। देश के कोने कोने में छात्र विभिन्न दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों से लाभान्वित हो रहे हैं। यद्यपि पिछले वर्षों कोविड-19 की विनाशकारी स्थिति के कारण प्रशासनिक मामलों और संचार में भी काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है लेकिन विश्वविद्यालय द्वारा दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों को सफलतापूर्वक संचालित करने के लिए सर्वोत्तम प्रयास किए गए हैं।

मैं विश्वविद्यालय से जुड़े सभी विद्यार्थियों को इस परिवार का अंग बनने के लिए हृदय से बधाई देता हूं और यह विश्वास दिलाता हूँ कि मौलाना आज़ाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय का शैक्षिक मिशन सदैव उनके लिए ज्ञान का मार्ग प्रशस्त करता रहेगा। शुभकामनाओं सहित!

प्रो. सैयद ऐनुल हसन

कुलपति

संदेश

दूरस्थ शिक्षा प्रणाली को पूरी दुनिया में अत्यधिक कारगर और लाभप्रद शिक्षा प्रणाली की हैसियत से स्वीकार किया जा चुका है और इस शिक्षा प्रणाली से बड़ी संख्या में लोग लाभान्वित हो रहे हैं। मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी ने भी अपनी स्थापना के आरंभिक दिनों से ही उर्दू तबके की शिक्षा की स्थिति को महसूस करते हुए इस शिक्षा प्रणाली को अपनाया है। मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी का प्रारम्भ 1998 में दूरस्थ शिक्षा प्रणाली से हुआ और इस के बाद 2004 में विधिवत तौर पर पारंपरिक शिक्षा का आग़ाज़ हुआ। पारंपरिक शिक्षा के विभिन्न विभाग स्थापित किए गए।

देश की शिक्षा प्रणाली को बेहतर अंदाज़ से जारी रखने में UGC की अहम् भूमिका रही है। दूरस्थ शिक्षा (ODL) के तहत जारी विभिन्न प्रोग्राम UGC-DEB से मंजूर हैं।

पिछले कई वर्षों से यूजीसी-डीईबी (UGC-DEB) इस बात पर ज़ोर देता रहा है कि दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के पाठ्यक्रम व व्यवस्था को पारंपरिक शिक्षा प्रणाली के पाठ्यक्रम व व्यवस्था से जोड़कर दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के छात्रों के मेयार को बुलंद किया जाये। चूंकि मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी दूरस्थ शिक्षा और पारंपरिक शिक्षा का विश्वविद्यालय है, अतः इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए यूजीसी-डीईबी (UGC-DEB) के दिशा निर्देशों के मुताबिक़ दूरस्थ शिक्षा प्रणाली और पारंपरिक शिक्षा प्रणाली के पाठ्यक्रम को जोड़कर और गुणवत्तापूर्ण करके स्व-अध्ययन सामग्री को पुनः क्रमवार यू.जी. और पी.जी. के विद्यार्थियों के लिए क्रमशः 6 खंड- 24 इकाइयों और 4 खंड – 16 इकाइयों पर आधारित नए तर्ज़ की रूपरेखा पर तैयार किया गया है।

दूरस्थ शिक्षा निदेशालय यू.जी., पी.जी., बी.एड., डिप्लोमा और सर्टिफिकेट कोर्सेज़ पर आधारित कुल 17 पाठ्यक्रम चला रहा है। साथ ही तकनीकी हुनर पर आधारित पाठ्यक्रम भी शुरू किए जा रहे हैं। शिक्षार्थियों की सुविधा के लिए 9 क्षेत्रीय केंद्र (बेंगलुरु, भोपाल, दरभंगा, दिल्ली, कोलकत्ता, मुंबई, पटना, रांची और श्रीनगर) और 6 उपक्षेत्रीय केंद्र (हैदराबाद, लखनऊ, जम्मू, नूह, अमरावती और वाराणसी) का एक बहुत बड़ा नेटवर्क मौजूद है। इस के अलावा विजयवाड़ा में एक एक्सटेंशन सेंटर कायम किया गया है। इन क्षेत्रीय केन्द्रों के अंतर्गत 160 से अधिक अधिगम सहायक केंद्र (Learner Support Centre) और 20 प्रोग्राम सेंटर काम कर रहे हैं, जो शिक्षार्थियों को शैक्षिक और प्रशासनिक सहयोग उपलब्ध कराते हैं। दूरस्थ शिक्षा निदेशालय (DDE) अपने शैक्षिक और व्यवस्था से संबन्धित कार्यों में आई.सी.टी. का इस्तेमाल कर रहा है। साथ ही सभी पाठ्यक्रमों में प्रवेश सिर्फ़ ऑनलाइन तरीके से ही दिया जाता है।

दूरस्थ शिक्षा निदेशालय की वेबसाइट पर शिक्षार्थियों को स्व-अध्ययन सामग्री की सॉफ्ट कॉपियाँ भी उपलब्ध कराई जा रही हैं। इसके अतिरिक्त ऑडियो-वीडियो रिकॉर्डिंग का लिंक भी वैबसाइट पर उपलब्ध है। इसके साथ-साथ शिक्षार्थियों की सुविधा के लिए SMS और व्हाट्सएप्प ग्रुप एवं ईमेल की व्यवस्था भी की गयी है। जिसके द्वारा शिक्षार्थियों को पाठ्यक्रम के विभिन्न पहलुओं जैसे- कोर्स के रजिस्ट्रेशन, दत्तकार्य, काउंसेलिंग, परीक्षा आदि के बारे में सूचित किया जाता है। गत वर्षों से रेगुलर काउंसेलिंग के अतिरिक्त एडिशनल रेमेडियल क्लासेस(ऑनलाइन) उपलब्ध कराये जा रहे हैं। ताकि शिक्षार्थियों के मेयार को बुलंद किया जा सके।

आशा है कि देश की शैक्षणिक और आर्थिक रूप में पिछड़ी आबादी को आधुनिक शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ने में दूरस्थ शिक्षा निदेशालय की भी मुख्य भूमिका होगी। आने वाले दिनों में शैक्षणिक जरूरतों के अनुरूप नई शिक्षा नीति (NEP 2020) के अंतर्गत विभिन्न पाठ्यक्रमों में परिवर्तन किया जायेगा और आशा है कि यह दूरस्थ शिक्षा को अत्यधिक प्रभावी और कारगार बनाने में मददगार साबित होगा।

प्रो. मो. रज़ाउल्लाह ख़ान
निदेशक, दूरस्थ शिक्षा निदेशालय

जनसंचार माध्यम एवं हिन्दी

1.1 जनसंचार : अर्थ, परिभाषा और माध्यम

इकाई की रूपरेखा

1.1 प्रस्तावना
1.2 उद्देश्य
1.3 मूल पाठ : जनसंचार : अर्थ, परिभाषा और माध्यम
1.3.1 अर्थ
1.3.2 परिभाषा
1.3.3 स्वरुप
1.3.4 माध्यम एवं प्रकार
1.3.5 उद्देश्य
1.4 पाठ सार
1.5 पाठ की उपलब्धियाँ
1.6 शब्द संपदा
1.7 परिक्षार्थ प्रश्न
1.8 पठनीय पुस्तकें

1.1 प्रस्तावना

मानव समाज में सम्प्रेषण की आवश्यकता बहुत जरुरी होती है। मनुष्य एक दूसरों के साथ बात-चित किए बिना समाज में रहना प्राणी जैसा हो जाएगा इसलिए सम्प्रेषण करना जरुरी होता है। सम्प्रेषण करने का माध्यम को संचार कहा जाता है। संचार में जन उपसर्ग लगाने से जनसंचार हो गया है। जन समुदाय में सूचना या समाचार प्राप्त करना या प्रसारण करना होता है। इस जनसंचार के माध्यम से लोगों को सूचनाएँ एवं वैश्विक स्तर की घटनाओं का बौरा प्राप्त होने लगा है। इस जनसंचार के माध्यम क्रम से विकसित हो चुके हैं जैसे – सबसे पहले लिखित रूप के माध्यम अनेक समाचार पत्र-पत्रिकाएँ और किताबों को प्रकाशित किया गया। मुद्रण माध्यम के बाद ऑडियो और ऑडियो-विडियो में विकास हुआ जो टेलीविज़न कहा जाता है।

जनसंचार के माध्यम परिवर्तनशील हैं उनमें विकास निरंतर चल रहा है। जनसंचार में इन्टरनेट के माध्यम से तेजी से सूचनाओं को प्राप्त या ज्ञात किया जा रहा है। इन्टरनेट के युग में मानव समाज प्रगति की ओर हैं।

1.2 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप –

- जनसंचार के तात्पर्य को समझ सकेंगे।

- जनसंचार शब्द की परिभाषा को जानेगे।
- जनसंचार के स्वरुप को जानेंगे ।
- जनसंचार के विभिन्न माध्यमों के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

1.3 मूल पाठ : जनसंचार : अर्थ, परिभाषा और माध्यम

1.3.1 अर्थ

'जनसंचार' दो शब्द से बना हुआ है। जिसमें जन और संचार है। जिनमें जन का तात्पर्य है जनता या लोग होता है। संचार का तात्पर्य से पहले संचार शब्द की उत्पति पर ध्यान दिया जाए तो यह संस्कृत भाषा के 'चर्' धातु से निर्मित है। इस धातु का अर्थ होता है 'चलना'। इसमें 'सम' उपसर्ग और 'आ' प्रत्यय के योग से बना है जिसका अर्थ होता है 'सम्यक' ढंग से चलना । संचार को अंग्रेजी में 'कम्युनिकेशन' (Communication) कहा जाता है। 'कम्यून' (Commune) का अर्थ होता है बाँटना (To share)। इस शब्द की उत्पति लैटिन भाषा के 'कम्युनिस' (Communis) से हुई है। जिसका अर्थ "मन के किसी विचार या भाव को दूसरों तक बांटना या फैलाना।" अर्थात सूचना को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाना है।

संचार का अर्थ विचारों, भावनाओं, सूचनाओं का आदान – प्रदान करना, आपसी समझ को बढ़ावा देना और जानना अथवा बोध करना आदि संचार का अर्थ निकलता है। संचार के अंतर्गत बोलना, सोचना, परखना, पढ़ना, लिखना, परस्पर व्यवहार, विचार विमर्श, संभाषण, वाद-विवाद सब आ जाता है।

स्पष्ट रूप से जनसंचार का तात्पर्य किसी भाषा या विचार या जानकारी को जन तक पहुँचाना। यही प्रक्रिया सामूहिक तौर पर किया जाता है तो उसे ही जनसंचार कहा जाता है। जन समूह में एक दूसरों के आचार, विचार का प्रचार करने का माध्यम ही 'जनसंचार' कहा जाता है। संचार के माध्यम से ही संदेशों को जन समुदाय तक संप्रेषित किया जाता है। जन समुदाय एक विस्तृत समुदाय जिसमें सभी देश - विदेश, धर्म, वर्ग, वर्ण, जाति, संप्रदाय और विचारधारा आदि के लोग शामिल रहते हैं। जनसंचार का आशय है – जन-जन में भावों की, विचारों की अभिव्यक्त करना और भावों और विचारों को समझना।

बोध प्रश्न –

- संचार किसे कहते हैं ?

1.3.2 परिभाषा

'जनसंचार' शब्द को लेकर विभिन्न विद्वानों ने अपने –अपने मत व्यक्त किये हैं । वे निम्न प्रकार से देख सकते हैं।

जनसंचार की परिभाषा देते हुए लुंडबर्ग और श्रेग कहते है कि "जनसंचार का संदर्भ तुलनात्मक दृष्टि से विस्तृत, बिखरे हुए, छिन्न-भिन्न समूह को एक साथ प्रेषण से है, जिसका उद्देश्य प्रेरणा देना है। यह कार्य अवैयक्तिक साधनों द्वारा एक संगठित स्त्रोत के माध्यम से किया

जाता है, जिसका गंतव्य स्थान अज्ञात होता है।" जो जन समुदाय बिगड़ा या तितर-भीतर हुआ है उसे एक माध्यम के द्वारा सम्प्रेष्ण किया जाता है उसे ही जनसंचार कहा जाता है।

जांडेन के अनुसार जनसंचार की परिभाषा इस प्रकार से है कि "संगठित स्त्रोत द्वारा विस्तृत, विजातीय, बिखरी हुई जनता को तकनीकी माध्यम से जो संदेश प्राप्त होता है, उसे जनसंचार कहते हैं ।"

डेविड ह्यूम के अनुसार जनसंचार की परिभाषा "जनसंचार का अर्थ सूचना को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाना है। जनसंचार ही बताता है कि राजसत्ता या शासन की व्यवस्था का आधार क्या हो ? सरकार का रूप कैसा हो, स्वेच्छाचारी राजा या सैनिक अधिकारियों का शासन हो या स्वतंत्र और लोकप्रिय सरकार हो, जनसंचार माध्यम से ही यहाँ पता चलता है।"

चार्लस आर। राइट के अनुसार – "जनसंचार एक ऐसा माध्यम हैं जो लोगों तक सूचना प्रक्रिया पहुंचाती हैं।"

डॉ. अर्जुन तिवारी के अनुसार – "जन-जन तक व्यापक रूप में भावों के आदान –प्रदान करने की प्रक्रिया जनसंचार कहलाती हैं।"

जवरीमल्ल पारख के अनुसार "जन के लिए संचार के साधन। इसमें जनता न तो निष्क्रिय भागिदार होती है और न ही प्रत्येक संप्रेषित संदेश को आसानी से स्वीकार कर लेती है बल्कि इन माध्यमों को प्रभावित भी करती है और प्रभावित भी होती है। वर्त्तमान में जनसंचार माध्यम से ग्रहण समूह-सदस्य के रूप में नहीं करते बल्कि अकेले या दो चार लोगों के बीच करते हैं।"

उपरोक्त परिभाषाओं के माध्यम से जनसंचार का अर्थ यही निकलता है कि एक दूसरे के भाव-विचारों का स्थानांतर करने का माध्यम हैं। जन-जन तक संदेशों का सम्प्रेषण करने का माध्यम हैं।

बोध प्रश्न –

- डॉ. अर्जुन तिवारी की जनसंचार की परिभाषा बताइए।

1.3.3 स्वरुप –

जनसंचार के माध्यम से आम जनता तक सूचनाओं का संदेश प्रसारण करना है। यह सूचना विभिन्न समाज या समुदाय के लोगों तक पहुँचाना है क्योंकि इसका मुख्य उद्देश्य जनसामान्य को जानकारी या लाभ प्राप्त हो सके। सूचना संदेश का प्रेषण या प्रसारण करने के लिए मुद्रण या इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों का उपयोग होता है। प्रेषक का संदेश यथावत हर वर्ग तक पहुँचाने का कार्य जनसंचार करता है। जनसंचार से पहले संचार को व्यक्त किया जाए तो मानव संचार के मुख्य रूप पांच माने जाते हैं। वे निम्न प्रकार से हैं -

अन्तः वैयक्तिक या स्वागत संचार

इस संचार में मनुष्य या व्यक्ति के भीतर कुछ सोचने की प्रक्रिया होती रहती है। और वह अपने आप में बात करने लगता है। यह मानसिक प्रक्रिया होती है। किसी के सामने कुछ बोलने के

पहले मनुष्य स्वयं सोचता है तभी उसे अभिव्यक्ति करता है। इस प्रक्रिया में व्यक्ति स्वयं ही संदेश भेजने वाला और संदेश को ग्रहण करने वाला होता है।

अंतर्वैयक्तिक संचार –

इस संचार में कम से कम दो व्यक्ति होते हैं । इसमें एक व्यक्ति कुछ बोलता है तो दूसरा व्यक्ति कुछ सुनता है तभी यह अंतर्वैयक्तिक संचार होता है। यह संचार एक तरफ भी हो सकता है और दो तरफ भी होता है। यानी एक दूसरों के साथ प्रत्यक्ष रूप में बात-चित करना भी संचार होता है।

मध्य संचार

इस संचार में कम से कम दो से अधिक संख्या हो सकती है और यह लोग प्रत्यक्ष रूप से नहीं होते हैं। इसलिए इन्हें अपना संदेश भेजने के लिए किसी माध्यम का प्रयोग किया जाता है। जैसे – पत्र-व्यवहार, टेलीफोन, मोबाइल, इंटरनेट आदि।

समूह संचार

इस संचार में सामूहिक रूप से विचार विनमय होता है। आमने-सामने बैठकर विचार-विमर्श किया जाता है। यह सामाजिक परिवेश में ही होता है जैसे विद्यालय, महाविद्यालय, चौपाल, प्रशिक्षण केंद्र आदि।

जनसंचार

इस संचार में जन-समुदाय तक संदेश संप्रेषित किया जाता है । इसमें सभी वर्ग, वर्ण, जाति और धर्म के के लोग सम्मेलित हैं। इसका क्षेत्र व्यापक है इसलिए संचार करने के लिए मुद्रित या इलेक्ट्रॉनिक माध्यम का प्रयोग किया जाता है। जैसे – समाचार-पत्र, पत्रिका, पुस्तक, रेडियो, टेलीविज़न, टेपरिकार्डर, फिल्म, कम्प्यूटर और इंटरनेट आदि हैं।

बोध प्रश्न –

- समूह संचार क्या होता है ?
- अन्तः वैयक्तिक या स्वागत संचार क्या होता है ?

1.3.4 जनसंचार के माध्यम-

जनसंचार में माध्यम का बहुत महत्वपूर्ण योगदान होता है। इसी माध्यमों से जन समुदायों तक भावों, विचारों को सम्प्रेषण कर सकते हैं। आज के दौर में सूचना या ज्ञान प्रसारण के अनेक माध्यम हैं। विश्वस्तर पर जन समुदायों को जुड़ने का काम जनसंचार के माध्यमों से हो रहा है। प्राचीन काल में सम्प्रेषण का माध्यम अधिकत्तर प्रत्येक्ष रूप में होता था जिसे मौखिक रूप भी कह सकते हैं। लेकिन वर्त्तमान समय में लिखित एवं इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से जनसंचार होने में आसान बन गया है। विश्व में तकनीकी के माध्यमों से जनसंचार में आसान हो गया है। आज के दौर में तकनीकी के माध्यम से विश्व ही नहीं पूरे ब्रह्माण्ड में भी होने वाली किसी भी प्रकार की जानकारी प्राप्त हो रही है। जनसंचार के माध्यम के विभिन्न रूप निम्न प्रकार से देखा जा सकता है।

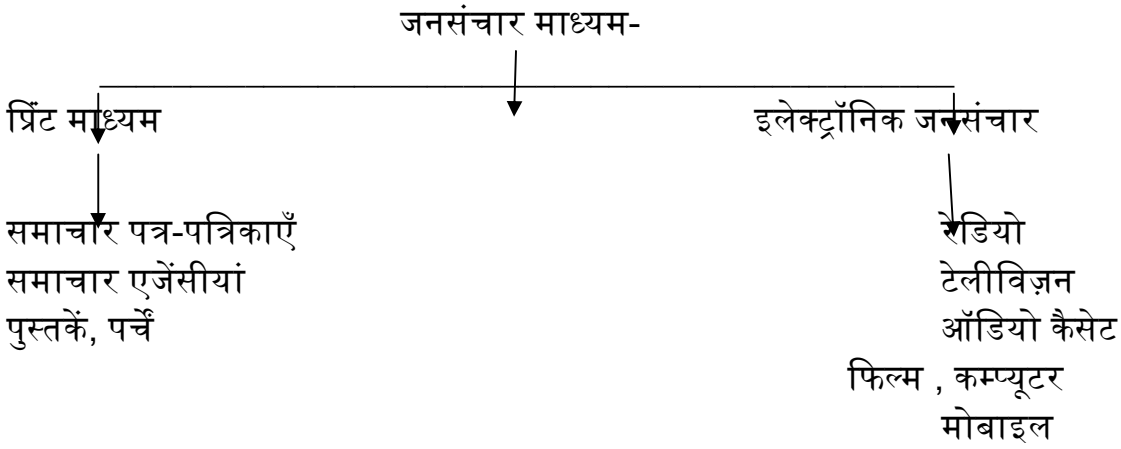

बोध प्रश्न –

- जनसंचार कितने प्रकार का है ?

प्रिंट (मुद्रण) माध्यम –

जनसंचार में लिखित या प्रिंट का प्रयोग किया जाता है। उपरोक्त तक्ता में देख सकते हैं। जिसमें समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ, पुस्तकें, जर्नल, पोस्टर, पम्फलेट, होल्डिंग आदि मुद्रित सामग्री के रूप में लिखित जनसंचार माध्यम हैं। इसे प्रेस अर्थात छापखाना भी कहते हैं।

समाचार पत्र –

यह समाचार पत्र दैनिक या साप्ताहिक हो सकता है। इसका कागज़ किताबों से अलग हल्का होता है। यह विशेष दैनिक या साप्ताहिक घटनाओं की सूचना देने के लिए ही होता है। मुद्रण माध्यम इसका बहुत महत्वपूर्ण योगदान है।

पत्र-पत्रिकाएँ –

यह स्थिति समाचार पत्र एवं पुस्तकें के बीच माना जाता है। इसमें समाचार पत्र के सूचनाओं से ज्यादा विस्तृत रूप में मुद्रित किया जाता है। लेकिन यह पत्रिका मासिक और त्रैमासिक, साप्ताहिक और वार्षिक होता है।

पुस्तकें –

पुस्तकें प्रिंट माध्यम में सबसे सशक्त माध्यम माना जाता है। यह समाचार पत्र एवं पत्रिकाएँ से सूचनाओं की जानकारी देती है। प्राचीन लिखे गए पुस्तकों के माध्यम से सूचना प्राप्त होती है। संस्कृत के हजारों वर्ष पुराने किताब जैसे – वेद, पुराना, उपनिषद् आदि हस्तलिखित प्राप्त हुए हैं । बादमें प्रिंटिंग मिशन का अविष्कार हुआ है।

समाचार एजेंसीयां-

समाचार एजेंसी में प्रत्येक क्षेत्र के समाचार पत्र के लेखक या पत्रकार (संवाद दाता) द्वारा सूचनाएँ एवं घटनाएँ संग्रहित करके उसे मुख्य कार्यालय (समाचार एजेंसी) को भेज देते हैं। यह एजेंसीयां जनसंचार माध्यम में महत्वपूर्ण होती है। विश्व के बड़े –बड़े शहरों में इसका मुख्य

कार्यलय होते हैं। इसके संवाददाता अनेक होते हैं और विभिन्न क्षेत्रों की सूचनाओं का समाचार एकत्रित करते हैं।

पर्चे –

जनसंचार में पर्चे भी महत्वपूर्ण होते हैं। इसे अंग्रेजी में Pamphlets या handbills कहते हैं। किसी संस्थान के कार्यक्रम के विशेष सूचनाओं के लिए पर्चे छपवाएँ जाते हैं, जिनका वितरण वहां के लोगों में किया जाता है। इसके अतिरिक्त प्रतिदिन विभिन्न कार्यक्रमों, विभिन्न मंत्रालयों के क्रियाकलापों, संसद के प्रश्न सत्र काल में पूछे गए प्रश्नों एवं उनके उत्तरों , प्रमुख व्यक्ति के भाषणों आदि हस्तलिखित यां मुद्रित पर्चे जारी किये जाते हैं।

इलेक्ट्रॉनिक माध्यम-

इस जनसंचार में इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से संचार किया जाता है। यह संचार दृश्य-श्रव्य जनसंचार माध्यमों (Audio-Visual media - AM)के अंतर्गत सिनेमा, टेलीविज़न और विडियो आदि शामिल हैं। रेडियो का सबंध श्रव्य जनसंचार माध्यम(Audio media- AM) है।

रेडियो –

श्रव्य जनसंचार माध्यम में रेडियो महत्वपूर्ण साधन है। इलेक्ट्रोनिक माध्यम में यह सर्वप्रथम माध्यम है। यह भारत में 1923 में निजी स्तर पर आगमन हुआ। तब से लेकर आजतक भारत में आकाशवाणी केंद्र 200 से अधिक हैं। लगभग 98।8 प्रतिशत जनता इस प्रसारण सीमा के अंदर आ जाती हैं । रेडियो के माध्यम से भारतीय भाषा एवं बोलियों में अनेक कार्यक्रम चलाया जा रहा है।

टेलीविज़न –

रेडियो सिर्फ श्रव्य माध्यम है वहीं टेलीविज़न श्रव्य के साथ दृश्य भी प्रसारित करता है। इसलिए इसका महत्त्व अधिक बढ गया है। दृश्यों को यथार्थ रूप में उभरने की इस कला का श्रेय जॉन लागी बेयर्ड को जाता है। बेयर्ड ने सन 1925 में टेलीविज़न का पहला उपकरण निर्मित किया। इसके बाद इसमें विकास होते रहा है। भारत में दूरदर्शन की शुरुआत 15 सितम्बर 1959 में यूनेस्को की सहायता से हुई। मनोरंजन, शिक्षा व सूचना के इस माध्यम से सन 1965 में को नियमित सेवा के प्रसारण के आरम्भ से भारत में संचार की नई क्रांति ने जन्म दिया ।

कंप्यूटर और इंटरनेट-

आज के समय में जनसंचार का माध्यम में कंप्यूटर और इन्टरनेट विशेष स्थान बना लिया है। प्रत्येक कार्य क्षेत्र में कंप्यूटर की अनिवार्यता बढ़ गयी है। वह मनुष्य से भी कई अधिक तेजीसे गणना कर लेता है। इस माध्यम से हजारों किलोमीटर की दूरी होने के बावजूद भी कंप्यूटर ने इस आधुनिक मानव-समाज को 'विश्व ग्राम' के रूप में परिवर्तित कर दिया है। पास्कल ने अपने ही नाम से एक कंप्यूटर का आविष्कार किया। बादमें सन 1833 में चार्ल्स बैवेज ने कंप्यूटर को एक नई क्रांति के साथ जोड़कर एक पूर्णतः स्वचालित 'एनेलिटिकल इंजन' का आविष्कार किया।

कंप्यूटर तंत्र का सबसे महत्वपूर्ण और प्रभावी साधन इन्टरनेट हैं । नव इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में इन्टरनेट ने सूचना के क्षेत्र में अद्‌भुत क्रांति उत्पन्न कर दी है। इन्टरनेट का आरम्भ और विकास सयुंक्त राज्य अमेरिका की राष्ट्रीय विकास अकादमी द्वारा सन 1990में किया गया ।

जैसे-जैसे युग बदलते चले जा रहा है वैसे ही इलेक्ट्रॉनिक माध्यम में परिवर्तन होते जा रहा है। कम्प्यूटर, उपग्रह एवं डिजिटल प्रोद्योगिकी के लगातार विकास होने के कारण जनसंचार का क्षेत्र विस्तृत होते जा रहा है। इलेक्ट्रॉनिक माध्यम में सबसे पहले ऑडियो रूप में रेडियो का अविष्कार हो चूका था। बादमें ऑडियो –विडियो के रूप में टेलीविज़न का अविष्कार हुआ है। इसके बाढ़ धीरे-धीरे इन्टरनेट का जमाना आ गया। इसमें तेजीसे प्रगति होने लगी। आम जनता के पास तुरंत विज्ञापन या सूचना प्राप्त होने लगी है। आज हर व्यक्ति अपने साथ मोबाइल लेकर चल रहा है। मोबाइल के कारण प्रत्येक सूचना तुरंत फ़ैली जा रही है। मोबाइल के वजह से ही कहा जा रहा है कि 'कर लो दुनिया मुठी में'

बोध प्रश्न –

- इलेक्ट्रोनिक माध्यम कौनसे हैं ?

1.3.5. जनसंचार का उद्देश्य –

1) जनसंचार के विभिन्न माध्यमों द्वारा सूचनाओं का संग्रह तथा प्रसार करना ।
2) जनसंचार के माध्यम से व्यक्तियों का बहुआयामी का विकास करना ।
3) जनसंचार के द्वारा सामाजिक ज्ञान एवं मूल्यों का प्रेषण करना।
4) राष्ट्रीय एकता और अखंडता की दृढ़ता बनाएँ रखना ।
5) तनाव मुक्त मानव जीवन में मनोरंजन करना ।
6) मानव समाज में प्रेरणा और प्रोत्साहन को बढ़ावा देना ।
7) सांस्कृतिक उन्नयन का प्रचार-प्रसार करना ।

बोध प्रश्न –

- जनसंचार का उद्देश्य बताइए।

1.4 पाठ सार

मानव समाज में सम्प्रेषण की आवश्यकता बहुत जरुरी होती है। मनुष्य एक दूसरों के साथ बात-चित किए बिना समाज में रहना प्राणी जैसा हो जाएगा इसलिए सम्प्रेषण करना जरुरी होता है। सम्प्रेषण करने का माध्यम को संचार कहा जाता है।

संचार का अर्थ विचारों, भावनाओं, सूचनाओं का आदान – प्रदान करना, आपसी समझ को बढ़ावा देना और जानना अथवा बोध करना आदि संचार का अर्थ निकलता है। संचार के अंतर्गत बोलना, सोचना, परखना, पढ़ना, लिखना, परस्पर व्यवहार, विचार विमर्श, संभाषण, वाद-विवाद सब आ जाता है। स्पष्ट रूप से जनसंचार का तात्पर्य किसी भाषा या विचार या जानकारी को जन तक पहुँचाना। यही प्रक्रिया सामूहिक तौर पर किया जाता है तो उसे ही

जनसंचार कहा जाता है। जन समूह में एक दूसरों के आचार, विचार का प्रचार करने का माध्यम ही 'जनसंचार' कहा जाता है। अनेक विद्वानों ने परिभाषा दी है।

जनसंचार से पहले संचार को व्यक्त किया जाए तो मानव संचार के मुख्य रूप पांच माने जाते हैं। वे निम्न प्रकार से हैं - अन्तः वैयक्तिक या स्वागत संचार, अंतर्वैयक्तिक संचार, मध्य संचार, समूह संचार , जनसंचार। प्राचीन काल में सम्प्रेषण का माध्यम अधिकत्तर प्रत्येक्ष रूप में होता था जिसे मौखिक रूप भी कह सकते हैं। लेकिन वर्त्तमान समय में लिखित एवं इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से जनसंचार होने में आसान बन गया है।

जैसे-जैसे युग बदलते चले जा रहा है वैसे ही इलेक्ट्रॉनिक माध्यम में परिवर्तन होते जा रहा है। कम्प्यूटर, उपग्रह एवं डिजिटल प्रोद्योगिकी के लगातार विकास होने के कारण जनसंचार का क्षेत्र विस्तृत होते जा रहा है। इलेक्ट्रॉनिक माध्यम में सबसे पहले ऑडियो रूप में रेडियो का अविष्कार हो चूका था। बादमें ऑडियो –विडियो के रूप में टेलीविज़न का अविष्कार हुआ है। इसके बाढ़ धीरे-धीरे इन्टरनेट का जमाना आ गया। इसमें तेजीसे प्रगति होने लगी। आम जनता के पास तुरंत विज्ञापन या सूचना प्राप्त होने लगी है। आज हर व्यक्ति अपने साथ मोबाइल लेकर चल रहा है। मोबाइल के कारण प्रत्येक सूचना तुरंत फ़ैली जा रही है।

1.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई का अध्ययन करने के हमें निम्न लिखित उपलब्धियां प्राप्त हुए हैं –

- जनसंचार का अर्थ एवं परिभाषा से परिचित हो गए हैं।
- जनसंचार के माध्यम के बारे में जानकारी प्राप्त हुई है।
- जनसंचार के स्वरुप को जान गए हैं ।
- जनसंचार के उद्देश्यों के बारे में जानकारी प्राप्त किए हैं।

1.6 शब्द संपदा

1. संचार	–	सूचनाओं का आदान-प्रदान (कम्युनिकेशन)
2. सम्प्रेषण	-	प्रेषित करना, भेजना, किसी बात, विचार आदि को पहुँचाना
3. प्रसारण	-	रेडियो, दूरदर्शन आदि द्वारा समाचार गीत भाषण आदि दूरस्थ लोगों को सुनाने के इए विद्युत् तरंगों से फैलाना।
4. सामुदायिक	-	समुदाय से संबंधित
5. प्रेषक	-	वह व्यक्ति जो किसी के पास कोई संदेश या वस्तु भेजने वाला।
6. विजातीय	-	भिन्न जाति या वर्ग का , अन्य जाति का
7. प्रत्यक्ष	-	जो आँखों के सामने हो, दृष्टिगोचर
8. विनिमय	-	आदान-प्रदान
9. विमर्श	-	विवेचना, समीक्षा, पर्यालोचना

10.	आविष्कार	-	प्राकट्य , नई खोज
11.	हस्तलिखित	-	हाथ से लिखाहुआ या निर्मित (पांडुलिपि)
12.	एजेंसी	-	अभिकरण, वह संस्था जो किसी व्यक्ति,संस्था या प्रतिष्ठान के कार्यों को संचालित कराती है।
13.	प्रसार	-	विस्तार, फैलाव
14.	बहुआयामी	-	अनेक आयामों वाला, अनेक पक्षों वाला
15.	अखंडता	-	अखंड होने की अवस्था या भाव, संपूर्णता
16.	उन्नयन	-	ऊपर की ओर ले जाना या उठाना, उन्नति की ओर ले जाना

1.7 परिक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए ।

1. जनसंचार का अर्थ बताते हुए उसकी परिभाषा का उल्लेख कीजिए।
2. जनसंचार के माध्यमों को स्पष्ट कीजिए।
3. जनसंचार की परिभाषा बताते हुए उसके उद्देश बताइए।
4. इलेक्ट्रोनिक जनसंचार माध्यमों को समझाए।
5. प्रिंट जनसंचार के माध्यमों को स्पष्ट कीजिए।

खंड (ब)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए ।

1. कंप्यूटर एवं इन्टरनेट जनसंचार माध्यम को स्पष्ट कीजिए।
2. रेडियो जनसंचार माध्यम के बारे में लिखिए।
3. टेलीविज़न जनसंचार माध्यम को स्पष्ट कीजिए।
4. जनसंचार किसे कहते हैं ?

खंड (स)

I. सही विकल्प चुनिए।

1. जनसंचार शब्द में क्या जोड़ा गया है ?

(अ) परसर्ग (ब)उपसर्ग (क) प्रत्यय (ड) परसर्ग और उपसर्ग

2. रेडियो का आगमन भारत में कब हुआ ?

(अ) 1923 (ब) 1924 (क) 1925 (ड) 1926

3. "जनसंचार एक ऐसा माध्यम हैं जो लोगों तक सूचना प्रक्रिया पहुंचाती हैं।" किसकी परिभाषा हैं ?

(अ) जांडेन (ब) डेविड ह्यूम (क) डॉ. अर्जुन तिवारी (ड) चार्लस आर. राइट

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

1. 'कम्युनिकेशन' (Communication) को हिंदी में _____कहा जाता है।
2. जन-संचार में जन-समुदाय तक _____ संप्रेषित किया जाता है।
3. ऑडियो कैसेट का _____ माध्यम है।

III. सुमेल कीजिए।

1. डेविड ह्यूम	(अ)	"संगठित स्त्रोत द्वारा विस्तृत, विजातीय, बिखरी हुई जनता को तकनीकी माध्यम से जो संदेश प्राप्त होता है, उसे जनसंचार कहते हैं।"
2. डॉ. अर्जुन तिवारी	(ब)	जनसंचार एक ऐसा माध्यम हैं जो लोगों तक सूचना प्रक्रिया पहुंचाती हैं।"
3. चार्लस आर. राइट	(क)	'जन-जन तक व्यापक रूप में भावों के आदान –प्रदान करने की प्रक्रिया जनसंचार कहलाती हैं।
4. जांडेन है	(ड)	"जनसंचार का अर्थ सूचना को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाना है। जनसंचार ही बताता कि राजसत्ता या शासन की व्यवस्था का आधार क्या हो ? सरकार का रूप कैसा हो, स्वेच्छाचारी राजा या सैनिक अधिकारियों का शासन हो या स्वतंत्र और लोकप्रिय सरकार हो, जनसंचार माध्यम से ही यहाँ पता चलता है।"

1.8 पठनीय पुस्तकें

1. जनसंचार – डॉ. हरीश अरोड़ा
2. जनसंचार – राधेश्याम शर्मा
3. जन-माध्यम : सम्प्रेषण और विकास
4. जनसंचार माध्यम और पत्रकारिता सर्वांग – डॉ. जितेन्द्र वत्स और डॉ.किरणबाला
5. जनसंचार माध्यमों का सामाजिक चरित्र – डॉ. जवरीमल्ल पारख

इकाई 2 पत्रकारिता और संपादन कला

इकाई की रूपरेखा

2.1 प्रस्तावना
2.2 उद्देश्य
2.3 मूल पाठ : पत्रकारिता और संपादन कला
2.3.1 पत्रकारिता: अर्थ और परिभाषाएं
2.3.2 पत्रकारिता : विशेषताएं और विवेचन
2.3.3 संपादन कला
2.3.4 पत्रकारिता और संपादन कला : संबंध और समाहार
2.4 पाठ सार
2.5 पाठ की उपलब्धियां
2.6 शब्द संपदा
2.7 परीक्षार्थ प्रश्न
2.8 पठनीय पुस्तकें

2.1 प्रस्तावना

हिंदी भाषा का प्रयोग जनसंचार माध्यमों में बदस्तूर हो रहा है। जहां देखो हिंदी छाई हुई है। पत्रकारिता के द्वारा हिंदी के प्रयोग का दायरा बड़ा ही फैलाव पाता जा रहा है । अब इसमें सोशल मीडिया की पत्रकारिता भी जगह पाती जा रही है। पत्रकारिता वह काम है जो पत्रकार करते हैं। पत्रकार और क्या काम करते हैं? वे समाचार और विचारों को पेश करने से पहले उसे चुस्त दुरुस्त करते हैं। इस इकाई में आप पत्रकारिता, पत्रकार और उसकी संपादन - कला के बारे में अव्वल दर्जे की चर्चा से रु- ब- रु होंगे। संपादन-कला का आज का नजरिया कंप्यूटर के आने से अब पहले जैसा नहीं रहा। पत्रकारिता का स्वरूप भी बदलता चला जा रहा है। पर संपादन कला के पहले वाले कायदे-कानून अभी भी कायम हैं। छपने जाने से पहले समाचार या टेक्स्ट को सजाना, संवारना व पढ़ने लायक बनाना आज भी संपादन-कला माना जाता है। जो इस कला के उस्ताद होते हैं, वे समाज में नाम कमाते हैं। लगातार कोशिश करने से इस कला में महारत हासिल की जा सकती है।

2.2 उद्देश्य

इस इकाई के पाठ के बाद आप :

- यह बता पाएंगे कि पत्रकार और पत्रकारिता का क्या अर्थ है
- संपादन और संपादक का अर्थ, प्रकार, विशेषताएं क्या हैं ।
- जन संचार माध्यम के रूप में हिंदी पत्रकारिता और संपादन-कला का क्या रूप और स्थान है।
- संपादन से जुड़ी तकनीक और कला का अभिप्राय क्या है?

2.3 मूल पाठ: पत्रकारिता और संपादन कला

2.3.1 पत्रकारिता: अर्थ और परिभाषाएं

पत्रकारिता शब्द अंग्रेजी के "जर्नलिज़्म" का हिंदी अनुवाद है। "जर्नलिज़्म" शब्द 'जर्नल' से निर्मित है और इसका मतलब है 'रोजनामचा'। अर्थात जिसमें दैनिक कार्यों व सरकारी बैठकों का विवरण हो। आज जर्नल शब्द 'मैगजीन' का सूचक हो चला है। पर शुरुआत में इसका अर्थ बहुत फैलाव वाला था। पत्रकारिता विभिन्न मीडिया आउटलेट्स, मुख्य रूप से समाचार पत्रों, पत्रिकाओं, टेलीविजन, रेडियो और ऑनलाइन प्लेटफार्मों के माध्यम से जानकारी इकट्ठा करने, सत्यापित करने, विश्लेषण करने और जनता के सामने प्रस्तुत करने का अभ्यास है। इसका प्राथमिक लक्ष्य समाज में घटनाओं, मुद्दों और विकास के बारे में सटीक, समय पर और प्रासंगिक जानकारी प्रदान करना है।

पत्रकारिता : परिभाषाएं

नीचे पत्रकारिता की कुछ परिभाषाएं दी जा रहीं है। कुछ भारतीय हैं और कुछ विदेशी। पर सबमें एक बात एक सी है ।

डॉ बद्रीनाथ कपूर : पत्रकारिता पत्र पत्रिकाओं के लिए समाचार लेख एकत्रित तथा सम्पादित करने, प्रकाशन आदेश देने का कार्य है।

हिन्दी शब्द सागर - पत्रकार का काम या व्यवसाय पत्रकारिता है।

प्रेमनाथ चतुर्वेदी : पत्रकारिता विशिष्ट देश, काल और परिस्थिति के आधार पर तथ्यों का, परोक्ष मूल्य का संदर्भ प्रस्तुत करती है।

डॉ कृष्ण बिहारी मिश्र: पत्रकारिता वह विद्या है जिसमें पत्रकारों के कार्यों, कर्तव्यों, और उद्देश्यों का विवेचन किया जाता है| जो अपने युग और अपने सम्बन्ध में लिखा जाए वह पत्रकारिता है।

डॉ अवनीश सिंह चौहान: तथ्यों, सूचनाओं एवं विचारों को समालोचनात्मक एवं निष्पक्ष विवेचन के साथ शब्द, ध्वनि, चित्र, चलचित्र, संकेतों के माध्यम से देश-दुनिया तक पहुँचाना ही पत्रकारिता है। यह एक ऐसी कला है जिससे देश, काल और स्थिति के अनुसार समाज को केन्द्र में रखकर सारगर्भित एवं लोकहितकारी विवेचन प्रस्तुत किया जा सकता है।

प्रो गोपाल शर्मा : पत्रकारिता वर्तमान और अतीत की घटनाओं के बारे में तथ्यात्मक जानकारी को इकट्ठा करने, सत्यापित करने और विचारपूर्वक जनता के सामने प्रस्तुत करने का कठोर और नैतिक अभ्यास है।

मरियम-वेबस्टर डिक्शनरी: "मीडिया के माध्यम से प्रस्तुति के लिए समाचारों का संग्रह और संपादन; सार्वजनिक प्रेस; समाचारों के संग्रह और संपादन या समाचार माध्यम के प्रबंधन से संबंधित एक अकादमिक अध्ययन।"

सी. जी. मूलर : सामायिक ज्ञान का व्यवसाय ही पत्रकारिता है। इसमें तथ्यों की प्राप्ति उनका मूल्यांकन एवं ठीक-ठाक प्रस्तुतीकरण होता है।

कोलंबिया पत्रकारिता समीक्षा: "समाचार पत्रों, पत्रिकाओं, या समाचार वेबसाइटों के लिए लिखने या प्रसारित होने के लिए समाचार तैयार करने की गतिविधि या पेशा।"

अमेरिकन प्रेस इंस्टीट्यूट: "समाचार और जानकारी एकत्र करने, मूल्यांकन करने, बनाने और प्रस्तुत करने की गतिविधि। यह भी इन गतिविधियों का उत्पाद है।"

बिल कोवाच और टॉम रोसेंस्टील : "सत्यापन का अनुशासन ही पत्रकारिता को संचार के अन्य तरीकों, जैसे प्रचार, कल्पना या मनोरंजन से अलग करता है। पत्रकारिता सत्यापन का एक अनुशासन है।"

टाइम्स पत्रिका - पत्रकारिता इधर-उधर उधर से एकत्रित, सूचनाओं का केन्द्र, जो सही दृष्टि से संदेश भेजने का काम करता है, जिससे घटनाओं का सहीपन को देखा जाता है।

विकिपीडिया: "पत्रकारिता वर्तमान या अतीत की घटनाओं पर रिपोर्ट का उत्पादन और वितरण है। पत्रकारिता शब्द व्यवसाय के साथ-साथ नागरिक पत्रकारों पर भी लागू होता है जो जानकारी इकट्ठा करते हैं और प्रकाशित करते हैं।"

यूनेस्को: "पत्रकारिता पाठ, चित्र, ऑडियो और वीडियो के रूप में समाचार और जानकारी एकत्र करने, सत्यापित करने, संश्लेषित करने और प्रसारित करने की प्रक्रिया है।"

पुलित्जर सेंटर: "पत्रकारिता सार्वजनिक आलोचना और समझौते के लिए एक मंच प्रदान करती है, नागरिकों को वर्तमान घटनाओं के बारे में सूचित रखने का एक साधन और सरकार की शक्ति पर नियंत्रण प्रदान करती है।"

बोध प्रश्न

- पत्रकारिता क्या है?
- पत्रकारिता की एक भारतीय और एक पाश्चात्य परिभाषा बताइए
- सब परिभाषाओं में एक बात एक सी है,वह क्या है?

2.3.2 पत्रकारिता: विशेषताएं और विवेचन

ये देशी-विदेशी परिभाषाएँ पत्रकारिता के मुख्य पहलुओं पर प्रकाश डालती हैं, जिसमें विभिन्न मीडिया चैनलों के माध्यम से समाचार और जानकारी एकत्र करना, सत्यापन करना और जनता के सामने प्रस्तुत करना शामिल है। इन सभी परिभाषाओं में पाठकों को सूचित करने के लिए सशक्त बनाने के उद्देश्य से सटीकता, निष्पक्षता और प्रासंगिकता के प्रति

प्रतिबद्धता शामिल है। समाज में पारदर्शिता को बढ़ावा देना, और सत्ता के दुरुपयोग के खिलाफ एक प्रहरी के रूप में कार्य करना पत्रकारिता के लिए जरूरी है । पत्रकारिता लोगों और दुनिया को आकार देने वाली घटनाओं, मुद्दों और विचारों के बीच एक महत्वपूर्ण माध्यम के रूप में कार्य करती है। पत्रकारिता यह सुनिश्चित करती है कि लोकतांत्रिक और खुले समाज के केंद्र में हरेक नागरिक को सही सूचना मिल सके। पत्रकारिता की प्रमुख विशेषताओं में शामिल हैं:

- समयबद्धता: पत्रकारिता अक्सर समसामयिक घटनाओं पर नवीनतम जानकारी प्रदान करने से जुड़ी होती है। पत्रकार सटीकता बनाए रखते हुए जल्द से जल्द समाचार देने का काम करते हैं।
- सटीकता: पत्रकार ऐसी जानकारी प्रस्तुत करने का प्रयास करते हैं जो सत्य, सटीक और अच्छी तरह से शोधित हो। वे विश्वसनीय स्रोतों पर भरोसा करते हैं और यह सुनिश्चित करने के लिए अपने काम की तथ्य-जांच करते हैं कि उनके द्वारा प्रदान की गई जानकारी विश्वसनीय है।
- वस्तुनिष्ठता: जबकि पूर्ण निष्पक्षता हासिल करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है, पत्रकारिता का उद्देश्य जानकारी को निष्पक्ष और स्पष्ट तरीके से प्रस्तुत करना है। पत्रकारों को अपनी रिपोर्टिंग में व्यक्तिगत राय या पूर्वाग्रह डालने से बचना चाहिए।
- प्रासंगिकता: पत्रकार उन कहानियों पर ध्यान केंद्रित करते हैं जो उनके दर्शकों के लिए महत्वपूर्ण और प्रासंगिक हैं। उनका लक्ष्य राजनीति, अर्थशास्त्र, संस्कृति, विज्ञान और बहुत कुछ सहित विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला को कवर करना है।
- जनहित: पत्रकारिता नागरिकों को उन मामलों के बारे में सूचित करके जनता की सेवा करती है जो उनके जीवन को प्रभावित करते हैं। यह व्यक्तियों, संस्थानों और सरकारों को उनके कार्यों के लिए जवाबदेह ठहराकर एक निगरानीकर्ता के रूप में कार्य करता है।
- नैतिक मानक: पत्रकार एक आचार संहिता का पालन करते हैं जो उनके व्यवहार और निर्णय लेने को निर्देशित करती है। इसमें गोपनीयता का सम्मान करना, हितों के टकराव से बचना और स्रोतों और तरीकों के बारे में पारदर्शी होना शामिल है।
- खोजी रिपोर्टिंग: दैनिक घटनाओं पर रिपोर्टिंग के अलावा, पत्रकार अक्सर छिपी हुई सच्चाइयों को उजागर करने, भ्रष्टाचार को उजागर करने और महत्वपूर्ण मुद्दों को प्रकाश में लाने के लिए गहन जांच करते हैं।
- प्रेस की स्वतंत्रता: पत्रकारिता को लोकतांत्रिक समाजों की आधारशिला माना जाता है, क्योंकि यह नागरिकों को सूचित निर्णय लेने के लिए आवश्यक जानकारी प्रदान करती है। प्रेस की स्वतंत्रता एक मौलिक अधिकार है जो पत्रकारों को स्वतंत्र रूप से और अनुचित सेंसरशिप के बिना काम करने की अनुमति देता है।

- मल्टीमीडिया दृष्टिकोण: प्रौद्योगिकी की प्रगति के साथ, पत्रकारिता लिखित लेख, वीडियो, पॉडकास्ट, इन्फोग्राफिक्स और इंटरैक्टिव ऑनलाइन सामग्री सहित विभिन्न मीडिया प्रारूपों को शामिल करने के लिए विकसित हुई है।

यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि पत्रकारिता विभिन्न रूप ले सकती है, जिसमें समाचार रिपोर्टिंग, फीचर लेखन, संपादकीय टिप्पणी, राय और बहुत कुछ शामिल हैं। जबकि मूल सिद्धांत स्थिर रहते हैं, पत्रकार जिस तरह से अपने दर्शकों के साथ जुड़ते हैं और जानकारी देते हैं वह उनके द्वारा उपयोग किए जाने वाले माध्यम के आधार पर अलग-अलग हो सकता है।एक अच्छे पत्रकार के पास कौशल, गुण और नैतिक मानकों का संयोजन होता है जो उन्हें प्रभावी ढंग से जानकारी इकट्ठा करने, विश्लेषण करने और जनता के सामने प्रस्तुत करने में सक्षम बनाता है। यहाँ एक अच्छे पत्रकार की कुछ विशेषताएँ दी गई हैं:

- जिज्ञासा: एक अच्छा पत्रकार स्वाभाविक रूप से जिज्ञासु होता है और उसमें अपने आसपास की दुनिया को जानने और समझने की तीव्र इच्छा होती है। वे जांच-परख वाले प्रश्न पूछते हैं और सच्चाई उजागर करने के लिए प्रेरित होते हैं।
- आलोचनात्मक सोच: पत्रकारों को जानकारी का आलोचनात्मक विश्लेषण करने, स्रोतों का मूल्यांकन करने और तथ्यों और राय के बीच अंतर करने की आवश्यकता है। उन्हें अपने शोध में पूर्वाग्रहों और विसंगतियों की पहचान करने में सक्षम होना चाहिए।
- सटीकता: पत्रकारिता में सटीकता सर्वोपरि है। एक अच्छा पत्रकार यह सुनिश्चित करता है कि वे जो जानकारी प्रस्तुत करते हैं वह तथ्यात्मक, अच्छी तरह से शोध की गई और विश्वसनीय स्रोतों के माध्यम से सत्यापित हो।
- वस्तुनिष्ठता: हालाँकि पूर्ण निष्पक्षता चुनौतीपूर्ण हो सकती है, अच्छे पत्रकार अपने काम को निष्पक्षता और तटस्थता के साथ करने का प्रयास करते हैं। उनका लक्ष्य विभिन्न दृष्टिकोण प्रस्तुत करना और व्यक्तिगत पूर्वाग्रहों से बचना है।
- नैतिक सत्यनिष्ठा: पत्रकारों के लिए नैतिक आचरण आवश्यक है। उन्हें व्यक्तियों की गोपनीयता और गरिमा का सम्मान करना चाहिए, हितों के टकराव का खुलासा करना चाहिए और असुविधाजनक या चुनौतीपूर्ण होने पर भी सच्चाई को बरकरार रखना चाहिए।
- उत्कृष्ट लेखन कौशल: पत्रकारों को जानकारी को स्पष्ट रूप से, संक्षिप्त रूप से और इस तरह से संप्रेषित करने के लिए मजबूत लेखन कौशल की आवश्यकता होती है जो उनके दर्शकों को आकर्षित कर सके

- साक्षात्कार कौशल: प्रभावी साक्षात्कार आयोजित करने के लिए प्रासंगिक प्रश्न पूछने, सक्रिय रूप से प्रतिक्रियाओं को सुनने और साक्षात्कारकर्ताओं से सार्थक अंतर्दृष्टि प्राप्त करने की क्षमता की आवश्यकता होती है।
- अनुसंधान क्षमताएँ: व्यापक और सटीक जानकारी इकट्ठा करने के लिए पत्रकारों को पारंपरिक और डिजिटल दोनों संसाधनों का उपयोग करके विभिन्न विषयों पर शोध करने में कुशल होना चाहिए।
- अनुकूलनशीलता: मीडिया परिदृश्य लगातार विकसित हो रहा है। अच्छे पत्रकार अनुकूलनशील होते हैं और नए उपकरण, तकनीक और कहानी कहने के प्रारूप सीखने के लिए तैयार रहते हैं।
- समय प्रबंधन: पत्रकार अक्सर तंग समय सीमा के तहत काम करते हैं। समय पर और सटीक समाचार देने के लिए कार्यों को प्राथमिकता देने और समय का कुशलतापूर्वक प्रबंधन करने में सक्षम होना महत्वपूर्ण है।
- लचीलापन: पत्रकारिता चुनौतीपूर्ण हो सकती है, खासकर संवेदनशील विषयों से निपटते समय या आलोचना का सामना करते समय। एक अच्छे पत्रकार को भावनात्मक रूप से लचीला और तनाव से निपटने में सक्षम होना चाहिए।
- कहानी कहने का कौशल: पत्रकारिता केवल तथ्यों की रिपोर्टिंग के बारे में नहीं है; यह सम्मोहक आख्यान तैयार करने के बारे में है जो दर्शकों को पसंद आता है और जानकारी के महत्व को बताता है।
- सांस्कृतिक जागरूकता: पत्रकारों को विविध समुदायों का सटीक प्रतिनिधित्व करने और गलत व्याख्याओं से बचने के लिए सांस्कृतिक बारीकियों और मतभेदों को समझना चाहिए।
- नेटवर्किंग: स्रोतों, विशेषज्ञों और अन्य पेशेवरों के साथ संबंध बनाने से पत्रकारों को जानकारी और अंतर्दृष्टि तक पहुंचने में मदद मिल सकती है जो उनकी रिपोर्टिंग को बढ़ाती है।
- साहस: विशेष रूप से खोजी पत्रकारों को कठिन विषयों से निपटने, भ्रष्टाचार को उजागर करने और शक्तिशाली संस्थाओं को जवाबदेह ठहराने के लिए साहस की आवश्यकता होती है।
- सार्वजनिक हित के प्रति प्रतिबद्धता: अच्छे पत्रकार अपने दर्शकों को सूचित करने, शिक्षित करने और सूचित निर्णय लेने के लिए सशक्त बनाकर सार्वजनिक हित की सेवा को प्राथमिकता देते हैं।
- ये विशिष्ट विशेषताएं सामूहिक रूप से पत्रकारीय अखंडता के सिद्धांतों को कायम रखते हुए अपने दर्शकों को सटीक, समय पर और प्रभावशाली जानकारी प्रदान करने की पत्रकार की क्षमता में योगदान करती हैं।

हिंदी भाषा की समझ और उसके प्रयोग करने के हुनर का होना हर पत्रकार के लिए लाज़मी है। एक पत्रकार का अपने पेशे में उपयोग की जाने वाली भाषा पर पकड़ अत्यंत महत्वपूर्ण है। भाषा पत्रकारों के लिए जानकारी संप्रेषित करने, विचारों को संप्रेषित करने और अपने दर्शकों को प्रभावी ढंग से संलग्न करने के लिए प्राथमिक उपकरण के रूप में कार्य करती है। एक पत्रकार की भाषा पर पकड़ क्यों महत्वपूर्ण है?

- स्पष्टता और परिशुद्धता: पत्रकारों को यह सुनिश्चित करने के लिए जानकारी स्पष्ट और सटीकता से संप्रेषित करनी चाहिए कि पाठक, दर्शक या श्रोता सामग्री को आसानी से समझ सकें। अच्छी तरह से चुने गए शब्द और व्यवस्थित वाक्य संरचनाएं स्पष्टता बढ़ाती हैं।
- जुड़ाव: एक पत्रकार का भाषा कौशल दर्शकों का ध्यान खींचने और उनकी रुचि बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। आकर्षक और अच्छी तरह से तैयार की गई भाषा जटिल या सामान्य विषयों को भी आकर्षक बना सकती है।
- सूचना का सटीक संप्रेषण: पत्रकारों को तथ्यों, घटनाओं और संदर्भ को सटीक रूप से संप्रेषित करने की आवश्यकता है। सही शब्दों और भाषा की बारीकियों का उपयोग करने से गलतफहमी और गलत व्याख्याओं को रोकने में मदद मिलती है।
- विश्वसनीयता: एक पत्रकार जो अपने द्वारा उपयोग की जाने वाली भाषा पर निपुणता प्रदर्शित करता है वह अधिक विश्वसनीय और पेशेवर प्रतीत होता है। उचित व्याकरण, वर्तनी और वाक्य-विन्यास योग्यता के समग्र प्रभाव में योगदान करते हैं।
- प्रभावी कहानी सुनाना: भाषा कहानी कहने की नींव है। एक पत्रकार की कथा बुनने, भावनात्मक प्रभाव पैदा करने और दर्शकों से जुड़ने की क्षमता भाषा पर उनकी पकड़ पर निर्भर करती है।
- दलीलें और प्रभाव: संपादकीय के द्वारा पत्रकार पाठकों की राय को समझने और प्रभावित करने के लिए भाषा का उपयोग करता है। एक कुशल पत्रकार एक मजबूत और ठोस दलील देने के लिए भाषा का उपयोग करता है। वह कवियों और शायरों के कलाम पेश करता है और पाठकों को लुभाता चला जाता है।
- संवेदनशीलता और सांस्कृतिक जागरूकता: भाषा पर मजबूत पकड़ रखने वाले पत्रकार सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील विषयों को संभालने और ऐसी भाषा से बचने के लिए बेहतर ढंग से सुसज्जित होते हैं जो अनजाने में कुछ समूहों को अपमानित या गलत तरीके से प्रस्तुत कर सकती है।
- अनुकूलनशीलता: अलग-अलग कहानियों के लिए अलग-अलग स्वर, शैली और औपचारिकता के स्तर की आवश्यकता होती है। एक पत्रकार जो अपनी भाषा को संदर्भ के अनुरूप ढाल सकता है, उसकी बहुमुखी प्रतिभा और प्रभावशीलता बढ़ जाती है।

- क्रॉस-मीडिया संचार: आज के मल्टीमीडिया परिदृश्य में, पत्रकारों को प्रिंट, ऑनलाइन, प्रसारण और सोशल मीडिया सहित विभिन्न प्लेटफार्मों के लिए लिखने की आवश्यकता हो सकती है। इन प्लेटफार्मों के लिए भाषा को अपनाना आवश्यक है।
- सुर्खियाँ और लीड: ध्यान खींचने वाली सुर्खियाँ और आकर्षक लीड (किसी लेख के शुरुआती वाक्य) तैयार करना भाषा कौशल पर निर्भर करता है। पत्रकारों को रुचि जगाने और कहानी का सार संक्षेप में बताने की जरूरत है।
- साक्षात्कार: प्रभावी साक्षात्कार में न केवल प्रासंगिक प्रश्न पूछना शामिल है बल्कि साक्षात्कारकर्ताओं से सार्थक प्रतिक्रिया प्राप्त करने के लिए भाषा की सूक्ष्मताओं को समझना भी शामिल है।

संक्षेप में, एक पत्रकार की भाषा पर पकड़ सीधे तौर पर उनके काम की गुणवत्ता और प्रभाव को प्रभावित करती है। चाहे वे समाचार रिपोर्ट कर रहे हों, जांच कर रहे हों, या विश्लेषण प्रदान कर रहे हों, पत्रकार जिस तरह से भाषा का उपयोग करते हैं वह यह निर्धारित करता है कि उनके दर्शकों द्वारा जानकारी कैसे प्राप्त की जाती है और उनकी पत्रकारिता की विश्वसनीयता और प्रभावशीलता में योगदान होता है।

बोध प्रश्न

- खोजी-पत्रकारिता से आप क्या समझते हैं?
- पत्रकार की भाषा पर पकड़ से आप क्या समझते हैं?

2.3.3 संपादन कला

हिंदी की समाचार पत्रकारिता का शुभारंभ 19वीं सदी की शुरुआत में माना जाता है जब आज के कोलकाता और तबके कलकत्ता नगर से 'उदंत मार्तण्ड' नामक साप्ताहिक पत्र निकाला गया था। इस पत्र के शीर्षक का ही अर्थ था-चढ़ता हुआ सूर्य! सांस्कृतिक जागरण, राजनीतिक चेतना, साहित्यिक सरोकार और दमन का प्रतिकार इन चार पहियों के रथ पर हिंदी पत्रकारिता आगे बढ़ी। आजादी से पहले की हिंदी पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रेमचंद, निराला, बनारसीदास चतुर्वेदी, पांडेय बेचन शर्मा उग्र, शिवपूजन सहाय आदि की उपस्थिति 'जागरण', 'हंस', 'माधुरी', 'अभ्युदय', 'मतवाला', 'विशाल भारत' आदि पत्र-पत्रिकाओं के रूप में दर्ज है। आजादी से पहले अकबर इलाहाबादी ने कहा था कि 'जब तोप मुकाबिल हो तो अखबार निकालो', पर अब के पत्रकार प्रभाष जोशी कहते हैं कि पत्रकारिता करने और करके दिखाने वाली चीज है , उपदेश देने और सिखाने की नहीं। यह अपने काम की आत्मालोचन है और जो न कर पाए उसका अफसोस भी।

यह तो रही आगाज़ की बात, अब आज के लिहाज से संपादन कला की बात करते हैं। पत्रकारिता में संपादन का तात्पर्य लिखित या मल्टीमीडिया सामग्री को प्रकाशित या प्रसारित करने से पहले उसकी समीक्षा करने, संशोधित करने और परिष्कृत करने की प्रक्रिया से है।

संपादक जो करता है उसे संपादन कहते हैं।संपादन का सीधा सादा मतलब है –किसी भी काम को पूरा करना , ठीक तरह से पूरा करना , अच्छी तरह से पूरा करना। किसी पुस्तक, पत्रिका, समाचार पत्र आदि का जहां तक सवाल है वहाँ तक संपादन का अर्थ है – उस सामग्री को मुद्रण और प्रकाशन के लिए चुस्त दुरुस्त करना। **संपादन का प्राथमिक लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि सामग्री सटीक, स्पष्ट, सुसंगत, व्याकरणिक रूप से सही है और प्रकाशन की शैली और मानकों का पालन करती है।** संपादन का मतलब "समाचार को छोटा करना, उसकी गलतियाँ छांटकर हटाना, गलत/अशुद्ध शब्द या वाक्य एवं तथ्य सही करना, अनावश्यक शब्द-संकेत हटाना, भाषा को प्रवाही तथा पठनीय बनाना, समाचार के अर्थ को समझ में आने लायक बनाना" है। बृहत् प्रामाणिक हिंदी कोश में 'संपादन' का शाब्दिक अर्थ काम पूरा करना और ठीक तरह से करना अथवा पुस्तक या सामयिक पत्र आदि का क्रम, पाठ आदि ठीक करके उसे प्रकाशित करवाना दिया गया है। पत्रकारिता संदर्भ कोश ने संपादन की परिभाषा देते हुए लिखा है , " अभीष्ट मुद्रणीय सामग्री का चयन क्रम निर्धारण, मुद्रणानुरूप संशोधन,परिमार्जन, साज-सज्जा तथा उसे प्रकाशन योग्य बनाने के लिए अन्य प्रक्रियाएं आवशयकता पड़ने पर सामग्री से संबंधित प्रस्तावना , पृष्ठभूमि संबंधी वक्तव्य अथवा टिप्पणी आदि प्रस्तुत करना भी संपादन के अंतर्गत आता है।"

संपादक शब्द का शाब्दिक अर्थ है सम्यक् गति देने वाला । संपादन कार्य को करने वाला व्यक्ति 'संपादक' कहलाता है। जो व्यक्ति संपादकीय-कार्य का निर्देशन, नियंत्रण एवं निरीक्षण करता है, उसे संपादक कहते हैं। संपादक ही संपादकीय विभाग का प्रमुख प्रशासनिक और कानूनन अधिकारी होता है। वह समाचार-पत्र या पत्रिका अथवा संपादित ग्रंथ में प्रकाशित सामग्री के लिए उत्तरदायी होता है। 'प्रेस एंड रजिस्ट्रेशन ऑफ़ बुक्स एक्ट, 1867' के अनुसार-समाचार पत्र, पत्रिका या संपादित कृति में प्रकाशित होने वाली सामग्री का नियंत्रण संपादक के अधीन होता है। संपादक ही निर्णय करता है कि क्या सामग्री प्रकाशित हो, और कौन सी सामग्री प्रकाशित न हो। इसीलिए इस कानून की धारा-5 (i) के अंतर्गत समाचार-पत्र या पत्रिका की प्रत्येक प्रति पर संपादक का नाम प्रकाशित अनिवार्य किया जाता है। समाचार-पत्र के प्रकाशन हेतु जो घोषणा-पत्र दाख़िल किया जाता है, उसमें भी समाचार-पत्र या पत्रिका के संपादक का नाम दर्शाया जाना कानूनी आवश्यकता मानी जाती है। **एक अच्छा संपादक अपने काम से अपनी पत्रिका या पत्र की इज्जत बढ़ाता है। एक सफल संपादक सत्य-निष्ठ, ईमानदार और निष्पक्ष होता है। उसमें नेतृत्व-क्षमता कूट कूट कर भरी होती है । निर्भयता और स्पष्टवादिता उसके गुण हैं और रचनात्मक लेखन क्षमता और कल्पनाशीलता का वह भंडार होता है । ये कुछ ऐसे गुण हैं जो हर किसी पत्रकार और संपादक में होने चाहिए। कुशल संपादक के हमारे यहाँ आठ नैतिक आदर्श बताए जाते रहे हैं। इनको याद रखने का फार्मूला भी दे दिया गया है -**

"उस्वनिईनिनैसशिष्टता" अर्थात्– (1) उत्तरदायित्व, (2) निष्पक्षता, (3) स्वतंत्रता, (4) सत्यता, (5) नैतिकता, (6) निर्भीकता, (7) शिष्टता, (8) ईमानदारी। यही आठ नैतिक आदर्श सम्पादक को सफल बनाते हैं। यही नहीं संपादक में रिपोर्टर, संवाददाता आदि दूसरे कामगारों के गुण भी हों। उसमें ये गुण खूब हों तभी उसकी खूबी की लोग चर्चा करेंगे।

प्रेस और पुस्तक पंजीकरण अधिनियम के अनुसार संपादक से तात्पर्य उस व्यक्ति से है जो समाचारपत्र में प्रकाशित होने वाली सामग्री के चयन को नियंत्रित करता है। उसका काम-काज बहुत फैला हुआ है। आजकल संपादन करने वाली एक टोली होती है जिसे 'संपादक मण्डल' कहते हैं। इस टोली में प्रधान संपादक के साथ संपादक, उप-संपादक, सहायक संपादक, आदि होते हैं। संपादकीय विभाग समाचार पत्र का हृदय कहा जाता है। संपादक की बढ़ती जिम्मेदारियों को अच्छी तरह निभाने के लिए उसमें चार हुनरों या कौशलों का होना जरूरी होता है। अपनी टीम को चलाने के लिए उसमें प्रशासनिक कौशल हो। कुशल नेतृत्व देने के लिए निदर्शनात्मक कौशल की जरूरत होगी तो समाचार संकलन के लिए संकलनात्मक कौशल और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की चुनौती को स्वीकार करते हुए प्रस्तुतीकरण कौशल का होना जरूरी हो है। संपादक पत्रकारिता के अंशों की गुणवत्ता और पठनीयता में सुधार, प्रकाशन की समग्र व्यावसायिकता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पत्रकारिता में लगे ज्यादातर संपादक संपादन करते समय इन बातों का ख्याल रखते हैं-

1- छह ककारों (क्या, कब, कहाँ, कौन, क्यों, कैसे) की उपस्थिति को ध्यान में रखना यदि समाचार में कोई ककार नहीं है तो उसकी पूर्ति करना।

2- भाषा की स्पष्टता तथा अर्थवत्ता की ओर ध्यान देना, जिससे कथन का आशय स्पष्ट हो सके।

3- अनावश्यक शब्द, वाक्य तथा तथ्यों को हटाना।

4-एक से ज्यादा बार लिखे गए शब्दों और वाक्यों को हटाना।

5- समाचार के कथ्य का पाठक की रुचि से मेल देखना।

6- समाचार का अच्छा सा अर्थ-झलकाता और बोलता हुआ शीर्षक देना।

पत्रकारिता के क्षेत्र में संपादन-कला की प्रमुख विशेषताओं में शामिल हैं:

- तथ्य-जांच: संपादक सामग्री में प्रस्तुत जानकारी की सटीकता की पुष्टि करते हैं। इसमें यह सुनिश्चित करने के लिए तथ्यों, आंकड़ों, नामों और तारीखों का क्रॉस-रेफरेंसिंग शामिल है कि सब कुछ सही है और विश्वसनीय स्रोतों द्वारा समर्थित है।
- व्याकरण और शैली: संपादक व्याकरण संबंधी त्रुटियों, विराम चिह्नों की गलतियों और वर्तनी की त्रुटियों को ठीक करते हैं। वे यह भी सुनिश्चित करते हैं कि सामग्री प्रकाशन की पसंदीदा लेखन शैली और दिशानिर्देशों का पालन करती है।
- स्पष्टता और सुसंगतता: संपादक इच्छित दर्शकों के लिए सामग्री को स्पष्ट और आसानी से समझने योग्य बनाने के लिए काम करते हैं। वे अजीब वाक्यों को दोबारा लिखते हैं,

अनुच्छेदों के बीच बदलाव में सुधार करते हैं, और यह सुनिश्चित करते हैं कि टुकड़े की समग्र संरचना समझ में आती है।

- संगति: संपादक यह सुनिश्चित करते हैं कि सामग्री में एक समान स्वर, शैली और आवाज़ बनी रहे। यह निरंतरता दर्शकों के लिए एक समान पढ़ने का अनुभव बनाने में मदद करती है।
- सटीकता और अखंडता: संपादक इसकी सटीकता में सुधार करते हुए मूल टुकड़े की अखंडता को बनाए रखने में मदद करते हैं। वे सुनिश्चित करते हैं कि किए गए किसी भी परिवर्तन से इच्छित अर्थ में परिवर्तन न हो या लेखक के दृष्टिकोण को गलत तरीके से प्रस्तुत न किया जाए।
- शीर्षक और उपशीर्षक: संपादक अक्सर ध्यान आकर्षित करने वाले शीर्षक और सूचनाप्रद उपशीर्षक तैयार करते हैं जो सामग्री का सटीक प्रतिनिधित्व करते हैं और पाठक को बांधे रखते हैं।
- कानूनी और नैतिक विचार: संपादक यह सुनिश्चित करने के लिए सामग्री की समीक्षा करते हैं कि यह कानूनी और नैतिक मानकों का अनुपालन करता है। इसमें मानहानि से बचना, व्यक्तियों की गोपनीयता की रक्षा करना और आपत्तिजनक भाषा का उपयोग करने से बचना शामिल है।
- फ़ॉर्मेटिंग और लेआउट: संपादक यह सुनिश्चित करते हैं कि सामग्री प्रकाशन के फ़ॉर्मेटिंग और लेआउट दिशानिर्देशों का पालन करती है। इसमें फ़ॉन्ट, रिक्ति, मार्जिन और संरेखण जैसे तत्व शामिल हैं।
- जुड़ाव: संपादक दर्शकों के दृष्टिकोण पर विचार करते हैं और सामग्री के समग्र जुड़ाव को बढ़ाने का लक्ष्य रखते हैं। इसमें प्रासंगिक चित्र, ग्राफ़िक्स या इंटरैक्टिव तत्व जोड़ना शामिल हो सकता है।
- स्रोतों का सत्यापन: संपादक पुष्टि करते हैं कि स्रोतों को उचित रूप से उद्धृत किया गया है और सटीक रूप से उद्धृत किया गया है। वे आगे के सत्यापन के लिए अतिरिक्त स्रोत भी सुझा सकते हैं
- प्रतिक्रिया और सहयोग: संपादक लेखकों को प्रतिक्रिया देते हैं, सुधार का सुझाव देते हैं और किसी भी आवश्यक संशोधन पर चर्चा करते हैं। यह सहयोगात्मक प्रक्रिया लेखकों को उनके काम को निखारने में मदद करती है।
- समय सीमा प्रबंधन: संपादक यह सुनिश्चित करने के लिए तय समय सीमा के भीतर काम करते हैं कि सामग्री बेहतर हो और समय पर प्रकाशन के लिए तैयार हो।
- विभिन्न प्लेटफार्मों के लिए अनुकूलन: प्लेटफ़ॉर्म (प्रिंट, ऑनलाइन, प्रसारण, आदि) के आधार पर, संपादक अपने मूल संदेश को बनाए रखते हुए माध्यम के अनुरूप सामग्री के प्रारूप और शैली को अनुकूलित कर सकते हैं।

- अंतिम अनुमोदन: संपादकों के पास प्रकाशन के लिए सामग्री को मंजूरी देने का अधिकार है, यह दर्शाता है कि कोई लेखन प्रकाशन के गुणवत्ता मानकों और संपादकीय दिशानिर्देशों को पूरा करता है।

बोध प्रश्न

- संपादक किसे कहते हैं?
- संपादन शब्द से आप क्या समझते हैं?
- संपादन का सीधा सादा मतलब क्या है?
- संपादक के लिए भाषा की पकड़ से क्या तात्पर्य है?

2.3.4 पत्रकारिता और संपादन कला: संबंध और समाहार

कुल मिलाकर, पत्रकारिता प्रक्रिया में संपादन एक आवश्यक कदम है जो दर्शकों के सामने प्रस्तुत सामग्री की सटीकता, स्पष्टता और व्यावसायिकता सुनिश्चित करता है। संचार माध्यमों में संपादन के जो खास पाँच पहलू हैं उनमें से एक पहलू हमेशा खास रहा है । समाचार माध्यमों में पाँच दृष्टियों से सम्पादन किया जाता है- समाचार माध्यम की दृष्टि से, समाचार तत्वों की दृष्टि से, समाचार की दृष्टि से, नैतिक दृष्टि से, और तकनीकी दृष्टि से ये पाँच पहलू हैं। तकनीकी पहलू अधिक श्रम साध्य है। संपादन करते समय संपादक कुछ संपादन-संकेतों का प्रयोग करते हैं, यही तकनीकी पहलू है। इसे प्रूफ रीडिंग या कॉपी संपादन भी कहा जाता है। इसके लिए प्रमुख संकेत निम्नवत हैं-

« - पंक्तियों के बीच जगह कम करें

Z - पैराग्राफ मिलाएं

(/) या [/] - कोष्ठक लगाएं

-रिक्त स्थान कम करें

? ¿ -प्रश्नचिन्ह लगाएं

L या [-नया पैराग्राफ बनाएं

r.o. -पैराग्राफ नहीं चाहिए

see copy -कुछ छूट गया है, पांडुलिपि देखें

⊙ -कुछ त्रुटि है, लेखक से पूछें

-पंक्तियाँ सीधी करें

[ ] -इस स्थान पर शब्द रखें

Q या ƍ -निकालें

‿Q‿-अक्षर निकालकर बाकी अक्षर मिलाएं

-जगह छोड़ें

कम -कटे शब्द के स्थान पर ऊपर दिया गया शब्द लिखें

Ƀ -बड़ा अक्षर लगाएं

w.f. -गलत फॉण्ट का अक्षर है

ᒪ -जगह बराबर करें

‖ -ऊपर से नीचे की ओर पंक्तियाँ एक सीध में करें।

आजकल कंप्यूटर तकनीकी का जमाना है । पहले महावीर प्रसाद द्विवेदी जैसे पत्रकार 'सरस्वती' जैसी पत्रिकाओं के द्वारा भाषा और वर्तनी का सुधार करके संपादन करते थे, अब यह काम मशीन के सहारे आसान होता जा रहा है। सम्पादन-कला के मानवीय-पक्ष से मजबूत मशीनी-पक्ष दिखाई दे रहा है।

बोध प्रश्न

- संपादन में तकनीकी पहलू से आप क्या समझे?
- प्रूफ रीडिंग में 'कुछ छूट गया है' के लिए क्या चिन्ह है?

2.4 पाठ सार

इस इकाई के पाठ से दो अलग अलग और साथ साथ जुड़े विषयों की समझ विकसित होती है। पहले तो यह पता चलता है कि जन संचार के माध्यम के रूप में पत्रकार और पत्रकारिता के क्या लक्षण, विशेषताएं आदि है। साथ ही संपादक, संपादन और संपादन कला का भी परिचय मिल गया। पत्रकार का काम या व्यवसाय पत्रकारिता है। संपादन का अर्थ समाचार को पाठक/श्रोता/ दर्शक के लिए आसान बनाना है। इसमें छह ककारों को आधार बनाया जाता है। संपादक यह काम संपादक मण्डल के सहयोग से करता है।संपादन आजकल संपादक-मण्डल की सामूहिक जिम्मेदारी होती है। संपादक हुनरमंद होता है और उसकी पहचान भी यही है। संपादन कला में तकनीकी पक्ष उसके मानवीय पक्ष से आगे चल रहा है।

2.5 पाठ की उपलब्धियां

इस इकाई के पाठ से पत्रकारिता और संपादन-कला के विषय में निम्नलिखित बिंदुओं का ज्ञान होता है-

- पत्रकार पत्रकारिता के द्वारा समाज में घटनाओं, मुद्दों और देश-विदेश के विकास के बारे में सही जानकारी देता है।
- लोकतंत्र और खुले समाज में हरेक नागरिक को पत्रकार और संपादक मण्डल कई तरह से सूचना देते हैं।
- समाचार-पत्र और पत्र-पत्रिकाओं के संपादक सीधी सच्ची भाषा में अपनी बात पाठकों तक पहुंचाते हैं।
- संपादक और पत्रकार कुछ नैतिक आदर्शों का पालन करते हैं।
- संपादन एक कला और हुनर है, इसे सीखना होता है, पालन करना होता है।

2.6 शब्द संपदा

1. सेंसरशिप - सरकार द्वारा चिट्ठी–पत्री, सिनेमा आदि के प्रकाशन से पहले की गई जाँच पड़ताल
2. वस्तुनिष्ठता - तटस्थ निरीक्षण द्वारा तथ्यों का उनके वास्तविक रूप में संकलन और विश्लेषण
3. स्रोत - शुरुआत
4. परिमार्जन - गलतियाँ दूर करना; सुधारना
5. प्रतिबद्ध - बँधा हुआ, जिसमें कोई रुकावट हो
6. पुष्टि - समर्थन या सहमति
7. समाहार - बहुत सी चीजों को एक जगह इकट्ठा करना, संग्रह

2.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड –(अ)

दीर्घ प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए

1. पत्रकारिता की एक परिभाषा देकर 'पत्रकारिता' का अर्थ स्पष्ट कीजिए
2. पत्रकारिता की कुछ विशेषताओं का उल्लेख कीजिए
3. पत्रकार की 4 विशेषताओं का विवेचन कीजिए
4. संपादन कला से आप क्या समझते हैं?
5. पत्रकारिता के क्षेत्र में संपादन-कला की प्रमुख विशेषताओं को अपने शब्दों में पेश कीजिए।

खंड –(ब)

लघु प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए

1. हिंदी पत्रकारिता के आरंभ पर अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।
2. कुशल संपादक के आठ नैतिक आदर्शों में से चार को समझाइए।
3. किसी संपादक के लिए भाषा की पकड़ क्यों महत्वपूर्ण है?
4. संपादन करते समय संपादक किन किन बातों का ख्याल रखते हैं?
5. 'प्रेस एंड रजिस्ट्रेशन ऑफ़ बुक्स एक्ट, 1867 क्या है?
6. पत्रकार को साहसी क्यों होना चाहिए?
7. प्रूफ रीडिंग के चार चिन्हों को लिखकर उनकी उपयोगिता स्पष्ट कीजिए।

खंड- (स)

I. सही विकल्प चुनिए

1.'प्रेस एंड रजिस्ट्रेशन ऑफ़ बुक्स एक्ट (पी आर बी एक्ट) किस वर्ष शुरू हुआ ?

क) 1867 ख) 1967 ग) 1971 घ) इनमें से कोई सही नहीं

2. "जब तोप मुकाबिल हो तो अखबार निकालो" किसने कहा?

क) नजीर अकबराबादी ख) अकबर इलाहाबादी

ग) गालिब घ) फिराक गोरखपुरी

3. 'संपादन' का शाब्दिक अर्थ है-

क) काम ठीक तरह से पूरा करना ख) पुस्तक या पत्र आदि का क्रम ठीक करना

ग) पाठ आदि ठीक करके उसे प्रकाशित करवाना घ) ये सभी

4. इनमें से कौन सी शुरुआती हिंदी पत्रिका नहीं है?

क) हंस ख) माधुरी ग) उद्दंड मार्तंड घ) विशाल भारत

5. 'क्या, कब, कहाँ, कौन, क्यों, कैसे' को पत्रकारिता में कहते हैं-

क) छह कक्के ख) छह ककार ग) प्रश्नवाचक शब्द घ) इनमें से कोई नहीं

II. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए

1. "जर्नलिज़्म" शब्द 'जर्नल' से निर्मित है और इसका मतलब है _____।

2. संपादन करने वाली एक टोली होती है जिसे _____ कहते हैं।

3. संपादक के आठ नैतिक आदर्श को याद रखने का फार्मूला _____ है।

4. महावीर प्रसाद द्विवेदी ने _____ पत्रिका के द्वारा लेखकों की भाषा और वर्तनी का सुधार किया।

5. _____ के कुछ रूप समाचार रिपोर्टिंग, फीचर लेखन, संपादकीय टिप्पणी, राय आदि हैं।

6. _____ समाचार पत्र का हृदय कहा जा सकता है।

III. सुमेल कीजिए

1. पत्रकारिता	(अ) संपादक, उप-संपादक, सहायक संपादक की टोली
2. संपादक	(आ) चढ़ता हुआ सूर्य
3. प्रूफ रीडिंग	(इ) सम्यक् गति देने वाला
4. उदंत मार्तण्ड	(ई) पत्रकार का काम या व्यवसाय
5. संपादक मण्डल	(उ) संपादन-संकेत

2.8 पठनीय पुस्तकें

1. धीरेन्द्रनाथ सिंह ; 'हिंदी पत्रकारिता : भारतेंदु पूर्व से छायावादोत्तर काल तक' – विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, सं. 2013,
2. विजयदत्त श्रीधर 'भारतीय पत्रकारिता कोश' –वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2000,
3. रामशरण जोशी , (सं.),'समाचार संपादन' – राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, सं. 2003
4. आचार्य रामचंद्र वर्मा 'बृहत् प्रामाणिक हिंदी कोश' – लोकभारती प्रकाशन, सं. 2012

इकाई 3 : समाचार: परिचय, परिभाषा, स्रोत और लेखन

इकाई की रूपरेखा

3.1 प्रस्तावना

3.2 उद्देश्य

3.3 मूल पाठ: समाचार: परिचय, परिभाषा, स्रोत और लेखन

3.3.1 समाचार: परिचय

3.3.2 समाचार अर्थ और परिभाषा

3.3.3 समाचार लेखन के स्रोत

3.3.4 समाचार लेखन के तथ्य

3.3.5 समाचार लेखन के सिद्धांत

3.3.6 विविध जनसंचार माध्यमों के लिए समाचार लेखन

3.4 पाठ सार

3.5 पाठ की उपलब्धियाँ

3.6 शब्द संपदा

3.7 परीक्षार्थ प्रश्न

3.8 पठनीय पुस्तकें

3.1 प्रस्तावना

समाचार नई-नई घटनाओं और समसामयिक विषयों पर अद्यतन सूचनाओं को कहते हैं, जिन्हें मुद्रण, प्रसारण अंतर्जाल या अन्य माध्यमों की सहायता से आम लोगों यानी पाठकों, दर्शकों और श्रोताओं तक पहुँचाया जाता है। समाचार अंग्रेज़ी शब्द न्यूज़ का हिंदी रूपांतरण है।

जैसा कि हम जानते हैं, समाचार पत्रकारिता की जड़ है, जब समाचार होगा तभी पत्रकारिता होगी। किसी भी पत्रकार को समाचार का अर्थ उसकी पहचान उसके स्रोतों के बारे में जानना बहुत अवश्यक है। आज प्रिंट और इलेक्ट्रानिक मीडिया तरह-तरह की घटनाओं और समस्याओं और विचारों से भरा रहता है। इसका प्रभाव समाज के सभी व्यक्तियों पर पड़ता है। जब इतना मीडिया का विकास नहीं हुआ था तब लोग समाचारों को पशु-पक्षियों के माध्यम से एक से दूसरे जगह भेजते थे। किन्तु आज तकनीक और प्रोद्योगिकी के विकास के कारण जनसंचार माध्यमों की बाढ़ सी आ गई है। शिक्षित लोगों के लिए समाचार पत्र वरदान सिद्ध हुआ तो हर वर्ग के लोगों के लिए रेडियो, टेलीविज़न, विज्ञापन आदि वरदान है। समाचार

लिखना एक कला है। जनसंचार के विविध माध्यमों के लिए अलग-अलग तरीके से समाचार लिखा जाता है।

3.2 उद्देश्य

छात्रों ! इस इकाई के अध्ययन से आप -

- समाचार किसे कहते हैं उससे परिचित हो सकेंगे।
- समाचार का अर्थ और परिभाषा को जान सकेंगे।
- समाचार लेखन के तथ्यों से परिचित हो सकेंगे।
- समाचार लेखन के सिद्धांत को जान सकेंगे।
- विभिन्न प्रकार के जनसंचार माध्यमों के लिए समाचार लिखना सीख सकेंगे।

3.3 मूल पाठ: समाचार: परिचय, परिभाषा, स्रोत और लेखन

3.3.1 समाचार: परिचय

हर व्यक्ति को समाचार जानने में रुचि होती है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से घटनाओं से संबंधित महत्वपूर्ण सूचनाएँ उपलब्ध होती हैं। इनका एक विस्तृत विवेचन प्रिंट मीडिया के माध्यम से प्राप्त होता है। समाचार के महत्व के अनुसार समाचार पत्रों में उसे प्रकाशित करने का स्थान निर्धारित होता है। सबसे मुख्य और महत्वपूर्ण समाचार को मुख्य पृष्ठ पर सबसे ऊपर प्रकाशित किया जाता है। पाठकों का ध्यान आकर्षित करने के लिए मोटे अक्षरों में उस समाचार के लिए एक शीर्षक भी दिया जाता है।

रेडियो और टेलीविजन पर समाचार के बुलेटिन का प्रसारण 5 मिनट से 30 मिनट की अवधि के लिए होता है। वस्तुतः समाचवार देश-विदेश में घटित घटनाओं या गतिविधियों की सूचनाएँ होती हैं जिनका महत्व होता है। हर घटना समाचार नहीं है। जिन घटनाओं की चर्चा आवश्यक हो, वे ही समाचार का रूप धारण करते हैं।

सामान्य रूप से कहा जाए तो समाचार वह है जिसमें अनेक व्यक्तियों की दिलचस्पी हो, जिसे सुनने और जानने की इच्छा हो। समाचार तो वह है जो नवीन है। पाठक बासी समाचार पढ़ना रुचिकर नहीं समझता। समाचार को परिभाषित करने के लिए कुछ प्रमुख आधार हैं। जैसे- सामान्य परिभाषा, शास्त्रीय परिभाषा, शाब्दिक परिभाषा और विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषा। इन आधारों की सहायता से यह जानने का प्रयास करेंगे कि वास्तव में समाचार क्या है।

बोध प्रश्न

- सामान्य रूप से समाचार का क्या अर्थ है?

3.3.2 समाचार अर्थ और परिभाषा

सामान्य रूप से व्यक्ति 'समाचार' के संबंध में जो धारणा बना लेता है, उसे समाचार की सामान्य परिभाषा माना जा सकता है। कुछ सामान्य परिभाषाएँ इस प्रकार हैं-

- एक दूसरे से जानकारी लेने और देने का प्रयास।
- पाठक की रुचि जिसमें हो।
- संपादक जिसे प्रकाशित करना चाहते हो।
- वह जानकारी जो अत्यंत तीव्र गति से व्यापक जनसमूह तक पहुँचे।
- घटनाओं, सूचनाओं या तथ्यों का ब्यौरा जिसे जानने के लिए एक बड़ा वर्ग दिलचस्पी दिखाता है।
- वह सत्य जिसकी जानकारी कल तक किसी को न हो।

शास्त्रीय परिभाषा

- जिस जानकारी को दबाने का प्रयत्न किया जा रहा हो वह समाचार है और शेष सब विज्ञापन।
- कुत्ता अगर आदमी को काटे तो इसमें कोई अचरज वाली खबर नहीं है। यदि आदमी किसी कुत्ते को काटता है तो वह सनसनीखेज समाचार बन जाता है।

शाब्दिक परिभाषा

- अंग्रेजी NEWS का हिंदी रूपांतर है समाचार। NEWS शब्द की उत्पत्ति NEW शब्द से मानी जाती है। इसका अर्थ है नया, नवीन, नूतन। अतः इस दृष्टि से यह कहा जा सकता है कि किसी घटना या सूचना की जानकारी किसी को पहले से न हो तो वह नया है और समाचार है।
- NEWS के आद्याक्षरों से चार दिशाओं - North (उत्तर), East (पूर्व), West (पश्चिम) और South (दक्षिण) का बोध होता है। अतः यह भी कहा जाता है कि चारों दिशाओं का बोध कराए वह समाचार है।
- NEWS के आद्याक्षरों को इस तरह भी परिभाषित किया जाता है - Newness (नयापन), Eventful (घटनापूर्ण होना), Wanted (पाठकों द्वारा वांछित) तथा Serious (गंभीर)।
- यह कहा जा सकता है कि सत्यपूर्ण और महत्वपूर्ण विवरण जिससे किसी रहस्य का उद्घाटन होता हो और व्यापक जनसमूह उसे जानने की इच्छा रखता हो वह समाचार है।

भारतीय विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषा

- अंबिका प्रसाद वाजपेयी के अनुसार हर घटना समाचार नहीं है। वही घटना समाचार बन सकती है जिसका कमोबेश सार्वजनिक हित हो। (उदाहरण के लिए लोग बीमारी की स्थिति में अस्पताल जाते हैं। कुछ लोगों को भरती होना पड़ता है, कुछ लोग स्वस्थ होकर घर वापस लौटते हैं तो कुछ लोग वापस नहीं लौट पाते। ये सभी घटनाएँ समाचार नहीं हैं। तो फिर छात्रों! समाचार क्या है? समाचार तब बनता है जब कोई व्यक्ति डॉक्टर की फर्जी डिग्री रखकर आपरेशन करता है तथा आपरेशन के समय कोई औजार पेट में रखकर भूल जाता है या फिर डॉक्टर की गैरहाजरी में कंपाउंडर ने गलत इलाज किया हो)

- रामचंद्र वर्मा के अनुसार समाचार का अर्थ है आगे बढ़ना, चलना, अच्छा आचरण करना, ताजा या हाल की घटना की सूचना देना जिसके संबंध में पहले से ही लोगों को जानकारी न हो वह समाचार है।

अतः यह कहा जा सकता है कि समाचार की नवीनता इसमें है कि वह किसी भी परिवर्तन की सही-सही जानकारी दे। यह परिवर्तन सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक अथवा सांस्कृतिक भी हो सकता है।

पाश्चात्य विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषा

- जार्ज एच. मोरिस: News is a history in a hurry. (समाचार जल्दी में लिखा गया इतिहास है)
- लाइल स्पेन्सर: The News may be defined as any accurate fact or idea that will interest a large number of readers. (तथ्य, घटना या विचार जिसमें बहुसंख्यक पाठकों की रुचि हो, वह समाचार कहलाता है।)
- ई. वाव स्कूप: News is what a chap who doesn't care much about anything wants to read. And its only news he's read it. After that it's dead. (समाचार वह है, जिसे ऐसा व्यक्ति भी पढ़ना चाहता है जो किसी भी चीज की परवाह नहीं करता। जब तक वह उसे पढ़ता है तब तक ही वह समाचार है। पढ़ने के बाद वह समाचार नहीं रह जाता।)
- हार्पर लीच एवं जान सी करोल: News is very dynamic literature. (समाचार अति गतिशील साहित्य है)
- जे जे सिडलर: पर्याय संख्या में मनुष्य जिससे जानना चाहे, वह समाचार है। शर्त यह है कि सुरुचि तथा प्रतिष्ठा के नियमों का उल्लंघन न करे।
- विलियम ब्लेयर: अनेक व्यक्तियों की अभिरुचि जिस सामयिक बात में हो, वह समाचार है। सर्वश्रेष्ठ समाचार वह है जिसमें बहुसंख्यकों की अधिकतम रुचि हो।
- चिल्टन बुश: समाचार सामान्यतः वह उत्तेजक सूचना है जिससे कोई व्यक्ति संतोष अथवा उत्तेजना प्राप्त करता है।

कहने का आशय है कि जब तक किसी घटना या सूचना या जानकारी में नवीनता हो, रोचकता हो, रहस्य हो तब तक ही वह समाचार है। जैसे ही घटना बासी हो जाती है या रहस्य का उद्घाटन हो जाता है तो वह समाचार नहीं रह जाता। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि समाचार वह है जो रोचकता और जिज्ञासा पैदा करे। साथ ही नवीन सूचना प्रदान करे। उपर्युक्त दी गई परिभाषाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि समाचार को रोचक,

प्रभावी, संतुलित और सुनियोजित होना चाहिए। इसके लिए समाचार लिखते समय कुछ बिंदुओं पर ध्यान देना आवश्यक है। जैसे नयापन, समसामयिक घटनाएँ, असाधारण सूचनाएँ, जनहितकारी, रहस्यमयी, खोजी वृत्ति, दुर्घटना, दुःसाहस, विश्वसनीयता, रोचकता, जिज्ञासा, प्रभावपूर्ण तथ्य, छह ककार (क्या, कहाँ, कब, कौन, क्यों, कैसे) आदि। अतः समाचार लिखते समय पाठकों की जिज्ञासा व रुचि को ध्यान में रखकर समाचार की गुणवत्ता को बनाए रखना चाहिए।

बहरे एवं अंधे व्यक्ति की समाचार प्राप्त करने के लिए उत्साहित रहते हैं। उनके लिए विशेष प्रावधान की आवश्यकता है। यदि बहरे लोग शिक्षित हैं तो समाचार पत्र पढ़कर जानकारी प्राप्त कर सकेंगे। अन्यथा उनके लिए विशेष प्रावधान की आवश्यकता होती है। हम सब यह जानते हैं कि हर रविवार को दूरदर्शन में दोपहर के समय उनके लिए समाचार बुलेटिन का प्रसारण होता है। हाथों के इशारों से बात को समझाया जाता है। अब तो अनेक समाचार चैनल 24 घंटे समाचार का प्रसारण कर रहे हैं।

दृष्टिहीन लोगों के लिए ब्रेल विधि से पढ़े जाने वाले समाचार पत्र निकाले जा रहे हैं। इन समाचार पत्रों में उभरे हुए शब्दों का प्रयोग किया जाता है जिसे वे लोग हाथ की उंगलियों से छू-छूकर पहचानते एवं पढ़ते हैं। पत्रकारिता के क्षेत्र में ब्रेल पत्रकारिता अनूठी विधा है। दृष्टिहीनों के लिए लिपि निर्माण के प्रयोग 1517 से ही चल रहे थे। 1882 में फ्रांस के लुई ब्रेल ने इस लिपि का आविष्कार किया जो एक मोची का लड़का था। इस लिपि को स्पर्श लिपि कहा जाता है क्योंकि उभरे हुए अक्षरों पर उंगलियों के स्पर्श से पढ़ा जाता है। 1951 में ब्रेल लिपि का भारत में आगमन हुआ। देश के प्रथम ब्रेल संपादक बनने का श्रेय ठाकुर विश्वनारायण सिंह को जाता है। उन्हें भारतीय ब्रेल पत्रकारिता के जनक कहा जाता है। 1957 में प्रयोग के तौर पर भारत सरकार ने 'आलोक' नामक त्रैमासिक पत्रिका ठाकुर विश्वनारायण सिंह के संपादन में प्रारंभ की। 1968 में यह मासिक बना और उसका नाम 'नयन रश्मि' रखा गया। 1971 में दृष्टिहीन बालकों के लिए 'शिशु आलोक' नामक वैज्ञानिक हिंदी ब्रेल पत्रिका आरंभ की गई।

बोध प्रश्न

- समाचार क्या है?
- समाचार लेखन के लिए किन-किन तत्वों की आवश्यकता होती है?

3.3.3 समाचार लेखन के स्रोत

चाहे समाचार पत्र हो या रेडियो, टेलीविजन उनकी प्रतिष्ठा बनाए रखने के लिए हमेशा नए-नए समाचारों का संकलन करना पड़ता है। समाचारों को संकलित करने की इस प्रक्रिया को रिपोर्टिंग तथा समाचार संकलनकर्ता को रिपोर्टर या संवाददाता कहा जाता है। संवाददाता अपने समाचार पत्र या रेडियो या टेलीविजन के लिए समाचार प्रेषित करता है। यह रिपोर्टिंग

करना कहलाता है। संवाददाता समाचार लिखता है तो संपादक उसे सुसज्जित करके प्रकाशन हेतु भेजता है।

आजकल पेड न्यूज़ का भी प्रचलन है। निजी संगठनों व संस्थानों द्वारा पत्रकारों और मीडिया संगठनों को समाचार प्रकाशित व प्रसारित करने के लिए नकद भुगतान किया जाता है और यह सुनिश्चित किया जाता है कि उनके द्वारा दी गई जानकारी समाचार पत्रों में प्रकाशित होगी। यह प्रथा 1950 के दशक से ही शुरू हो चुकी थी। भारत में औपचारिक अनुबंधों के माध्यम से पेड़ न्यूज़ का प्रचलन है।

बोध प्रश्न

- रिपोर्टिंग किसे कहते हैं?

समाचार संकलन के स्रोत

समाचार पत्र, रेडियो और टेलीविजन संवाददाता विभिन्न स्रोतों से समाचार संकलित करता है। अस्पताल, प्रेस काॅन्फ्रेंस, प्रेस विज्ञप्ति, साक्षात्कार, घटना स्थल, शिक्षण केंद्र, पुलिस थाना, सरकारी व गैर सरकारी कार्यालय, सरकारी सूचनाएँ, सार्वजनिक सम्मेलन आदि विभिन्न स्रोतों से समाचार प्राप्त किया जा सकता है।

1. **अस्पताल :** अस्पताल एक ऐसा स्थान है जहाँ से शहर के दंगे-फसादों, दुर्घटनाओं, आत्महत्या, नशीले पादार्थों से मरने वाले आदि की सही जानकारी प्राप्त की जा सकती है। अतः संवाददाता अस्पतालों से संपर्क स्थापित करके किसी भी घटना का सही-सही जानकारी प्राप्त करके आम जनता तक पहुँचा सकता है।
2. **प्रेस विज्ञप्ति :** सरकारी और गैर सरकारी संगठनों, संस्थानों द्वारा समय≤ पर अपनी नीतियों, गतिविधियों, कार्यक्रमों, उद्देश्यों आदि की जानकारी प्रस्तुत करने के लिए किए जाने वाले कार्य को प्रेस विज्ञप्ति कहा जाता है। यह जानकारी समाचार पत्रों में प्रकाशित करने के लिए प्रेषित की जाती है। शासकीय समाचारों से संबंधित प्रेस विज्ञप्तियाँ निम्नलिखित प्रकार की होती हैं-
3. **हैंड बिल :** इसे हैंड आउट भी कहा जाता है। दिन-प्रतिदिन के विविध विषयों, मंत्रालय के क्रियाकलाप, प्रमुख लोगों के भाषण, संसद के प्रश्नोत्तर आदि पर हस्तलिखित, टंकित या मुद्रित परचे जारी किए जाते हैं।
4. **प्रेस कम्युनिट :** शासन के अत्यधिक महत्वपूर्ण निर्णयों पर प्रेस कम्युनिक जारी किए जाते हैं। इन महत्वपूर्ण निर्णयों में मात्रिमंडल में फेर-बदल, विदेशी राज्य के अध्यक्षों से संपन्न हुई वार्ताएँ, समझौते आदि सम्मिलित होते हैं। इस तरह के समाचारों में औपचारिकता अधिक होती है। संपादन की आवश्यकता नहीं होती।

5. **प्रेस नोट्स :** समाचार नीतियों, रेल-बस भाड़े में वृद्धि, ब्याज दरों में परिवर्तन आदि से संबंधित प्रमुख शासकीय विषयों पर प्रेस नोट्स जारी किए जाते हैं। यह प्रेस कम्युनिक की अपेक्षा कम औपचारिक होते हैं।
6. **पुलिस थाना :** समाचार प्राप्त करने का एक और महत्वपूर्ण स्रोत है। पुलिस थानों से अपराध जगत अर्थात चोरी, डकैती, हत्या, मार-पीट आदि से संबंधित जानकारी प्राप्त की जा सकती है। पुलिस विभाग के कर्मचारियों और अधिकारियों से संपर्क स्थापित करके तथा उनका विश्वास प्राप्त करके संवाददाता उचित जानकारी प्राप्त करते हैं।
7. **न्यायालय :** यह एक और महत्वपूर्ण स्रोत है। जिस मामलों को पुलिस विभाग के कर्मचारी नहीं सुलझा पाते उनको न्यायालयों के हवाले कर दिया जाता है। इस स्रोत से जघन्य अपराध के मामलों के बारे में समाचार प्राप्त किया जा सकता है।
8. **समाचार एजेंसियाँ :** समाचार प्राप्त करने के स्रोतों में समाचार एजेंसियाँ महत्वपूर्ण हैं। समाचार एजेंसियाँ दुनिया के विभिन्न हिस्सों से समाचार एकत्रित करके उन्हें विभिन्न जनसंचार माध्यमों तक पहुँचाते हैं। ये समितियाँ समाचार पत्रों के अतिरिक्त इलेक्ट्रॉनिक मीडिया को भी समाचार उपलब्ध कराती हैं। ये समाचार संकलन एवं वितरण करती हैं। वस्तुतः 1825 में चाल्स आवास द्वारा फ्रांस में न्यूज ब्यूरो की स्थापना से समाचार समिति का आरंभ हुआ। 1848 में हार्वर्ड न्यूज़ एजेंसी की स्थापना हुई। 1849 में बर्नार्ड वूल्फ द्वारा वूल्फ एजेंसी की स्थापना हुई। 1850 में जूलियस रायटर द्वारा रायटर न्यूज एजेंसी की स्थापना हुई। 1857 में नेशनल न्यूयार्क एसोसिएशन प्रेस की स्थापना हुई। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मुख्य समाचार समितियाँ हैं - एपी (असोसिएटेड प्रेस, अमेरिका), आई एन एस (इंटरनेशनल न्यूज सर्विस, अमेरिका), रायटर (ब्रिटेन), ए एफ पी (फ्रांस), तास (TAS, रूस) आदि। भारतीय समाचार ऐजेन्सियाँ हैं प्रेस ट्रस्ट आफ इंडिया (PTI), यूनाइटेड न्यूज आफ इंडिया (UNI), हिंदुस्तान समाचार, समाचार भारती, यूनीवार्ता, नेशनल न्यूज सर्विस, भाषा, एसोसिएटेड न्यूज एंड फीचर्स (ANF)।
9. **सरकारी साधन :** समाचार प्राप्त करने में इनका विशेष महत्व है। इनके अंतर्गत सूचना एवं प्रसारण विभाग सम्मिलित हैं। ये अपने विभागों में होने वाली महत्वपूर्ण गतिविधियों की जानकारी देती हैं।
10. **साक्षात्कार :** व्यक्तिगत संपर्क तथा साक्षात्कार द्वारा समाचार प्राप्त किया जा सकता है। साक्षात्कार एक विशेष प्रकार की बातचीत है। यह अपने आप में एक विकसित कला है।
11. **पत्रकार सम्मेलन :** इस आयोजन में संवाददाता सम्मिलित होते हैं और अधिकारी, राजनेता, विशिष्ट व्यक्ति आदि से प्रश्न पूछते हैं। यह सम्मेलन सभी पत्रकार साथियों द्वारा

पूछे गए प्रश्नों का आयोजन होता है। पत्रकार सम्मेलन, संवाददाता सम्मेलन तथा ब्रीफिंग पर्यायवाची शब्द हैं। संवाददाता सम्मेलन तथा ब्रीफिंग (विवरण देना) में थोड़ा सा अंतर है। ब्रीफिंग कम औपचारिक है जबकि संवाददाता सम्मेलन अधिक औपचारिक।

समाचार लेखन

समाचार लेखन एक विशिष्ट कला है। इसे समझने के लिए तीन आयामों का अध्ययन आवश्यक है - समाचार लेखन क्या है, समाचार के महत्वपूर्ण पक्ष और कुछ उदाहरण। पहले समाचार लेखन क्या है इस पर विचार करेंगे।

पहले यह स्थिति थी कि संवाददाता जो देखता था उसे हू-ब-हू लिखकर छपने के लिए भेज देता था। लेकिन अब समाचार लेखन अत्यंत महत्वपूर्ण क्षेत्र बन गया है। इसका विधिवत प्रशिक्षण दिया जा रहा है। समाचार लेखन में प्रमुख रूप से निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना चाहिए। तब पर्याप्त जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। कोई भी सूचना तभी समाचार बनती है जब निम्नलिखित बिंदुओं पर ध्यान दिया जाएगा-

1. क्या हुआ?	what happened?
2. कहाँ हुआ?	where it happened?
3. कब हुआ?	when it happened?
4. कौन किया?	who did it?
5. क्यों हुई?	why it happened?
6. कैसी घटी?	how it happened?

अब इन छह ककारों (क्या, कहाँ, कब, कौन, क्यों और कैसे) के आधार पर आसानी से समाचार लिखा जा सकता है।

बोध प्रश्न

- छह ककार क्या है?
- समाचार लेखन में प्रमुख रूप से किन बातों पर ध्यान देना आवश्यक है?

3.3.4 समाचार लेखन के तथ्य

छात्रों ! अब तक आप समझ ही चुके हैं कि हर घटना समाचार नहीं हो सकती। समाचार वही हो सकती है जिसमें जनता की रुचि हो और वह किसी रहस्य को उद्घाटित करने में सक्षम हो। आप यह भी जान चुके हैं कि विभिन्न स्रोतों से समाचार प्राप्त किया जा सकता है। वस्तुतः समाचार लेखन एक महत्वपूर्ण कार्य है क्योंकि इसमें यह ध्यान रखा जाता है कि समाचार को कैसे रोचक बनाया जाए तथा जन समूह जानकारी पहुँचाया जाए।

नवीनता : यह पहले भी कहा जा चुका है कि हिंदी शब्द 'समाचार' अंग्रेज़ी शब्द 'न्यूज़' के पर्याय रूप में प्रचलित है। न्यूज़ शब्द में लैटिन का 'नोवा' और संस्कृत का 'नव' निहित है।

अर्थात नयापन, नवीनता, जो हमेशा नूतन हो। समाचार वह है जिसे हम कल तक नहीं जानते थे। एक बार जान जाएँगे तो वह समाचार नहीं रह जाएगा। नवीनता समाचार का एक विशेष गुण है।

मनुष्य का उद्देश्य नवीन जानकारी प्राप्त करना ही होता है। और समाचार मनुष्य की इसी जिज्ञासा प्रवृत्ति की पूर्ति करती है। एक बार समाचार प्रकाशित व प्रसारित हो जाए तो वह बासी बन जाती है। इस नवीनता के साथ-साथ समसामयिकता का तत्व भी जुड़ा रहता है। अर्थात समकालीन घटनाओं का विवरण ध्यान देने की बात है कि समकालीन समाचारों को नवीनता के कारण ही महत्व प्राप्त होता है। जनता की रुचि नवीनतम समाचारों में होती है।

अनोखापन : समाचार लेखन के संदर्भ में यह उदाहरण हमेशा दिया जाता है कि कुत्ता अगर आदमी को काटता है तो समाचार नहीं होता, लेकिन आदमी कुत्ते को काटता है तो समाचार बन जाता है। समाचार के लिए सामान्य से परे कुछ विशेष, लीक से हटकर, अनोखा व विलक्षण होना अनिवार्य है।

लोक रुचि : समाचार लेखन के तथ्यों में लोक रुचि अथवा जन रुचि का विशेष स्थान है क्योंकि जिस घटना के प्रति बहुसंख्यक लोगों की रुचि हो, सामान्य से परे हो तो वह समाचार बन जाता है। यह भी ध्यान रखना चाहिए कि लोक रुचि के साथ-साथ समाचार लेखन में नैतिकता एवं मूल्यों का हनन न हो। किसी भी घटना, विचार या तथ्य के साथ पाठक का घनिष्ठ संबंध होना चाहिए।

सत्यता : Whole truth and nothing but the truth समाचार का मूल मंत्र है। इसी सत्यता के कारण समाचारों को हार्ड न्यूज़ के रूप में जाना जाता है। अर्थात दिन-प्रतिदिन नई-नई घटनाएँ, दुर्घटनाएँ घटित होती रहती हैं जो कि प्रायः समाचार का रूप धारण कर लेती हैं। (Hard News means minute to minute news and events that are reported immediately)। कल्पना सनसनीखेज़ समाचार पैदा कर सकती है लेकिन सत्य नहीं। इससे पाठक/दर्शक भ्रमित हो सकते हैं। इससे विश्वसनीयता समाप्त हो जाता है।

सत्यता के साथ-साथ समाचारों में संतुलन होना भी अनिवार्य है। सांप्रदायिक, धार्मिक, सामाजिक व सांस्कृतिक मुद्दों पर लिखते समय संतुलन बनाए रखना आवश्यक है। नहीं तो दंगे उत्पन्न हो सकती हैं। अतः समाचार लेखन में सत्यता एवं संतुलन दोनों अनिवार्य तथ्य हैं।

रहस्यपूर्णता : रहस्यपूर्ण घटनाएँ या जानकारियाँ जन सामान्य को आकर्षित करती हैं। समाचार लेखन में यह प्रयास किया जाता है कि किसी भी घटना से जुड़ी हुई गुप्त जानकारी का रहस्य उद्घाटन हो जाए। रहस्यों को जानने की उत्सुकता मनुष्यों में रहती है। अतः यह भी समाचार लेखन का एक महत्वपूर्ण तथ्य है।

परिवर्तन बोध : आज का समय प्रतिस्पर्धा का समय है। हर व्यक्ति सफलता प्राप्त करने की इच्छा रखता है। अतः नई विधि अथवा प्रणाली की जानकारी रखने की कोशिश करता है।

समाचार लेखन की नीवनता इसी तथ्य पर आधारित है कि वह परिवर्तनशीलता की जानकारी प्रदान करे। यह परिवर्तन सामाजिक, राजनैतिक अथवा आर्थिक भी हो सकता है।

बोध प्रश्न

- समाचार का मूल मंत्र क्या है?
- समाचार लेखन के कुछ प्रमुख तथ्यों का उल्लेख करें?

समाचार लेखन के प्रमुख चरण

1. **तथ्यों का संकलन :** यह प्रथम चरण है। तथ्यों को संकलित करते समय संवाददाता को ऊपर उल्लेखित तत्वों का ध्यान रखना चाहिए। संकलन के लिए उसे समाचार स्रोतों पर निर्भर रहना होगा। जिस स्रोत से भी हो सके सभी तथ्यों को संकलित करना चाहिए। तथ्य संकलन में संवाददाता को नवीनता, विलक्षणता, लोक रुचि, सत्यता, परिवर्तनशीलता, रहस्यपूर्णता आदि का विशेष ध्यान रखना चाहिए।
2. **कथा योजना :** कथा की योजना को ठीक तरह से बनाना होगा और फिर लिखना होगा। उसे इस तरह लिखना होगा कि पहले अनुच्छेद में ही घटना की जानकारी प्राप्त हो जाए। फिर कथा की पृष्ठभूमि को बताते हुए कथा का विस्तार किया जाता है।
3. **शीर्षक :** समाचार लिखने के बाद उचित शीर्षक दिया जाता है। यह समाचार का प्राण होता है। इसमें समाचार का सार, घटना तथा स्थिति का संकेत होता है। समाचार का शीर्षक लिखना वास्तव में एक कला है। वस्तुतः शीर्षक के कुछ मुख्य उद्देश्य हैं। पहला उद्देश्य है समाचार को विज्ञापित करना, अर्थात उसे प्रकाश में लाना। दूसरा उद्देश्य है समाचार के मुख्य अंश को सार रूप में प्रस्तुत करना। प्रिंट मीडिया के संदर्भ में समाचार का उद्देश्य है पृष्ठ को साज सज्जा की दृष्टि से सुंदर और आकर्षक बनाना।

समाचार के शीर्षक लिखते समय कुछ पहलुओं पर ध्यान देना आवश्यक है-

1. शीर्षक के अंतर्गत समाचार का मूल भाव निहित हो।
2. शीर्षक संक्षिप्त, सार्थक, सरल और रोचक हो।
3. भूतकाल में नहीं लिखा जाना चाहिए।
4. सिद्धार्थी शीर्षकों का प्रयोग अवांछनीय है।
5. नकारात्मक शिक्षा का कम प्रयोग होना चाहिए। (मीडिया लेखन के सिद्धांत, पृ. 82)

शीर्ष पंक्तियाँ

अपराध समाचार

- अस्पताल पर हमला हमारी गलती: अल कायदा
- छात्रों के साथ बलात्कार का आरोपी शिक्षक गिरफ्तार
- अवैध खनन के आरोप में गिरफ्तार

- ज़मीन की खरीद फरोख्त में धोखाधड़ी का मामला दर्ज
- नासूर बनती बाल तस्करी
- गुजराती समाचार पोर्टल के संपादक पर राजद्रोह के आरोप में मुकदमा दर्ज

राजनैतिक समाचार

- चुनाव आयोग के कड़े तेवर
- राजनैतिक गठबंधन
- नोट की राजनीति
- टाप 3 लीडर
- सरकार ने दी सौगात

खेल समाचार

- कोहली की बल्लेबाजी भारत के लिए चिंता
- पहले दिन का खेल बारिश की भेंट चढ़ा
- शतक नहीं बनाने का मलाल
- गेंद अब भारत के पाले में

बाज़ार समाचार

- सोना उछली
- चाँदी लुढ़का
- बाज़ार गरम
- चीनी तेज
- चाँदी 393 रुपए फिसली

5. **आमुख :** समाचार का प्रथम अनुच्छेद आमुख प्रयोग होना चाहिए। (इंट्रो अथवा लीड) कहलाता है। डा. अर्जुन तिवारी इसे समाचार दुर्ग के प्रवेश द्वार मानते हैं। इसमें छह ककारों का परिचय देना चाहिए। यह समाचार के अनुरूप होना चाहिए तभी पाठक में समाचार पढ़ने के लिए जिज्ञासा जागती है।
6. **समाचार की शेष संरचना :** इसे कथा शरीर माना जाता है। इसमें क्रमबद्ध ढंग से घटनाओं का समायोजन किया जाता है। आमुख को अनुच्छेदों में विस्तार किया जाता है। छोटे-छोटे अनुच्छेदों में समाचार लिखा जाता है।
7. **समाचार की भाषा :** समाचार की भाषा सरल और सुबोध होना चाहिए। लंबे-लंबे मिश्रित वाक्यों के प्रयोग से बचना चाहिए। अप्रचलित शब्दों के प्रयोग से बचना चाहिए। कम शब्दों में अधिक अभिव्यक्ति समाचार का प्राण है।

कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि समाचार लेखन के लिए निम्नलिखित प्रक्रियाओं का विशेष महत्व होता है-

1. समस्त तथ्यों को संकलित करना।

2. कथा की योजना बनाना तथा उसे स्पष्ट रूप से लिखना।

3. समाचार का आमुख (इंट्रो) लिखना।

4. समाचार लिखते समय परिच्छेदों का निर्धारण करना।

5. वक्ता के कथन का अविकल रूप में प्रस्तुत करना।

6. समाचार सूत्रों के संकेतों को उद्धृत करना। आदि। (मीडिया लेखन के सिद्धांत, पृ. 79)

बोध प्रश्न

- समाचार शीर्षक लिखते समय किन बातों पर ध्यान देना आवश्यक है?

3.3.5 समाचार लेखन के सिद्धांत

समाचार लेखन के समय कुछ विशेष सिद्धांतों पर ध्यान देना चाहिए। अमेरिकी पत्रकारिता के प्रवर्तक जोसेफ पुलिजर ने समाचार लेखन के तीन सिद्धांत बनाए हैं - यथार्थता, संक्षिप्तता और रोचकता। आइए छात्रों ! अब हम इन तीनों के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्राप्त करेंगे।

यथार्थता : अर्थात समाचार में वास्तविक स्थिति को ज्यों-का-त्यों प्रस्तुत करना। तथ्यों और आंकड़ों, घटनाओं के स्वरूप, व्यक्तियों के आचरण और विचार आदि की यथावत प्रस्तुत करना।

संक्षिप्तता : समाचार लेखन की सबसे बड़ी कसौटी है। व्यर्थ की किस्सागोई अथवा विवरण की आवृत्ति से बचना चाहिए। उदाहरण के लिए घंटों चलने वाले कार्यक्रमों का समाचार सार रूप में प्रस्तुत करना, मुख्य बिंदुओं को उजागर करना।

रोचकता : इसके बल पर ही समाचार पत्र की लोकप्रियता निर्भर रहता है। यहां रोचकता से अभिप्राय कल्पना या अतिशयोक्ति नहीं। इसका आशय है समाचार लिखते समय पाठक वर्ग की जिज्ञासा को ध्यान में रखते हुए समाचार प्रस्तुत करना।

भारतीय परिप्रेक्ष्य में समाचार लेखन का प्रमुख सिद्धांत है लोक हित का संरक्षण समाचार चाहे किसी भी क्षेत्र का हो संपादक को लोकहित की भावना को वरीयता देनी चाहिए। भय, प्रलोभन, दुविधा आदि से बचना चाहिए। और जिस बात को उजागर करने से लोक का हित होगा उसे निर्भीक रूप से व्यक्त करना चाहिए। यह भी ध्यान रखना चाहिए कि एकदम सच्चे समाचार से लोकहित को क्षति न पहुंचे। अतः संयम बरतना आवश्यक है।

बोध प्रश्न

- समाचार लेखन के प्रमुख सिद्धांत क्या है?

3.3.6 विविध जनसंचार माध्यमों के लिए समाचार लेखन

समाचार पत्र, रेडियो और टेलीविज़न के लिए समाचार लेखन की प्रक्रिया थोड़ी सी अलग होती है, क्योंकि समाचार पत्र में पाठक पढ़कर घटनाओं के बारे में जानकारी प्राप्त करते

हैं। यहां पाठक को सोचने-विचारने के लिए स्पेस मिलता है। रेडियो में सुनकर समाचार ग्रहण करना होगा। टेलीविज़न में तो दृश्य-श्रव्य के माध्यम से जानकारी ग्रहण किया जाता है। आइए, तो हम देखते हैं कि इन विविध जनसंचार माध्यमों के लिए समाचार कैसे लिखा जाता है।

समाचार पत्र के लिए समाचार लेखन

समाचार लेखन की सर्वाधिक लोकप्रिय पद्धति है विलोम स्तूपी (Inverted pyramid) पद्धति। समाचार का आरंभ उस चरमोत्कर्ष से करना चाहिए जिसको लघुकथा लेखक या कहानीकार अंत में प्रस्तुत करता है। इस पद्धति में सर्वाधिक महत्वपूर्ण बात को सबसे उपर, फिर कम महत्वपूर्ण बात को दूसरे और तीसरे अनुच्छेद में तथा सबसे कम महत्वपूर्ण बात को अंत में प्रस्तुत किया जाता है। इस पद्धति को 'उल्टा पिरामिड' भी कहा जाता है।

समाचार लेखन में आमुख का अपना विशेष महत्व होता है। इसे अंग्रेजी में 'इंट्रो कहा जाता है। यह अंग्रेजी 'इंटरोडक्शन' का संक्षिप्त रूप है। इसे समाचार विशेष का लीड कहा जाता है। यह एक तरह से समाचार का प्राण है। किसी भी समाचार के तीन भाग होते हैं - शीर्षक, आमुख और शेष भाग। शीर्षक को आकर्षक बनाना होगा ताकि पाठकों का ध्यान उस ओर आकर्षित हो जाए। शीर्षक के बाद पाठकों का ध्यान आमुख पर ही पड़ता है क्योंकि यह समाचार का पहला अनुच्छेद है। यह समाचार का सार रूप तथा उसके मुख्य तथ्यों को उद्घाटित करता है। इसे समाचार का परिचय भी कहा जा सकता है। इस आमुख में ही छह ककारों का उत्तर मिल जाता है। समाचार लेखन के लिए प्रमुख रूप से इन तत्वों की आवश्यकता होती है - समाचार मूल्यों और घटनाओं को ठीक से पहचानने की शक्ति, काम करने की क्षमता, तथ्यों को सही और रोचक ढंग से प्रस्तुत करने की योग्यता।

बोध प्रश्न

- आमुख या इंट्रो को समाचार का प्राण क्यों कहा जाता है?

रेडियो के लिए समाचार लेखन

रेडियों में समाचार व्यापक रूप से सुना जाने वाला प्रसारण है। समाचार बुलेटिनों की बढ़ती संख्या के अनुरूप लगातार समाचार संकलित करने एवं व्यवस्थित रूप से बुलेटिन के लिए सामग्री उपलब्ध होना चाहिए। इसलिए 'पूल प्रणाली' बनाई गई है। इसका प्रारंभ 1949 ई. में हुई थी। विभिन्न स्रोतों से प्राप्त समाचारों को एकत्र कर लिया जाता है। इन एकत्रित समाचारों को संपादक देखकर उपयुक्त और महत्वपूर्ण समाचारों की कॉपी बनाते हैं। पूल कॉपियां तैयार करने का मुख्य उद्देश्य यही है कि समाचारों में एकरूपता के आधार पर समाचार बुलेटिन तैयार की जाती है। इसके बाद इन्हें विविध भाषाओं के अनुवाद के लिए संबंधित एककों को भेजा जाता है।

रेडियो के लिए समाचार कॉपी तैयार करते समय कुछ बुनियादी बातों पर ध्यान रखना चाहिए। जैसे

1. रेडियो समाचार श्रव्य है। समाचार वाचक पहले समाचार पढ़ता है तब उसे श्रोताओं के पास पहुंचाता है। अतः समाचार कॉपी ऐसे तैयार की जानी चाहिए कि उसे पढ़ने में वाचक को कोई समस्या न हो।
2. प्रसारण के लिए तैयार की जा रही कॉपी को कंप्यूटर पर ट्रिपल स्पेस में टाइप किया जाना चाहिए। पृष्ठ के अंत में कोई पंक्ति अधूरी नहीं होनी चाहिए।
3. जटिल और उच्चारण में कठिन शब्द, संक्षिप्ताक्षर, अंक आदि का प्रयोग नहीं करना चाहिए। अंकों को लिखना हो तो शब्दों में स्पष्ट रूप से लिखना चाहिए।
4. समाचार पत्रों में %, $ जैसे संकेत चिह्नों से काम चल जाता है लेकिन रेडियो में संकेत चिह्नों के स्थान पर प्रतिशत, डालर लिखा जाना चाहिए।
5. समाचारों की भाषा सरल और बोलचाल की होनी चाहिए।
6. वाक्य संरचना में छोटे-छोटे वाक्यों का प्रयोग करना चाहिए।
7. एक वाक्य में एक प्रकार की ही सूचना होनी चाहिए।
8. समाचार प्रामाणिक एवं विश्वसनीयता सहित बनाने चाहिए। इसके लिए छह ककारों को भी ध्यान में रखना चाहिए।
9. निम्नलिखित, उपर्युक्त, क्रमशः आदि शब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहिए।
10. रेडियो समाचार का समय सीमित रहता है। प्रायः 10 मिनट के समाचार बुलेटिन में एक हज़ार शब्द पढ़े जाते हैं। समय की सीमा में सभी महत्वपूर्ण समाचारों को देना रेडियो पत्रकारिता का मुख्य दायित्व है।

समाचार पत्रों के लिए जहां विलोम स्तूपी आकार में समाचार लिखा जाता है वहीं रेडियो समाचार ब्रायलेट डायमेंड (हीराकार) की तरह लिखा जाता है। समाचार के प्रारंभ में प्रमुख समाचार सुनाए जाते हैं। इसके बाद समाचार के प्रमुख अंग को प्रारंभ में ही लिया जाता है। इसे 'इंट्रो या आमुख कहा जाता है। यह ध्यान रखना चाहिए कि अनावश्यक रूप से समाचार लंबा न हो और पुनरावृत्ति भी न हो।

बोध प्रश्न

- रेडियो समाचार लिखने के लिए किस पद्धति का प्रयोग किया जाता है?

टेलीविजन के लिए समाचार लेखन

टेलीविजन दृश्य-श्रव्य माध्यम है। इसमें ध्वनि संकेतों के साथ-साथ चित्रों का संयोजन किया जाता है। टेलीविजन लेखन एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। लेखन के समय कुछ बातों पर ध्यान देना चाहिए-

1. **चित्रात्मकता :** टेलीविजन में ध्वनि के साथ-साथ चित्रों का समावेश किया जाता है। शब्दों का कम-से-कम प्रयोग करके चित्रों का प्रयोग किया जाता है। दृश्य और शब्दों का संयोजन

आवश्यक है। तभी प्रभाव उत्पन्न होगा। यह टेलीविजन का प्राण तत्व है। चित्र स्वतः ही बोलते हैं। ये दर्शकों का ध्यान आकर्षित करते हैं।

2. **संभाषणशीलता :** संभाषण के माध्यम से विश्वसनीयता पैदा करना चाहिए। वार्तालाप दर्शक को रोचक और आकर्षक लगना चाहिए।
3. **तकनीक :** यह दृश्य-श्रव्य इलेक्टरानिक इलेक्ट्रोनिक माध्यम है। वीडियो, साउंड तथा फिल्म तकनीक का प्रयोग अनिवार्य है। चार्ट, नशे, ग्राफिक्स आदि का प्रयोग लेखन को रोचक बनाते हैं।
4. **भाषा :** सरल, सर्वग्राह्य और सहज भाषा का प्रयोग करना चाहिए। छोटे-छोटे वाक्यों का प्रयोग करना चाहिए। वाचन के लिए सुविधाजनक भाषा का प्रयोग करना चाहिए। प्रश्न वाचक वाक्यों में समाचार की शुरूआत नहीं होनी चाहिए।
5. **शैली :** संवाद शैली का प्रयोग करना चाहिए। इससे दर्शक के मन-मस्तिष्क पर प्रभाव पड़ता है।
6. **समाचार वाचन :** भाषा पर अधिकार, ध्वनि संयोजन, उच्चारण में स्पष्टता यदि समाचार वाचक के लिए अपेक्षित है। समाचार की संप्रेषणीयता वाचक की कुशलता पर निर्भर करती है। समाचार वाचक के महत्व को उद्धाटित करते हुए अर्जुन तिवारी लिखते हैं कि ''समाचार वाचक ऐसा कुशल अभिनेता होता है जो दूरदर्शन के पर्दे पर Motion picture play, variety show अथवा stage play का वैदीप्यमान नायक बनता है। यह समाचार को प्रदर्शन के योग्य बनाता है। वह व्यक्तिगत रिपोर्ताज, समाचार लेखन शैली, विविध संवादों की क्रमबद्धता और चित्रात्मकता द्वारा प्रभावपूर्ण प्रस्तुति पर विशेष जोर देता है। वाचक का व्यक्तित्व, उसकी वाणी का उतार-चढ़ाव एवं समाचार वचन की शैली समाचार को जीवंत बनाती है। वाचक के मुस्कुराने, आँख झपकने और भौंहें तानने का दूरदर्शन समाचार पर वही प्रभाव पड़ता है जो समाचार पत्रों के संवाद में सम्मति जोड़ने का होता है।'' (मीडिया लेखन के सिद्धांत, पृ. 193)

रेडियो और टेलीविजन समाचार लेखन का तरीका लगभग एक सा है। टेलीविजन समाचार लेखन की प्रविधि विशिष्ट है जो समाचार पत्र और रेडियो से उसे अलग पहचान प्रदान करती है। टेलीविजन समाचार न ही समाचार पत्रों की तरह विलोम स्तूपी होती है और न रेडियो के समान हीराकार की संरचना। प्रदर्शन टेलीविजन का एक विशेष गुण होता है जो रेडिये में नहीं होता। टेलीविजन में जो कुछ चित्रों से दिखाया जाता है, उसी को शब्दों में बताया जाता है। टेलीविजन में नाटकीयता का विशेष महत्व होता है।

फिर भी टेलीविजन समाचार लेखन के समय कुछ बातों पर ध्यान देना आवश्यक है-

1. समाचार संक्षिप्त तथा पठनीय हो जिससे यह बातचीत की तरह लगे।
2. समाचार सत्यता पर आधारित हो।
3. शब्द और तथ्य को इस तरह प्रस्तुत करना चाहिए कि दर्शक आसानी से समझ सके।
4. आकर्षक चित्रों को दिखाना चाहिए क्योंकि चित्र स्वयं बोलते हैं।
5. चित्रों, चाटों, नक्शों आदि के साथ पढ़ा जाने वाला समाचार तैयार करना चाहिए। यह प्रक्रिया वाॅइस ओवर कहलाती है।
6. टेलीविजन दृश्य-श्रव्य माध्यम है। अतः समाचार आँख और कान दोनों के लिए बनाना चाहिए।
7. समाचार के हर वाक्य में एक ही विचार या चित्र होना चाहिए।
8. कोई भी बात स्पष्ट नहीं होनी चाहिए। भाषा और शब्द का चयन सोच-समझकर करना चाहिए।

बोध प्रश्न

- टेलीविजन समाचार बुलेटिन किस प्रकार लिखा जाता है?

3.4 : पाठ सार

छात्रों ! इस इकाई के अध्ययन से आप जान ही चुके हैं कि किसी घटना या सूचना या जानकारी जब तक नवीन, रोचक और रहस्यपूर्ण हो तब तक वह समाचार है। जैसे ही रहस्य का उद्घाटन हो जाता है वह समाचार नहीं रह जाता। समाचार के संकलनों में संवाददाता, समाचार एजेंसियों और विज्ञप्तियों को आधार बनाया जा सकता है। आज की तकनीकी दुनिया में अनेक संसाधनों का उपयोग किया ज रहा है।

समाचार लिखते समय कुछ बिंदुओं पर ध्यान देना आवश्यक है। जैसे नयापन, समसामयिक घटनाएँ, असाधारण सूचनाएँ, जनहितकारी, रहस्यमयी, खोजी वृत्ति, दुर्घटना, दुःसाहस, विश्वसनीयता, रोचकता, जिज्ञासा, प्रभावपूर्ण तथ्य, छह ककार (क्या, कब, कैसे, क्यों, कहाँ और किसने) आदि। ब्रेल लिपि के माध्यम से दृष्टिहीन व्यक्ति भी पत्र- पत्रिका को पढ़ सकते हैं। इसे स्पर्श लिपि कहा जाता है।

भारत में ब्रेल पत्रकारिता के जनक हैं ठाकुर विश्वनारायण सिंह। संवाददाता विभिन्न स्रोतों से समाचार संकलित करके छह ककारों के आधार पर समाचार लिखकर प्रकाशन हेतु संपादक के पास भेजता है। समाचार पत्र के लिए विलोम स्तूपी प्रक्रिया का प्रयोग किया जाता है। इस प्रक्रिया के अनुसार मुख्य समाचार को सार रूप में सबसे पहले दिया जाता है। इसे आमुख या लीड या इंट्रो कहा जाता है। उसके बाद कुछ कम महत्वपूर्ण समाचार और अंत में सबसे कम महत्वपूर्ण समाचार।

रेडियो समाचार के लिए ब्रायलेट डायमेंड (हीराकार) पद्धति का प्रयोग किया जाता है। रेडियो समाचार का समय सीमित रहता है। प्रायः 10 मिनट के समाचार बुलेटिन में एक हज़ार शब्द पढ़े जाते हैं। समय की सीमा में सभी महत्वपूर्ण समाचारों को देना रेडियो पत्रकारिता का मुख्य दायित्व है। टेलीविजन समाचार लेखन की प्रविधि विशिष्ट है। इसमें वाइस ओवर का प्रयोग किया जाता है।

3.5 : पाठ की उपलब्धियां

इस इकाई अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए-

1. जब तक किसी घटना या सूचना या जानकारी में नवीनता हो, रोचकता हो, रहस्य हो तब तक ही वह समाचार है। जैसे ही रहस्य का उद्घाटन हो जाता है, घटना बासी हो जाती है तो वह समाचार नहीं है।
2. समाचार का मुख्य भाग आमुख या इंट्रो है। इसे लीड भी कहा जाता है। इसमें सार रूप में संपूर्ण समाचार को प्रस्तुत किया जाता है।
3. आदर्श समाचार लेखन में छह प्रश्नों के उत्तर सम्मिलित होते हैं। इन्हें हिंदी में छह ककार कहा जाता है - क्या, कहाँ, कब, कौन, क्यों, कैसे।
4. समाचार पत्र के लिए समाचार लिखते समय विलोम स्तूपी संरचना का प्रयोग किया जाता है।
5. टेलीविजन समाचार में कोई भी बात अस्पष्ट नहीं होनी चाहिए।
6. रेडियो समाचार में जटिल और उच्चारण में कठिन शब्द, संक्षिप्ताक्षर, अंक आदि का प्रयोग नहीं करना चाहिए। अंकों को लिखना हो तो शब्दों में स्पष्ट रूप से लिखना चाहिए।

3.6 : शब्द संपदा

1. अविकल - पूरा का पूरा
2. जिज्ञासा - जानने की इच्छा
3. प्रौद्योगिकी - उद्योग विज्ञान
4. वितरण - बाँटने की क्रिया
5. सनसनीखेज - रोमांचक
6. समसामयिक - वर्तमान समय का
7. हरकारा - संदेशवाचक, दूत

3.7 : परीक्षार्थ प्रश्न

खण्ड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. समाचार क्या है? स्पष्ट करते हुए उसके स्वरूप पर प्रकाश डालिए।
2. समाचार संकलन की विभिन्न पद्धतियों पर प्रकाश डालिए।
3. समाचार लेखन के संवाददाता की भूमिका पर प्रकाश डालिए।
4. समाचार संकलन के स्रोतोंपर संक्षिप्त चर्चा कीजिए।

खण्ड (ब)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. समाचार लेखन में किन बातों पर ध्यान देना चाहिए।
2. एक अंधा व्यक्ति समाचार कैसे प्राप्त कर सकता है?
3. टेलीविजन समाचार लेखन में किन बातों पर ध्यान दिया जाता है?

खण्ड (स)

। सही विकल्प चुनिए

1. भारतीय ब्रेल पत्रकारिता के जनक कौन हैं?

(क) ठाकुर विश्वनारायण सिंह (ख) अंबिका प्रसाद

(ग) लुई ब्रेल (घ) रामचंद्र वर्मा

2. इनमें से कौन समाचार संकलन का माध्यम नहीं है?

(क) संवाददाता (ख) समाचार एजेंसी (ग) विज्ञप्ति (घ) गपशप

3. समाचार का मुख्य भाग क्या है?

(क) आमुख (ख) शीर्षक (ग)स्रोत (घ) घटना

4. समाचार प्रकाशित व प्रसारित करने के लिए नकद भुगतान किया जाता है। इसे क्या कहते हैं?

(क) आमुख (ख) पेड न्यूज़ (ग) स्रोत (घ) घटना

5. शासकीय समाचारों से संबंधित प्रेस विज्ञप्तियाँ क्या हैं?

(क) प्रेस कम्युनिक (ख) पेड न्यूज़ (ग) टेंडर (घ) रिपोर्टिंग

।। रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

1. समाचार लेखन की सर्वाधिक लोकप्रिय पद्धति है ..... पद्धति है।
2. दृष्टिहीन बालकों के लिए ..... वैज्ञानिक हिंदी ब्रेल पत्रिका आरंभ की गई।
3. टेलीविजन का एक विशेष गुण ..... है।
4. प्रमुख शासकीय विषयों पर ..... जारी किए जाते हैं।
5. अमेरिकी पत्रकारिता के प्रवर्तक ..... हैं।

।।। सुमेल कीजिए

(1) आलोक	(क) समाचार का प्राण
(2) हावर्ड न्यूज़ एजेंसी	(ख) अंशकालिक संवाददाता
(3) शीर्षक	(ग) ब्रेल पत्रकारिता
(4) स्ंिट्रगर	(घ) रेडियो समाचार
(5) बुलेटिन	(ड़) 1848

3.8 पठनीय पुस्तकें

1. हिंदी पत्रकारिता - विविध आयाम: वेदप्रताप सिंह
2. मीडिया समग्र: अर्जुन तिवारी
3. मीडिया लेखन के सिद्धांत: एन.सी.पंत
4. भारतीय भाषा पत्रकारिता: सं. दिलीप सिंह और ऋषभदेव शर्मा

इकाई 4: हिंदी के विकास में पत्रकारिता की भूमिका

इकाई की रूपरेखा

4.1 प्रस्तावना

4.2 उद्देश्य

4.3 मूल पाठ: हिंदी के विकास में पत्रकारिता की भूमिका

4.3.1 पत्रकारिता का अर्थ

4.3.2 पत्रकारिता की परिभाषा

4.3.3 पत्रकारिता का उदभव एवं विकास

4.3.4 पत्रकारिता का उद्देश्य

4.3.5 हिंदी के विकास में पत्रकारिता का महत्व

4.4 पाठ सार

4.5 पाठ की उपलब्धियाँ

4.6 शब्द संपदा

4.7 परीक्षार्थ प्रश्न

4.8 पठनीय पुस्तकें

4.1 प्रस्तावना

पत्रकारिता एक कला है। एक ऐसी कला जो दूरियाँ घटाती है, जो रात के अंधेरे में उजाला और शीतलता देने वाले चंद्रमा में उपस्थित गड्ढ़ों को बहुत अच्छे से दर्शाती है। ऐसा माना जाता है कि पत्रकारिता प्रत्येक बात की गहराई तक पहुँचना चाहती है। पत्रकारिता की परिभाषा अलग अलग लोगों ने अलग अलग प्रकार से दिया है।

जैसा कि हम जानते हैं पत्रकारिता के विविध रूप होते हैं, इन्हीं रूपों में से एक महत्वपूर्ण रूप साहित्यिक पत्रकारिता का माना जाता है। साहित्यिक पत्रकारिता में वे साहित्यिक पत्रिकाएँ आती हैं, जिनमें साहित्य की विविध विधाओं का प्रकाशन, नवीन पुस्तकों का सृजन, पुस्तकों की आलोचना, साहित्यिक संगोष्ठियाँ, पुस्तक प्रदर्शनी, लोकार्पण पुरस्कार, कला एवं साहित्य से जुड़े समाचार आदि समाहित रहते हैं। भारत में हिंदी पत्रकारिता की शुरूआत 30 मई 1826 ई. में पंडित जुगलकिशोर की पत्रिका 'उदन्त मार्तण्ड' से मानी जाती है। लेकिन हिंदी साहित्यिक पत्रकारिता का प्रारम्भ भारतेन्दु युग की 1868 ई. में प्रकाशित पत्रिका 'कविवचन सुधा' से माना जाता है।

4.2 उद्देश्य

छात्रों ! इस इकाई अन्तर्गत आप-

- पत्रकारिता के अर्थ को समझ सकेंगे।
- पत्रकारिता की परिभाषा से अवगत होंगे।
- पत्रकारिता के उदभव और विकास को समझ सकेंगे।
- पत्रकारिता के उद्देश्य को समझ सकेंगे।
- हिंदी के विकास में पत्रकारिता के महत्व को समझ सकेंगे।

4.3 मूल पाठ: हिंदी के विकास में पत्रकारिता की भूमिका

4.3.1 पत्रकारिता का अर्थ

लोकतंत्र में पत्रकारिता का विशेष महत्व है। पत्रकारिता जनसेवा का सशक्त माध्यम है। आज के वैज्ञानिक युग में इसकी महत्ता बढ़ती ही जा रही है। यह हमारे आस-पास या देश-विदेश के किसी भी कोने में घटी-घटनाओं को अतिशीघ्रता के साथ दुनिया के हर कोने में पहुँचाती है। पत्रकारिता हमारे जीवन का महत्वपूर्ण अंग बन गई है। आज हम इसके बिना जीने की कल्पना भी नहीं कर सकते हैं। सही तौर पर बोला जाए तो पत्रकारिता हमें समाज के विभिन्न वर्गों, समस्याओं तथा विचारों से अवगत कराती है। मनुष्य की यह प्रवृति रही है कि वह अपने आस पास घटित होने वाली घटनाओं को जानने के लिए सदा उत्सुक रहता है। आज के समय में उसकी जानने की यह इच्छा सिर्फ अपने समाज, राज्य या देश तक सीमित नहीं है, बल्कि वह विश्व की सम्पूर्ण गतिविधियों तक बढ़ गई है। और उसकी यह इच्छा पत्रकारिता द्वारा पूरी होती है। सुबह जब हम आँख खोलते तो हम यह जानना चाहते हैं कि हमारे आस पास देश समाज व दुनिया में क्या क्या घटनाएँ घट रही हैं। और उसकी यह जिज्ञासा को जनसंचार के माध्यम द्वारा पूरा किया जाता है। यह समाज और जीवन के विकास की अनमोल उपलब्धि है, जिसके माध्यम से हम समाज का प्रतिबिम्ब देख सकते हैं।

किसी भी राष्ट्र, समाज को जानने के लिए वहाँ की पत्रकारिता को जानना बहुत ही अधिक ज़रूरी है। इसलिए पत्रकारिता को लोकतन्त्र का एक प्रधान स्तम्भ माना गया है। पत्रकारिता शब्द अँग्रेज़ी जर्नलिज़्म (Journalism) का पर्याय है। जर्नालिज्म शब्द जर्नल से बना है, जिसका अर्थ है दैनिक विवरण। पहले इसको 'मैग़ज़ीन' कहा जाता था, जिसे हिंदी में पत्रिका कहा जाता है। धीरे धीरे इसका अर्थ विस्तार होने लगा तथा पत्रकारिता परिभाषा कोश में इसकी परिभाषा इस तरह दी गई है - ''पत्र पत्रिकाओं, रेडियो, दूरदर्शन आदि के लिए, समाचार लेख, फीचर आदि लिखने तथा सम्पादित करने की कला पत्रकारिता है''

आरम्भ में सरकारी कार्यों की दैनादिन विवरण एवं बैठकों की कार्यवाहियों को जर्नल के अंतर्गत रखा जाता था। कालान्तर में ये विवरण सार्वजनिक होते गए। बीसवीं सदी तक आते-

आते विद्वत्तापूर्ण तथा गंभीर समालोचना के लेख उसमें छपते थे। इस प्रकार समाचारों पत्र पत्रिकाओं के सम्पादन-लेखन को 'पत्रकारिता' या 'जर्नालिज्म' के नाम से जाना जाने लगा।

बोध प्रश्न

- जर्नालिज़्म शब्द का क्या अर्थ है?

4.3.2 पत्रकारिता की परिभाषा

आज के सन्दर्भों में पत्रकारिता का फलक इतना व्यापक हो गया है कि इसे इसे किसी परिभाषा की कसौटी पर कसना बहुत ही कठिन कार्य हो गया है, क्योंकि मानव-जीवन से सम्बन्धित सभी स्थितियाँ घटनाएँ इसके अंतर्गत आती है विभिन्न विद्वानों ने इसे अपने अपने ढंग से परिभाषित किया है।

डॉ० कृष्णबिहारी मिश्र के अनुसार:- पत्रकारिता वह विद्या है, जिसमें पत्रकारों के कार्यों, कत्तव्यों और उद्देश्यों का विवेचन किया जाता है, जो अपने युग और अपने सम्बन्ध में लिखा जाए, वही पत्रकारिता है।''

(2) महादेवी वर्मा के अनुसार:- पत्रकारिता एक रचनाशील विद्या है। इसके बिना समाज को बदलना असम्भव है। अतः पत्रकारों को अपने दायित्व और कर्तव्यों का निर्वाह निष्ठापूर्वक करना चाहिए, क्योंकि उन्हीं के पैरों के छालों से इतिहास लिखा जाएगा।'' जिस कार्य को बड़े से बड़ा योद्धा करने में असमर्थ हो जाए, उसे पत्रकारिता द्वारा आसानी से किया जा सकता। इस संदर्भ में अकबर इलाहाबादी ने कहा-

''खींचो न कमानों को, न तलवार निकालो।
जब तोप मुकाबिल हो तो, अखबार निकालो।''

सी.एम. पोस्ट - ''पत्रकारिता वास्तव में एक चुनौती है, जिसके आवश्यक गुण हैं उत्तरदायित्व, अपनी स्वतन्त्रता बनाये रखना, सभी दबाओं से परे रहना, सत्य प्रकट करना, निष्पक्षता, समान और सभ्य व्यवहार करना।''

श्री प्रेमनाथ चतुर्वेदी के शब्दों में:- ''पत्रकारिता विशिष्ट देश, काल व परिस्थितिगत तथ्यों को अमृर्त, परोक्ष मूल्यों के सन्दर्भ और आलोक में उपस्थित करती है''

मैथ्यू आर्नार्ड:- ''पत्रकारिता शीघ्रता में लिखा जाने वाला साहित्य है''

श्री प्रभात जोशी के अनुसार:- ''कार्यपालिका, न्यायपालिका, विधायिका और प्रेस में यदि मैं चैथा खम्भा हूँ तो पत्रकार होने के नाते मेरा अधिकार और कत्तव्य है कि मैं इन तीनों खम्भों को जज करूँ''

इंदिरा गाँधी के अनुसार:- ''पत्रकारिता जनसेवा है। इसका परम लक्ष्य खबरों को इकट्ठा करना, उन्हें छापना, प्रसारित करना, लोगों को अधिक से अधिक जानकारी देकर उन्हें अच्छे तरीके से जाँच और निर्णय लेने में सहायता प्रदान करना है।''

अतः इन सब परिभाषाओं को देखने के बाद हम यह कह सकते हैं कि वर्तमान समय में पत्रकारिता को सिर्फ समाचार-पत्र पत्रिका तक ही सीमित रखना इसके साथ उचित नहीं होगा, क्योंकि आज के आधुनिक जनसंचार माध्यम आकाशवाणी, दूरदर्शन, सैटेलाइट, प्रसारण इन्टरनेट, वीडियो टेलीफोन, फैक्स इत्यादि पत्रकारिता के आधुनिक रूप है।

बोध प्रश्न

- पत्रकारिता के आधुनिक रूप कौन कौन से हैं?

4.3.3 पत्रकारिता का उदभव एवं विकास

छात्रों ! अब हम जानेंगे के भारत में पत्रकारिता का उदभव और विकास कब से माना जाता है। भारत में पत्रकारिता अथवा समाचार-पत्रों का आरम्भ अंग्रेज़ों के आगमन के बाद शुरू हुआ। अंग्रेज़ों ने धर्म प्रचार की दृष्टि से कलकत्ता के उपनगर में मुद्रणालय खोला 29 जनवरी 1780 भारतीय पत्रकारिता का सुनहरा दिन माना जाता है, क्योंकि उसी दिन 'बंगाल गजेट आॅफ कलकत्ता जनरल एडवरटाइज़र' नामक भारत का पहला समाचार पत्र प्रकाशित हुआ। इस समाचार पत्र के प्रकाशक यूरोप के जेम्स अगस्ट हिकी नामक अंग्रेज़ सज्जन थे। जेम्स अगस्ट हिकी इस समाचार पत्र के प्रकाशक होने के साथ-साथ इसके सम्पादक तथा मुद्रक भी थे। इसलिए इस समाचार पत्र को ''हिक्कीस गजेट'' भी कहा जाता था। यह समाचार पत्र दो पृष्ठों वाला अंग्रेज़ी साप्ताहिक था, और इस समाचार पत्र का नारा था ''Weekly Political and Commercial Paper Open to all Parties but Influenced by none'' अर्थात ''साप्ताहिक, राजनीतिक एवं वाणिज्यिक पत्रिका सभी पार्टियों के लिए है किन्तु प्रभावित किसी से नहीं'' जेम्स आगस्ट हिकी को पत्रकारिता के पितामह भी कहा जाता है। अपने इस समाचार पत्र के माध्यम से उन्होंने हेस्टिंगज सरकार के प्रशासन की आलोचना की तथा त्रुटियों की तरह लोगों का ध्यान आकृष्ट कराया।

'बंगाल गजेट' के प्रकाशित होने के बाद अनेक समाचार-पत्र जन्म लेने लगे। 'इंडिया गजे' (1780), 'कलकत्ता गजेट' ओरिएंटल एडवरटाइजर (1784), बंगाल जर्नल (1785) ओरिएंटल मैगज़ीन अथवा कलकत्त अम्यूसमेंट (1785), कलकत्ता क्राॅनिकल (1786) आदि।

हिंदी का प्रथम समाचार पत्र 'उदंत मार्तड' 30 मई 1826 को कोलकाता से प्रकाशित हुआ। इसके सम्पादक प्रकाशक कानपुर निवासी पं॰ जुगल किशोर शुक्ल थे। 'उदंत मार्तड' ही

हिंदी का सर्वप्रथम समाचार पत्र है इसका प्रमाण 'हिंदी संघ समाचार' पत्रिका के प्रो. डॉ० एस शेषरत्नम् के लेख में मिलता है, जो इस प्रकार है- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार ''यह उदंत मार्तड अब पहले पहल हिन्दुस्तानियों के हित के हेतु जो आज तक किसी ने नहीं चलाया, पर अंग्रेज़ी ओ फारसी ओ बंगले में जो समाचार का कागज़ छपता है उस सुरत उन बोलियों को जानने ''ओ पढ़नेवालों' को ही होता है। इसके सत्य समाचार हिन्दुस्तानी लोग देखकर आप पढ़ और समझ लेय ओ पराई अपेक्षा न करे ओ अपनी भाषा की उपज न छोड़े, इसलिए बड़े दयावान, करूणा और गुणीन के निधान सब के कल्याण के विषय गवर्नर जनरल बहादुरी की आय से ऐसे साहस में चित्त लगाय के एक प्रकार से यह नया ठाट-बाट''। एक वर्ष से कुछ अधिक समय चलकर 'उदंत मार्तड' बंगाल में हिंदी पाठकों की कमी एवं घनाभाव तथा सरकारी सहायता नहीं मिलने के कारण 4 दिसम्बर 1872 में बन्द हो गया। इसके बाद पं. जुगलकिशोर शुक्ल का ही एक और समाचार पत्र सन् 1850 में आया, जिसका नाम था 'सामदंड मार्तड'। भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में प्रेस ने बहुत बड़ी भूमिका का निर्वाह किया। इस काल में बहुत से समाचार पत्र निकाले। सभी का स्तर देशभक्ति से परिपूर्ण था और सबमें समाज सुधार का आह्वान भी था।

सन् 1845 में काशी से 'बनारस अखबार' नामक समाचार पत्र प्रकाशित हुआ, जो हिन्दी भाषी क्षेत्र से प्रकाशित पहला समाचार पत्र था। इस पत्र के सम्पादक मराठी भाषी गोविन्द रघुनाथ थत्ते थे तथा इसका संचालन राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द करते थे। इसकी लिपि देवनागरी थी, लेकिन भाषा अरबी-फ़ारसी प्रधान उर्दू होती थी। सन् 1850 में बनारस से एक और पत्र का प्रकाशन हुआ जिसका नाम था 'सुधाकर' इसके सम्पादक थे तारामोहन मैत्रेय यह पत्र बंगला तथा हिंदी दोनों भाषाओं में प्रकाशित होता था। 1852 में मुंशी सदासुख लाल के सम्पादन में 'बुद्धि प्रकाश' नामक पत्र प्रकाशित हुआ। 1853 में ग्वालियर से 'ग्वालियर गजट' उर्दू हिंदी पत्र प्रकाशित हुआ, जिसके सम्पादक मुंशी लक्षमनदास थे।

इस प्रकार समय पर बहुत सारे पत्र पत्रिकाओं का प्रकाशन भी होता रहा। प्रायः सभी पत्र-पत्रिकाओं का स्वर सरकारी विरोधी ही था।

सन् 1857 में भारतीयों का अंग्रेज़ों के विरूद्ध पहला स्वतन्त्रता संग्राम था, जिसका गहरा प्रभाव पढ़े-लिखे भारतवासियों पर पड़ा। वे अंग्रेज़ी के विरूद्ध खड़े हो गए तथा भारतीय अस्मिता की खोज करने लगे। ऐसे समय में हिंदी के पत्रकार तथा समाज सुधारकों ने समाचार पत्रों को यन्त्र बनाकर अंग्रेज़ों के विरूद्ध धर्म युद्ध शुरू किया। सन् 1857 के उपरान्त कई समाचार-पत्र प्रकाशित हुए।

सन् 1877 में पं. बालकृष्ण भट्ट द्वारा प्रकाशित 'हिंदी प्रदीप' नामक पत्रिका का आरम्भ हुआ। 'देश दुर्दशा सुधार और दीन प्रजा दुःख हरण नागरी वरन- प्रचारन'' यही इस पत्रिका का मूल उद्देश्य था। यह पत्रिका राष्ट्रीयता की भावना से ओतप्रोत थी। अतः इस पत्रिका को सरकार का गुस्सा भी सहना पड़ा। इसके बाद स्वदेशी आन्दोलन को गति प्रदान करनेवाले अनेक समाचार पत्रों का जन्म हुआ जिनमें प्रमुख समाचार पत्र थे- भारतमित्र (1878), सारसुधानिधि (1879) तथा उचितवक्ता (1880) ये तीनों पत्र हिंदी के थे। एवं कोलकाता से प्रकाशित होते थे। इसके साथ अन्य समाचार पत्र भी निकले।

साहित्यिक पत्रिका के रूप में 1901 में 'सरस्वती प्रकाशित होने लगी। इसके सम्पादक आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी थे। इसके बाद अनेक पत्रिकाओं का प्रकाशन हुआ जैसे 'प्रताप', 'कर्मवीर', 'माधुरी', 'मतवाला' तथा 'विशाल भारत' आदि। इन पत्रिकाओं ने साहित्य और संस्कृति की राह पर चलते हुए राजनीतिक जागृति पैदा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 'वीणा', 'चाँद', 'सुधा', 'जागरण', 'हंस', 'विशाल भारत', 'हिन्दु पंच', 'गंगा', 'हिमालय' जैसे स्तरीय पत्रिकाओं ने जनता में साहित्यिक चेतना जगाने का काम किया।

महात्मा गाँधी का राजनीतिक क्षेत्र में पर्दापण होते ही भारतीय हिंदी पत्रकारिता ने करवट बदली। राजनीतिक तथा साहित्यिक दोनों क्षेत्रों में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए। कांग्रेस ने महात्मा गाँधी की अगवानी में हिंदी को राष्ट्रभाषा घोषित किया। राष्ट्रीय आन्दोलन के फलस्वरूप हिंदी पत्रों को सम्पूर्ण स्थान मिला। देश की स्वतन्त्रता के महत्व की सामान्य जनता तक पहुँचाने के लिए हिंदी में अनेक पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन हुआ।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद संविधान में हिंदी को राजभाषा हिंदी घोषित करने के बाद हिंदी पत्र पत्रिकाओं की संख्या बहुत अधिक बढ़ गई थी। हिंदी पाठकों की बढ़ती हुई संख्या देखकर अंग्रेज़ी समाचार पत्र प्रकाशित करने वाली संस्थाएँ भी हिंदी समाचार पत्र प्रकाशित करने लगी। उनमें से प्रमुख है - हिन्दुस्तान टाइम्स ने 'दैनिक हिन्दुस्तान', 'टाइम्स आफ इंडिया' ने 'नवभारत टाइम्स' तथा इंडियन एक्सप्रेस ने 'जनसत्ता नामक समाचार पत्र प्रकाशित किए।

केन्द्रीय हिंदी निदेशालय, नई दिल्ली तथा राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा अनेक पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित होने लगी, जो महिलाओं के हर पहलु को उजागर करने में सार्थक सिद्ध हुई है। उनमें 'मनोरमा', 'वामा', गृहलक्ष्मी, सहेली आदि प्रमुख है। बच्चों की पसंद से सम्बन्धित पत्र-पत्रिकाओं का भी प्रकाशन बहुत अधिक मात्रा में होने इस समय होने लगा था।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि भारतीय पत्रकारिता का आरम्भ और विकास राष्ट्रीय और सामाजिक नव-जागरण के संदर्भ में हुआ। इसके बाद धीरे-धीरे इसका बहुमुखी विकास हुआ।

4.3.4 पत्रकारिता का उद्देश्य

हिंदी पत्रकारिता का जन्म एक महान उद्देश्य को लेकर हुआ था। वह उद्देश्य था समाज सुधार, शासन के दमन का विरोध, भ्रष्टाचार का विरोध। महात्मा गाँधी के अनुसार "पत्रकारिता का मुख्य उद्देश्य सेवा करना है।" पत्रकारिता जनता की सेवा करती है, अन्याय और दमन का विरोध करती है। पत्रकारिता के कुछ मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं।

(1) सूचना प्रदान करना:- पत्रकारिता का पहला उद्देश्य विश्व के किसी भी कोने में घटे प्रमुख समाचारों को लिखित रूप में जनता तक पहुँचाना है। पत्रकारिता क्षण-क्षण में घटनेवाली विश्व भर की घटनाओं की सूचना जन-जन तक पहुँचाती है।

(2) शिक्षित करना:- पत्रकारिता का एक प्रमुख उद्देश्य समाज को शिक्षित करना है। पत्रकार जनता के आँख तथा कान होते हैं। पत्रकार जो देखता है, सुनता है उसे समाचार-पत्रों द्वारा आम जनता तक पहुँचाता है, और आम जनता मीडिया के द्वारा कही गयी बातों को शीघ्र ही मान लेती है। इस तरह पत्रकार को जनसाधारण का गुरू कहा जाता है।

(3) मनोरंजन करना:- पत्रकारिता का एक उद्देश्य मनोरंजन करना होता है। व्यक्ति के जीवन में मनोरंजन एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। समाचार पत्र-पत्रिकाओं में फीचर, लेख, बाल-जगत, युवा-जगत, महिला-जगत, फिल्मी पन्ना, साप्ताहिक परिशिष्ट, कहानियाँ, कविताएँ, संस्मरण, यात्रावृत, फिल्मी हस्तियों तथा विशिष्ट व्यक्तियों का साक्षात्कार साहित्यिक सामग्री एवं विविध स्तंभ प्रकाशित होते हैं। इससे हज़ारों पाठकों का मनोरंजन भी होता है तथा साथ ही साथ उनके ज्ञान की वृद्धि भी होती है।

(4) विश्लेषण:- पत्रकारिता का उद्देश्य केवल समाचार देना नहीं है बल्कि उस समाचार के हर पहलू पर चर्चा करना तथा उसका विश्लेषण करना पत्रकारिता का एक प्रमुख उद्देश्य होता है, जिससे समाज चिन्तन मनन करने पर मजबूर हो जाता है।

(5) सत्य को उद्घाटित करना:- पत्रकारिता का प्रमुख उद्देश्य सत्य को बताना है। जिस गति से हम आधुनिक युग में बढ़ रहे हैं, उसी गति से समाज प्रदूषित हो रहा है। हर जगह धोखा, लूटमार, आगज़नी, हत्या और वारदातें घटित हो रही हैं। ऐसी विषम परिस्थितियों में पत्रकारिता का उद्देश्य यह है कि वह जनसाधारण के सामने सत्य को लाकर रखे और उनका मार्गदर्शन करें।

बोध प्रश्न

- पत्रकारिता के प्रमुख दो उद्देश्य को लिखें।

4.3.5 हिंदी के विकास में पत्रकारिता का महत्व

हम देखते हैं कि हिंदी भाषा पहले केवल साहित्य तक सीमित थी। आज वह विज्ञान और तकनीक से जुड़ गई है। इस कारण से उसके रूप में परिवर्तन होना स्वाभाविक है। पत्र-पत्रिकाओं में आज सरल एवं स्पष्ट शब्दों का प्रयोग किया जाता है। भाषा भावों विचारों के आदान-प्रदान का सहज एवं सशक्त माध्यम है। जैसा कि हम जानते हैं, भाषा में हमेशा परिवर्तन होता रहता है। वह जिस क्षेत्र में जाती है उस क्षेत्र में एक नये रूप में बदलकर हमारे सामने आती है। परिवेश के अनुसार भाषा भिन्न-भिन्न रूप धारण करती है। हिंदी भी एक ऐसी ही भाषा है जो लगभग एक हज़ार वर्षों के इतिहास के निरन्तर परिवर्तित होती आई है।

अगर हम हिंदी भाषा के विकास में पत्र-पत्रिकाओं के योगदान की बात करें तो हिंदी पत्रकारिता का प्रश्न राष्ट्रभाषा और खड़ी बोली के विकास से रहा है। हिंदी भाषा के विकास की पूरी प्रक्रिया हिंदी पत्रकारिता के भाषा विश्लेषण के माध्यम से समझी जा सकती है। इसके विकास में भाषा के प्रति जागरूक पत्रकारों का अपना अपना योगदान भारत में हिंदी पत्रकारिता की शुरूआत 30 मई 1826 ई. में पंडित जुगलकिशोर की पत्रिका 'उदन्त मार्तण्ड' से मानी जाती है। लेकिन हिंदी साहित्यिक पत्रकारिता का प्रारंभ भारतेन्दु युग की 1868 ई. में प्रकाशित पत्रिका 'कविवचन सुधा' से माना जाता है। भारतेन्दु युग से लेकर अब तक अनेक साहित्यिक पत्र पत्रिकाएँ प्रकाशित हो चुकी है। तथा इन पत्रिकाओं ने समाज के वास्तविक चेहरे को जनता के सामने लाने का प्रयास किया है। हिंदी पत्रकारिता का यह सौभाग्य रहा कि समय और समाज के प्रति जागरूक पत्रकारों ने कुछ लक्ष्य के लिए इससे अपने को जोड़ा। और वे लक्ष्य थे जैसे राष्ट्रीयता, सांस्कृतिक उत्थान और लोकजागरण।

हिंदी पत्रकारिता के विकास में कुछ पत्रकारों ने बहुत ही अहम भूमिका निभाई तथा अपने साथ उस समय के अनेक युवकों को इसके लिए प्रेरित किया। वास्तव में यह पूरा समय हिंदी पत्रकारिता का स्वर्गयुग कहा जा सकता है। हिंदी के गौरव को बढ़ाने तथा हिंदी साहित्य को उपयोगी बनाने, हिंदी भाषा और देवनागरी लिपि के महत्व पर टिप्पणी करने तथा इन सबके साथ सामाजिक उत्थान का निरंतर प्रयत्न करने में ये सभी पत्रकारों की बहुत अहम भूमिका रही है।

बालकृष्ट भट्ट - 'हिंदी प्रदीप' के सम्पादक बालकृष्ण भट्ट एक बहुत बड़े साहित्यकार तथा पत्रकार दोनो थे। इन्होंने साहित्य की विभिन्न विधाओं में रचनाएँ की। इस रचनाओं को पढ़ने से यह पता चलता है कि इनकी शैली में बहुत अधिक ओज तय प्रभाव था। सरल और मुहावरेदार हिंदी लिखना उन्हीं से आगे के पत्रकारों ने सीखा। हिंदी पत्रकारिता बालकृष्ट भट्ट जी की कई अर्थों में ऋणी रहेगी। उन्होंने निर्भीक पत्रकारिता को जन्म दिया, दूसरा उन्होंने गंभीर लेखन में भी सहजता बनाए रखने की शैली को अपनाया। तीसरे हिंदी साहित्य की समीक्षा को उन्होंने प्रशस्त

किया और चैथे हिंदी पत्रकारिता पर ब्रिटिश साम्राज्य के अत्याचारों का उन्होंने खुलकर विरोध किया।

भारतेन्दु हरिश्चंद्र - भारतेन्दु हरिश्चंद्र को आधुनिक हिंदी का जन्मदाता माना जाता है। इन्होंने अपने पत्रों और नाटकों के द्वारा आधुनिक हिंदी गद्य को बहुत उच्च शिखर तक ले गए। भारतेन्दु के लिए स्वभाषा की उन्नति ही सभी प्रकार की उन्नतियों का मूलाधार थी। बालाबोधिनी महिलाओं पर केंद्रित हिंदी की पहली पत्रिका है। इसमें बहुत सी महिलाओं ने लिखा और भारतेन्दु की प्रेरणा से अनेक महिलाएँ हिंदी पत्रकारिता के क्षेत्र में आई। ज्ञान विज्ञान की दिशा में हिंदी पत्रकारिता को समृद्ध करने का कार्य भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने पहली बार किया। इन्होंने कविवचन सुधा, हरिश्चंद्र मैगज़ीन, हरिश्चंद्र चंद्रिका आदि पत्रिका का भी संपादन कार्य किया।

ब्राह्मण पत्रिका के सम्पादक प्रताप नारायण मिश्र आधुनिक हिंदी के प्रमुख पत्रकार माने जाते हैं। इन्होंने हिंदी गद्य और पद्य दोनों को नया संस्कार दिया। वे हिंदी की प्रकृति को एक विशिष्ट शैली में ढालने वाले पहले पत्रकार थे।

मर्यादा के सम्पादक मदनमोहन मालवीय का हिंदी के प्रति उनका दृष्टि को बहुत ही दृढ़ था। हिंदी भाषा का ओज उनकी पत्रकारिता में दिखाई देता है।

हिंदी और उर्दू दोनों भाषाओं की पत्रकारिता को प्रतिष्ठित करने वाले साहित्यकार बालमुकुंद गुप्त ने अखबारे-चुनार, हिंदी बंगवासी और भारतमित्र जैसे पत्रों का संपादन किया। ये वास्तव में राष्ट्रव्यापी साहित्यिक विवादों क ेजनक और व्यंग्यात्मक शैली के अग्रदुत पत्रकार थे।

'सरस्वती' पत्रिका के सम्पादक आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी हिंदी पत्रिका के श्लाका पुरूष माने जाते हैं। 'सरस्वती' के माध्यम से उन्होंने हिंदी को नई गति और शक्ति देने का कार्य किया। द्विवेदी जी ने अनेक पत्रकारों और साहित्यकारों को खड़ी बोली हिंदी में लिखने के लिए प्रेरित किया और 'सरस्वती' में छापकर उन्हें स्थापित किया।

छत्तीसगढ़ मित्र, और कर्मवीर के सम्पादक माधव राव सप्रे राष्ट्रीयता की प्रतिमूर्ति थे। उन्होंने भी हिंदी पत्रकारिता को बहुत आगे बढ़ाया। हिंदी के मूर्धन्य कथाकार प्रेमचन्द का एक रूप् उनके जागरूक पत्रकार का भी है। 'माधुरी', 'जागरण' और 'हंस' जैसी पत्रिका का संपादन करके उन्होंने अपनी इस प्रतिमा का भी उत्कृष्ट उदाहरण पेश किया है माखनलाल चतुर्वेदी ने (कर्मवीर, प्रभा, प्रताप) साहित्य समाज और राजनीति तीनों को अपनी पत्रकारिता में जगह दिया है।

अमर शहीद गणेश शंकर विद्यार्थी 'अम्युदय' और 'प्रताप' जैसी पत्रिकाओं का सम्पादन किया तथा हिंदी पत्रकारिता में बलिदान और आचरण का अमर संदेश दिया। हिंदी पत्रकारिता में शिवपूजन सहाय का एक महत्वपूर्ण स्थान है। इन्होंने मारवाड़ी सुधार, मतवाला, माधुरी जैसी पत्रिकाओं का सम्पादन किया।

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी पत्रकारिता में अज्ञेय ने 'प्रतीक', 'नया प्रतीक', 'दिनमान', 'नवभारत टाइम्स' जैसी पत्रिकाओं का सम्पादन किया। इन्होंने साहित्यिक पत्रकारिता को एक नई दिशा की ओर मोड़ा। हिंदी पत्रिका 'धर्मयुग' के सम्पादक धर्मवीर भारती का नाम भी पत्रकारिता की दुनिया में बहुत महत्वपूर्ण है। छठे दशक में हिंदी में विभिन्न नए-नए क्षेत्रों की पत्रकारिता उभर कर आने लगी। जैसे फिल्म पत्रकारिता, खेल पत्रकारिता आदि।

बोध प्रश्न

- सरस्वती पत्रिका के संपादक का नाम बताएँ?

4.4 पाठ सार

पत्रकारिता का हमारे जीवन में बहुत अधिक महत्व है। समाचार पत्रों के बिना हमारे दिन की शुरूआत नहीं होती। पत्रकारिता के द्वारा ही प्रति-क्षण परिवर्तनशील जगत का दर्शन होता है। यह एक रोचक कार्य है। अगर हम हिंदी पत्रकारिता की बात करें तो यह आज विश्व स्तर पर पहुँचकर अपना चमत्कार दिखाने लगी है। आज अंग्रेज़ी समाचार-पत्र निकालने वाली संस्थाएँ भी हिंदी के भी संस्करण निकाल रही है। आज विदेशों में भी हिंदी पत्र पत्रिकाएँ प्रचुर मात्रा में निकल रही है। पत्रकारिता के क्षेत्र में हिंदी के अलग-अलग रूप देखने को मिलते हैं। हिंदी एक अकेली ऐसी भाषा है जिसके अत्यधिक पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित होते और पढ़े भी जाते हैं। अतः पत्रकारिता के क्षेत्र में हिंदी के दृश्य-परिदृश्य तेज़ी से बदल रहे हैं। हिंदी के प्रथम समाचार पत्र 'उदंड मार्तड' और आज के हिंदी समाचार पत्र में ज़मीन आसमान का अंतर देखने को मिलता है। आज पत्रकारिता के क्षेत्र में हिंदी भाषा के बदले परिदृश्य के कारण हिंदी हर एक के दिल में राज कर रही है।

4.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन के उपरांत निम्नलिखित निष्कर्ष उपलब्ध हुए हैं-

- पत्रकारिता जनसेवा का सशक्त माध्यम है।
- पत्रकारिता लोकतं. का एक प्रधान स्तम्भ माना जाता है।
- आज के आधुनिक जनसंचार के माध्यम पत्रकारिता के आधुनिक रूप है।
- उदंत मार्तड हिंदी का पहला समाचार पत्र है।
- भारतीय पत्रकारिता का आरम्भ और विकास राष्ट्रीय और सामाजिक नव जागरण के संदर्भ में हुआ।
- हिंदी पत्रकारिता के विकास में कुछ पत्रकारों ने बहुत ही अहम भूमिका निभाई थी।

4.6 शब्द संपदा

1. पत्रिका - जर्नल, रिसाला
2. पत्रकारिता - Journalism, जर्नलिज़्म

3. प्रकाशन	-	Publication, पब्लिकेशन
4. नवीन	-	नया
5. संगोष्ठी	-	लोगों का सम्मिलन है, जिसमें किसी विषय पर विचार-विमर्श एवं विचार विनियम किया जाता है।
6. पुस्तक प्रदर्शनी	-	किताब मेला
7. लोकार्पण	-	उद्घाटन
8. अतिशीघ्रता	-	बहुत जल्दबाज़ी में
9. प्रतिबिम्ब	-	परावर्तन, परछाई, छाया
10. कार्यपालिका	-	सरकार का वह अंग जो इन नियमों मदों को लागु करता है और प्रशासन का काम करता है।
11. न्यायपालिका	-	व्यक्ति के अधिकारों की रक्षा करती है, विवादों को कानुन के अनुसार हल करती है और सुनिश्चित करती है कि लोकतंत्र की जगह किसी एक व्यक्ति या समूह की तानाशाही न ले इसके लिए ज़रूरी है कि न्यायपालिका किसी भी राजनीतिक दबाव से मुक्त हो।

4.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खण्ड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. पत्रकारिता से आप क्या समझते हैं? विभिन्न विद्वानों द्वारा दी गई पत्रकारिता की परिभाषा को स्पष्ट कीजिए।
2. पत्रकारिता के उदभव एवं विकास पर प्रकाश डालें।
3. हिंदी भाषा के विकास में पत्रकारिता के महत्व पर चर्चा कीजिए।

खण्ड (ब)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. पत्रकारिता के अर्थ को स्पष्ट कीजिए।
2. पत्रकारिता के उद्देश्य पर चर्चा कीजिए।
3. हिंदी पत्रकारिता के विकास पर चर्चा कीजिए।

खण्ड (स)

। सही विकल्प चुनिए

1. भारत में हिंदी पत्रकारिता की शुरूआत मानी जाती है।

(क) 31 अगस्त 1726 (ख) 30 मई 1826

(ग) 20 मई 1926 (घ) 10 जनवरी 1826

2. 'हिंदी प्रदीप' के सम्पादक है।

(क) भारतेन्दु (ख) बालकृष्ण भट्ट

(ग) प्रताप नारायण मिश्र (घ) बालमुकुंद गुप्त

3. भारत का पहला समाचार पत्र प्रकाशित हुआ?

(क) 1870 (ख) 1770 (ग) 1780 (घ) 1980

।। रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

1. हिंदी साहित्यिक पत्रकारिता का प्रारम्भ ..... पत्रिका से माना जाता है।

2. पत्रकारिता के पितामह ..... को माना जाता है।

3. हिंदी का प्रथम समाचार पत्र ..... है।

।।। सुमेल कीजिए

(1) भारतेन्दु हरिश्चंद्र (क) ब्राह्मण

(2) प्रताप नारायण मिश्र (ख) माया

(3) मदनमोहन मालवीय (ग) बालाबोधिनी

4.8 पठनीय पुस्तकें

(1) मीडिया और हिंदी बदलती प्रवृत्तियाँ - रविंद्र जाघव, केशव मोरे - वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली

(2) पत्रकारिता सिद्धान्त और व्यवहार - इन्द्र चन्द रजवार जना प्रकाशन, दिल्ली

(3) पत्रकारिता के विविध आयाम - डॉ० गोविन्द प्रसाद, एवम् अनुपम पाण्डेय, सुलतानपुर (उ.प्र.)

(4) जनसंचार एवं पत्रकारिता - डॉ० रेशमा नदाफ संजय प्रकाशन, नई दिल्ली

इकाई 5 : रेडियो की विकास यात्रा

इकाई की रूपरेखा

5.1 प्रस्तावना
5.2 उद्देश्य
5.3 मूल पाठ : रेडियो की विकास यात्रा
5.3.1 रेडियो की अवधारण
5.3.2 रेडियो की विकास यात्रा
5.3.3 रेडियो का प्रयोग
5.3.4 रेडियो का महत्व
5.3.5 आकाशवाणी सेवा के विविध आयाम
5.3.6 आकाशवाणी की नई सेवाएँ
5.4 पाठ सार
5.5 पाठ की उपलब्धियाँ
5.6 शब्द संपदा
5.7 परीक्षार्थ प्रश्न
5.8 पठनीय पुस्तकें

5.1 प्रस्तावना

वर्तमान समय में मानव जीवन में संचार का बहुत बड़ा महत्व है। समाज में समय-समय पर सूचना, शिक्षा एवं मनोरंजन की पूर्ति के लिए अनेक प्रकार के संचार माध्यमों का सृजन भी हुआ है।

वर्त्तमान समय में हम दुनिया मुठ्ठी में लेकर चल रहे हैं जिसका कारण मोबाइल, इटरनेट की सुविधा है। लेकिन लगभग सौ वर्ष पहले इंटरनेट और मोबाइल नहीं था लेकिन आज हम जो भी समाचार और मनोरंजन कार्यक्रम आसानीसे देख या सुन सक रहे उसका श्रेय इंटरनेट हैं। जब इंटरनेट नहीं था उस समय 19वीं शती की अंतिम दशक में श्रव्य साधन का अविष्कार हुआ है। उसके माध्यम से समाचार प्राप्त करते थे जो श्रव्य साधन है उसे रेडियो कहा जाता है।

5.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से आप –

- रेडियो की अवधारणा से परिचित हो सकेंगे।
- रेडियो की विकासयात्रा के बारे में जान सकेंगे।
- रेडियो की विकास यात्रा के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- रेडियो के बढ़ते नेटवर्क से संबंधी जानकारी से परिचित हो सकेंगे।
- रेडियो के महत्त्व को जान सकेंगे।

5.3 मूल पाठ : रेडियो की विकास यात्रा

5.3.1 रेडियो की अवधारण

रेडियो एक ऐसा साधन है जो दुनिया में सर्वप्रथम समाचार प्रेषित करनेवाला माध्यम हैं। जनसंचार मीडिया में सबसे पहले इलेक्ट्रानिक मीडिया का क्रांतिकारी कदम रेडियो को माना जाता है। रेडियो का शाब्दिक अर्थ है रेडियो तरंगो का प्रयोग करके संचार करने का तकनीकि माध्यम है। रेडियो तरंगे 3 हर्टज (HZ) और 300 गीगाहर्टज(GHz) के बीच आवृति की विद्युत चुम्बकीय तरंगे हैं। यह तरंगे इलेक्ट्रानिक उपकरण द्वारा उत्पन्न होते हैं। इसमें एक एंटीना से जुडा एक ट्रांसमीटर कहा जाता हो तरंगों को विकीर्ण करता है उन्हें रेडियो रिसीवर से जुड़े दूसरे एंटीना द्वारा प्राप्त किया जाता है।

रेडियो शब्द की उत्पति क्रिया शब्द रेडिऐट के आधार पर हुई। रेडियो को प्रारंभ में बेतार टेलीग्राफी के नाम से माना जाता था। क्योंकि इसमें किसी प्रकार का तार नहीं लगाया जाता था। टेलीग्राफिक सन्देश बिना किसी तार से जोड़े वायु के सहारे समुद्र से होकर विद्दुत चुंबकीय तरंगों के रूप में भेजे जाते थे। संदेश सम्प्रेषण के रूप में बीना किसे तार के वायु के द्वारा सन्देश प्राप्त के पास हुबहू पहुँच जाता है।

बोध प्रश्न –

- रेडियो का शाब्दिक अर्थ क्या है ?

5.3.2 रेडियो की विकास यात्रा

रेडियो की स्थापना सन् 1895 में इटली के वैज्ञानिक गुगलीनो मारकोनी ने बेतार संकेतों को इलेक्ट्रोमैग्नेटिक हार्टीजियन तरंगो द्वारा प्रसारित करने में सफलता हासिल कर रेडियो की अवधारणा को जन्म दिया है।

रेडियो की शुरुआत सबसे पहले 1920 में अमेरिका के पिट्सवर्ग में दुनिया का पहला रेडियो प्रसारण केंद्र स्थापित हुआ। 23 फ़रवरी 1920 को मारकोनी की कंपनी ने चैम्सफोर्ड, इंग्लैंड से पहले सफल कार्यक्रम प्रसारण किया। इसके बाद 1922 को लंदन में ब्रिटिश ब्रांडकास्टिंग कंपनी की स्थापना की गई। मारकोनी भी इसके संस्थापकों में से एक सदस्य थे। यही कंपनी आगे चलकर 1927 को ब्रिटिश ब्रांडकास्टिंग कारपोरेशन(BBC) में परिवर्तित किया गया है।

बोध प्रश्न –

- रेडियो की शुरुआत कब हुई ?

भारत में रेडियो की शुरुआत –

8 अगस्त 1921 को टाइम्स ऑफ़ इंडिया के मुंबई कार्यालय ने एक विशेष रेडियो संगीत कार्यक्रम का प्रसारण कर उसकी नींव रखी। इस के बाद 13 नवम्बर 1923 को कोलकत्ता में रेडियो क्लब और 8 जून 1924 को बॉम्बे रेडियो क्लब ने अपना प्रसारण प्रारंभ किया। क्रमशः चेन्नई, करांची तथा रंगून में रेडियो प्रसारण केंदों की स्थपाना की गई। यह प्रसारण केंद्र आर्थिक अभावों के कारण ज्यादा दिन तक चल नहीं पाए. भारतीय जनता में रेडियो के प्रति लोकप्रियता

बढ़ती गई. भारत में रेडियो का प्रारंभ निजी कंपनियों ने किया है. 1921 में संगीत कार्यक्रम को प्रसारण किया गया था. प्रारंभ में भारतीय रेडियो प्रसारण में BBC का बहुत बड़ा सहयोग था. पहले भारत पर अंग्रेज सरकार का राज था वह रेडियो के महत्त्व को समझते थे. भारतीय जनता में रेडियो के प्रसारण में प्रारंभ में कोई दिलचस्पी नहीं दिखायी। क्योंकि देश के स्वाधीनता संग्राम के समस्याओं से जूझ रहा था। लेकिन जनवरी 1931 से बम्बई केंद्र से कार्यक्रमों का प्रसारण होते रहा।

23 फ़रवरी 1946 को आल इंडिया रेडियो, सूचना एवं कला विभाग के अंतर्गत शामिल हो गया था। स्वतंत्र प्राप्ति के बाद आल इंडिया रेडियो का स्वरूप विस्तृत रूप से विकसित हो चूका था। जिसमें 14 रेडियो केंद्र कार्य कर रहे थे। स्वतंत्र भारत में पहला प्रसारण केंद्र 1 नवम्बर 1947 को जालंधर में खोला गया और यहाँ सिलसिला जारी रहा। क्रमशः रेडियो प्रसारण केंद्र की स्थापना- जम्मू, पटना, कटक, अमृतसर, शिलांग, नागपुर, विजयवाड़ा, पणजी, इलाहाबाद, अहमदाबाद, मैसूर, हैदराबाद, विशाखापट्टनम आदि।

भारत स्वतंत्र के बाद 16 नवम्बर 2006 तक रेडियो केवल सरकार के अधिकार में था। इन्हीं केक अधिकार में रेडियो का काफी प्रसार हुआ। जब भारत स्वतंत्र हुआ तब उसके पास छः रेडियो स्टेशन थे और उसकी पहुँच 11 प्रतिशत लोगों तक थी। आज के समय में देखा जाए तो आकाशवाणी के पास 420 रेडियो स्टेशन है और लगभग 99 प्रतिशत लोगों के पास पहुँचा है।

देश के स्वाधीनता के बाद कुछ वर्षों में टेलीविज़न का भी अविष्कार हुआ इसके अविष्कार के कारण रेडियो श्रोता में कमी आ गयी थी। लेकिन जैसे ही एफ. एम रेडियो का आगमन हुआ वैसे ही रेडियो श्रोताओं में बढ़ोत्तरी हुई है। भारत सरकार ने रेडियो का दुरुपयोग न हो इसलिए इसे चलाने की अनुमति आम जनता ओ नहं देना चाहती थी। इसके विपरीत जनता ने आंदोलन किए और सरकार पर दबाव डाला गया था।

एफ. एम रेडियो का सर्वप्रथम प्रसारण सन् 1977 को मद्रास रेडियो से हुआ। उसके बाद सन् 1993 में मुंबई से एफ. एम चैनल की शुरुआत हुई। सन् 1995 में भारतीय सर्वोच्च न्यायालय ने कहा कि रेडियो तरंगों पर सरकार का एकाधिकार नहीं है। इसलिए यू पी ए सरकार ने स्वयंसेवी संस्थाओं को रेडियो स्टेशन खोलने के लिए परवानगी दी। 2002 में एन डी ए सरकार ने शिक्षण संस्थाओं में कैम्पस रेडियो खोलने की अनुमति दी।

बोध प्रश्न –

- भारत में रेडियो की शुरुआत कब हुई ?
- एम एफ की शुरूआत कब हुई है ?

5.3.3 रेडियो का प्रयोग-

रेडियो का प्रयोग शुरूआती में नौका चालाकों की सुरक्षा के लिए किया जाता था। अगर समुद्र तूफानों में नौका फंस जाता है तो तटीय लोगों तक उनकी आवाज पहुँच जाती थी। इसके लिए इसका प्रयोग किया जाता था। क्योंकि उन्हें सुरक्षा प्राप्त हो सकें। इसी के साथ-साथ प्रथम विश्व युद्ध के समय में भी रेडियो का महत्वपूर्ण कार्य था। रेडियो के द्वारा विश्वयुद्ध की गोपनीय सूचनाओं को दूसरों तक पहुंचाने के रूप में प्रयोग किया गया है।

भारत के संदर्भ में रेडियो का प्रयोग सन् 1936 से नियमित रूप से प्रसारण होने लगा। भारत के अधिकांश क्षेत्रों में यह सुविधा पहुँच चुकी है। आकाशवाणी द्वारा जिन क्षेत्रों में प्रसारण किये जा रहे हैं उनमें प्रमुख हैं –

- सूचना तथा समाचार
- शिक्षा
- मनोरंजन
- विज्ञापन

बोध प्रश्न –

- आकाशवाणी प्रसारण के प्रमुखक्षेत्र कौनसे हैं ?

5.3.4 रेडियो का महत्त्व

संचार के क्रांति के दौर में रेडियो का महत्त्व आज भी बरक़रार है। आज के युग में टेलीविज़न, मोबाइल एवं इंटरनेट के जमाने में भी रेडियो का महत्त्व कम नहीं हो रहा है। यह संचार माध्यम दृश्य नहीं है फिर भी इसे श्रोतागण अपना काम करते हुए आसानीसे सुन सकते हैं। रेडियो के माध्यम से संचार, खेल, मनोरंजन आदि कार्यक्रम चलाया जाता है।

आजादी के समय और आजादी के बाद भी रेडियो ने महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। श्रोता रेडियो को बनाय रखने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। आज के समय भी रेडियो का महत्त्व बढ़ते जा रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने जन-संवाद के लिए रेडियो को अपना माध्यम बना और इससे रेडियो की क्षेत्र में क्रांति आयी। 3 अक्टूबर 2014 से अभीतक प्रति रविवार को सुबह 11 बजे 'मन की बात' कार्यक्रम में आकाशवाणी के माध्यम से ज्वलंत मुद्दों की चर्चा करते हैं। इसी प्रकार से छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह ने 13 सितम्बर 2015 से आकाशवाणी के माध्यम से 'रमन के गोठ' का प्रसारण शुरू किया। इस कार्यक्रम का प्रसारण प्रत्येक माह के दूसरे रविवार को सुबह 10 : 45 बजे किया जाता है। इस कार्यक्रम के माध्यम से मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह ने चहुँमुखी विकास के साथ –साथ शिक्षा, स्वास्थ्य एवं स्वच्छता से जुड़े बातों पर चर्चा करते हैं।

रेडियो का शैक्षिक क्षेत्र में भी बड़ा महत्त्व रहा है। रेडियो के माध्यम से पहली बार शैक्षिक का प्रसारण ब्रिटेन में 1924 में आरंभ हुआ। जपान में 1931, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड में 1932 में स्कूली शिक्षा का प्रसारण हुआ है। इसी तरह से हमारे देश में भी रेडियो के माध्यम से शिक्षा का प्रसारण 1938 से शुरू हुआ है।

बोध प्रश्न –

- रमन के गोठ का प्रसारण कब से किया जा रहा है ?
- 'मन की बात' का रेडियो पर कब से प्रसारण किया जा रहा है ?

5.3.5 आकाशवाणी सेवा के विविध आयाम

आकाशवाणी के माध्यम से अनेक कार्यक्रमों को प्रसारित किया जाता है। आकाशवाणी ने अपने कार्यक्रम तीन स्तरों पर प्रसारित करता है जैसे – पहला राष्ट्रीय, दूसरा क्षेत्रीय और तीसरा

स्थानीय। इसके अलावा भी देश-विदेश की समाचार प्रसारण करता है। विविध भारती, विज्ञापन प्रसारण सेवा भी उपलब्ध है।

समाचार सेवा प्रभाग

इसे विश्व का सबसे बड़ा समाचार विभाग माना जाता है। यह अन्तरराष्ट्रीय, राष्ट्रीय और क्षेत्रीय सभी घटनाओं को संघठित करनेवाला बड़ा संघठन है। समाचार संगठन की स्थापना 1937 में फिल्डन ने किया । आकाशवाणी का समाचार सेवा प्रभाग देश और विदेश में रहनेवाले भारतीयों तक समाचार प्रसारित करने का काम करता है।

विदेशी प्रसारण सेवा

आकाशवाणी ने अपने ही देश में समाचार प्रसारित नहीं किया बल्कि अन्य देशों में अपने देश के समाचार और विदेश के समाचार अपने देश में प्रसारित करने का कार्य करता है। भारत और विश्व के अन्य देशों के बीच संपर्क अधिक से अधिक बनाए रखने के लिए 1 अक्टूबर 1939 से विदेश प्रसारण सेवा की शुरुआत की थी इसमें लगभग 27 भाषाओं में और लगभग 100 देशों में रहने वाले भारतीयों के दिलो दिमाग को तरोताजा करते रहते हैं।

विविध भारती

इसे वाणिज्य सेवा भी कहा जाता है। इसकी शुरुआत 1957 में हुई थी। इसका प्रमुख उद्देश्य श्रोताओं को संगीत के माध्यम से मनोरंजन करने के लिए था। इसलिए देश के सभी शहरों में यह सेवा उपलब्ध करायी गई है। इसी के साथ-साथ विज्ञापन प्रसारित करने का भी काम करती है।

बोध प्रश्न –

- विविध भारती की शुरुआत कब हुई ?
- समाचार संगठन की स्थापना किसने की ?

5.3.6 आकाशवाणी की नई सेवाएँ

एफ. एम सेवा

एफ एम सेवा की शुरुआत सातवें दशक से मानी जाती है। एफ एम (फ्रीक्वेंसी माड्यूलेशन) के प्रसारित कार्यक्रम लगभग 70से 80 की। मी. के दायरे में सुने जाते हैं। सबसे पहले एफ एम का प्रयोग सन 1977 में मद्रास रेडियो स्टेशन से 3 किलोवाट के ट्रांसमीटरों के माध्यम से एफ एम को शुरू किया गया । इसके बाद कई नगरों में बढ़ता गया।

प्राइवेट रेडियो चैनल

एफ एम की लोकप्रियता बढ़ने पर प्राइवेट कंपनी वालों का ध्यान एफ एम के ओर केंद्रित हुआ। उन्होंने सरकार से लाइंसेस निकालकर एफ एम की शुरुआत की । प्राइवेट पार्टियों की कुछ सेवा शर्तों के आधार पर एफ एम सेवा खोलने का लाइसेंस दिया गया। जैसे – रेडियो मिर्ची, रेडियो सिटी, रेड एफ एम ऐसे कार्यक्रमों से एफ एम के श्रोताओं में लोकप्रियता बनी रहती है।

सामुदायिक रेडियो

इसे लोकल रेडियो या स्थानीय रेडियो भी कहा जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों और शैक्षणिक संस्थाओं में सूचना और शिक्षा का प्रचार-प्रसार तथा शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति करना है। इस प्रकार के रेडियो की स्थापना तमिलनाडु में अन्नामलाई विश्वविद्यालय ने शुरुआत की थी।

फोन इन कार्यक्रम

इसकी शुरुआत सबसे पहले 10 जनवरी 1993 में दिल्ली से किया गया था। यह सूचना, शिक्षा और मनोरंजन की सेवा में आकाशवाणी सदा आगे रहा है। आकाशवाणी से प्रसारित कार्यक्रम को श्रोताओं ने अच्छी तरह से सुनते हैं लेकिन बीच में बोलने या अपनी जिज्ञासा को पूर्ति नहीं कर सकते इस लिए श्रोताओं को ध्यान में रखते हुए शिक्षा, स्वास्थ्य और जन समस्याओं से जुड़े विषयों पर स्टूडियो में विशेषज्ञों के साथ विचार-विमर्श प्रस्तुत किए जाते हैं। इसके माध्यम से श्रोता अपने बैठे जगह ही अपनी जिज्ञासा, प्रश्न और अपनी किसी प्रकार की समस्या को फोन इन कार्यक्रमों के माध्यम से समाधान फोन इन कार्यक्रमों द्वारा प्राप्त कर सकता हैं।

आकाशवाणी डी. टी. एच सेवा

इस प्रसार भारती की शुरुआत 16 दिसम्बर 2004 को की गई है। इसका उद्घाटन प्रधान मंत्री डॉ। मनमोहन सिंह ने किया । इसके माध्यम से दूरदर्शन के 33 चैनलों और आकाशवाणी के 12 चैनलों को देश के किसी भी भाग में देखा-सुना जा सकता है।

बोध प्रश्न

- फोन इन कार्यक्रम का प्रसारण कब से होने लगा ?
- आकाशवाणी डी. टी. एच सेवा कब शुरू कियी गयी ?

5. 4 : पाठ सार

रेडियो एक ऐसा साधन है जो दुनिया में सर्वप्रथम समाचार प्रेषित करनेवाला माध्यम हैं। जनसंचार मीडिया में सबसे पहले इलेक्ट्रानिक मीडिया का क्रांतिकारी कदम रेडियो को माना जाता है। रेडियो शब्द की उत्पति क्रिया शब्द रेडिऐट के आधार पर हुई। रेडियो को प्रारंभ में बेतार टेलीग्राफी के नाम से माना जाता था। क्योंकि इसमें किसी प्रकार का तार नहीं लगाया जाता था। रेडियो की स्थापना सन् 1895 में इटली के वैज्ञानिक गुगलीनो मारकोनी ने बेतार संकेतों को इलेक्ट्रोमैग्नेटिक हार्टीजियन तरंगो द्वारा प्रसारित करने में सफलता हासिल कर रेडियो की अवधारणा को जन्म दिया है। रेडियो की शुरुआत सबसे पहले 1920 में अमेरिका के पिट्सवर्ग में दुनिया का पहला रेडियो प्रसारण केंद्र स्थापित हुआ। 23 फ़रवरी 1920 को मारकोनी की कंपनी ने चैम्सफोर्ड, इंग्लैंड से पहले सफल कार्यक्रम प्रसारण किया।

भारत में 8 अगस्त 1921 को टाइम्स ऑफ़ इंडिया के मुंबई कार्यालय ने एक विशेष रेडियो संगीत कार्यक्रम का प्रसारण कर उसकी नींव रखी। इस के बाद 13 नवम्बर 1923 को कोलकत्ता में रेडियो क्लब और 8 जून 1924 को बॉम्बे रेडियो क्लब ने अपना प्रसारण प्रारंभ किया। भारत स्वतंत्र के बाद 16 नवम्बर 2006 तक रेडियो केवल सरकार के अधिकार में था।

इन्हीं केक अधिकार में रेडियो का काफी प्रसार हुआ। जब भारत स्वतंत्र हुआ तब उसके पास छः रेडियो स्टेशन थे और उसकी पहुँच 11 प्रतिशत लोगों तक थी। आज के समय में देखा जाए तो आकाशवाणी के पास 420 रेडियो स्टेशन है और लगभग 99 प्रतिशत लोगों के पास पहुँचा है।

रेडियो का प्रयोग शुरूआती में नौका चालाकों की सुरक्षा के लिए किया जाता था। अगर समुद्र तूफानों में नौका फंस जाता है तो तटीय लोगों तक उनकी आवाज पहुँचा जाती थी। आगे चलकर इसका प्रयोग सूचना तथा समाचार ,शिक्षा, मनोरंजन, विज्ञापन आदि में होने लगा। संचार के क्रांति के दौर में रेडियो का महत्त्व आज भी बरक़रार है। आज के युग में टेलीविज़न, मोबाइल एवं इंटरनेट के जमाने में भी रेडियो का महत्त्व कम नहीं हो रहा है। आजादी के समय और आजादी के बाद भी रेडियो ने महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। श्रोता रेडियो को बनाय रखने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने जन-संवाद के लिए रेडियो को अपना माध्यम बना और इससे रेडियो की क्षेत्र में क्रांति आयी। 3 अक्टूबर 2014 से अभीतक प्रति रविवार को सुबह 11 बजे 'मन की बात' कार्यक्रम में आकाशवाणी के माध्यम से ज्वलंत मुद्दों की चर्चा करते हैं।

आकाशवाणी के माध्यम से अनेक कार्यक्रमों को प्रसारित किया जाता है। देश-विदेश की समाचार प्रसारण करता है। विविध भारती, विज्ञापन प्रसारण सेवा भी उपलब्ध है। आकाशवाणी के नई सेवाओं में एफ। एम ,प्राइवेट रेडियो चैनल ,सामुदायिक रेडियो ,फोन इन कार्यक्रम, आकाशवाणी डी. टी. एच सेवा आदि सेवाएँ प्रदान कर रही है।

5.5 : पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित उपलब्धियाँ प्राप्त हुई है –

1. रेडियो की आवधारण में रेडियो शब्द के अर्थ को जान सकें।
2. रेडियो की विकास यात्रा देश एवं विदेश के संदर्भ में को जान चुकें हैं ।
3. रेडियो के महत्त्व को समझ सकें।
4. आकाशवाणी के विविध आयाम के बारे में जानकारी प्राप्त कर चुकें हैं ।
5. आकाशवाणी के नई सेवाओं से परिचित हो चुकें ।

5.6 : शब्द संपदा

1. एंटीना - रेडियो तरंगे भेजने या प्राप्त के लिए एक उपकरण
2. प्रसारण - फ़ैलाने की क्रिया, पसारना, आगे करना, रेडियो, दूरदर्शन आदि द्वारा समाचार, गीत, भाषण आदि दूरस्थ लोगों को सुनाने के लिए विद्युत तरंगों से फैलाना।
3. लोकप्रियता - सामने जन को पसंद आने वाला, लोकप्रिय की भावना
4. अविष्कार - अविष्कृत या निर्मित वस्तु
5. एकाधिकार - एक ही व्यक्ति या संस्था का अधिकार, एकाधिपत्य

6. नौका - नाव, किश्ती (बोट)
7. विज्ञापन - सब लोगों को दी जाने वाली सूचना, इश्तहार
8. प्रभाग - किसी विभाग का उपविभाग
9. तरोताजा - ताजगी और तरावट वाला, हरा-भरा, आनंदित, प्रसन्नचित
10. जिज्ञासा - उत्सुकता, जानने की इच्छा , ज्ञान की चाह, खोज
11. विशेषज्ञ- किसी विषय का ज्ञाता, विशेष ज्ञान रखने वाला व्यक्ति, विद्वान

5.7 : परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग500 शब्दों में दीजिए।

1. रेडियो की विकास यात्रा पर प्रकाश डालिए।
2. रेडियो के महत्त्व को स्पष्ट कीजिए।
3. आकाशवाणी सेवा के विविध आयाम पर प्रकाश डालिए।

खंड (ब)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. रेडियो की अवधारणा को स्पष्ट कीजिए।
2. रेडियो के प्रयोग पर प्रकाश डालिए।
3. आकाश वाणी की नई सेवाएँ को स्पष्ट कीजिए।

खंड (स)

I. सही विकल्प चुनिए

1. रेडियो की स्थापना सर्वप्रथम किस देश में हुई ? ( )

(अ) जपान (आ) भारत (इ) इटली (ई) रूस

2. रेडियो का अविष्कार किसने किया ? ( )

(अ) गुगलीनो मारकोनी (आ) निकोला टेलसा

(इ) विलियम दुबिलिएर (ई) रिजिनाल्ड फेसेंडेन

3. ब्रिटिश ब्राडकास्टिंग कंपनी की स्थापना कब हुई ? ( )

(अ) 1920 (आ) 1927 (इ) 1930 (ई) 1935

4. कोलकत्ता में रेडियो क्लब कब खुला है ? ( )

(अ) 1920 (आ) 1921 (इ) 1922 (ई) 1923

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

1. _____वर्ष में भारतीय सर्वोच्च न्यायालय ने कहा कि रेडियो तरंगों पर सरकार का एकाधिकार नहीं है।
2. प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने _____कार्यक्रम को रेडियो के माध्यम से जनसंवाद करते हैं।
3. 'रमन का गोठ' आकाशवाणी कार्यक्रम _____मुख्यमंत्री ने शुरू किया।
4. भारत में विदेश प्रसारण की शुरूआत _____वर्ष में हुई ।

III. सुमेल कीजिए

1. बी.बी. सी	(अ) 1946
2. कोलकत्ता रेडियो क्लब	(आ) 1924
3. बॉम्बे रेडियो क्लब	(इ) 1923
4. आल इंडिया रेडियो	(ई)1922

4.8 : पठनीय पुस्तकें

1. जनसंचार – डॉ. हरीश अरोड़ा
2. रेडियो पत्रकारिता – काव्या तोमार
3. आधुनिक जनसंचार और हिंदी डॉ. हरिमोहन
4. सामुदायिक रेडियो एक परिचय – श्रीमती इंद्र प्रकाश
5. जनसंचार – राधेश्याम शर्मा

इकाई 6 : रेडियो के कार्यक्रम

इकाई की रूपरेखा

6.1 प्रस्तावना
6.2 उद्देश्य
6.3 मूल पाठ : रेडियो के कार्यक्रम
6.3.1 रेडियो कार्यक्रम क्या है ?
6.3.2 रेडियो के कार्यक्रम
6.3.2.1 परिसंवाद /परिचर्चा
6.3.2.2 डाक्युमेंटरी
6.3.2.3 रेडियो साक्षात्कार
6.3.2.4 रेडियो नाटक
6.3.2.5 समाचार
6.3.2.6 सूचना एवं संदेश
6.3.2.7 आँखों देखा हाल
6.3.2.8 संगीत
6.3.2.9 फोन-इन-कार्यक्रम
6.3.3 रेडियो कार्यक्रमों का महत्त्व
6.4 पाठ सार
6.6 पाठ की उपलब्धियाँ
6.6 शब्द संपदा
6.7 परीक्षार्थ प्रश्न
6.8 पठनीय पुस्तकें

6.1 प्रस्तावना

रेडियो एक ऐसा साधन है जो कहीं पर भी बैठकर कार्यक्रमों को सुन सकता है। यह एक श्रोत माध्यम है। श्रोता अपने कार्य करते हुए रेडियो के कार्यक्रम को आसानीसे सुन सकता है। जैसे – चलती कार, ऑटो, बस, रेल, हवाई जहाज आदि सभी स्थानों पर अर्थात जहाँ चाहे वहाँ सुन सकता है। रादिओं से श्रोता हमेशा जुड़ा रहने के लिए उस पर अलग-अलग प्रकार के कार्यक्रमों को प्रसारित किया जाता है। रेडियो के माध्यम से श्रोता को सूचना, मनोरंजन ज्ञान समाचार प्रसारण करते रहते हैं। इतना ही नहीं बल्कि फोन इन कार्यक्रम, वार्ताएँ, परिचर्चा, क्रिकेट और आँखों देखा हाल आदि कार्यक्रम प्रसारित किया जाता है।

6.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से आप –

- रेडियो के कार्यक्रम के बारे में जान सकेंगे।
- रेडियो के द्वारा किसी विशेष विषय के जान सकेंगे।

6.3 मूल पाठ : रेडियो के कार्यक्रम

6.3.1 रेडियो कार्यक्रम क्या है ?

रेडियो कार्यक्रम निर्धारित प्रसारित होने वाले कार्यक्रम है। रेडियो के माध्यम से श्रोताओं तक सूचनाएँ, संगीत, ज्ञान-विज्ञान के विषयों को प्रसारित करना ही रेडियो कार्यक्रम कहा जाता है। इन कार्यक्रम से श्रोताओं को देश-विदेश की घटनाएँ, मनोरंजन आदि प्राप्त होते हैं। रेडियो के कार्यक्रम राष्ट्रीय, क्षेत्रीय एवं स्थानीय होते हैं।

राष्ट्रीय कार्यक्रम –

इस कार्यक्रम को राष्ट्रीय स्तर पर प्रसारित किया जाता है। इसकी स्थापना 18 मई 1988 से शुरू किया गया था। इसमें हर घंटे पर हिंदी और अंग्रेजी के समाचार प्रसारित किया जाता है। इसके अलावा संसद का प्रश्न काल, सामजिक और शिक्षाप्रद मुद्दों पर आधारित कार्यक्रम प्रसारित किया जाता है।

क्षेत्रीय कार्यक्रम –

यह कार्यक्रम राज्यों की राजधानी से प्रसारित किया जाता है इसमें अपने-अपने राज्य की भाषा में कार्यक्रम प्रसारित किया जाता है। इन कार्यक्रमों में अपने क्षेत्रीय संस्कृति को उभारने के लक्ष्य को ध्यान में रखकर कार्यक्रमों को प्रसारित करते हैं।

स्थानीय कार्यक्रम –

आकाशवाणी ने अपने श्रोताओं को बढ़ाने के लिए स्थानीय कार्यक्रमों को भी प्रसारित करने लगें हैं। एफ एम मोड़ पर स्थानीय रेडियो स्टेशन का निर्माण किया गया है। ऐसे एफ एम की स्थापना भारत में 2008 में 170 स्टेशन को स्थापित किए हैं। छोटे से हिस्से की आबादी को ध्यान में रखकर इन एफ एम की स्थापना की गई है। स्थानीय श्रोताओं की सेवाएँ करने और भागीदारी बढ़ाने के लिए एफ एम रेडियो स्टेशन सतत प्रयत्नशील रहते हैं।

6.3.2 रेडियो के कार्यक्रम

रेडियो पर अनेक प्रकार के कार्यक्रम चलाया जाता है। इन कार्यक्रमों के माध्यम से श्रोताओं में रूचि पैदा करते हैं। निम्नलिखित रेडियो के कार्यक्रम हैं –

6.3.2.1 परिसंवाद /परिचर्चा

इस कार्यक्रम के अंतर्गत जब दो या दो से अधिक व्यक्ति किसी विशेष मुद्दे पर एक दूसरे के विचार व्यक्त करते हैं। इन चर्चाओं में एक दूसरों के विचारों का समर्थन या असमर्थन होते रहता है। ऐसे में विपरीत चर्चा करते समय उनमें मध्यम मार्गी की जिम्मेदारी रेडियो के प्रस्तोता का होता है। वह समय सीमा के भीतर मतभेद बिंदुओं को दरकिनार करके बातचीत को सौहार्द्रपूर्ण और तार्किक व हलकारक बनाता है। ऐसी चर्चाओं से रेडियो श्रोताओं के हित की किसी विषय पर लोगों की अलग सोच सामने लाती है।

6.3.2.2 डाक्युमेंटरी

जिस तरह से सिनेमा होता है उसी तरह से डाक्युमेंटरी होती है। लेकिन सिनेमा बड़ा होता है और उसमें वास्तविक कम कल्पना अधिक होती है। डाक्युमेंटरी में सिनेमा से छोटा होता है और उसमें किसी व्यक्ति या घटना की वास्तविक इतिहास होता है। डाक्युमेंटरीटेलीविज़न पर अधिक दिखाया जाता है लेकिन उसे भी रेडियो पर भी सुनाया जाता है। रेडियो डाक्युमेंटरी में सिर्फ सून सकते हो इसमें ध्वनि प्रयोग होता है। जैसे मनुष्य की आवाज, संगीत तथा ध्वनि प्रभाव। इस तरह से हम कह सकते हैं कि रेडियो डाक्युमेंटरी किसी विशेष व्यक्ति, उनके विचार तथा अनुभव और घटनाओं पर आधारित डाक्युमेंटरी होती है। रेडियो डाक्युमेंटरीतथ्यों पर आधारित होती है। रेडियो डाक्युमेंटरीमें निर्माता को मनुष्य की आवाजें, स्क्रिप्ट, संगीत तथा ध्वनि प्रभावों को प्रभावी तरीके से इस्तेमाल करना पड़ता है।

डाक्युमेंटरी में रचनात्मक ऐतिहासिक कार्य है। इसी के साथ विकासात्मक थीम ऐतिहासिक दृष्टिकोण रीतिरिवाज, संस्कार और पूर्व की महत्वपूर्ण गतिविधियों के अभिलेख को प्रस्तुत करते हैं।

6.3.2.3 रेडियो साक्षात्कार

रेडियो कार्यक्रमो में साक्षात्कार एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत किसी विशेष व्यक्ति से बातचीत है। इस बातचीत के माध्यम से प्रश्नों के द्वारा उनके व्यक्तित्व एवं ज्ञान से परिचित होते हैं। यह कार्यक्रम 10 मिनट, 30 मिनट या 60 मिनट का भी हो सकता है। साक्षात्कारकर्ता साक्षात्कार देनेवाले विशेषज्ञ से कुछ सुचानाएँ एवं प्रतिक्रिया गतिविधियों के बारे में जानकारी लेने की कोशिश करता है। औपचारिक, अनौपचारिक और अर्ध औपचारिक। साक्षात्कार व्यक्तिगत एवं विषयगत होते हैं।

6.3.2.4 रेडियो नाटक

जिस तरह से थियेटर में सिनिमा होता है, उसी तरह से रेडियो नाटक भी होते हैं। लेकिन दोनों नाटकों में फर्क हैं। जिस तरह से सामान्य नाटक में अभिनेता, मंच, सेट परदे और अन्य साधन की गतिशीलता तथा क्रियात्मक होती है। उसी तरह रेडियो नाटक में केवल तीन तत्त्व महत्वपूर्ण होते हैं। जैसे- मानवीय स्वर, संगीत तथा ध्वनि के प्रभाव को ध्यान देना आवश्यक होता है।

6.3.2.5 समाचार

रेडियो कार्यक्रमों में समाचार एक महत्वपूर्ण एवं लोकप्रिय कार्यक्रम है। प्रत्येक घंटे के अंतराल पर समाचार बुलेटिन प्रसारित करते हैं। इस समाचार कार्यक्रम का समय पांच मिनट से लेकर तीस मिनट तक होता है। इससे श्रोताओं को तुरंत अपडेट समाचारों से परिचित होते हैं। देश-विदेश का समाचार अपने श्रोताओं तक पहुचाने का कार्य इस कार्यक्रम के माध्यम से होता है।

6.3.2.6 सूचना एवं संदेश

सूचना यह विशेष रूप से श्रोताओं को सूचित करने के उद्देश्य से दिए गए सन्देश होते हैं। रेडियो की क्रमबद्ध कार्यक्रमों की सूचि या किसी विशेष कार्यक्रम को प्रसारित करने की सूचना

दी जाती है। सूचना देने को उद्घोषणा भी कहते हैं। इस उद्घोषणा में कार्यक्रम प्रस्तोता या उद्घोषक किसी कार्यक्रम की भूमिका रुचिकर बनाकर उसे प्रस्तुतीकरण की जानकारी देता है। रेडियो पर दियी गई सूचना सीधी होती है। वह श्रोताओं को दी जाती है जैसे – मौसम का हाल, यातायात का स्थिति, बाजार मूल्य आदि।

संदेश के माध्यम से किसी विशेष अवसरों पर प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति रेडियो के मार्फ़त लोगों को संदेश देते हैं। जैसे – स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस, विशेष त्यौहार, किसी विशेष व्यक्ति के जन्म दिवस आदि पर संदेश दिया जाता है।

6.3.2.7 आँखों देखा हाल

इस कार्यक्रम में खेल या अन्य गतिविधियों को सीधे प्रसारण के रूप में प्रसारित किया जाता है। रेडियो पर आँखों देखा हाल विभिन्न खेल, समारोह, जैसे- स्वतंत्र दिवस, आयोजन जैसे त्यौहार, मेला, रथयात्रा, परिषद्, राष्ट्रीय नेता की अंतिम यात्रा आदि पर हो सकता है। उदाहरण के तौर पर जब आप क्रिकेट या फुटबॉल खेल को प्रत्येक्ष रूप से स्टेडियम में देख नहीं पाते हैं या नहीं जा पाते हैं, तो उसे आप आसानीसे टेलीविज़न पर देख सकते हैं। लेकिन टेलीविज़न पर किसी एक जगह पर बैठकर देखना पड़ेगा। कहीं से भी नहीं देख सकते हैं। रेडियो एक ऐसा माध्यम है आप जहाँ चाहे वहाँ से सुन सकते हो। और उसे प्रत्येक्ष रूप में महसूस करवाता है। अगर आप यात्रा कर रहे हैं या कहीं बाहर हैं तो आप मैच का आँखों देखा हाल रेडियो पर सुन सकते हैं। इसमें कमेंटेटर द्वारा आपको मैच का पूरा हाल सुनाएगा। वह आपको खिलाडियों की स्थिति तथा मैदान की गतिविधियों की जानकारी देते रहेगा।

6.3.2.8 संगीत

अधिकांश रेडियो श्रोताओं का मनपसंद कार्यक्रम संगीत होता है। रेडियो का मुख्य आकर्षक संगीत को ही माना जाता है। संगीत कार्यक्रम से श्रोताओं में रेडियो के प्रति प्रेम बाधा है। इस कार्यक्रमों को प्रस्तुत करते समय प्रस्तोता को यह बाते ध्यान में रखना आवश्यक है कि उसे विविध संगीत के बारे में प्रर्याप्त ज्ञान होना और उन गाणों में फर्क का पत्ता करना चाहिए। प्रस्तोता ने अपने मन पसंदीदा संगीत को प्रस्तुत करते समय संगीत के बारे में रोचक जानकारी देकर उसे रोचक बनाता है और श्रोताओं में संगीत के प्रति जिज्ञासा को जागृत करता है। और श्रोताओं को मनोरंजन करता है।

6.3.2.9 फोन-इन-कार्यक्रम

इस कार्यक्रम से श्रोता सीधा रेडियो कार्यक्रम प्रस्तोता से सीधे बातचीत करता है इसे ही रेडियो पर प्रसारित किया जाता है। अन्य श्रोता भी इन दोनों की संवाद सुनते हैं। ऐसे कार्यक्रमों से श्रोताओं के मन की बात, शिकाए, अनुरोध, प्रश्न, प्रशंसा आदि अभिव्यक्त कर सकते हैं। इस कार्यक्रम में श्रोताओं को एक फोन नंबर दिया जाता है। उस नंबर पर फोन करते हैं। विशेषज्ञ या प्रस्तुत कर्ता से सीधा संवाद करते हैं। फोन इन कार्यक्रम के माध्यम से संगीत कार्यक्रम को भी श्रोता अपने मन पसंदीदा संगीत को सुन सकता है।

6.3.3 रेडियो कार्यक्रमों का महत्त्व

रेडियो एक ऐसा प्रसारण साधन हैं जो कम खर्च में रेडियो श्रोताओं को बहुत सारे कार्यक्रम को प्रसारित करता हैं। रेडियो कार्यक्रमों के माध्यम से श्रोताओं को ज्ञानवर्धन बना देता हैं। रेडियो पर चलने वाले कार्यक्रम को यात्रा करते समय या कहीं से भी सुन सकते हैं। अलग-अलग रेडियो कार्यक्रमों के माध्यम से श्रोताओं को ज्ञान एवं मनोरंजन प्राप्त करते हैं। रेडियो कार्यक्रमों के लिए लेखन एवं वाचन महत्वपूर्ण होता है। जब रेडियो नाटक कर रहे होते तो उसमें मानवीय स्वर अत्यंत आवश्यक हैं। न कि किसी प्रकार की सजावट की आवश्यकता है। अनेक कार्यक्रमों के माध्यम से श्रोताओं को अनेक सेवाएँ प्रधान करता हैं।

6. 4 पाठ सार

रेडियो कार्यक्रम प्रतिदिन प्रसारित होते रहते हैं। वे श्रोताओं को सूचना, संगीत, ज्ञान-विज्ञान आदि से परिचित करवाते हैं। रेडियो के कार्यक्रमों के द्वारा श्रोताओं को देश-विदेश, संस्कृति, घटनाओं की जानकारी देने का उद्देश हैं। इसी के साथ उनका मनोरंजन भी किया जाता है। रेडियो कार्यक्रम राष्ट्रीय, क्षेत्रीय एवं स्थानीय होते हैं।

रेडियो के कार्यक्रम अनेक एवं अलग अलग रूप में प्रस्तुत किया जाता है। परिसंवाद या परिचर्चा कार्यक्रम के माध्यम से किसी विशेष विषय के मुद्दों से परिचित किया जाता है। उस विषय के गुण दोष के बारे में जान सकें। डाक्युमेंटरी यह कार्यक्रम आम तौर पर दृश्य समझा जाता है लेकिन रेडियो द्वारा इसे श्रोताओं को सुनाते हैं। इस में ध्वनि उच्चारण का महत्त्वपूर्ण होता है। यह डाक्युमेंटरी कम से कम 20 से 30 मिनट की होती है। रेडियो साक्षत्कार कार्यक्रम के माध्यम से श्रोताओं को किसी विशेष व्यक्ति से परिचित या उनके ज्ञान के बारे में जानकारी केलिए इस कार्यक्रम को प्रसारित करते हैं।

रेडियो नाटक कार्यक्रम के माध्यम से श्रोताओं को रेडियो द्वारा नाटक को सुनाया जाता है। इसमें ध्वनियों को विशेष ध्यान दिया जाता है। रेडियो का मुख्य कार्य तो समाचार, सूचना एवं संदेश देना है इसलिए रेडियो कार्यक्रम में इनका महत्त्व हैं।

आँखों देखा हाल यह एक ऐसा कार्यक्रम है जो लाइव में रेडियो द्वारा प्रसारित किया जाता है। जिस तरह से वहा की घटनाएँ होती है उसी तरह से रेडियो में सुनाया जाता है। रेडियो कार्यक्रमों में ज्ञान विज्ञान के साथ मनोरंजन को भी ध्यान दिया जाता है इसी के लिए संगीत कार्यक्रम महत्वपूर्ण होता है। इसमें नए पुराने एवं शास्त्रीय संगीत सुनाया जाता है। फोन इन कार्यक्रम के माध्यम से श्रोताओं को किसी विशेष व्यक्ति या रेडियो प्रस्तोता से सीधा बात कर सकता है और इन दोनों का संवाद सीधा रेडियो पर प्रसारण होता है।

अंततः रेडियो कार्यक्रमों के माध्यम से श्रोताओं को रेडियो से बंधे रखने के लिए और बैठे जगह पर ज्ञान-विज्ञान, देश-विदेश और मनोरंजन प्राप्त करने के लिए अनेक कार्यक्रमों का नियोजन किया जाता है। इन कार्यक्रमों के माध्यम से श्रोता बैठे जगह या किसी कार्य को करते हुए असानीसे सुन सकता हैं।

6.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित उपलब्धियाँ प्राप्त हुई है –

- रेडियो कार्यक्रमों के बारे में ज्ञान प्राप्त हुआ है।
- रेडियो श्रोताओं के लिए अनेक कार्यक्रमों के माध्यम से ज्ञानवर्धन एवं मनोरंजक घटकों की जानकारी प्राप्त हुई।
- रेडियो कार्यक्रम का महत्त्व के बारे में जानकारी प्राप्त हुई।

6.6 शब्द संपदा

1.	शिक्षाप्रद	-	शिक्षा दायक, ज्ञानप्रद
2.	परिसंवाद	-	दो या दो से अधिक व्यक्तियों में किसी बात पर होने वाली तर्क सगंत और विचारपूर्ण बातचीत (डिस्कशन)
3.	औपचारिक	-	उपचार के रूप में होने वाला, उपचार संबंधी
4.	अभिनेता	-	अभिनय करनेवाला (एक्टर)
5.	बुलेटिन	-	सूचना पत्र, विज्ञाप्ति (पत्रकारिता)
6.	प्रसारण	-	फैलाने की क्रिया, फैलाना, प्रसाराना
7.	उद्घोषणा	-	सार्वजनिक जानकारी के लिए दी जाने वाली सूचना
8.	समारोह	-	उत्सव, शुभ कार्यक्रम (फंक्शन)
9.	कमेंटेटर	-	व्याख्याकार, समीक्षक, कमेंट करनेवाला व्यक्ति, भाष्यकार
10.	प्रस्तोता	-	प्रस्तुत करनेवाला व्यक्ति, प्रस्ताव करनेवाला व्यक्ति
11.	प्रशंसा	-	तारीफ़, बढाई, गुणों का बखान, ख्याति
12.	ज्ञानवर्धन	-	ज्ञान में बढ़ोत्तरी होना या ज्ञान में वृद्धी होना
13.	मनोरंजन	-	मन का रंजन, मन का खुश होना

6.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग600 शब्दों में दीजिए।

1. रेडियो कार्यक्रमों का विस्तार से समझाए।
2. रेडियो द्वारा कौन- कौनसे कार्यक्रम प्रसारित किया जाता है।
3. रेडियो कार्यक्रमों का महत्त्व बताइए।

खंड (ब)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. रेडियो कार्यक्रम क्या है ?
2. परिसंवाद और साक्षात्कार रेडियो कार्यक्रम को स्पष्ट कीजिए।
3. रेडियो कार्यक्रम में समाचार और सूचना एवं संदेश कार्यक्रम को स्पष्ट कीजिए।
4. आँखों देखा हाल रेडियो कार्यक्रम को समझाए।

खंड (स)

I. सही विकल्प चुनिए

1. प्रत्येक्ष खेलों को सीधा प्रसारण करने वाला रेडियो कार्यक्रम कौनसा है? ( )

   (अ) आँखों देखा हाल (आ) रेडियो नाटक

   (इ) रेडियो साक्षात्कार (ई) कोई नहीं

2. 2008 में रेडियो स्टेशन किसने स्थापित किए हैं? ( )

   (अ) 100 (आ) 150 (इ) 170 (ई) 190

3. रेडियो के कार्यक्रम प्रसारित करने के कितने स्तर हैं ? ( )

   (अ) एक (आ) दो (इ) तीन (ई) चार

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

1. स्थानीय कार्यक्रम 2008में _____ स्टेशनों की स्थापना की थी ।
2. सूचना देने को _____भी कहा जाता है।
3. रेडियो श्रोता रेडियो कार्यक्रम प्रस्तोता को सीधा बात _____ कार्यक्रम के द्वारा करता है.

III. सुमेल कीजिए

1. रेडियो नाटक	(अ) मनोरंजन
2. संगीत	(आ) मानवीय स्वर
3. साक्षात्कार	(इ) खेलों का सीधा प्रसारण
4. आँखों देखा हाल	(ई) किसी विशेष व्यक्ति के साथ मुलकात

4.8 पठनीय पुस्तकें

1. जनसंचार – डॉ. हरीश अरोड़ा
2. रेडियो पत्रकारिता – काव्या तोमार
3. आधुनिक जनसंचार और हिंदी डॉ. हरिमोहन
4. सामुदायिक रेडियो एक परिचय – श्रीमती इंद्र प्रकाश
5. जनसंचार – राधेश्याम शर्मा

इकाई -7 रेडियो लेखन -1 वार्ता एवं फीचर

इकाई की रूपरेखा

7.1 प्रस्तावना
7.2 उद्देश्य
7.3 मूलपाठ : रेडियो लेखन -1 वार्ता एवं फीचर
7.3.1 रेडियो का संक्षिप्त इतिहास
7.3.2 रेडियो लेखन और उसके क्षेत्र
7.3.3 रेडियो लेखन में ध्यान रखने योग्य बातें
7.3.4 रेडियो में प्रयुक्त कुछ महत्वपूर्ण शब्द
7.3.5 रेडियो से प्रसारित होने वाले कार्यक्रम
7.3.6 वार्ता : सामान्य परिचय और वार्ता लेखन
7.3.7 फीचर : सामान्य परिचय और फीचर लेखन
7.4 पाठसार
7.5 पाठ की उपलब्धियाँ
7.6 शब्द संपदा
7.7 परीक्षार्थ प्रश्न
7.8 पठनीय पुस्तकें

7.1 प्रस्तावना

जनसंचार माध्यम में समाचारपत्र, रेडियो, दूरदर्शन आदि आते हैं। रेडियो पर विभिन्न तरह के कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं। समाचार, गीत-संगीत, ज्ञान-विज्ञान के कार्यक्रम, रेडियो नाटक, रेडियो रुपक या फीचर, झलकी, एकांकी, वार्ता आदि। सभी की अपनी विशेषताएँ हैं। रेडियो लेखन रेडियो की सीमा, उसके श्रोताओं की पसंद, पहुँच आदि को ध्यान में रखते हुए तैयार किए जाते हैं। उन सबकी अपनी उपयोगिता है। यहाँ हम रेडियो लेखन के अंतर्गत वार्ता और फीचर पर विचार करेंगे।

7.2 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप-

- रेडियो का संक्षिप्त इतिहास जान सकेंगे।
- आकाशवाणी से प्रसारित होने वाले विभिन्न कार्यक्रम को जान सकेंगे।
- रेडियो लेखन और उसके क्षेत्र को जान सकेंगे।
- रेडियो लेखन में ध्यान रखने वाली बातों को बता सकेंगे।
- वार्ता का सामान्य परिचय जान सकेंगे।
- वार्ता लेखन के विषय में जान सकेंगे।
- फीचर का सामान्य परिचय समझ सकेंगे।
- फीचर लेखन के विषय में बता सकेंगे।

7.3 मूलपाठ : रेडियो लेखन -1 वार्ता एवं फीचर

रेडियो लेखन : वार्ता एवं फीचर शीर्षक पर हम विभिन्न उपशीर्षकों के अंतर्गत विचार कर रहे हैं-

7.3.1 रेडियो का संक्षिप्त इतिहास

प्रत्येक व्यवस्था का अपना कुछ इतिहास होता है। हमारा समाज धीरे-धीरे आगे बढ़ता है। रेडियो हमारे जीवन के साथी के समान हो गया है। इसके अलग अलग कार्यक्रम इसमें जान डालते हैं। जहां तक रेडियो के इतिहास की बात है तो इसका इतिहास हमारे देश की आजादी के पहले से शुरू होता है। विश्व में रेडियो का आविष्कार 1901 में हुआ था। पहला रेडियो कार्यक्रम का प्रसारण जून 1923 में मुंबई के रेडियो क्लब ने किया। डॉ. शंकर लाल शर्मा लिखते हैं 'सर इब्राहिम रहमतुल्ला की अध्यक्षता एवं सुल्तान चिनाय के निर्देशन में इंडियन ब्रॉड कास्टिंग कंपनी की स्थापना के साथ भारत में विधिवत प्रसारण बंबई से 18 जुलाई, 1927 को प्रारंभ हुआ।'

बोध प्रश्न

- भारत में रेडियो से विधिवत प्रसारण कैसे और कब शुरू हुआ?

1930 में भारत सरकार ने इस प्रसारण सेवा का अधिग्रहण करके 'इंडियन ब्राड कास्टिंग सेवा' शुरू की। 5 मई 1932 से 'रेडियो स्टेट मैनेजमेंट' सरकारी हाथों में आ गया। 9 जनवरी 1936 को पहला प्रसारण केंद्र दिल्ली में खोला गया। धीरे-धीरे बंबई (अब मुंबई), कलकत्ता (1927) (अब कोलकाता), लाहौर(1928), मद्रास (1930) (चेन्नई) में केंद्र खोले गए। 8 जून 1936 में इंडियन ब्राडकास्टिंग की व्यवस्थित शुरुआत हुई। डॉ. पी. लता लिखती हैं 'जब भारत स्वतंत्र हुआ तब आकाशवाणी के दिल्ली, बंबई, कलकत्ता, मद्रास, तिरुचिरापल्ली और लखनऊ आदि छह प्रसारण केंद्र थे।... आज संसार में आकाशवाणी का व्याप्ति -क्षेत्र 91.42% है और यह संसार के 99.13% लोगों की सेवा कर रही है।

बोध प्रश्न

- डॉ. पी. लता के अनुसार जब भारत स्वतंत्र हुआ तब भारत में कहाँ-कहाँ प्रसारण केंद्र थे?

भारत की 24 भाषाओं और 146 बोलियों में आकाशवाणी प्रसारण – कार्य कर रही हैं। इस स्वदेशी सेवा के अतिरिक्त वह विदेश-सेवा के रूप में 27 भाषाओं (17 देशी भाषाओं और 10 विदेशी भाषाओं) में कार्यक्रमों का प्रसारण करती है। 1939 में विदेशी प्रसारण सेवा के अंतर्गत पश्तो भाषा में इसे प्रारंभ किया गया। 1941 में इसका विस्तार करके जापान, और दक्षिण पूर्व एशिया के देशों तक कर दिया गया। देश के उत्थान में आकाशवाणी की महती भूमिका है।

1954-1964 के मध्य अखिल भारतीय संगीत, वार्ता, समसामयिक / साहित्य एवं गौरवपूर्ण राष्ट्रीय कार्यक्रमों का प्रसारण शुरू हो गया। रेडियो रूपक, रेडियो फीचर एवं डॉक्यूमेंट्री आदि भी इसी समय रेडियो के मनोरंजन कार्यक्रमों की श्रेणी में आ गए। मनोरंजक

कार्यक्रमों में से एक बहुत लोकप्रिय कार्यक्रम विविध भारती 3 अक्तूबर 1957 को प्रारंभ हुआ। 14 मई 1966 को आकाशवाणी की उर्दू सेवा ने आकाशवाणी की लोकप्रियता में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। 1977 में एफ. एम. ट्रांसमीटर शुरू होने से आकाशवाणी को नई दिशा मिली। 1988 में प्रसार भारती लोकसभा में रखा गया। इसको तत्कालीन प्रधानमंत्री जी ने 19 मई, 1988 को राष्ट्र को समर्पित किया।

सूर्यप्रसाद दीक्षित लिखते हैं 'इस समय भारत में लगभग 300 ट्रांसमीटर हैं और लगभग 165 एफ. एम. केंद्र हैं। आकाशवाणी 20 चैनलों के लिए रिले (प्रसारण) कर रही है। प्रसार भारती, स्काई रेडियो और उपग्रह इनसेट-2 के कारण अनेक प्रकार की सेवाओं का परिविस्तार किया गया है।'

7.3.2 रेडियो लेखन और उसके क्षेत्र

रेडियो एक श्रव्य माध्यम है। इस पर प्रसारण हेतु विभिन्न कार्यक्रम होते हैं जैसे- समाचार, फीचर, वार्ता आदि, उसके हेतु किया गया लेखन 'रेडियो लेखन' कहलाता है। यह एक सर्जनात्मक कार्य है और उसका प्रसारण एक तकनीकी कार्य है। साथ ही यह रोजगारपरक कार्य भी है।

बोध प्रश्न

- रेडियो लेखन का क्या तात्पर्य है?

रेडियो पर विभिन्न तरह के कार्यक्रम होते हैं, जिसके बारे संक्षेप में ऊपर चर्चा आ चुकी है।

रेडियो की अपनी भाषा होती है। ये आम बोलचाल की भाषा से अलग होती है। हमें इस भाषा को समझना आवश्यक है। यह रेडियो तरंगों में तैरकर हजारों किलोमीटर का सफर तय कर श्रोताओं के कानों तक पहुँचती है। ये सब तकनीकी चीज़ें हैं। प्रोड्यूसर के पास विभिन्न तरह की ध्वनियों का पूरा रिकार्ड के रूप में समूह होता है। उसमें विविध ध्वनियाँ संकलित होती हैं। उन्हें वह अवसर और उपयोगिता को देखते हुए इस्तेमाल करता है। इस भाषा के तीन निर्माता हैं।

1-स्पीच (वाक्)
2-साउन्ड इफेक्ट एंड म्यूजिक (संगीत एवं ध्वनि प्रभाव)
3-साइलेन्स (मौन या चुप्पी)

1-स्पीच (वाक्)

इसमें ध्वनि प्रवाहों को सार्थक अर्थ देते हुए विशेष तरह से उच्चरित करना होता है। रेडियो में उच्चारण का विशेष महत्व होता है। इसमें बोलने के लहजे से उसका अर्थ समझ में आता है। इसमें बोलने में लहजे का प्रयोग बदलकर अर्थ बदलकर बिंबायित करने की क्षमता भी होती है। इसे पिच (pitch), टेम्पो (tempo) और टोन (tone) जिन्हें हिंदी में क्रमशः सुर (उतार-चढ़ाव), ताल और स्वर कहते हैं भी प्रभावित करते हैं।

बोधप्रश्न

- रेडियो में स्पीच का क्या अर्थ है?

2-साउन्ड इफेक्ट एंड म्यजिक (संगीत एवं ध्वनि प्रभाव)

ध्वनि प्रभाव से तात्पर्य है रेडियो भाषा पर ध्वनि तरंगों एवं तत्संबंधी संगीत का प्रभाव । क्योंकि रेडियो श्रव्य होता है इसलिए यहाँ श्रोता के मन मस्तिष्क में अनुभवजन्य बिंबों को लाना होता है। बैकग्राउंड में म्यूजिक को डालकर इस कार्य को और भी सरल बनाया जाता है। इसे और सरल तरीके से समझते हैं- मान लीजिए की हमें किसी बाजार की भीड़भाड़ वाली जगह का बिम्ब श्रोता को अनुभव करवाना है। तो हम बहुत सारे लोगों के आने जाने की आवाज, उनकी बातचीत के शोरगुल को सुनाएंगे। इसके साथ-साथ सामान बेचने वालों की ध्वनि को भी सुनाएंगे। साथ ही साथ बीच- बीच में दो पहिया वाहनों के आने जाने की आवाज को भी सुनाना होगा। इससे श्रोता यह अनुभव कर लेगा कि किसी बाजार का अनुभव कराया जा रहा है। साथ ही इस बाजार में अभी काफी भीड़ है। इसी तरह से यदि हमें प्रातःकाल (सुबह) को बताना है तो रेडियो पर चिड़ियों के चहचहाने की आवाज, मंदिर से घंटा बजने की आवाज, मस्जिद से फ़जर के वक़्त की अज़ान की आवाज, मुर्गे के बांग देने की आवाज़ सुनाई जाती है। जिससे सुनने वाले को ये अहसास हो जाता है कि सुबह हो गई है। इसी तरह से यदि विवाह को बताना है तो शहनाई, मंत्रोच्चार, या निकाह हो रहा है तो काजी की आवाज और दुल्हन की सहेलियों की हंसने और मुबारक हो मुबारक हो कि आवाज सुनाई जाती है।

रेडियो नाटक आदि में वाचिक अभिनय का भी विशेष महत्व होता है। जैसे हास्य, रोदन आदि से संबंधित ध्वनियाँ उफ़, छिः , उहूँ, अट्टहास आदि।

बोधप्रश्न

- रेडियो पर किसी कार्यक्रम में श्रोताओं को प्रातःकाल को बताने या अहसास कराने के लिए किस तरह की ध्वनि प्रसारित करनी होती है?

3-मौन या चुप्पी

इसमें उच्चारण को कुछ पल के लिए रोक दिया जाता है। मौन धारण कर लिया जाता है। इस मौन धारण में जो थोड़ा सा समय मिलता है इस समय में श्रोता सोचता है। उसकी कल्पना शक्ति को स्वतंत्रता मिलती है। इससे वह वक्ता के मौन का अर्थ आसानी से निकाल पाता है।

रेडियो लेखन के कई क्षेत्र हैं जैसे- रेडियो समाचार, रेडियो नाटक, रेडियो फीचर, रेडियो वार्ता, विज्ञापन, विभिन्न तरह के कार्यक्रमों हेतु किया गया लेखन। ये सब रेडियो लेखन के क्षेत्र हैं।

7.3.3 रेडियो लेखन में ध्यान रखने योग्य बातें

'हिंदी पत्रकारिता और जनसंचार माध्यम स्वरूप एवं प्रयोग' पुस्तक में डॉ. शंकर लाल शर्मा ने रेडियो लेखन में ध्यान रखने योग्य बातें बताईं हैं। उन्हें हम यहाँ साभार ग्रहण कर रहे हैं-1-सरल सहज और लोकग्राह्य शब्दों का प्रयोग होना चाहिए।

2-कर्ण कटु वर्णों के प्रयोग से यथासंभव बचना चाहिए। बहुत आवश्यक होने पर ही कर्ण कटु शब्दों का इस्तेमाल होना चाहिए।

3-वाक्यों को सरल, छोटा एवं रेडियो-भाषा के व्याकरण के अनुरूप होना चाहिए अर्थात क्रिया-कर्म आदि यदि विचलन, बल संयोजन या अर्थ दीप्ति के लिए अपेक्षित हैं तो कर देना चाहिए। इससे कथनगत रिदम (Rhythm) सृजित होता है।

4-उच्चारण पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

5-रेडियो लेखन की प्रत्येक विधा अपने अनुरूप शैली- भाषागत और विषयगत की अपेक्षा रखती है। इसलिए कहानी, वार्ता , फीचर आदि के लिए हमें श्रोताओं को ध्यान में रखकर ही भाषा रूप का प्रयोग करना चाहिए।

6-भाषा ऐसी हो कि जिससे निर्धारित समय में सारी बात कही जा सके क्योंकि रेडियो लेखन में जो भी कार्यक्रम होते हैं उनकी अपनी एक निर्धारित समयसीमा होती है। उसी निर्धारित समयसीमा में कार्यक्रम को समाप्त करना होता है। इसलिए सारी बात उसी समयसीमा में समाप्त होने योग्य भाषा का इस्तेमाल होना चाहिए।

बोध प्रश्न

- रेडियो लेखन में ध्यान रखी जाने वाली 3 बातों के विषय में बताइए।

7.3.4 रेडियो में प्रयुक्त कुछ महत्वपूर्ण शब्द

अभिनेता	=	Actor
पूरक कलाकार	=	Performer
पुष्टि-पत्र	=	Confirmation Sheet
करारनामा	=	Agreement
पुनः प्रसारण	=	Re-broadcast
कार्यक्रम	=	Programme
वार्ताकार	=	Talker
भारतीय प्रसारण निगम	=	Broadcasting Corporation of India
कलाकार	=	Artist

ध्यातव्य है कि इनके अलावा भी कई शब्द इस क्षेत्र में प्रयोग में लाए जाते हैं।

बोध प्रश्न

- रेडियो में प्रयोग में लाए जाने वाले 5 शब्दों को लिखिए।

7.3.5 रेडियो से प्रसारित होने वाले कार्यक्रम

रेडियो पर विभिन्न तरह के कार्यक्रम प्रसारित होते हैं। उन्हें मुख्यतः निम्न लिखित श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है।

1-सूचनात्मक कार्यक्रम

2-मनोरंजनयुक्त कार्यक्रम

3-धार्मिक कार्यक्रम

1-सूचनात्मक कार्यक्रम- इस तरह के कार्यक्रमों के प्रसारण का मुख्य उद्देश्य सूचना प्रदान करना होता है। इसके अंतर्गत समाचार बुलेटिन, डॉक्यूमेंट्री, विचार गोष्ठी, आँखों देखा हाल, कृषकों के लिए, पर्व और जयंतियाँ, न्यूज रील, परिक्रमा, वार्ता, फीचर आदि आते हैं।

2-मनोरंजनयुक्त कार्यक्रम- इस तारह के कार्यक्रमों का मुख्य उद्देश्य श्रोताओं का मनोरंजन करना होता है। इसके अंतर्गत रेडियो रूपक, झलकी, कहानी, काव्य पाठ, कवि सम्मेलन, कवि गोष्ठी, महिलाओं और युवाओं की पसंद, कार्यक्रम, हैलो फरमाइश आदि कार्यक्रम शामिल किए जाते हैं।

3-धार्मिक कार्यक्रम- हिंदुस्तान विभिन्न धर्मों का देश है। श्रोताओं में अलग-अलग धर्म के श्रोता हुआ करते हैं। श्रोताओं को धर्म के विषय में बताने या धर्म में रुचि बनाए रखने के उद्देश्य से इस तरह के कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं। इस तरह के कार्यक्रमों के जरिए श्रोता भक्ति रस में डूब जाता है। इसके अंतर्गत भजन, मानसपाठ, कबीर की साखियाँ, सूर के पद आदि को शामिल किया जाता है।

बोध प्रश्न

- रेडियो से प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों को मुख्यतः कितनी श्रेणियों में बांटते हैं? शीर्षक भी लिखें।

7.3.6 वार्ता : सामान्य परिचय और वार्ता लेखन

'वार्ता' का सीधा सा अर्थ है 'बातचीत' या 'विषय बोध कराने वाला कथन'।

वार्ता कहने से यह अहसास होता है कि दो लोग आपस में बात कर रहे हैं। असल में वार्ता रेडियो पर प्रसारित होने वाला एक विशिष्ट कार्यक्रम होता है। इसके पूरे प्रसारण के लिए लगभग 10 मिनट का समय निर्धारित होता है। वार्ताकार दिए गए विषय पर अपना निबंध या अपनी बात को स्टूडियो में इस तरह से रखता है कि ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे वह किसी से बात करते हुए बातें कह रहा रहा है।

यहाँ यह अवश्य ही ध्यान में रखा जाना चाहिए कि जिस भी विषय पर वार्ताकार अपनी बात कह रहा है उसकी विषय वस्तु में मौलिकता होनी चाहिए। वह बात प्रासंगिक के साथ-साथ रोचक तो होनी ही चाहिए। इस तरह की वार्ता किसी खास अवसर पर ही प्रसारित की जाती है जैसे- किसी कवि की जयंती पर उसके बारे में वार्ता प्रसारित की जाए। इस इकाई लेखक ने स्वयं अपने कानों से रेडियो के विविध भारती से पंडित सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' पर प्रसारित वार्ता को सुना था। इसी तरह से आप भी समय-समय पर प्रसारित होने वाली वार्ताओं को सुन सकते हैं। वार्ता में इस बात का ध्यान वार्ताकार को रखना चाहिए कि बहुत आँकड़े, तिथियाँ या बहुत अधिक तर्क-वितर्क या उनके काव्य आदि पर बहुत अधिक आलोचनात्मक टिप्पणी नहीं करनी चाहिए। किसी पूर्वाग्रह से ग्रसित होकर कोई आक्षेप, असंसदीय भाषा का इस्तेमाल, विज्ञापन इत्यादि की सख्त मनाही है। किसी तरह की दृश्यात्मक शब्दावली जैसे- उपर्युक्त, निम्न या निम्नलिखित, द्रष्टव्य, अवलोकनीय आदि शब्दों का प्रयोग नहीं होना चाहिए क्योंकि यह बोला जा रहा है। लिखित रूप में इसको दिखाया नहीं जा रहा है।

बोधप्रश्न

- वार्ता में मुख्यतः किन बातों को ध्यान में रखना चाहिए?

- वार्ता का सीधा सा तात्पर्य क्या है?

रेडियो वार्ता में वार्ताकार से कुछ अपेक्षाएँ की जाती है जैसे-

1-वार्ताकार की शब्दावली स्पष्ट और सार्थक हो। किसी तरह की क्लिष्ट शब्दावली का इस्तेमाल नहीं किया जाना चाहिए।

2-वाक्य छोटे हों। बड़े वाक्यों के प्रयोग से बचने का प्रयास होना चाहिए।

3-आवश्यक होने पर पारिभाषिक शब्दावली का यथोचित प्रयोग किया जाना चाहिए।

4-वार्ताकार का वाचन मानक के अनुसार होना चाहिए। हिंदी की मानक वर्तनी का मानक उच्चारण जिस प्रकार से होना चाहिए उस प्रकार से उच्चारण किया जाना चाहिए। उच्चारण करते समय आरोह-अवरोह, गति, यति का पूरा – पूरा ध्यान रखा जाना चाहिए। किसी भी शब्द का उच्चारण विषय के अनुकूल होना चाहिए।

5-वार्ता में नकारात्मक वाक्य न हों तभी उचित है। जैसे- 'बैठक नहीं हुई' की जगह 'बैठक स्थगित हो गई है' कहना ज़्यादा ठीक रहेगा।

6-वार्ता में विवादित मुद्दों को नहीं लाना चाहिए। हमारी राष्ट्रीय नीति का पालन किया जाना चाहिए।

7-सम्मानजनक शब्दों का प्रयोग होना चाहिए जैसे 'करो', 'करिए', 'करें' न कहकर कीजिए कहना ज़्यादा उचित होता है।

8-वार्ताकार के सामने भले ही वार्ता लिखित रूप में रखी हो लेकिन उसके वाचन से कहीं से भी ये न प्रतीत हो कि वार्ता की सामग्री सामने रखी है और वार्ताकार केवल पढ़ रहा है। इस समस्या से बचने के लिए वार्ता को इस तरह से लिखा जाए कि लगे कि बातचीत हो रही है।

9-वार्ताकार के मुख से माइक की उचित दूरी होनी चाहिए ताकि आवाज बिल्कुल स्पष्ट सुनाई पड़े। हालांकि स्टूडियो में माइक इत्यादि को ठीक तरह से सेट करने के लिए कर्मचारी होते है जो वार्ता शुरू होने से पहले बता देते हैं की इतनी दूरी से बोलें।

10-वार्ता में यदि एक से अधिक वार्ताकार शामिल हों तो वे एक-एक करके अपनी बात रखें ताकि बात में स्पष्टता रहे और श्रोता अच्छे से सुन सकें।

11-जिस तरह से किसी विभाग या कॉलेज में कार्यक्रम होते हैं तो कोई एक अध्यापक या कोई अन्य व्यक्ति कार्यक्रम का संचालन करता है उसी तरह से यहाँ भी संचालक की भूमिका होती है। उसे ये चाहिए कि वह सभी वार्ताकारों को यथोचित अवसर प्रदान करे। वह प्रस्तावना, परिचय और सार संक्षेप प्रस्तुत कर दे और वह यह कोशिश करे कि विषय का प्रतिपादन अच्छे से हो जाए।

प्रिय विद्यार्थियो ! असल में यह विषय प्रशिक्षण की मांग करता है। अभ्यास द्वारा इसे भली प्रकार से पूर्ण किया जा सकता है। खास बात यह है कि रेडियो हो या दूरदर्शन उसपर वार्ता करने हेतु जो लोग भी जाते हैं उन्हें एक निर्धारित धनराशि भी प्राप्त होती है।

7.3.7 फीचर : सामान्य परिचय और फीचर लेखन

'फीचर' असल में पत्रकारिता के क्षेत्र से जुड़ी हुई एक विधा है। पत्रकारिता के क्षेत्र में यह पुष्पित पल्लवित और समृद्ध हुई। धीरे-धीरे ये रेडियो लेखन में भी आ गई। फीचर (feature) अंग्रेजी का शब्द है। इसे वहाँ से उसी रूप में हिंदी में ले लिया गया है। डॉ. अमरनाथ लिखते हैं 'फीचर एक ऐसा रचनात्मक तथा कुछ-कुछ स्वानुभूतिमूलक लेख होता है, जिसका गठन किसी घटना, स्थिति अथवा जीवन के किसी पक्ष के संबंध में पाठक का मूलतः मनोरंजन करने एवं सूचना देने के उद्देश्य से किया गया हो।'

सवाल यह है कि इस विधा के जन्म लेने की क्या वजह रही? इस विषय में डॉ. मनोहर प्रभाकर लिखते हैं 'घटनाओं, विशिष्ट व्यक्तियों, चर्चित स्थानों, और चित्र विचित्र वस्तुओं के मानवीय एवं संवेदनात्मक पक्षों के बारे में पाठकों की बढ़ती हुई रुचि एवं जिज्ञासा ने ही समाचार पत्रों, पत्र-पत्रिकाओं में उस सृजनात्मक विधा को जन्म दिया, जिसे पत्रकारिता की भाषा में फीचर कहते हैं।' ये फीचर का महत्व ही है कि दिन-प्रतिदिन समाचार पत्रों, सूचना विभागों तथा रेडियो और दूरदर्शन केंद्रों में अच्छे फीचर लेखकों की निरंतर मांग रहती है।

बोध प्रश्न

- फीचर किसे कहते हैं? अपने शब्दों में बताइए।

फीचर की कई परिभाषाएँ दी गई हैं –

1-श्री खाडिलकर के अनुसार- फीचर वे लेख हैं, जो पाठकों को यह बताएँ कि घटित घटना क्यों हुई तथा उसका क्या परिणाम होगा।

2-पी. डी. टंडन के अनुसार- मनोरंजक ढंग से लिखे गए प्रासंगिक लेख का नाम ही फीचर है।

3-पृथ्वीपाल सिंह के अनुसार- फीचर किसी रोचक विषय का मनोरंजक शैली में सामान्यतः विस्तृत विवेचन है।

4-डॉ. मनोहर प्रभाकर के अनुसार- फीचर समाचार पत्रों में प्रकाशित होने वाला किसी विशेष घटना, व्यक्ति, जीव जन्तु, स्थान या परिवेश से संबंधित वह विशिष्ट आलेख है, जो कल्पनाशीलता और सृजनात्मक कौशल के साथ मनोरंजक और आकर्षक शैली में प्रस्तुत किया जाता है।

यहाँ यह ध्यान में रखना चाहिए कि फीचर की ये परिभाषाएँ समाचार पत्र और पत्रिकाओं को दृष्टिगत रखकर बताई गई हैं। रेडियो फीचर में शब्दों इत्यादि की सीमा पर विशेष ध्यान दिया जाता है। वजह यह है कि उसके लिए कुछ समय निर्धारित होता है और फीचर को उसी निर्धारित समय के अंदर समाप्त हो जाना होता है। पत्र-पत्रिकाओं में फीचर पढ़ा जाता है लेकिन रेडियो फीचर सुना जाता है। सुनकर ही अर्थ और भाव इत्यादि को ग्रहण किया जाता है।

जहां तक फीचर की संरचना का सवाल है तो इसके तीन आवश्यक अंग माने गए हैं-

1-अग्रांश (इन्ट्रो)

2-मुख्य कलेवर (बॉडी)

3-उपसंहार

जहां तक फीचर के रूप की बात है तो सूर्य प्रसाद दीक्षित ने इसके चार रूप बताए हैं-

1-अखबारी फीचर

2-रेडियो फीचर

3-टी. वी. फीचर

4-फीचर फिल्म

बोध प्रश्न

- सूर्य प्रसाद दीक्षित ने फीचर के कितने रूप बताए हैं? इनके नाम लिखिए।

प्रिय विद्यार्थियों , यहाँ रेडियो फीचर पर ही चर्चा करना अपेक्षित है-

जहां तक रेडियो के क्षेत्र में रेडियो फीचर की बात है तो रेडियो फीचर का हिंदी पर्याय 'रूपक' है। रेडियो फीचर में सामान्य फीचर के समस्त तत्व विद्यमान होते हैं। इसमें अंतर यह है कि नाटकीयता का आधिक्य होता है। इस नाटकीयता के कारण रेडियो फीचर को रेडियो नाटक समझ लिया जाता है, किन्तु तकनीकी दृष्टि से इन दोनों में बारीक (सूक्ष्म) अंतर है। रेडियो फीचर या रेडियो रूपक या रूपक लेखन की एक विशेष तकनीक है। इसका लेखन इस तरह से होना चाहिए कि प्रस्तुतीकरण के समय श्रोता को बोझ जैसा अनुभव न हो। वे प्रसन्नतापूर्वक रेडियो रूपक को सुनें और गुनें। रेडियो फीचर में निम्नलिखित तत्व विशेष रूप से पाए जाते हैं-

1-नैरेटर-यह ध्यान में रखा जाना चाहिए कि रेडियो फीचर को पढ़ने नहीं बल्कि सुनने के लिए तैयार किया जाता है। वह उसी को दृष्टिगत रखकर लिखा जाता है। ज़ाहिर सी बात है कि जब रेडियो फीचर को सुना जाता है तो कोई सुनाने वाला भी होना चाहिए। रेडियो फीचर को जो सुनाता है वही 'नैरेटर' कहलाता है। वह महिला या पुरुष हो सकते हैं या फिर दोनों हो सकते हैं। फीचर लिखने वाला लेखक लेखन करके अपनी जिम्मेदारी से मुक्त हो जाता है लेकिन श्रोताओं तक भली प्रकार से फीचर लेखक के विचार, उसके भाव, फीचर में वर्णित घटना आदि को नैरेटर ही श्रोताओं तक पहुंचाता है। वह घटना का परिचय, विषय वस्तु की प्रस्तुति, विस्तार, चरम सीमा पर ले जाने का काम करता है। लेखक के उत्तरदयित्व का पूरा निर्वहन नैरेटर करता है। फीचर की प्रस्तुति को आकर्षक और रोचक बनाने के उद्देश्य से रेडियो में बराबर नए-नए प्रयोग किए जाते हैं।

2-ध्वनि प्रभाव- इसके जरिए रेडियो फीचर हेतु लिखित देशकाल, वातावरण को सुनाया जाता है। इससे प्रस्तुति सहज और आकर्षक हो जाती है। इस विषय में इसी इकाई में पहले 'रेडियो लेखन और उसके क्षेत्र' शीर्षक के अंतर्गत 'साउन्ड इफेक्ट एंड म्यूजिक (संगीत एवं ध्वनि प्रभाव)' उपशीर्षक में चर्चा हो चुकी है।

3-संगीत- रेडियो रूपक में संगीत का अपना विशिष्ट महत्व है। इससे विषय की प्रस्तुति अधिक आकर्षक और मनोरंजक बन जाती है। इसकी भी चर्चा पहले हो चुकी है।

4-रेडियो रूपक का प्रकार वृत्त रूपक है।

5-तथ्यात्मकता- फीचर तथ्यों पर आधारित होता है। इसलिए यह जरूरी है कि फीचर में लाए गए तथ्य पूरी तरह तक प्रामाणिक हों। कोई ऐसा तथ्य नहीं आना चाहिए जो विवादास्पद हो, जिससे विवाद की स्थिति उत्पन्न हो जाए।

6-साक्षात्कार– रेडियो फीचर में साक्षात्कार का उपयोग भी किया जा सकता है।

बोध प्रश्न

- फीचर के प्रमुख तीन तत्वों के बारे में बताइए।

अतः हम कह सकते हैं कि रेडियो फीचर बहुविध, मनोरंजक, ज्ञानवर्धक होता है। यह प्रैक्टिकल की चीज़ है। विद्यार्थियों को सलाह दी जाती है कि वे विविध भारती या अन्य किसी रेडियो स्टेशन से प्रसारित किसी रेडियो फीचर को सुनें। इससे वे इसके व्यावहारिक स्वरूप से परिचित हो सकेंगे।

7.4 पाठसार

प्रिय विद्यार्थियो ! इस तरह से हम देखते हैं कि रेडियो का इतिहास उस समय से शुरू होता है। जब हम अंग्रेजों के ग़ुलाम थे। गीत संगीत का एक बड़ा केंद्र मुंबई रहा है। सन् 1923 में मुंबई से ही पहला प्रसारण शुरू हुआ। रेडियो के क्षेत्र में सर इब्राहिम रहमतुल्लाह, सुल्तान चिनाय आदि का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। विविध भारती के उद्घोषकों में शील कुमार, अमीन सयानी का नाम बहुत ही सम्मान के साथ लिया जाता है। वर्तमान में विविध भारती के उद्घोषकों में ममता सिंह, शाइस्ता नाज़, यूनुस खान आदि का नाम लिया जा सकता है।

हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि उस समय भी रेडियो की व्याप्ति काफी दूर तक थी। उत्तर भारत से लेकर दक्षिण भारत तक इसकी व्याप्ति थी। वर्तमान में भारत की लगभग 24 भाषाओं और लगभग 146 बोलियों में आकाशवाणी प्रसारण कार्य कर रही है। आज लगभग 300 ट्रांसमीटर और लगभग 165 एफ. एम. केंद्र हैं। इस तरह से हम देखते हैं कि देश के उत्थान में रेडियो की महती भूमिका रही है।

रेडियो लेखन एक सृजनात्मक कार्य है। इसमें शब्दों और उसके उच्चारण की विशेष भूमिका होती है। रेडियो पर विभिन्न तरह के कार्यक्रम प्रसारित होते हैं। उनके लिए किया गया लेखन 'रेडियो लेखन' कहलाता है। रेडियो लेखन में स्पीच (वाक्), साउन्ड इफेक्ट एण्ड म्यूजिक (संगीत एवं ध्वनि प्रभाव), मौन या चुप्पी आदि पर विशेष ध्यान देना होता है।

रेडियो लेखन में बहुत सारी बातों का ध्यान रखना होता है जैसे- शब्द सरल, सहज हों, उच्चारण पर विशेष ध्यान दिया जाए इत्यादि। रेडियो के क्षेत्र में बहुत सारे शब्द प्रयोग में लाए जाते हैं जैसे – कार्यक्रम, पुनः प्रसारण, वार्ताकार आदि। रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों में विविधता होती है। कुछ कार्यक्रम सूचनात्मक होते हैं तो कुछ कार्यक्रम मनोरंजक तो कुछ धार्मिक।

रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों में 'वार्ता' तथा 'फीचर' का विशेष महत्व है। वार्ता के लिए लगभग 10 मिनट का समय निर्धारित होता है। इसमें कुछ बातों का ध्यान रखना होता है जैसे-उच्चारण सही हो, अच्छी शब्दावली का इस्तेमाल हो, विवादित मुद्दे नहीं लाने

चाहिए आदि। इसी तरह से फीचर की बात करें तो तो यह मुख्यतः समाचार पत्रों, पत्रिकाओं की विधा हुआ करती थी। लेकिन धीरे-धीरे ये रेडियो में भी प्रचलित हो चुकी है। यह भी द्रष्टव्य है कि समाचारपत्रों और पत्रिकाओं के फीचर दृश्य होते हैं उन्हें पढ़ना होता है लेकिन रेडियो के फीचर श्रव्य होते हैं। उन्हें सुनना होता है। इसलिए इसमें शब्दों पर विशेष ध्यान देना होता है। फीचर के कई रूप हैं। जैसे-अखबारी फीचर, रेडियो फीचर, टी. वी. फीचर, फीचर फिल्म। हालांकि यहाँ रेडियो फीचर पर ही चर्चा करना अपेक्षित रहा है।

7.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से हमें निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं-

1-रेडियो का इतिहास भारत के स्वतंत्रता के पूर्व शुरू होता है।

2-रेडियो के क्षेत्र में सर इब्राहिम रहमतुल्लाह, सुल्तान चिनाय आदि का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। विविध भारती की पहली उद्घोषणा शील कुमार ने की थी। बाद में एक महत्वपूर्ण नाम अमीन सयानी का जुड़ा। वर्तमान में विविध भारती के उद्घोषकों में ममता सिंह, शाइस्ता नाज़, यूनुस खान आदि का नाम लिया जा सकता है।

3-रेडियो के क्षेत्र में दिल्ली केंद्र से समाचार प्रस्तुत करते हुए हम विमलेंदु पांडेय जी को सुना करते थे।

4-उत्तर भारत से लेकर दक्षिण भारत तक इसकी व्याप्ति थी। देश के उत्थान में रेडियो की महती भूमिका रही है।

5-रेडियो लेखन एक सृजनात्मक कार्य है। इसमें शब्दों और उसके उच्चारण की विशेष भूमिका होती है।

6-रेडियो पर विभिन्न तरह के कार्यक्रम प्रसारित होते हैं। उनके लिए किया गया लेखन 'रेडियो लेखन' कहलाता है।

7-रेडियो लेखन में स्पीच (वाक्), साउन्ड इफेक्ट एण्ड म्यूजिक (संगीत एवं ध्वनि प्रभाव), मौन या चुप्पी आदि पर विशेष ध्यान देना होता है।

8-रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों में 'वार्ता' तथा 'फीचर' का विशेष महत्व है। वार्ता के लिए लगभग 10 मिनट का समय निर्धारित होता है। इसमें कुछ बातों का ध्यान रखना होता है जैसे-उच्चारण सही हो, अच्छी शब्दावली का इस्तेमाल हो, विवादित मुद्दे नहीं लाने चाहिए आदि।

9-इसी तरह से फीचर की बात करें तो तो यह मुख्यतः समाचार पत्रों, पत्रिकाओं की विधा हुआ करती थी। लेकिन धीरे-धीरे ये रेडियो में भी प्रचलित हो चुकी है।

10-यह भी द्रष्टव्य है कि समाचारपत्रों और पत्रिकाओं के फीचर दृश्य होते हैं उन्हें पढ़ना होता है लेकिन रेडियो के फीचर श्रव्य होते हैं। उन्हें सुनना होता है। इसलिए इसमें शब्दों पर विशेष ध्यान देना होता है।

11-फीचर के कई रूप हैं जैसे-अखबारी फीचर, रेडियो फीचर, टी. वी. फीचर, फीचर फिल्म। यहाँ विशेष रूप से रेडियो फीचर पर ही चर्चा की गई है।

7.6 शब्द संपदा

1-समाचार = समसामयिक सूचना जिससे लोगों की रुचि जुड़ी हो और उसे जानने के लिए लोगों के अंदर उत्सुकता हो।
2-गीत = कोई वाक्य, पद, या छंद जो गाया जाता है।
3-संगीत = मधुर ध्वनियों या स्वरों का विशिष्ट नियमों के अनुसार लय में होने वाला प्रस्फुटन
4-एकांकी = एक अंक वाला, साहित्य की एक विधा, वन ऐक्ट प्ले
5-उत्थान = उठान, ऊपर उठना
6-डाक्यूमेंट्री = दस्तावेजी फिल्म, यह एक वृत्त चित्र फिल्म / वृत्त चित्र या गैर काल्पनिक चलचित्र है जिसका उद्देश्य होता है-वास्तविकता का दस्तावेजीकरण, शिक्षा, जागरूकता आदि से संबंधित डिजिटल दस्तावेज़ जो चलचित्र के रूप में हो।
7-एफ. एम. ट्रांसमीटर= फ्रीक्वेन्सी मीटर ट्रांसमीटर, एक एलेक्ट्रॉनिक उपकरण, जो रेडियो फ्रीक्वेन्सी ट्रांसमीटर की मदद से आवृत्ति मॉड्यूलेटेड तरंगे उत्पन्न करता है।
8-टोन = लहजा, कहने का ढंग
9-बिम्ब = इमेज, मूर्त रूप प्रदान करना
10-सूचनात्मक= सूचना से संबंधित
11-मनोरंजन = मन बहलाना, समय को सुखद ढंग से व्यतीत करना
12-धार्मिक = धर्मशील, धर्म से संबंधित
13-आरोह-अवरोह = उतार चढ़ाव, स्वरों का चढ़ता हुआ क्रम आरोह और उतरता हुआ क्रम अवरोह कहलाता है।
14-गति = चाल, जाना, गमन करना
15-यति = रुकावट, रोक,
16-उच्चारण = बोलना, शब्द या उसके वर्णों को कहने का ढंग, शब्द को मुंह से निकालना, बोलना
17-संचालनकर्ता= संचालक, व्यवस्थापक, प्रबंधकर्ता
18-प्रतिपादन= भलीभाँति ज्ञात कराना, निरूपण, अच्छी तरह से समझाना
19-रचनात्मक= रचना से सम्बद्ध, रचनात्मक कार्य
20-स्वानुभूतिमूलक= स्वयं (खुद) की अनुभूति से संबंधित
21-संवेदनात्मक= इंद्रियों या संवेदना से संबंधित
22-प्रासंगिक = प्रसंग का प्रसंग से संबंधित, किसी विशेष समय या परिस्थिति में उपयोगी या आवश्यक
23-परिवेश = हमारे चारों तरफ का प्राकृतिक, सामाजिक, राजनिक वातावरण
24-श्रोता = सुनने वाला

7.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निर्देश : निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए-

1-फीचर के विषय में अपने विचार लिखिए।

2-वार्ता के विषय में चर्चा कीजिए।

3-रेडियो लेखन के विषय में बताते हुए रेडियो लेखन में ध्यान रखने योग्य बातें बताइए।

खंड (आ)

लघु श्रेणी के प्रश्न

निर्देश : निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए-

1-रेडियो से प्रसारित होने वाले अलग-अलग श्रेणी के कार्यक्रमों के विषय में बताइए।

2-रेडियो के इतिहास पर संक्षेप में लिखिए।

3-वार्ताकार से किस तरह की अपेक्षाएँ रखी जाती हैं? अपने विचार लिखें।

खंड (स)

(इ)वैकल्पिक प्रश्न

(I)निम्नलिखित प्रश्नों में सही विकल्प छाँटिए-

1-14 मई 1966 को आकाशवाणी की कौन सी सेवा शुरू हुई।

(क)विविध भारती (ख)आकाशवाणी की उर्दू सेवा
(ग)प्रसार भारती (घ)उपर्युक्त सभी

2-रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों में सूचनात्मक कार्यक्रम के अंतर्गत शामिल किया जाता है।

(क)समाचार बुलेटिन (ख)कवि गोष्ठी
(ग)भजन (घ)कहानी

3-रोज़गारपरक क्षेत्र है-

(क)फीचर लेखन (ख)वार्ता लेखन
(ग)रेडियो उद्घोषक/उद्घोषिका (घ)उपर्युक्त सभी

(ii) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

1-रेडियो एक ..... माध्यम है।

2-वास्तव में फीचर ..... के क्षेत्र से जुड़ी हुई एक विधा है।

3-रेडियो फीचर को सुनाने वाला .....कहलाता है।

(iii)सुमेल प्रश्न

(1)वार्ताकार	(अ)उद्घोषिका विविध भारती
(2)वार्ता	(ब)Talker
(3)Rebroadcast	(स)लगभग 10 मिनट
(4)ममता सिंह	(द)पुनः प्रसारण

7.8 पठनीय पुस्तकें

1-प्रयोजनमूलक हिंदी – लेखक – प्रो. सूर्य प्रसाद दीक्षित, संपादक- प्रो. नन्दकिशोर पांडेय

2-प्रयोजनमूलक हिंदी- डॉ. पी. लता

3-फीचर लेखन स्वरूप और शिल्प – डॉ. मनोहर प्रभाकर, संपादक – अरविंद चतुर्वेदी

4-हिंदी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली – डॉ. अमरनाथ

5-हिंदी पत्रकारिता और जनसंचार माध्यम : स्वरूप एवं प्रयोग- संपादक -डॉ. शंकर लाल शर्मा

इकाई-8 रेडियो लेखन -2 विज्ञापन एवं अन्य

इकाई की रूपरेखा

8.1 प्रस्तावना
8.2 उद्देश्य
8.3 मूलपाठ : रेडियो लेखन -2 विज्ञापन एवं अन्य
8.3.1विज्ञापन का अर्थ और परिभाषा
8.3.2विज्ञापन का इतिहास, महत्व और व्यापकता
8.3.3 रेडियो लेखन -2 विज्ञापन लेखन
8.3.4 रेडियो लेखन -2 अन्य लेखन
8.4 पाठसार
8.5 पाठ की उपलब्धियाँ
8.6 शब्द संपदा
8.7 परीक्षार्थ प्रश्न
8.8 पठनीय पुस्तकें

8.1 प्रस्तावना

जनसंचार के माध्यमों में रेडियो एक महत्वपूर्ण माध्यम है। गाँव और दूरदराज के क्षेत्रों में रेडियो सूचना, समाचार, मनोरंजन का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। आज भले ही सूचना क्रांति के दौर में फ़ेसबुक, व्हाट्स एप, इंस्टाग्राम, यू ट्यूब, दूरदर्शन आदि हैं। इन सबके बीच रेडियो की अपनी उपयोगिता बराबर बनी हुई है। आज धनवान लोगों के यहाँ होम थिएटर इत्यादि ने जगह बना ली है लेकिन रेडियो आज भी मध्यम वर्ग के लोगों, सेना के जवानों आदि के लिए सूचना प्रदान करने, ज्ञानवर्धन करने और उनका मनोरंजन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। रेडियो पर प्रसारित होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों हेतु लेखन किया जाता है। इसके साथ-साथ रेडियो पर अलग-अलग तरह के कार्यक्रम प्रसारित होते हैं।

8.2 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप-

- विज्ञापन का अर्थ और परिभाषा बता सकेंगे।
- विज्ञापन के इतिहास, महत्व और उसकी व्यापकता को समझ सकेंगे।
- विज्ञापन लेखन के विषय में समझ सकेंगे।
- समाचार लेखन, संवाद लेखन और पटकथा लेखन के विषय में जान सकेंगे।
- रेडियो नाटक के विषय में बता सकेंगे।
- टेले ड्रामा, वृत्तचित्र, रिपोर्ताज, सोप ओपेरा, रूपांतरण, साक्षात्कार के विषय में समझ बना सकेंगे।

8.3 मूलपाठ : रेडियो लेखन -2 विज्ञापन एवं अन्य

इस मुख्य शीर्षक को हम कुछ उपशीर्षकों के जरिए समझने का प्रयास करेंगे-

8.3.1 विज्ञापन का अर्थ और परिभाषा

विज्ञापन हमारे जीवन में सुबह-शाम जहाँ देखिये विज्ञापन ही विज्ञापन है। टी.वी. देखिये ,रेडियो सुनिए ,फिल्म देखिये ,दीवार देखिये हर जगह विज्ञापन की ही व्यापकता है। विज्ञापन क्यों किया जाता है? विज्ञापन इसलिए किया जाता है क्योंकि विज्ञापन द्वारा विज्ञापनदाता वस्तु की अच्छाइयों का बखान करता है। वर्तमान में तो अतिशयोक्तिपूर्ण तरीके से विज्ञापनदाता विज्ञापन में अपने वस्तु की विशेषता बताता है जैसे -गोरा बनाने की क्रीम आदि। विज्ञापनों की तथ्यपरकता पर अवश्य ही प्रश्न चिह्न लगाया जाता है लेकिन यह बात सभी विज्ञापनों पर लागू नहीं होती । नौकरी के लिए दिया वाला विज्ञापन, निविदा आमंत्रित करने का विज्ञापन आदि तथ्यपरक होते हैं।

विज्ञापन अंग्रेजी भाषा के एडवरटाइज़मेंट) advertisement(का हिंदी रूपांतरण है। इस शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के 'Advertere' (एडवरटेरे) शब्द से हुई है। इसका अर्थ है मस्तिष्क का केन्द्रीभूत हो जाना'।विच्छेद कर इसका अर्थ स्पष्ट -हिंदी शब्द विज्ञापन का संधि ' किया जा सकता है। विअर्थात विशिष्ट - या विशेष तथा ज्ञापन का अर्थ है- सूचना देना, जानकारी कराना। अतः विज्ञापन का अर्थ हुआ – 'विशेष रूप से जानकारी कराना या सूचना देना'। इश्तहार शब्द उर्दू में बखूबी प्रयोग में लाया जाता है। विज्ञापन का मुख्य लक्ष्य है- किसी उत्पादन को अधिक से अधिक बाज़ार उपलब्ध कराने में सहयोग प्रदान करना ।

विज्ञापन के विषय में डॉ. कैलाश नाथ पांडेय लिखते हैं 'उर्दू में इसे इश्तेहार कहते हैं, जिसका अर्थ है- प्रचार प्रसार, प्रोपेगेन्डा, विज्ञापन, मुश्तहारी, मुनादी और घोषणा आदि। फारसी भाषा में विज्ञापन को 'जंग-ए-जरदारी' कहा जाता है। बांग्ला भाषा में भी इसे विज्ञापन ही कहा जाता है लेकिन उडिया में विज्ञापन और प्रचार। इधर मराठी और कन्नड में विज्ञापन के लिए जाहीरात शब्द का इस्तेमाल करते हैं।' विज्ञापन की परिभाषा की बात करें तो इसकी विभिन्न परिभाषाएँ है। कुछ प्रमुख परिभाषाएँ इस प्रकार हैं-

विद्वानों ने विज्ञापन की परिभाषाएं इस प्रकार दी हैं-

1-विज्ञापन मुद्रित विक्रय क्षमता हैएल्बर्ट लस्कर -

2-विज्ञापन मुद्रित माध्यमों का प्रयोग करते हुए किसी विचार की जन प्रस्तुति हैजिसके द्वारा , स्टार्च -वे विज्ञापनकर्ता के मंतव्य के अनुसार ढल जाते हैं

3-तुम्हें अपने उत्पादन की तारीफ करनी हैयकीन दिलाना ही है कि तुम् ,हारा साबुन दूसरे के साबुन से ज्यादा सफेदी निखारता है और तुम्हारे ब्लेड से एक बार दाढ़ी बनाने का मतलब शतकों की विजय प्राप्त करना है। फारसी में इसे कहते हैं। आज तो विज्ञापन के 'जरदारी-ए-जंग' बिना कुछ भी नहींबेचा जा सकता है .एम -हिदायतुल्लाह

बोधप्रश्न

- विज्ञापन के लिए अलग-अलग भाषाओं में प्रयुक्त होने वाले शब्द बताइए।
- विज्ञापन का अर्थ बताते हुए एम. हिदायतुल्लाह की परिभाषा को अपने शब्दों में बताइए।

विज्ञापन हमारे मस्तिष्क पर एक प्रकार से अधिकार जमा लेने काप्रयास है। हमारी सोच को बदल डालने का प्रयास है।

8.3.2 विज्ञापन का इतिहास, महत्व और उसकी व्यापकता

यदि हम विज्ञापन के इतिहास की बात करें तो इसका इतिहास लगभग 200 साल पुराना है। प्रो. सूर्य प्रसाद दीक्षित लिखते हैं 'भारत में विज्ञापन का इतिहास लगभग 200 वर्ष पुराना है। यूरोप-अमरीका में यह 300 वर्षों से चल रहा है। यहाँ 1905 में सर्वप्रथम विज्ञापन की संस्था वी. दत्ताराम एंड कंपनी नाम से स्थापित हुई थी। इसके बाद उत्तरोत्तर बड़े-बड़े शहरों में अनेक विज्ञापन एजेंसी खोली गई, जैसे-1925 में सेंट्रल पब्लिसिटी सर्विस (कलकत्ता), अल. आर. ऐडवरटाइज़िंग (मद्रास), जनरल एजेंसी एंड एक्सचेंज (अहमदाबाद 1963), कृष्ण पब्लिसिटी कंपनी तथा जुपिटर पब्लिसिटी कंपनी (कानपुर 1940) आदि।' हम इसी बात से अंदाजा लगा सकते हैं कि विज्ञापन में कितने पुराने समय से रोज़गार की मिल रहा है।

जहाँ तक विज्ञापन के महत्व और उसकी व्यापकता का प्रश्न है तो इसका महत्व जगजाहिर है। पूर्व के पृष्ठ पर एम. हिदायतुल्लाह की परिभाषा से स्पष्ट है। उन्होंने लिखा है 'आज तो विज्ञापन के बिना कुछ भी नहीं बेचा जा सकता है 'विज्ञापन से उत्पाद की बिक्री बढ़ जाती है साथ ही साथ सुधार हेतु सुझाव भी मिलते हैं।

विज्ञापन जागरूकता बढाने में भी सहायक होते हैं। यदि विज्ञापन का महत्व नहीं होता तो मोहन राकेश जी को सर्वत्र तथा प्रत्येक वस्तु किसी न किसी दूसरी वस्तु का विज्ञापन नहीं लगती। मोहन राकेश जी निबंध में लिखते हैं 'विज्ञापन युग''कोई चीज़ ऐसी नहीं जो किसी-न-ज़ का विज्ञापन न होकिसी ची-न-किसी रूप में किसी। अजंता के चित्र और एलोरा की मूर्तियाँ कभी अछूती कला का उदाहरण रही होंगी..। उन मूर्तियों का केशसौंदर्य आज मुझे एक तेल की - और उसका ,उनकी आंखें एक फार्मेसी का विज्ञापन प्रतीत होती हैं ,शीशी की याद दिलाता है लाभिरुचि को प्रमाणित करता हैसमूचा कलेवर एक पेट्रोल कंपनी की का।' प्रत्येक वस्तु किसी न किसी प्रकार दूसरी वस्तु का विज्ञापन हो सकती है।

बोधप्रश्न

- विज्ञापन का क्या महत्व है? उसे अपने शब्दों में लिखिए।

अपने आसपास विज्ञापन के इस साम्राज्य को देखकर ऐसा लगता है कि जैसे हमारी व्यक्तिगत ज़िन्दगी अब व्यक्तिगत नहीं रही। इसमें विज्ञापन दाताओं की घुसपैठ हो चुकी है। खानेपीने की वस्तुओं से लेकर पहनने ओढ़ने तक तथा पढने लिखने से लेकर खेलने कूदने तक - हर जगह विज्ञापनदाताओं की घुसपैठ जारी है। कभी अनचाहे विज्ञापनों की ध्वनि भी हमारे कानों में पड़ती है। अनचाहे दृश्य हमारे सामने आते हैं। इन सबसे हमारा व्यक्तिगत जीवन प्रभावित होता है।

बोधप्रश्न

- विज्ञापन हमारे जीवन को किस तरह से प्रभावित करता है?

8.3.3 रेडियो लेखन -2 विज्ञापन लेखन

यदि हम विज्ञापन लेखन की बात करें तो विज्ञापन लेखन एक कला है। इसमें भाषा पर विशेष ध्यान दिया जाता है। विज्ञापन की भाषा का निर्धारण विज्ञापन प्रसारित या प्रदर्शित किये जाने वाले क्षेत्र पर निर्भर करता है। यदि हिंदी भाषा में ही विज्ञापन प्रदर्शित या प्रसारित हो रहा है तो वहां भी भाषा आम बोलचाल की रखी जाती है। शुद्ध संस्कृतनिष्ठ हिंदी का प्रयोग तो न के बराबर है। विज्ञापन में हिंग्लिश) हिंदी तथा इंग्लिश-अंग्रेजी मिश्रित (भाषा का भी प्रचुर मात्रा में प्रयोग होता है। विज्ञापन में प्रयुक्त वाक्य तथा शब्द' गागर में सागर 'भरने वाले होने चाहिए। संक्षिप्तता ,स्पष्टता ,आकर्षक शैली इसके प्रमुख तत्व हैं। विज्ञापन की भाषा का आकर्षक होना अनिवार्य है। अतः विज्ञापन में शब्द की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। सरलता, रोचकता, स्पष्टता और जन संवेद्यता विज्ञापन की भाषा की प्रमुख विशेषताएँ हैं। विज्ञापन की भाषा के सम्बन्ध में दंगल झाल्टे लिखते हैं 'आकर्षक वाक्य-विन्यास ,शब्दों का उचित चयन तथा वैशिष्ट्यपूर्ण प्रवाहमय भाषिक संरचना ,विज्ञापन भाषा प्रयुक्ति के मुख्य तत्व कहे जा सकते हैं। विज्ञापन की भाषा चूँकि व्यापार व्यवसाय तथा वाणिज्य से सम्बन्ध रखती है ;अतः उसमें आकर्षक तत्व ,स्मरणीयता ,विक्रय-शक्तिमोहक भाषा शैली ,श्रव्यता एवं सुपाठ्यता ,संक्षिप्तता तथा प्रभावान्विति आदि गुणों का हो। नितांत आवश्यक होता है।' विज्ञापन प्रस्तुत करने का अपना एक तरीका होता है। उसके लिए विशेष रूप से रेडियो पर होने वाला विज्ञापन उच्चारण, सहज अभिव्यक्ति आदि की मांग करता है।

बोधप्रश्न

- विज्ञापन की भाषा कैसी होनी चाहिए?

आकाशवाणी में प्रसारित विज्ञापन मात्र श्रव्य होने के कारण विज्ञापनी भाषा के शब्दों का विन्यास और उच्चारण-प्रक्रिया ही उसमें विज्ञापित वस्तु को खरीदने की प्रेरणा श्रोताओं को देती है। अर्थात आकाशवाणी का मौखिक विज्ञापन उसमें उच्चरित शब्दों तथा प्रयुक्त शैली पर निर्भर है।

मौखिक और लिखित विज्ञापनों में सहज और जन संवेद्य हिंदी शब्दों का प्रयोग करना चाहिए। लिखित विज्ञापन तैयार करते समय मानक लिपि चिह्नों का ही प्रयोग करना चाहिए। वाणिज्य-व्यापार के क्षेत्र की 'विज्ञापनी भाषा' में आकर्षकता, विक्रेयता, प्रभावात्मकता तथा संक्षिप्तता का होना अपरिहार्य है।

लंबे, अस्पष्ट और जटिल नाम लोकप्रिय नहीं हो पाते । नामकरण के समय उपभोक्ता के मनोविज्ञान पर बहुत ध्यान दिया जाता है। शायद इसीलिए 'लक्ष्मी' नाम के पाउडर का नाम 'लक्मे' रख दिया गया, क्योंकि इस नाम से 'इंपोर्टेड' वस्तु मालूम पड़ती है। प्रत्येक एजेंसी उपभोक्ताओं का विवेचन करती हुई निम्नलिखित बिंदुओं पर अवश्य ही विचार करती है –

1-इसके उपभोक्ता उच्च, मध्य, निम्न में से किस आय वर्ग के होंगे?

2-वे उच्च शिक्षित हैं, सामान्य शिक्षित हैं या अशिक्षित हैं?

3-उनमें अधिकतर स्त्री हैं या पुरुष हैं ?
4-यह वस्तुतः मुख्यतः बालकों के लिए है? या युवा वर्ग के लिए है? अथवा प्रौढ़ वर्ग के लिए है?
विज्ञापन की प्रस्तुति कई रूपों में होती है। इस विषय में सूर्य प्रसाद दीक्षित ने बिन्दुवार बताया है-
1-विज्ञापन की प्रस्तुति कथन के रूप में या लेख अथवा पाठ के रूप में होती है।
2-उद्बोधन और प्रेरणा के रूप में भी विज्ञापन को प्रस्तुत किया जाता है।
3-सावधान करने, चेतावनी देने, एवं निषेध के रूप में भी विज्ञापन की प्रस्तुति की जाती है।
4-विज्ञापन की प्रस्तुति गेय और काव्यात्मक रूप में भी होती है।
5-एकांकी और लघु नाटक (टेली ड्रामा), नुक्कड़ नाटक के रूप में भी विज्ञापन को प्रस्तुत किया जाता है।
6-चित्र, रेखाचित्र, कार्टून, आदि रूपों में भी विज्ञापन की प्रस्तुति होती है।

बोधप्रश्न

- विज्ञापन की प्रस्तुति के विषय में अपने विचार अभिव्यक्त कीजिए।

8.3.4 रेडियो लेखन -2 अन्य लेखन

रेडियो लेखन-2 अन्य लेखन के अंतर्गत कई बिन्दु हैं। इन्हें क्रमवार जानने और समझने का प्रयास करेंगे-

8.3.4.1 समाचार लेखन

रेडियो के लिए समाचार लिखना एक बहुत ही ज़्यादा जिम्मेदारी वाला काम है। यदि हम आकाशवाणी के दिल्ली केंद्र की बात करें तो यहाँ से सुबह, दोपहर, शाम और रात में समाचार प्रसारित किए जाते हैं। सुबह और शाम वाले समाचार दोपहर और शाम के समाचारों से अपेक्षाकृत अधिक समय तक प्रसारित होते हैं। सुबह के समाचार में मुख्य समाचार, समाचार पत्रों की सुर्खियां भी बताई जाती हैं। सुबह और रात का समाचार लगभग 10 मिनट का होता है। दोपहर और शाम का समाचार लगभग 5 मिनट प्रसारित किया जाता है। रेडियो पर प्रसारित होने वाले समाचार को विभिन्न स्रोतों से संकलित किया जाता है। संकलन के बाद उसका लेखन और सम्पादन किया जाता है। इन समाचारपत्रों में कोई शीर्षक नहीं दिया जाता है। समाचार वाचक इनका वाचन करता है। सबसे पहले वह आकाशवाणी केंद्र का नाम बताता है फिर अपना नाम बताता है फिर समाचार पढ़ना शुरू करता है। जैसे- 'ये आकाशवाणी का दिल्ली केंद्र है। अब आप विमलेंदु पांडेय से समाचार सुनिए।' रात वाले समाचार में जिसमें अधिक समय होता है उसमें समाचार वाचक आकाशवाणी के केंद्र का नाम अपना नाम बताने के बाद सबसे पहले मुख्य समाचार पढ़ता है। फिर उस मुख्य समाचार का विस्तार करता है। अंत में फिर मुख्य समाचार पढ़कर समाचार बुलेटिन समाप्त किया जाता है।

बोधप्रश्न

- समाचार लेखन के लिए समाचार के संकलन और उसके सम्पादन पर अपने विचार लिखिए।

रेडियो समाचार लेखन में निम्नलिखित महत्वपूर्ण बातों को ध्यान में रखना चाहिए-

1-समाचार की भाषा सरल और बोधगम्य हो। सहज और छोटे शब्दों का प्रयोग होना चाहिए। उसमें आलंकारिक शब्दावली का इस्तेमाल नहीं किया जाना चाहिए।

2-समाचार वाचक की आवाज बिल्कुल स्पष्ट होनी चाहिए। शब्दों का उच्चारण बिल्कुल साफ या मानक उच्चारण का प्रयोग होना चाहिए।

3-समाचार में द्विअर्थी शब्दों का प्रयोग बिल्कुल नहीं होना चाहिए।

4-जहाँ तक संभव हो अन्य पुरुष वाले वाक्यों का प्रयोग किया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए समाचार वाचक ये कहे 'उन्होंने कहा कि...' , 'सूत्रों के अनुसार...' , 'सूत्रों से प्राप्त जानकारी के अनुसार' ।

5-रेडियो समाचार में यह प्रयास होना चाहिए कि संख्यावाची शब्द और आँकड़े अधिक नहीं हों। उदाहरण के लिए तीन सौ पचास कहने के बजाय साढ़े तीन सौ कहना ज़्यादा उचित होता है।

6-रेडियो हेतु समाचार लिखते समय कोई संख्या अंकों में लिखकर नहीं दी जाती बल्कि उस संख्या को शब्दों में लिख दिया जाता है। उदाहरण के लिए 5702 की जगह पाँच हज़ार सात सौ दो लिखना चाहिए।

8-रेडियो लेखन में किसी संस्था या विभाग के पूरा नाम लिखने की जगह उसका प्रचलित संक्षिप्त नाम लिखा जाता है। उदाहरण के लिए सेंट्रल रिजर्व पुलिस फोर्स की जगह सीआरपीएफ या बॉर्डर सिक्युरिटी फोर्स की जगह बीएसएफ कहा जाता है।

9-समाचार में नाम की बार-बार की पुनरावृत्ति उचित नहीं मानी जाती है। सूर्यप्रसाद दीक्षित बताते हैं कि एक बार पूरा नाम, दूसरी बार उपनाम और तीसरी बार पदनाम देना उचित माना जाता है।

10-समाचार लेखन पूरे आकार के कागज पर एक तरफ लिखा जाता है। कागज के एक पृष्ठ पर केवल एक समाचार ही लिखा जाता है। इसके साथ साथ उसमें आइटम संख्या का उल्लेख होता है।

11-रेडियो से प्रसारित होने वाले समाचारों को बड़े बड़े वाक्यों में नहीं दिया जाता है। वाक्य छोटे-छोटे होते हैं। लगभग 10 शब्दों से बड़ा वाक्य अच्छा नहीं समझा जाता है।

12-मुख्य पृष्ठ पर समाचार का समय, वाचक, संवाददाता, एवं संपादक का नाम और दिनांक यथास्थान अंकित किया जाता है।

13-प्रसारित समाचार पर अपनी ओर से कोई टिप्पणी देना वर्जित (सख्त मनाही) है।

14-रेडियो समाचार लेखन में जाति, धर्म, संप्रदाय, भाषा बोली, लिंग, क्षेत्रवाद, वर्ग संघर्ष, यौनाचार, अश्लील विषयों पर बहुत ही संयम और संतुलन रखा जाता है। इस तरह से समाचार का लेखन किया जाता है कि समाचार वाचक के समाचार वाचन के बाद उस समाचार को सुनकर किसी को व्यक्तिगत तौर पर कोई ठेस या हानि न पहुंचे।

15-समाचार और सूचनाओं में ताजगी बनाए रखने के लिए इसमें 'आज सुबह', 'आज शाम', 'आज दोपहर' जैसे तात्कालिक बोध कराने वाले शब्दों का प्रयोग किया जाता है।
16-समाचार के लिए एक निर्धारित समय होता है जैसे 10 मिनट या 5 मिनट। इसलिए समाचार लेखक को इस तरह से समाचार लेखन करना चाहिए कि समाचार वाचक उचित गति, आरोह-अवरोह, अंतराल आदि के साथ निर्धारित समय में समाचार वाचन कर सके।
17-समाचार लेखन में किसी तरह की अतथ्यपरक, संदेहास्पद या झूठी, अफवाह वाली किसी बात को एकदम नहीं डालना चाहिए।

बोधप्रश्न

- समाचार लेखन की क्या विशेषताएँ हैं?

8.3.4.2 संवाद लेखन

संवाद चाहे किसी फिल्म के लिए लिखा जाए या फिर किसी नाटक या रेडियो के किसी रेडियो नाटक हेतु लिखा जाए। संवाद लेखन बड़ा ही विशिष्ट और महत्वपूर्ण कार्य है। सवाल ये उठता है संवाद किसे कहा जाए? दो या दो से अधिक व्यक्ति के बीच होने वाली बातचीत को 'संवाद' कहा जाता है। यहाँ यह ध्यान में रखा जाना चाहिए कि फिल्म या रेडियो हेतु लिखा जाने वाला संवाद अलग होता है। संवाद फिल्म में जान डाल देते हैं। कई ऐसे संवाद हैं जिनसे पूरी फिल्म हिट हो जाती है। कभी-कभी तो किसी-किसी फिल्म के संवाद लोगों की ज़बान पर चढ़ जाते हैं। संवाद सामान्यतः वाचिक होता है। कभी-कभी मूकसंवाद की भी आवश्यकता होती है। इशारों में बात करना भी एक तरह का संवाद ही है। बिहारी लाल जी का दोहा द्रष्टव्य है-

कहत नटत रीझत खिझत मिलत खिलत लजियात ।
भरे भवन में करत है नैनन ही सो बात।।

बोधप्रश्न

- बिहारीलाल जी के दोहे में किस तरह से संवाद हो रहा है?

सूर्य प्रसाद दीक्षित लिखते हैं 'संवाद लेखन के लिए आवश्यक है पात्रानुकूल भाषा, विषयानुकूल शैली, छोटे बड़े प्रतीक प्रोक्तियाँ और सुविचारित तर्क। उसमें प्रतिपाद्य विषय का गंभीर विवेचन होना चाहिए, नाटकीयता होनी चाहिए और कुल मिलाकर उसे बोधगम्य होना चाहिए।' फिल्मों के संवाद लेखन के क्षेत्र में सलीम खान, जावेद अख्तर, कादर खान, आकाश खुराना, रॉबिन भट्ट, जावेद सिद्दीकी, रूमी जाफरी आदि के नाम बहुत ही सम्मान के साथ लिए जाते हैं। जो व्यक्ति फिल्म की कहानी लिखता है वही संवाद भी लिखता है। यह न्यायसंगत भी है। कभी-कभी अलग से संवाद लेखक रखे जाते हैं। संवाद लेखक को हिंदी भाषा, आंचलिक भाषा के शब्द, के साथ-साथ अंग्रेजी की भी जानकारी होनी चाहिए।

रेडियो के क्षेत्र में रेडियो नाटक के आत्म संवाद को माना जाता है। संवादों और ध्वनियों द्वारा वे उन दृश्यों की भी अनुभूति करा देते हैं जो रंगमंच पर संभव नहीं होते हैं। रेडियो नाटक की कहानी की परतें संवाद से ही खुलती हैं। पात्रों का परिचय भी संवाद से मिलता है। संवाद द्वन्द्व का अनुभव कराते हैं। घटनाक्रम में तीव्रता लाने का काम संवाद से लिया जाता है। अब कुछ बहुत ही प्रसिद्ध संवाद आपके समक्ष रखे जा रहे हैं।

1-अनारकली ! सलीम तुझे मरने नहीं देगा और हम तुझे जीने नहीं देंगे।

फिल्म – मुग़ल – ए- आज़म

2-चिनाय सेठ ! जिनके घर शीशे के बने होते हैं। वो दूसरों पर पत्थर नहीं फेंकते।

फिल्म- वक़्त

3-हम तुम्हें मारेंगे और जरूर मारेंगे लेकिन वक़्त भी हमारा होगा। बंदूक भी हमारी होगी और गोली भी हमारी होगी।

फिल्म – सौदागर

4-मूँछें हों तो नत्थू लाल जैसी, वरना न हों।

फिल्म-शराबी

5-अरे ओ सांभा कितना इनाम रखे है सरकार हम पर पूरे पचास हजार।

फिल्म- शोले

6-तेरा क्या होगा कालिया! स...स...सरदार मैंने आपका नमक खाया है सरदार।
अब गोली खा।

फिल्म- शोले

7-एक बार जो मैंने कमिटमेंट कर दी। उसके बाद तो मैं खुद की भी नहीं सुनता।

फिल्म- वांटेड

8-आजकल जो जितना ज़्यादा नमक खाता है। उतनी ही ज़्यादा नमक हरामी करता है।

फिल्म – असली-नकली

9-जली को आग कहते हैं, बुझी को राख कहते हैं। जिस राख से बारूद बने, उसे विश्वनाथ कहते हैं।

फिल्म-विश्वनाथ

10-आज के जमाने में तो बेईमानी ही एक ऐसा धंधा रह गया है, जो पूरी ईमानदारी के साथ किया जाता है।

फिल्म- कालीचरण

11-तारीख पर तारीख, तारीख पर तारीख तारीख पर तारीख मिलती रही है, लेकिन इंसाफ नहीं मिला मी लॉर्ड ।

फिल्म – दामिनी

बोधप्रश्न

- हिंदी फिल्मों के कुछ प्रमुख संवाद बताइए।

8.3.4.3 पटकथा लेखन

पटकथा शब्द का संधि विच्छेद करने पर 'पट' और 'कथा' शब्द निकलता है। 'पट' का अर्थ है- 'पर्दा' या 'पतली दीवार' तथा 'कथा' का अर्थ है- 'कहानी' अर्थात ऐसी कथा जिसे परदे पर प्रस्तुत किया जा सके 'पटकथा' कहलाती है। पटकथा में किसी नाटक की तरह कथानक को दृश्यों में तोड़कर पेश करते हैं। मनोहर श्याम जोशी लिखते हैं 'वाचिक साहित्य के आधुनिक

माध्यम रेडियो से नाटक प्रस्तुत करते हुए दोहराने -समझाने की ऐसी कोई गुंजाइश नहीं होती। यही नहीं, श्रोता बोलने वाले को केवल सुनता है, देखता नहीं कि उसके चेहरे के भाव पढ़ सके। इस दृष्टि से रेडियो खालिश श्रव्य माध्यम है। इसके लिए ऐसा लेखक दरकार है जो सारा कथानक पात्रों की आपसी बातचीत और साउन्ड-इफेक्ट यानी ध्वनि प्रभाव के सहारे उजागर कर सके।' पटकथा को अंग्रेजी में 'स्क्रिप्ट' कहते हैं। इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों के द्वारा जो भी कार्यक्रम प्रसारित होते हैं उन सभी विधाओं को प्रस्तुत करने के लिए पहले एक पटकथा बनाई जाती है। पहले दृश्यपरक रूपक की एक संक्षिप्त कथा बनाई जाती है। फिर उस कथा से कथानक तैयार किया जाता है। उसमें पूरी घटना को देशकाल के अनुसार बताते हुए पात्रों का विवरण भी दिया जाता है। सूर्य प्रसाद दीक्षित लिखते हैं'पटकथा में नाटकीयता, आकस्मिकता, स्वाभाविकता, विचारोत्तेजना, वर्णनात्मकता, वैचारिकता आदि का होना आवश्यक होता है। इसका आकार मूल कार्यक्रम की समयावधि के अनुसार निश्चित किया जाता है। नवीनता, उपयोगिता और प्रभावोत्पादकता को इनका विशिष्ट गुण कहा जा सकता है।'

बोधप्रश्न

- पटकथा का क्या अर्थ है?

सूर्यप्रसाद दीक्षित ने पटकथा लेखन के 3 चरण स्वीकार किए हैं-

1-संक्षिप्त कथा 2-विकसित कथा 3-मूल पटकथा

1-संक्षिप्त कथा

सबसे पहले तो किसी पटकथा लेखक के मस्तिष्क में कोई मूल विचार आता है। इसी को 'थीम', 'आइडिया' या 'कान्सेप्ट' कहते हैं। किसी थीम, आइडिया या कान्सेप्ट के बाद पटकथा लेखक संक्षिप्त कथा या वन लाइन तैयार करता है। सामान्यतः 5 पृष्ठों में पटकथा लेखक फिल्म के सम्पूर्ण घटनाक्रम का सारांश प्रमुख पात्रों के चरित्र विकास और उनके अन्तःसंबंध की रूपरेखा लिखता है।

2-विकसित कथा

इस चरण में पटकथा लेखक 'कहानी को शुरू से अंत तक कैसे चलना है' लिखता है। प्रमुख पात्रों की पृष्ठभूमि आदि को विश्लेषित करता है। इसी चरण में आदि, मध्य अंत और शीर्षक निश्चित किया जाता है। इसी चरण में कथा में कहाँ गीत आएगा? कहाँ नृत्य आएगा? कहाँ मारधाड़ (फाइटिंग) होगी? कहाँ से उपकथा जुड़ेगी? इन सबका निर्धारण होता है। यदि कोई सुझाव या संशोधन होता है तो उसे इसी चरण में पूरा कर लिया जाता है।

3-मूल पटकथा

पटकथा लेखक सामान्यतः 60-80 दृश्यों में पूरी कथा को दिखाता है। इस तरह से उसकी रिकॉर्डिंग को शुरू करने की प्रक्रिया शुरू होती है। प्रत्येक पटकथा लेखक का अपना तरीका और नजरिया होता है। कुछ लोग मारधाड़ ज़्यादा रखते हैं तो कुछ लोग प्यार मोहब्बत वाले दृश्य। कुछ पटकथा लेखक के संवाद इतने अच्छे होते हैं कि फिल्म उसी के बदौलत चल निकलती है। असल में पटकथा लेखन सतत अभ्यास की मांग करता है। इसके अंतर्गत भी कई क्षेत्र हैं। यह रोज़गारपरक कार्य है।

बोधप्रश्न

- पटकथा लेखन के तीन चरणों के विषय में बताइए।

8.3.4.4 रेडियो नाटक

'रेडियो नाटक' वे नाटक होते हैं जो रेडियो की जरूरतों के हिसाब से लिखे जाते हैं और रेडियो पर प्रस्तुत किए जाते हैं। कुछ ऐसे रेडियो नाटक भी हैं जो बाद में पुस्तक में एकाँकी के रूप में प्रकाशित हुए। सिद्धनाथ कुमार लिखते हैं 'रेडियो नाटक सामान्यतः 15 मिनट से 60 मिनट की अवधि का होता है, कुछ नाटिकाएँ 15 मिनट से कम की भी होती हैं।' रेडियो नाटक की विशेषता है ध्वनि प्रभाव, प्रकाशकीय प्रभाव। भाषा की बात करें तो इसमें संगीत का सम्मिश्रण होता है। वाचिक अभिनय, पार्श्व संगीत इत्यादि। इन सबके मदद से रेडियो नाटक के प्रसारण को प्रभावशाली बनाया जाता है।

बोधप्रश्न

- रेडियो नाटक किसे कहते हैं?

रेडियो नाटक का जन्म रेडियो के आविष्कार के बाद हुआ है। हिंदी क्षेत्र का पहला प्रसारण केंद्र दिल्ली में 1 जनवरी 1936 को खुला था। 3 जनवरी 1936 को वहाँ से पहला रेडियो नाटक 'मनतोश' प्रकाशित हुआ। यह रेडियो नाटक क्षीरोदचंद्र चटर्जी के बंगला नाटक का अहमद शुजा द्वारा उर्दू में किया गया रूपांतर था। राजनारायण मेहरा द्वारा लिखित 'नल दमयन्ती' नाटक को हिंदी का प्रथम रेडियो नाटक स्वीकार किया जाता है। इसका प्रसारण दिल्ली से 13 नवंबर 1936 को हुआ था। इसकी भाषा में हिंदी का स्पर्श है लेकिन इसका आलेख फारसी लिपि में उपलब्ध है। उर्दू लेखकों ने कई रेडियो नाटक लिखे थे। जिनका सफलतापूर्वक प्रसारण हुआ था। उदाहरण के लिए मुफ्ती गौहर शादानी के नाटक राणा प्रताप (7 मार्च, 1936) और राम वनवास (24 जुलाई 1936), मुहम्मद नबी देहलवी के परमात्मा का इंसाफ (30 सितंबर 1936), इशरत रहमानी का नाटक प्रेमदान (7 नवंबर, 1936) आदि। सिद्धनाथ कुमार लिखते हैं 'किसी हिंदी लेखक द्वारा लिखित रेडियो नाटक के रूप में 'राधाकृष्ण' को मान्यता दी जाती है। जिसकी रचना आचार्य चतुरसेन शास्त्री ने की थी और दिल्ली से जिसका प्रसारण 29 अगस्त, 1937 को हुआ था।' 1936 से 1947 के मध्य उर्दू रेडियो नाटक बड़ी संख्या में लिखे गए। सिद्धनाथ कुमार ने सत्य ही कहा है 'अपने देश में रेडियो नाटक के स्वरूप निर्माण में उर्दू नाटककारों का महत्वपूर्ण योगदान रहा, इसमें संदेह नहीं।'

रेडियो नाटक लिखने वाले रेडियो नाटककारों में चंद्रकिशोर जैन, विष्णु प्रभाकर, चिरंजीत, हरीशचंद्र खन्ना, भारत भूषण अग्रवाल, गिरिजा कुमार माथुर, प्रभाकर माचवे, विश्वम्भर मानव, कृष्णकिशोर श्रीवास्तव, भगवतशरण उपाध्याय, हंस कुमार तिवारी, प्रफुल्लचंद्र ओझा 'मुक्त', ब्रजकिशोर नारायण, सिद्धनाथ कुमार, कर्तार सिंह दुग्गल, रामवृक्ष बेनीपुरी, अमृत लाल नागर, लक्ष्मीनारायण मिश्र, कमलेश्वर आदि प्रमुख हैं। चंद्रकिशोर जैन के रेडियो नाटक 'विषकन्या' में नारी की विवशता, अजेय प्रतिहिंसा आदि का चित्रण है। विष्णु प्रभाकर के रेडियो नाटकों में 'वीर पूजा', 'दरिंदा', 'अशोक', 'समाजवादी बनो' आदि हैं। इनके नाटकों के विषय विविध हैं। चिरंजीत के कई रेडियो नाटक हैं। 1962 में चीनी आक्रमण के समय

इनका व्यंग्य धारावाहिक 'अजगरराज' प्रकाशित हुआ था। 1965 और 1971 में हिंदुस्तान और पाकिस्तान युद्ध के समय इनका व्यंग्य धारावाहिक 'ढोल की पोल' बहुत लोकप्रिय हुआ था। इसके लिए इन्हें 'पद्मश्री' भी प्रदान किया गया था।

बोधप्रश्न

- हिंदी में रेडियो नाटक लिखने वाले कुछ प्रमुख नाटककारों के नाम लिखिए।

हरिश्चंद्र खन्ना के रेडियो नाटक मुख्यतः मनोवैज्ञानिक नाटक हैं। इनके प्रमुख नाटकों में 'मुर्दे जागते हैं', 'अपमान', 'मुक्ति के पथ पर', 'कायर' आदि। भारत भूषण अग्रवाल के कई रेडियो नाटक हैं जैसे – 'महाभारत की साँझ', 'गंगा की गाथा', 'रत्नावली', 'भादों की एक रात' आदि। 'महाभारत की साँझ' रेडियो नाटक महाभारत के एक प्रसंग पर आधारित है। इसमें नए ढंग से उस प्रसंग की व्याख्या की गई है। गिरिजा कुमार माथुर के रेडियो नाटक बाद में प्रकाशित हुए। इनके नाटक है- 'जनम कैद', 'बरात चढ़े', 'लाउड स्पीकर' आदि हैं। लाउड स्पीकर में मौके-बेमौके बजनेवाले लाउड स्पीकर से पड़ोसियों को होने वाली परेशानियों को चित्रित किया गया है। प्रभाकर माचवे के नाटक 'अब्रा का ड़ब्रा', 'अधकचरे', 'पागलखाने' आदि हैं। प्रभाकर माचवे की रचनाओं में जीवन के विविध पक्षों को चित्रित किया गया है।

विश्वम्भर मानव के नाटकों में 'संकीर्ण', 'दो फूल', 'प्रेम का बंधन', 'जीवन साथी' आदि। इनके अधिकांश नाटकों में प्रेम और विवाह से संबंधित समस्याओं पर विचार किया गया है। कृष्णकिशोर श्रीवास्तव के नाटक हैं- 'तूफान के बाद', 'मछली के आँसू', 'कच्चे धागे' आदि। भगवतशरण उपाध्याय की रचनाएँ 'सीकरी की दीवारें', 'रूपमती और बाज बहादुर', 'नारी', 'शाही मजूर' आदि। 'सीकरी की दीवारें' में शाहजहाँ के अंतिम काल के युद्धों की पृष्ठभूमि पर जहाँआरा और छत्रसाल के प्रेम का मार्मिक और कर्तव्य की बेदी पर प्रेम के बलिदान की सृष्टि की गई है। 'रूपमती और बाजबहादुर' इतिहास के स्त्री और पुरुष हैं। इसमें प्रेम , विवाह, ब्याज बहादुर के निधन और रूपमती के विषपान की कहानी है। 'शाही मजूर' में औरंगजेब का चरित्र चित्रण है। इसमें यह दिखलाया गया है कि वह अपनी व्यक्तिगत आजीविका के लिए टोपी सीने, और कुरआन की प्रतिलिपि तैयार करने का काम किया करता था। प्रफुल्ल चंद्र ओझा ने कई रेडियो नाटक लिखे हैं जैसे-'दूब और पगडंडी', 'धब्बे', 'पुकार', 'प्रतिशोध' आदि। इनके विषय सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, रोमांचक आदि हैं।

बोधप्रश्न

- भगवतशरण उपाध्याय के प्रमुख नाटकों के नाम लिखिए।

सिद्धनाथ कुमार भी रेडियो नाटक लिखने में सिद्धहस्त हैं। उन्होंने रेडियो नाटक से संबंधित किताबें भी लिखी हैं। उनके प्रमुख रेडियो नाटकों में 'प्रकाश की विजय', 'विषाद की छाया', 'मुर्दे जियेंगे' आदि हैं। 'प्रकाश की विजय' और 'दुनिया खड़ी है' गाँधी जी के जीवन से संबंधित है। 'विजेता' में अशोक के जीवन को दिखाया गया है। कर्तार सिंह दुग्गल ने मुख्य रूप से पंजाबी में रेडियो नाटक लिखे हैं। इनके कई रेडियो नाटक हिंदी में भी हैं जैसे- 'कहानी कैसे बनी', 'अल्लाह मेघ दे', 'जूठे टुकड़े' आदि। 'अल्लाह मेघ दे' पंजाबी लोकगीतों पर आधारित है। रामवृक्ष बेनीपुरी जी भी इस क्षेत्र में रहे। उनके प्रमुख रेडियो नाटक इस प्रकार हैं- 'गाँव के

देवता', 'रामराज्य', 'अमर ज्योति' आदि। इसी तरह से रेडियो नाटक आज भी लिखे जा रहे हैं और उनका आकाशवाणी से प्रसारण भी होता है।

8.3.4.5 टेली ड्रामा

इसे 'टी.वी.' ड्रामा भी कहा जाता है। इसमें मंचीय नाटकों की तरह दृश्य सज्जा होती है। इसमें अंक, दृश्य विभाजन होता है। कथानक योजना के अनुसार सभी घटनाएँ पात्रों के वाचिक, कायिक, सात्विक, और आहार्य अभिनय के सहारे प्रस्तुत की जाती हैं। ये नाटक विभिन्न तरह के विषयों पर हो सकते हैं।

बोधप्रश्न

- टेली ड्रामा किसे कहते हैं?

8.3.4.6 वृत्तचित्र

वृत्तचित्र को अंग्रेजी में 'डॉक्यूमेंट्री' कहते हैं। यह विधा असलियत कहना चाहती है। इसमें 'डाक्यूमेन्ट' शब्द है। जिसका अर्थ 'दस्तावेज़' होता है। इसमें पूरा विवरण होता है। बीच-बीच में कुछ दृश्य या संवाद भी होते हैं। इसमें नाटकीयता होती है जिससे तथ्यों की मूल प्रस्तुति अत्यधिक सरस हो जाती है। रेडियो पर इस तरह के कार्यक्रमों के लिए कलाकारों द्वारा नाट्य दृश्यों का प्रस्तुतीकरण किया जाता है। इस हेतु जिन संवादों का सृजन किया जाता है उसमें पात्रानुकूल परिस्थिति के हिसाब से भाषा का प्रयोग होता है। इसके उदाहरण के रूप में 'भारत: एक खोज' को लिया जा सकता है। यह हमारे देश के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू जी द्वारा लिखित पुस्तक 'Discovery of India' (डिस्कवरी ऑफ इंडिया) के आधार पर तैयार किया गया था।

बोधप्रश्न

- वृत्तचित्र किसे कहते हैं?

8.3.4.7 रिपोर्ताज

'रिपोर्ट' अंग्रेजी भाषा का शब्द है। जब किसी घटना का वास्तविक और तथ्यपरक वर्णन किया जाता है तो उसे 'रिपोर्ट' कहते हैं। रिपोर्ट को सामान्यतः समाचारपत्र हेतु लिखा जाता है। इसमें साहित्यिकता का अभाव होता है। 'रिपोर्ताज' शब्द फ्रेंच भाषा का शब्द है और उसे फ्रेंच से सीधे उसी रूप में हिंदी में ले लिया गया है। रिपोर्ट के कलात्मक और साहित्यिक रूप को 'रिपोर्ताज' कहते हैं। यह हिंदी साहित्य की एक विधा है। जो रेडियो के साथ-साथ दूरदर्शन और मुद्रित पत्रकारिता में भी प्रसिद्ध है। इसमें किसी देशकाल, घटना, व्यक्ति, और मन्तव्य का सर्वांगीण विवरण प्रस्तुत किया जाता है। रेडियो में देखे गए दृश्य का इस तरह से सघन वाचन किया जाता है कि श्रोताओं के समक्ष दृश्य बिम्ब उपस्थित हो जाता है। इस विधा के सहारे मेलों, ठेलों, समारोहों, सुख, बाढ़, चुनाव और विशिष्ट महत्व वाले अवसरों को यादगार बना दिया जाता है।

रिपोर्ताज लेखकों में शिवदान सिंह चौहान, फणीश्वर नाथ रेणु आदि प्रमुख हैं। इस संदर्भ में रेणु जी की रचना 'ऋणजल धनजल' काफी प्रसिद्ध है। इसमें 'ऋणजल' का अर्थ है- 'जल की कमी' अर्थात 'सूखा' और 'धनजल' का अर्थ है- 'जल की अधिकता' अर्थात 'बाढ़'। इस

संस्मरणात्मक रिपोर्ताज में रेणु जी ने 1966 में बिहार में पड़े सूखे पर रिपोर्ताज लिखा है। 1966 में जो सूखा पड़ा था उससे पूरा दक्षिण बिहार प्रभावित हुआ था। इसके साथ-साथ इस कृति में 1975 में बिहार में आई बाढ़ पर रिपोर्ताज है। इस बाढ़ में पटना के कई घर डूब गए थे। रिपोर्ताज लिखने में भाषा में संवेदनशीलता का होना अतिआवश्यक है।

बोधप्रश्न

- फणीश्वर नाथ 'रेणु' की रचना 'ऋणजल धनजल' में मुख्य रूप से किस बात की चर्चा है?

8.3.4.8 सोप आपेरा

सोप ओपेरा में 'सोप' और 'ओपेरा' शब्द हैं। 'सोप' का अर्थ है 'साबुन' और 'ओपेरा' रंगमंच से जुड़ा हुआ एक शब्द है। इसमें क्रिया, कहानी और चरित्र चित्रण सभी संगीत के माध्यम से पूरे किए जाते हैं। 'ओपेरा' शब्द का इतालवी में अर्थ होता है 'काम'। जहाँ तक 'सोप ओपेरा' की बात है तो इस शब्द की उत्पत्ति सोप (साबुन) निर्माताओं द्वारा प्रायोजित रेडियो नाटकों या दूरदर्शन पर लंबे समय तक चलने वाले धारावाहिक के लिए होता था। यह दूरदर्शन और रेडियो दोनों में उपयोगी होता है। यह एक तरह का ऐसा कार्यक्रम होता है जो कई वर्षों तक चलता है जैसे- किसी चैनल पर कोई सीरियल 10-15 वर्षों तक चलता है। इसका सबसे अच्छा उदाहरण दूरदर्शन चैनल पर आने वाला धारावाहिक महाभारत, जय श्रीकृष्ण, जय हनुमान, अलिफ़ लैला, शक्तिमान आदि हैं। ये धारावाहिक कई वर्षों तक चले थे। इसमें पटकथा, संवाद, गीत आदि का समावेश होता है। वास्तव में इनका लेखन प्रशिक्षण की मांग करता है। इसके साथ यह भी बात है कि इसमें काफी धनराशि भी प्राप्त होती है।

बोधप्रश्न

- सोप ओपेरा शब्द का इस्तेमाल किस संदर्भ में किया जाता है?

8.3.4.9 रूपांतरण

रूपांतरण अर्थात 'रूप का अंतरण' या 'रूप का बदल जाना'। इसमें किसी एक काव्य रचना के रूप को बदलकर दूसरे काव्य रूप में परिवर्तित कर दिया जाता है। सूर्य प्रसाद दीक्षित लिखते हैं 'यह अनुवाद का एक रूप है। इसे 'ट्रांसफॉर्मेशन' (अर्थात एक काव्य रूप को दूसरे काव्य रूप में परिवर्तित कर देना) अथवा 'विधान्तरण' कहा जा सकता है। रेडियो पर लोकप्रिय उपन्यासों, कहानियों, काव्यों और गद्य कृतियों को ध्वनि नाटक के रूप में प्रस्तुत किया जाता है जैसे- प्रेमचंद की किसी कहानी को ध्वनि नाटक के रूप में प्रस्तुत करना।

इस विषय में यह ध्यान में रखा जाना चाहिए कि इसके लिए विषय का गंभीर अध्ययन व ज्ञान, मूल कृति का गहन अध्ययन, तकनीकी की जानकारी, देश-काल और परिस्थितियों का यथोचित ज्ञान भाषा और उसकी प्रभावी अभिव्यक्ति की गंभीर जानकारी आवश्यक है। रूपांतरण में यह ध्यान में रखा जाता है कि मूल कृति की आत्मा, उसके उद्देश्य को कोई नुकसान न पहुंचे।

बोधप्रश्न

- 'रूपांतरण को 'विधान्तरण' किस आधार पर कहा जा सकता है?

8.3.4.10 साक्षात्कार

साक्षात्कार के लिए अंग्रेजी में 'इंटरव्यू' शब्द का प्रयोग किया जाता है। 'इन्टर' का अर्थ हुआ 'आंतरिक' और 'व्यू' का अर्थ हुआ 'देखना'। कहने का अर्थ हुआ 'किसी के आंतरिक पक्ष को देखना या किसी के अंतस को देखना/ अवलोकन करना'। जहाँ तक हिंदी शब्द साक्षात्कार की बात है तो इसका अर्थ हुआ 'साक्षात भेंट करना' या 'आमने सामने बैठकर भेंट करना'। यहाँ यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि हम दो लोग आमने सामने बैठकर बात कर रहे हैं तो उसे साक्षात्कार नहीं कहा जाएगा। साक्षात्कार एक विधा है। इसके नियम हैं। किसी विशिष्ट व्यक्ति का साक्षात्कार लिया जाता है। वर्तमान में ऑनलाइन विधि से भी साक्षात्कार लिया जाता है। टेलीफोनिक साक्षात्कार भी प्रचलन में है।

बोधप्रश्न

- साक्षात्कार और इंटरव्यू का अर्थ लिखिए।

साक्षात्कार अलग-अलग परिस्थितियों के हिसाब से लिया जाता है जैसे –

1-नौकरी हेतु 2-किसी पाठ्यक्रम में प्रवेश हेतु
3-शोध कार्य हेतु 4-किसी विषय के प्रचार प्रसार हेतु 5-किसी विषय पर ज्ञानवर्धन करने हेतु आदि।

1-नौकरी हेतु-

आपको असिस्टेंट प्रोफेसर या अतिथि प्राध्यापक (गेस्ट फैकल्टी) की नौकरी करनी है। आप इस हेतु निर्धारित सारी योग्यताएँ रखते हैं। तो आप साक्षात्कार हेतु जाते हैं। वहाँ विषय विशेषज्ञ और विश्वविद्यालय या महाविद्यालय के पदाधिकारी होते हैं। आपसे प्रश्न पूछे जाते हैं। आप उन प्रश्नों का उत्तर देते हैं। उन प्रश्नों के जरिए आपकी योग्यता, आपके व्यवहार इत्यादि को परखा जाता है।

2-किसी पाठ्यक्रम में प्रवेश हेतु

मान लीजिए कि आपको मौलाना आज़ाद नैशनल उर्दू यूनिवर्सिटी, हैदराबाद के हिंदी विभाग में पीएच.डी. पाठ्यक्रम में प्रवेश लेना है तो इस हेतु भी साक्षात्कार होता है। आप साक्षात्कार में अपने प्रमाणपत्रों इत्यादि के साथ प्रस्तावित शोध विषय या सिनाप्सिस लेकर जाते हैं। वहाँ विषय विशेषज्ञ / विभाग के प्राध्यापक आपसे प्रश्न पूछकर आपकी योग्यता, रुचि आदि को जानने का प्रयास करते हैं।

3-शोध कार्य हेतु

हम लोग शोध कार्य हेतु भी साक्षात्कार लेते हैं। मान लीजिए हमारा शोध विषय ऐसा है जिसमें उस विषय से संबंधित व्यक्तियों, विषय विशेषज्ञों का साक्षात्कार लेकर मदद ली जा सकती है तो हम ऐसा कर सकते हैं।

4-किसी विषय के प्रचार प्रसार हेतु

कुछ विश्वविद्यालय अपने यहाँ प्रवेश की जानकारी देने के लिए या उस विश्वविद्यालय में मिलने वाली सुविधाओं की जानकारी देने के लिए भी साक्षात्कार का इस्तेमाल करते हैं। इसमें उस

विश्वविद्यालय के कुलपति या उच्च अधिकारी आदि का इंटरव्यू रिकार्ड कर उसे प्रचारित प्रसारित किया जाता है।

5-किसी विषय पर ज्ञानवर्धन हेतु आदि

किसी साहित्यिक विषय, आंदोलन इत्यादि हेतु भी उस विषय या आंदोलन से जुड़े हुए व्यक्ति का साक्षात्कार लिया जाता है।

इसके अलावा किसी विशेष अवसर पर जैसे किसी व्यक्ति को कोई बड़ा पद या कोई बड़ा पुरस्कार मिला तब भी साक्षात्कार लिया जाता है।

बोधप्रश्न

- साक्षात्कार किस-किस उद्देश्य के लिए लिया जाता है?

ध्यान में रखा जाना चाहिए कि रेडियो पर जैसे आकाशवाणी के विविध भारती केंद्र से किसी अभिनेता या अभिनेत्री का साक्षात्कार प्रसारित हो रहा है। अपने उसे सुना। लेकिन आप यह नहीं जानते कि उस प्रस्तुतीकरण के पहले उनको प्रश्न दिए जाते हैं ताकि वे आसानी से उसका जवाब दे सकें। इसके साथ-साथ उसको टेप रीकॉर्डर में रिकार्ड किया जाता है। इसी को 'टेपांकन' कहते हैं। इसकी जानकारी होनी चाहिए। बाद में उसे संपादित किया जाता है, उसमें कुछ कांट-छाँट की जाती है। इसे ही 'एडिटिंग' कहते हैं। हाँ यह अवश्य है कि बीच से किसी वाक्य को डिलीट करने से वाक्य की गति उसका प्रवाह बाधित होता है। हाँ यदि इसे किसी पत्रिका या समाचार पत्र में प्रकाशित करना हो तो उसे लिखकर उसमें कांट-छाँट की जाती है।

रेडियो और प्रिन्ट मीडिया हेतु जो साक्षात्कार लिया जाता है। उसमें बातचीत दो लोगों के बीच होती है। इसमें प्रश्नोत्तर शैली का इस्तेमाल किया जाता है। कहने का तात्पर्य है कि प्रश्नकर्ता द्वारा प्रश्न पहले ही उत्तरदाता को दे दिया जाता है। उत्तरदाता प्रश्नावली के आधार पर उत्तर का अभ्यास करके उसका उत्तर बोल देता है।

यह ध्यान में रखना चाहिए कि साक्षात्कार लेते और देते समय विषय को ध्यान में रखते हुए सभ्य भाषा में उत्तर देना चाहिए। न तो बहुत आक्रामक होकर प्रश्न पूछना चाहिए और न ही बहुत आक्रामक होकर उत्तर देना चाहिए। साक्षात्कार में शिष्टाचार का पालन बहुत महत्वपूर्ण होता है। साक्षात्कार लेने और देने का अभ्यास इस संदर्भ में काफी मायने रखता है।

बोधप्रश्न

- साक्षात्कार लेते और देते समय किन बातों को ध्यान में रखना चाहिए?

8.5 पाठसार

जनसंचार माध्यमों में रेडियो एक महत्वपूर्ण माध्यम है। रेडियो पर अलग-अलग तरह के कार्यक्रम प्रसारित होते हैं। रेडियो लेखन के अंतर्गत विज्ञापन लेखन, समाचार लेखन, संवाद लेखन, पटकथा लेखन, रेडियो नाटक, टेली ड्रामा, वृत्तचित्र, रिपोर्ताज, सोप ओपेरा, रूपांतरण, साक्षात्कार, आदि शामिल किए जाते हैं।

विज्ञापन हमारे आसपास के ऐसे अवयव बन गए हैं कि इनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रहा जा सकता। इसके लिए अंग्रेजी में 'advertisement' शब्द का इस्तेमाल किया जाता है। इसके लिए अलग-अलग भाषाओं में अलग अलग शब्द हैं। विज्ञापन असल में आपको वस्तुओं की

जरूरत का अहसास कराता है। विज्ञापन आपके मन-मस्तिष्क को प्रभावित करता है और आपको उस वस्तु को खरीदने के लिए विवश करने का प्रयास करता है। विभिन्न विद्वानों ने अपने अपने हिसाब से विज्ञापन की परिभाषा दी है। विज्ञापन का इतिहास लगभग 200 वर्ष पुराना है। विज्ञापन में विज्ञापनकर्ता अपने वस्तु की कभी-कभी अतिशयोक्तिपूर्ण प्रसंशा करता है।

रेडियो लेखन के अंतर्गत समाचार लेखन की भी चर्चा होती है। इसमें यह ध्यान में रखना होता है कि यह अत्यंत जिम्मेदारीपूर्ण कार्य है। समाचार सामान्यतः 10 या 5 मिनट प्रसारित होते हैं। इसलिए जो कुछ भी लिखा जाए वह निर्धारित समयावधि में समाप्त हो जाने वाला होना चाहिए। इसमें भाषा और शैली पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होती है।

किसी भी फिल्म नाटक में संवाद की महत्ता से कोई इनकार नहीं कर सकता। ये फिल्मों या रेडियो नाटकों में जान डाल देते हैं। संवाद लेखन धनोपार्जन का भी साधन है। पटकथा लेखन किसी फिल्म या नाटक की कथा को लिखने को कहते हैं। इसके तीन चरण माने जाते हैं- संक्षिप्त कथा, विकसित कथा और मूलकथा।

रेडियो नाटक सामान्यतः 15 मिनट से 60 मिनट का होता है। कई लेखकों ने रेडियो नाटक लिखे हैं जैसे- विष्णु प्रभाकर, भारत भूषण अग्रवाल, प्रभाकर माचवे, भगवतशरण उपाध्याय, सिद्धनाथ कुमार आदि। टेली ड्रामा में मंचीय नाटकों की तरह दृश्य सज्जा की जाती है। अंक दृश्य का विभाजन होता है। वृत्तचित्र के लिए अंग्रेजी में 'डॉक्यूमेंट्री' शब्द का प्रयोग होता है। इन्हें विभिन्न दस्तावेज़ों के आधार पर तैयार किया जाता है।

रिपोर्ताज भी हिंदी साहित्य की एक महत्वपूर्ण विधा है। यह फ्रेंच भाषा का शब्द है और इसे वहाँ से सीधे हिंदी में ले लिया गया है। इसमें किसी घटना विशेष को लिखा जाता है जैसे- सूखा पड़ जाने पर या बाढ़ आ जाने पर आदि। सोप ओपेरा रंगमंच से जुड़ा हुआ एक शब्द है। सोप ओपेरा सोप (साबुन) निर्माताओं द्वारा प्रायोजित रेडियो नाटकों या दूरदर्शन पर लंबे समय तक चलने वाले धारावाहिक के लिए होता था। यह रेडियो और दूरदर्शन दोनों में उपयोगी होता है।

रूपांतरण का अर्थ है 'रूप का अंतरण' या 'रूप का बदल जाना'। यह अनुवाद का एक रूप होता है। इसे 'विधान्तरण' भी कहा जा सकता है। रेडियो पर किसी लोकप्रिय कहानी या उपन्यास को ध्वनि नाटक के रूप में तैयार कर प्रस्तुत किया जाता है। इसके लिए विषय का गंभीर अध्ययन, तकनीकी आदि की जानकारी आवश्यक है।

साक्षात्कार के लिए अंग्रेजी में 'इंटरव्यू' शब्द का प्रयोग किया जाता है। इसमें किसी व्यक्ति या विशेष दिवस आदि पर साक्षात्कार लिया जाता है। प्रश्नों को पहले बता दिया जाता है इत्यादि... इत्यादि... । साक्षात्कार विभिन्न प्रयोजनों के लिए लिया जाता है। जैसे नौकरी हेतु, किसी पाठ्यक्रम में प्रयोग हेतु आदि।

8.6 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से हमें निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं-

1-रेडियो के लिए विभिन्न तरह के कार्यक्रम लिखे जाते हैं।

2-विज्ञापन हमारे जीवन को प्रभावित करते हैं। इसमें अपने वस्तु की अतिशयोक्तिपूर्ण प्रशंसा भी कभी-कभी की जाती है।
3-समाचार के बुलेटिन निर्धारित समय पर प्रसारित होते हैं। समाचार लेखन में किसी तरह की अफवाह इत्यादि को नहीं शामिल किया जाता है।
4-किसी भी फिल्म या नाटक में संवाद की बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका होती है। कभी-कभी तो संवाद ही लोगों की ज़बान पर चढ़ जाते हैं।
5-पटकथा लेखन में तीन चरणों का पालन करते हुए पटकथा को लिखा जाता है।
6-रेडियो नाटक 15-60 मिनट के होते हैं। रेडियो नाटक लिखने वालों में कई साहित्यकारों का नाम लिया जा सकता है।
7-टेली ड्रामा मंचीय नाटकों की तरह दृश्य सज्जा की मांग करता है।
8-वृत्तचित्र को 'डॉक्यूमेंट्री' कहते हैं। इसे दस्तावेज़ों के आधार पर तैयार किया जाता है।
9-रिपोर्ताज फ्रेंच भाषा का शब्द है । इसे फ्रेंच से उसी रूप में ले लिया गया है।
10-सोप ओपेरा साबुन निर्माताओं द्वारा प्रायोजित धारावाहिक या लंबे समय तक चलने वाले रेडियो कार्यक्रमों के लिए प्रयोग किया जाता है।
11-किसी कहानी या उपन्यास को रेडियो की तकनीकी और आवश्यकता के अनुसार बनाकर प्रस्तुत किया जाता है। इसमें उस कहानी को रूपांतरित किए जाता है। यही 'रूपांतरण' है।
12-साक्षात्कार तो किसी बड़े व्यक्ति का विभिन्न परिस्थितियों में लिया जाता है। इसके लिए पहले प्रश्नों को तैयार किया जाता है। फिर आगे की प्रक्रिया होती है।

8.7 शब्द संपदा

1-अतिशयोक्तिपूर्ण	=	बहुत बढ़ा-चढ़ाकर कहा हुआ, भारी भरकम शब्दों से युक्त
2-विज्ञापनदाता	=	विज्ञापन देने वाला
3-निविदा	=	आवश्यक धनराशि प्राप्त कर वांछित वस्तुएं जुटा देने या काम पूरा करने का लिखित वादा
4-फार्मेसी	=	औषधशाला, जहाँ दवाई मिलती है, मेडिकल स्टोर
5-अखबार	=	समाचारपत्र, न्यूज पेपर
6-वैशिष्ट्यपूर्ण	=	विशिष्टता से युक्त, खासियत के साथ
7-आलंकारिक	=	अलंकार संबंधी या अलंकार से युक्त
8-मूक संवाद	=	बिना बोले बात करना, संकेतों या इशारों में बात करना
9-वाचिक साहित्य	=	वाणी संबंधी, मुंह से कहा हुआ, संदेश के रूप में कही गई बात
10-प्रभावोत्पादकता	=	प्रभावशीलता, इच्छित परिणाम उत्पन्न करने में सफल होने का गुण
11-आहार्य	=	हरण किए जाने योग्य
12-कलात्मक	=	कला से युक्त

8.8 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निर्देश : निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए-

1-रेडियो नाटक के विषय में अपने विचार लिखिए।

2-साक्षात्कार के विषय में चर्चा कीजिए।

3-विज्ञापन का अर्थ और परिभाषा बताते हुए विज्ञापन के बारे में बताइए।

खंड (आ)

लघु श्रेणी के प्रश्न

निर्देश : निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए-

1-पटकथा लेखन के बारे में बताइए।

2-समाचार लेखन के विषय में लिखिए।

3-संवाद लेखन किसे कहते हैं? कुछ प्रमुख संवाद लिखिए।

खंड (स)

(इ)वैकल्पिक प्रश्न

(I)निम्नलिखित प्रश्नों में सही विकल्प छाँटिए-

1-'तेरा क्या होगा कालिया' ये किस फिल्म का संवाद है?

(क)शराबी (ख)वांटेड (ग)सौदागर (घ)शोले

2-सूर्य प्रसाद दीक्षित ने पटकथा लेखन के कितने चरण स्वीकार किए हैं?

(क) 3 (ख) 4 (ग) 2 (घ) 1

3-'अपने देश में रेडियो नाटक के स्वरूप निर्माण में उर्दू नाटककारों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है, इसमें संदेह नहीं।' यह कथन किसका है?

(क)विष्णु प्रभाकर (ख)सिद्धनाथ कुमार (ग)प्रभाकर माचवे (घ)नामवर सिंह

(ii) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

1-भारत में विज्ञापन का इतिहास लगभग ..... साल पुराना है।

2-वृत्तचित्र को अंग्रेजी में ..... कहते है।

3-समाचार की भाषा..... होनी चाहिए।

(iii)सुमेल प्रश्न

(1)Advertisement	(अ)मोहन राकेश
(2)Discovery of India	(ब)रिपोर्ताज

(3)फ्रेंच भाषा का शब्द (स)विज्ञापन
(4)विज्ञापन युग (द)वृत्त चित्र

8.8 पठनीय पुस्तकें

1-पटकथा लेखन : एक परिचय – मनोहर श्याम जोशी

2-प्रयोजनमूलक हिंदी – लेखक – प्रो. सूर्य प्रसाद दीक्षित, संपादक- प्रो. नन्दकिशोर पांडेय

3-प्रयोजनमूलक हिंदी- डॉ. पी. लता

4-विज्ञापन बाजार और हिंदी – कैलाशनाथ पांडेय

5-हिंदी एकांकी – सिद्धनाथ कुमार

6-हिंदी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली – डॉ. अमरनाथ

इकाई-9 : टेलीविजन की विकास यात्रा

इकाई की रूपरेखा

9.1 प्रस्तावना

9.2 उद्देश्य

9.3 मूल पाठ- टेलीविजन की विकास यात्रा

9.3.1 टेलीविजन का संक्षिप्त इतिहास

9.3.2 विश्व में टेलीविजन का उदय और विस्तार

9.3.3 केबल टी. वी. का आगमन: 1991 के बाद

9.4 पाठ सार

9.5 पाठ की उपलब्धियाँ

9.6 शब्द संपदा

9.7 परिक्षार्थ प्रश्न

9.8 पठनीय पुस्तकें

9.1 प्रस्तावना

संचार संस्कृत की 'चर' धातु तथा 'सम' उपसर्ग से मिलकर बना है। 'चर' का अर्थ है चलना अथवा आगे बढ़ना। 'सम' उपसर्ग सम्यक आचरण का ज्ञान करवाता है। अर्थात्, दूसरों तक संपूर्ण रूप में अपनी बातों, भावनाओं, ज्ञान आदि को पहुंचाना ही 'सम्यक कार्य' या फिर संचार कहलाता है। इससे यह भी स्पष्ट हो जाता है कि संचार एक गतिशील प्रक्रिया है। संचार न केवल मनुष्य के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है बल्कि देश और समाज की प्रगति के लिए भी बहुत आवश्यक है। संचार के बिना मनुष्य और समाज दोनों की कल्पना नहीं की जा सकती है। आधुनिक समाज में सूचना का अत्यधिक महत्व है। सूचना के अभाव में व्यक्ति न केवल विश्व से बल्कि परिवार, समाज और देश से भी कट जाता है। श्री रूपचंद गौतम के अनुसार, "संचार का काम है एक-दूसरे से बातचीत करना, लेकिन जब इसका विस्तार कर दिया जाता है यानी आदमियों से परिवार, परिवार से गाँव, गाँव से शहर, शहर से राज्य, राज्य से देश, देश से विदेश तक जनसंचार के दायरे में आ जाता है"। जब भाषा नहीं थी तब भी संचार का कार्य संकेतों के माध्यम से होता था। कबूतरों के माध्यम से सूचना को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुंचाना बहुत आम बात थी। जैसे-जैसे मनुष्य की दिनचर्या में परिवर्तन आता गया ठीक वैसे-वैसे संचार के क्षेत्र में भी आमूलचूल परिवर्तन आता गया। संचार को गति प्रदान करने में भाषा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस तरह से भाषा सूचना और सूचना संप्रेषण के माध्यम

के साथ जुड़ गई। जनसंचार के माध्यमों में इलेक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया दोनों का समान महत्व है। आधुनिक मीडिया में रेडियो, टेलीविजन, फ़िल्म, अख़बार, विज्ञापन और अन्य नए-नए माध्यम रूप आज हमारे सामने आ रहे हैं। प्रस्तुत इकाई का विषय है "टेलीविजन की विकास यात्रा" आगे इसी विषय को लेकर विस्तार से चर्चा की जाएगी।

9.2 : उद्देश्य

प्रिय छात्रों! इस इकाई के अध्ययन से आप-

1. टेलीविजन या दूरदर्शन की विकास यात्रा को समझेंगे।
2. भारत में टेलीविजन की विकास यात्रा से परिचित होंगे।
3. भारत में टेलीविजन की देशव्यापी विकास यात्रा को समझेंगे।
4. रंगीन टेलीविजन की विकास यात्रा को समझेंगे।
5. केबल टी.वी.के आगमन और विकास को को समझेंगे।
6. 21वीं सदी के भारत में टेलीविजन का क्या स्थान इस विषय को समझेंगे।

9.3 मूल पाठ: टेलीविजन की विकास यात्रा

9.3.1- टेलीविजन का संक्षिप्त इतिहास

एक समय ऐसा था जब सूचना प्रौद्योगिकी का सबसे शक्तिशाली स्वरूप बनकर कंप्यूटर ने अपनी एक अलग पहचान बना ली थी। वर्तमान समय में कंप्यूटर के बाद इलेक्ट्रॉनिक संसाधन के सबसे सफल संसाधन के रूप में 'टेलीविजन' का अपना अलग महत्व है। 'टेलीविजन' तरंगों के माध्यम से एक साथ दृश्य और ध्वनि को दूर से दूरस्थ स्थानों तक उसी तेज गति से भेजने में सफलता प्राप्त हुई है, जैसी तीव्र गति से रेडियो द्वारा तरंगें भेजी और ग्रहण की जाती रही है। टेलीविजन ने जीवंत दृश्य दिखाकर-सुनाकर न केवल मनुष्य के विश्वास को जीत लिया है बल्कि मनोरंजन की एक नई दुनिया को भी हमारे सामने रख दिया है। इसने विशाल विश्व को समेटकर एक कमरे में बंद कर दिया है।

वर्तमान समय में टेलीविजन ने 100 साल की यात्रा को पूर्ण किया है। दशक पहले कभी यह एक भारी भरकम डिब्बे के रूप में दिखानेवाला एक बॉक्स हुआ करता था। साल 1924 में बक्से, कार्ड, पंखे के मोटर से तैयार हुए इस टी.वी. ने अपने आप को जिस प्रकार से रूपांतरित किया है वह काफी रोमांचकारी अनुभव है। टेलीविजन के अविष्कारक जॉन लोगी बेयर्ड थे। इनका जन्म स्कॉटलैंड में 13 अगस्त,1888 में हुआ था। बचपन में अक्सर बीमार रहने के कारण वे स्कूल नहीं जा पाते थे और घर में रहकर वे टेलीफोन में बात किया करते थे। उन्हें टेलीफोन से बहुत लगाव हो गया था। बेयर्ड सोचते थे कि एक दिन लोग हवा के जरिए तस्वीर भेज सकेंगे। बेयर्ड ने 1924 में बक्सा, बिस्किट की टीन, सिलाई की सुई, कार्ड और बिजली के पंखे से मोटर

का इस्तेमाल कर पहला टेलीविजन बनाया था। वहीं, टी. वी. के रिमोट कंट्रोल का आविष्कार 1915 में शिकागो में जन्में यूजीन पॉली ने किया था। पॉली जेनिथ इलेक्ट्रॉनिक में कार्यरत थे। 1950 में सबसे पहला रिमोट कंट्रोल वाला पहला टी. वी. बाजार में आया था। जिस समय इसका आविष्कार किया गया उस समय इसका नाम TELEVISOR रखा गया था। जॉन बेयर्ड TELIVISOR पर कठपुतली शो का प्रदर्शन किया करते थे। इसका रिमोट तार के जरिए टी. वी. सेट से जुड़ा हुआ रहता था। पूरी तरीके से रिमोट वाले टेलीविजन का विकास 1955 में हुआ था। टेलीविजन ने अपनी विकास यात्रा के दौरान विभिन्न रूपों से गुजरती रही इस प्रकार से टेलीविजन के मोटे तौर पर 5 प्रकार दिखाई पड़ते हैं। जिनका संक्षिप्त परिचय नीचे दिया जा रहा है-

1.CRT T.V.- यह टेलीविजन का सबसे पहला स्वरूप है। Ti. वी. के भीतर एक ट्यूब होती थी जिसका नाम था CRT इसी कारण से टेलीविजन का नाम भी CRT T.V. रख दिया गया।

2. PLASMA T.V.- इस प्रकार की टी. वी., बनाने की शुरूवात 1990 से हुई थी। यह CRT T.V. के मुकाबले काफी बेहतर मानी जाती थी। इसकी स्क्रीन फ्लैट शेप में होती थी। PLASMA एक वैज्ञानिक नाम है। टेलीविजन के भीतर कैथोड किरणों का उपयोग किया जाता था। इसलिए इस प्रकार के टेलीविजनों जा नाम PLASMA T.V. रखा गया।

3. LCD T.V.- LCD का पूरा नाम है- **LIQUID CRYSTAL DISPLAY**। अत्याधुनिक तकनीक से लैस ये टेलीविजन आकार और वजन दोनों की दृष्टि से ही क्रमशः पतली और हल्की होती है।

4. LED T.V.- LIGHT EMITTING DIODE इस टेलीविजन का पूरा नाम है। इसमें एक प्रकार का कंपाउंड होता है जो कि बिजली के संपर्क में आते ही प्रकाश उत्पन्न करता है। जिसकी सहायता से ही इस प्रकार के टेलीविजनों में चलचित्र यानि दृश्य देखने को मिलता है। इस प्रकार के टेलीविजनों का बाज़ार में बहुत मांग है क्योंकि इन टेलीविजनों की दृश्य गुणवत्ता यानि picture quality काफी बेहतर होती है।

5. OLED T.V.- यह वर्तमान समय का टेलीविजन है। ORGANIC LIGHT EMITTING DIODE इस टेलीविजन का पूरा नाम है। इस प्रकार के टेलीविजनों में एक प्रकार की लेयर होती है जो विद्युत के संपर्क में आते ही उसको चित्रों में परिवर्तित कर देती है और इस प्रकार से हम स्पष्ट से स्पष्टतम दृश्य देख पाते हैं।

9.3.2 विश्व में टेलीविजन का उदय और विस्तार-

संचार के माध्यमों में दूरदर्शन का प्रयोग सर्वप्रथम सन् 1884 में हुआ था। इसके बाद अमेरिका ने सन् 1890, फ्रांस ने सन् 1900 और रूस ने सन् 1915 में टेलीविजन को लेकर सीमित दायरे में प्रयोग कार्य करना प्रारंभ किया। विश्व में पहली बार सन् 1920 में बोलती चित्रों के द्वारा टेलीविजन और मनोरंजन का एक नवीन संबंध स्थापित किया गया। वर्ष 1925 में अमेरिका में डॉ. बोरोकिन तथा जेकिंसनीज ने एक यांत्रिक दूरदर्शन उपकरण का प्रदर्शन किया और सबसे पहला दूरदर्शन कार्यक्रम सन् 1927 में न्यूयार्क और वाशिंगटन के मध्य बेल टेलीफोन लेबोरेट्रीज द्वारा प्रस्तुत किया गया था। इसके बाद लगभग 10 वर्षों का समय टेलीविजन के लिए अति महत्वपूर्ण रहा क्योंकि इस समय टेलीविजन का विकास यांत्रिक और इलेक्ट्रॉनिक दोनों प्रणालियों के माध्यम से करने का नवीन से नवीन प्रयास किया गया।

टेलीविजन की विकास यात्रा के प्रारंभिक चरण में स्टूडियों में तीव्र प्रकाश जलता था जिसे छीद्रित डिस्क में डाला जाता था। डिस्क घूमती थी। इससे दृश्य पर प्रकाश बिंदु पड़ते थे और उसकी स्केनिंग करते थे। रिसीवर में प्रकाश की शहतीर उन जगहों पर तीव्र होती थी जहां प्रकाशित दृश्य चमकीला होता था। गहरे दृश्य पर प्रकाश की शहतीर मद्धिम हो जाती थी। इस प्रणाली की कमी यह थी कि तस्वीर केवल 30 पंक्तियों पर प्रसारित होती थी। इन कमियों को पूर्णतः समाप्त करने के लिए E.M.I. नामक ब्रिटेन की कंपनी ने नए इलेक्ट्रॉनिक कैमरा एवं रिसोविंग ट्यूब को विकसित किया इससे यह लाभ मिला कि पुरानी यांत्रिक समस्याएं समाप्त हो गई। साथ ही साथ तस्वीर की गुणवत्ता भी सुधर गई। सन् 1920 में दृश्य के साथ ध्वनि को जोड़ा जा चुका था लेकिन विकसित, अत्याधुनिक दृश्य और आवाज़ के साथ टेलीविजन का पहला प्रसारण सन् 1930 में ब्रिटेन में हुआ। वह ऐसा समय था जब टेलीविजन को संपूर्ण विश्व अपनाने को तैयार हो चुका था लेकिन ध्यान रहे कि वह अभी तक जनसंचार का साधन नहीं बन सका था। बहुत बड़ी जनसंख्या अभी तक इसके महत्व से अवगत नहीं थी। फ्रांस में नियमित टेलीविजन प्रसारण सन् 1938 में शुरू हुआ था। द्वितीय विश्व युद्ध का समय वह समय था जब आकस्मिक रूप में यूरोप में टेलीविजन का प्रसारण बंद हो गया। लेकिन, अच्छी बात यह रही कि टेलीविजन को लेकर लागातार प्रयोग चलाता रहा। इसी के परिणामस्वरूप जैसे ही विश्व युद्ध के बाद प्रसारण प्रारंभ हुआ सन् 1953 में संयुक्त राज्य ने सर्वप्रथम नियमित रंगीन टेलीविजन का प्रसारण प्रारंभ किया। सन् 1952 में इंग्लैंड, फ्रांस, नीदरलैंड तथा पश्चिम जर्मनी के बीच सफलतापूर्वक पुनः प्रसारण संभव हुआ। सन् 1955 में 'यूरोविजन' नेटवर्क विधिवत् देखने का चलन शुरू हुआ। जिसने ब्रिटेन, फ्रांस, इटली, डेनमार्क, स्वीट्जरलैंड, पश्चिमी जर्मिनी, बेल्जियम तथा नीदरलैंड को जोड़ा। सन् 1962 में सेटेलाइट के जरिए पहले जीवंत (live) कार्यक्रम का आदान-प्रदान यूरोप तथा अमेरिका के बीच हुआ। इसके बाद तो फिर टेलीविजन

की विकास यात्रा लागातार बढ़ती ही चली गई। टेलीविजन के कार्यक्रमों का प्रसारण सफल रूप में हो सके इसके लिए बी. बी. सी. ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

बोध प्रश्न

- संचार के माध्यमों में टेलीविजन का प्रयोग कब हुआ?
    1. सन् 1962 में क्या हुआ?
    2. यूरोविजन नेटवर्क देखने का चलन कब से प्रारंभ हुआ?
    3. सन् 1962 में टेलीविजन के क्षेत्र में क्या परिवर्तन आया?

9.3.2.1 भारत में टेलीविजन का विकास-

आरंभिक दौर-

देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद के द्वारा 15 सितंबर,1959 में भारत में टेलीविजन का उद्घाटन संपन्न हुआ। टेलीविजन को भारत के साथ जोड़ने में UNESCO का एक महत्वपूर्ण योगदान है। भारत में सन् 1936 में UNESCO की एक बैठक के समय देश के ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यक्रमों के प्रसारण के लिए दूरदर्शन की उपयोगिता के महत्व पर प्रकाश डाला गया और इसी बैठक के समय UNESCO ने भारत को टेलीविजन के लिए टेक्निकल तथा आर्थिक सहायता देना स्वीकार कर लिया। वर्ष 1959 में ही UNESCO ने भारत को 20,000 डॉलर की सहायता प्रदान की। इसके फलस्वरूप ग्रामीण क्षेत्रों में टेलीविजन द्वारा स्वास्थ्य और शिक्षा के विभिन्न कार्यक्रमों की श्रृंखला शुरू हुई।

बोध प्रश्न

- भारत के प्रथम राष्ट्रपति कौन थे?
- भारत में टेलीविजन का उद्घाटन कब हुआ?
- वर्ष 1959 में भारत को UNESCO ने कैसे सहायता प्रदान की?

रंगीन टेलीविजन की शुरूआत-

भारत में रंगीन टेलीविजन का जन्म या प्रचलन वर्ष 1982 के 9 वें एशियाई खेलों के दौरान ही शुरू हुआ। खेलों के सीधे और रंगीन प्रसारण के लिए 100 वाट के 20 ट्रांसमीटर विदेशों से आयात किए गए थे। अप्रैल 1982 में जब भारत ने अपनी स्वदेशी उपग्रह इनसेट-1-ए को प्रक्षेपित किया तो टेलीविजन का संसार विशाल हो गया। उस समय दिल्ली, कलकत्ता, मद्रास और बंबई में दूरदर्शन पर राष्ट्रीय कार्यक्रमों का रंगीन प्रसारण एक साथ होने लगा। इस कड़ी में अक्टूबर, 1983 का अपना अलग महत्व है। दूसरी बार भारत ने स्वदेशी उपग्रह 1-बी का प्रक्षेपण किया इससे दूरदर्शन भारत की और अधिक जनता तक रंगीन और सुविकसित तकनीक को लेकर पहुँचा।

बोध प्रश्न

- भारत में रंगीन टेलीविजन का जन्म कब हुआ?
- अप्रैल 1982 में भारत ने क्या प्रक्षेपित किया?
- उपग्रह 1-बी के प्रक्षेपण से भारत को क्या लाभ मिला?

भारत में टेलीविजन का देशव्यापी विस्तार-

सन् 1965 में भारत में टेलीविजन का एक घंटे का नियमित प्रसारण शुरू हुआ। सन् 1966 में 4170 तथा सन् 1971 में भारत के 44,000 लोगों के पास टेलीविजन सेट मौजूद थे। सन् 1975 में भारत ने दूरदर्शन को SATELITE INSTRUCTIONAL TELIVISION EXPERIMENT (SITE) से जोड़ दिया था। इसी के कारण से एशियाड खेलों का सीधा एवं रंगीन प्रसारण भारत में संभव हुआ। अप्रैल, 1976 में 'दूरदर्शन' नाम को साथ लेकर टेलीविजन आकाशवाणी से अलग होकर अपना एक स्वतंत्र अस्तित्व स्थापित करने में सफल हो गया। दूरदर्शन का प्रारंभिक नाम TELIVISION INDIA था।1975 में इसका हिंदी नामकरण दूरदर्शन किया गया। दूरदर्शन ने आज भारत सरकार का महत्वपूर्ण अंग है। अर्थात्, दूरदर्शन सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के आधीन है तथा इसका मुख्य कार्यालय दिल्ली में स्थित है। इसका प्रमुख अधिकारी महानिदेशक होता है। दूरदर्शन के समस्त प्रसारण केंद्र तथा कार्यक्रम महानिदेशक के आधीन होते हैं।

बोध प्रश्न

- SITE शब्द का विस्तारित रूप क्या है?
- भारत सरकार का महत्वपूर्ण अंग क्या है?
- दूरदर्शन का मुख्य कार्यालय कहाँ पर है?
- दूरदर्शन, रेडियो से कब अलग हुआ?

9.3.3 केबल टी. वी. का आगमन:

1991 के बाद-

वर्ष 1990 के दौरान टेलीविजन के इतिहास में फिर से एक बार नई क्रांति को देखा गया। इसकी शुरूवात 1990 के दशक के अंत में कंप्यूटर के प्रयोग से प्रारंभ हुई। धीरे-धीरे मनोरंजन के इस साधन के साथ समाचार के निजी उपग्रह चैनल जुड़ने लगे। स्टार टी. वी., स्टार प्लस, स्टार मूवी, जी. टी. वी., जी. न्यूज़, सोनी आदि न जाने कितने नाम अब टेलीविजन के साथ जुड़ गया था। केवल इतना ही नहीं टेलीविजन अब बीटा मैक्स और वी. एच. एस. टेप, लेज़र डिस्क, उच्च क्षमतावाली हार्ड डिस्क ड्राइव, सी. डी. डिजीटल वीडियो रिकॉर्डर आदि उच्च स्तरीय तकनीकों के साथ जुड़कर अपनी ' अभिलेखीय भंडारण' क्षमता को मजबूत बना चूका है।

इससे दर्शकों को यह लाभ मिला कि वे अपने सुविधानुसार घर पर बैठकर रिकार्ड की गई सामग्री को देख सकते हैं। टेलीविजन और वीडियो प्रोग्रामिंग का भंडारण अब क्लाउड पर भी होता है। सन् 2000 के अंतिम चरण में डिजिटल टेलीविजन प्रसारण की लोकप्रियता अपने चरम सीमा पर थी। इसी समय दूरदर्शन के क्षेत्र में एक और महत्वपूर्ण परिवर्तन आया। टेलीविजन अब SDTV, 576 इंटरलेस्ड रिजॉल्युशन लाइनों और 480आई और हाई डेफिनेशन टेलीविजन (HDTV) के साथ जुड़ गया। HDTV को विभिन्न प्रकारों में प्रसारित किया जा सकता है। 108p, 1080i और 720p HDTV के कुछ नए प्रकार हैं। 2000 के दशक में बेचे जानेवाले अधिकांश टेलीविजन सेट फ्लैट-पैनल, मुख्य रूप से LED थे। 2010 फिर से टेलीविजन के लिए एक नया दौर लेकर आया। स्मार्ट टी. वी., इंटरनेट टेलीविजन के आविष्कार के साथ ही नेटफ्लिक्स, अमेजन प्राइम वीडियो, आई प्लेयर और हुलु जैसी स्ट्रीमिंग वीडियो सेवाओं के द्वारा इंटरनेट के माध्यम से टेलीविजन कार्यक्रमों और फिल्मों का विकास और उनका प्रचार-प्रसार अधिक रफ्तार के साथ होने लगा। इसके फलस्वरूप प्रमुख निर्माताओं ने यहां तक घोषणा कर दी कि वे स्मार्ट टी. वी. का उत्पादन अधिक से अधिक संख्या में करेंगे। ध्यान देनेवाली बात यह है कि, इस समय तक आते-आते टेलीविजन अब जनसंचार का प्रमुख साधन बन चुका था। 2010 की जो सबसे बड़ी उपलब्धि रही कि वह एकीकृत इंटरनेट और वेब 2.0 फंक्शन वाले स्मार्ट टी. वी. मनोरंजन जगत के प्रमुख अंग बन चुके थे। यह एक ऐसा टेलीविजन सेट है जिसमें कई आंतरिक इलेक्ट्रॉनिक सर्किट होते हैं, ट्यूनर के साथ जो प्रसारण संकेतों को स्वीकार करने के साथ-साथ उनको डिकोड भी करता है। विजुअल डिस्प्ले जिसमें ट्यूनर की कमी होती है उसे टेलीविजन के स्थान पर 'वीडियो मॉनिटर' कहा जाता है। 2013 में हुए एक मूल्यांकन में पाया गया कि दुनिया के 79% घरों में अत्याधुनिक तकनीकों से लैस टेलीविजन सेट मौजूद था। OLED टेकनिक में लगातार सुधार जारी है, कई कम्पनियां चमक स्तर और दृश्य के कोण में सुधार के लिए मल्टी लेंस ऐरे (MLA) तकनीक के साथ एक नए OLED पैनल की टी. वी. बाजार में लाने का प्रयास कर रही है। विश्व टेलीविजन दिवस हर साल 21 नवंबर को मनाया जाता है। इसे मनाने का उद्देश्य दुनिया भर में इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों से परे टेलीविजन के महत्व पर जोर देना। जिस प्रकार से टेलीविजन का विकास हो रहा है उससे यही आशा है कि भविष्य में टेलीविजन अपने उद्देश्य और लक्ष्य दोनों को प्राप्त करने में सफल होगा।

बोध प्रश्न

- विश्व टेलीविजन दिवस कब मनाया जाता है?
- साल 2010 की सबसे बड़ी उपलब्धि क्या रही?
- MLA का विस्तारित नाम क्या है?

9.4 : पाठ सार

प्रस्तुत इकाई के अंतर्गत टेलीविजन से संबंधित निम्न जानकारियों को प्रस्तुत किया गया है – संचार संस्कृत की 'चर' धातु तथा 'सम' उपसर्ग से मिलकर बना है। 'चर' का अर्थ है चलना अथवा आगे बढ़ना। 'सम' उपसर्ग सम्यक आचरण का ज्ञान करवाता है। अर्थात्, दूसरों तक संपूर्ण रूप में अपनी बातों, भावनाओं, ज्ञान आदि को पहुंचाना ही 'सम्यक कार्य' या फिर संचार कहलाता है। जनसंचार के माध्यमों में इलेक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया दोनों का समान महत्व है। आधुनिक मीडिया में रेडियो, टेलीविजन, फ़िल्म, अख़बार, विज्ञापन और अन्य नए-नए माध्यम रूप आज हमारे सामने आ रहे हैं। वर्तमान समय में कंप्यूटर के बाद इलेक्ट्रॉनिक संसाधन के सबसे सफल संसाधन के रूप में 'टेलीविजन' का अपना अलग महत्व है। 'टेलीविजन' तरंगों के माध्यम से एक साथ दृश्य और ध्वनि को दूर से दूरस्थ स्थानों तक उसी तेज गति से भेजने में सफलता प्राप्त हुई है, जैसी तीव्र गति से रेडियो द्वारा तरंगें भेजी और ग्रहण की जाती रही है। टेलीविजन ने जीवंत दृश्य दिखाकर-सुनाकर न केवल मनुष्य के विश्वास को जीत लिया है बल्कि मनोरंजन की एक नई दुनिया को भी हमारे सामने रख दिया है। टेलीविजन के अविष्कारक जॉन लोगी बेयर्ड थे। इनका जन्म स्कॉटलैंड में 13 अगस्त,1888 में हुआ था। बचपन में अक्सर बीमार रहने के कारण वे स्कूल नहीं जा पाते थे और घर में रहकर वे टेलीफोन में बात किया करते थे। उन्हें टेलीफोन से बहुत लगाव हो गया था। बेयर्ड सोचते थे कि एक दिन लोग हवा के जरिए तस्वीर भेज सकेंगे। बेयर्ड ने 1924 में बक्सा, बिस्किट की टीन, सिलाई की सुई, कार्ड और बिजली के पंखे से मोटर का इस्तेमाल कर पहला टेलीविजन बनाया था। वहीं, टी. वी. के रिमोट कंट्रोल का आविष्कार 1915 में शिकागो में जन्में यूजीन पॉली ने किया था। पॉली जेनिथ इलेक्ट्रॉनिक में कार्यरत थे। 1950 में सबसे पहला रिमोट कंट्रोल वाला पहला टी. वी. बाजार में आया था। जिस समय इसका आविष्कार किया गया उस समय इसका नाम TELEVISOR रखा गया था। टेलीविजन के मोटे तौर पर 5 प्रकार दिखाई पड़ते हैं। जिनका संक्षिप्त परिचय उपर्युक्त इकाई में पहले भी दिया गया है।

1.CRT T.V.- यह टेलीविजन का सबसे पहला स्वरूप है। टी.वी. के भीतर एक ट्यूब होती थी जिसका नाम था CRT इसी कारण से टेलीविजन का नाम भी CRT T.V. रख दिया गया।

2. PLASMA T.V.- इस प्रकार की टी. वी., बनाने की शुरूवात 1990 से हुई थी। यह CRT T.V. के मुकाबले काफी बेहतर मानी जाती थी। इसकी स्क्रीन फ्लैट शेप में होती थी। PLASMA एक वैज्ञानिक नाम है। टेलीविजन के भीतर कैथोड किरणों का उपयोग किया जाता था। इसलिए इस प्रकार के टेलीविजनों जा नाम PLASMA T.V. रखा गया।

3.LCD T.V.- LCD का पूरा नाम है- LIQUID CRYSTAL DISPLAY। अत्याधुनिक तकनीक से लैस ये टेलीविजन आकार और वजन दोनों की दृष्टि से ही क्रमशः पतली और हल्की होती है।

1. LED T.V.- LIGHT EMITTING DIODE इस टेलीविजन का पूरा नाम है। इसमें एक प्रकार का कंपाउंड होता है जो कि बिजली के संपर्क में आते ही प्रकाश उत्पन्न करता है। जिसकी सहायता से ही इस प्रकार के टेलीविजनों में चलचित्र यानि दृश्य देखने को मिलता है। इस प्रकार के टेलीविजनों का बाज़ार में बहुत मांग है क्योंकि इन टेलीविजनों की दृश्य गुणवत्ता यानि picture quality काफी बेहतर होती है।

2.OLED T.V.- यह वर्तमान समय का टेलीविजन है। ORGANIC LIGHT EMITTING DIODE इस टेलीविजन का पूरा नाम है। इस प्रकार के टेलीविजनों में एक प्रकार की लेयर होती है जो विद्युत के संपर्क में आते ही उसको चित्रों में परिवर्तित कर देती है और इस प्रकार से हम स्पष्ट से स्पष्टतम दृश्य देख पाते हैं।

देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद के द्वारा 15 सितंबर,1959 में भारत में टेलीविजन का उद्घाटन संपन्न हुआ। टेलीविजन को भारत के साथ जोड़ने में UNESCO का एक महत्वपूर्ण योगदान है। भारत में सन् 1936 में UNESCO की एक बैठक के समय देश के ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यक्रमों के प्रसारण के लिए दूरदर्शन की उपयोगिता के महत्व पर प्रकाश डाला गया और इसी बैठक के समय UNESCO ने भारत को टेलीविजन के लिए टेक्निकल तथा आर्थिक सहायता देना स्वीकार कर लिया। सन् 1965 में भारत में टेलीविजन का एक घंटे का नियमित प्रसारण शुरू हुआ। सन् 1966 में 4170 तथा सन् 1971 में भारत के 44,000 लोगों के पास टेलीविजन सेट मौजूद थे। सन् 1975 में भारत ने दूरदर्शन को SATELITE INSTRUCTIONAL TELIVISION EXPERIMENT (SITE) से जोड़ दिया था। दूरदर्शन ने आज भारत सरकार का महत्वपूर्ण अंग है। अर्थात्, दूरदर्शन सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के आधीन है तथा इसका मुख्य कार्यालय दिल्ली में स्थित है। इसका प्रमुख अधिकारी महानिदेशक होता है। दूरदर्शन के समस्त प्रसारण केंद्र तथा कार्यक्रम महानिदेशक के आधीन होते हैं। भारत में रंगीन टेलीविजन का जन्म या प्रचलन वर्ष 1982 के 9 वें एशियाई खेलों के दौरान ही शुरू हुआ। खेलों के सीधे और रंगीन प्रसारण के लिए 100 वाट के 20 ट्रांसमीटर विदेशों से आयात किए गए थे। उस समय दिल्ली, कलकत्ता, मद्रास और बंबई में दूरदर्शन पर राष्ट्रीय कार्यक्रमों का रंगीन प्रसारण एक साथ होने लगा। इस कड़ी में अक्टूबर, 1983 का अपना अलग महत्व है। दूसरी बार भारत ने स्वदेशी उपग्रह 1-बी का प्रक्षेपण किया इससे दूरदर्शन भारत की और अधिक जनता तक रंगीन और सुविकसित तकनीक को लेकर पहुँचा।

अप्रैल 1982 में जब भारत ने अपनी स्वदेशी उपग्रह इनसेट-1-ए को प्रक्षेपित किया तो टेलीविजन का संसार विशाल हो गया। वर्ष 1990 के दौरान टेलीविजन के इतिहास में फिर से एक बार नई क्रांति को देखा गया। स्टार टी. वी., स्टार प्लस, स्टार मूवी, जी. टी. वी., जी. न्यूज़, सोनी आदि न जाने कितने नाम अब टेलीविजन के साथ जुड़ गया था। केवल इतना ही

नहीं टेलीविजन अब बीटा मैक्स और वी. एच. एस. टेप, लेज़र डिस्क, उच्च क्षमतावाली हार्ड डिस्क ड्राइव, सी. डी. डिजीटल वीडियो रिकॉर्डर आदि उच्च स्तरीय तकनीकों के साथ जुड़कर अपनी ' अभिलेखीय भंडारण' क्षमता को मजबूत बना चूका है। इससे दर्शकों को यह लाभ मिला कि वे अपने सुविधानुसार घर पर बैठकर रिकार्ड की गई सामग्री को देख सकते हैं। टेलीविजन और वीडियो प्रोग्रामिंग का भंडारण अब क्लाउड पर भी होता है। इसी समय दूरदर्शन के क्षेत्र में एक और महत्वपूर्ण परिवर्तन आया। टेलीविजन अब SDTV, 576 इंटरलेस्ड रिजॉल्युशन लाइनों और 480आई और हाई डेफिनेशन टेलीविजन (HDTV) के साथ जुड़ गया। HDTV को विभिन्न प्रकारों में प्रसारित किया जा सकता है। 108p, 1080i और 720p HDTV के कुछ नए प्रकार हैं। 2000 के दशक में बेचे जानेवाले अधिकांश टेलीविजन सेट फ्लैट-पैनल, मुख्य रूप से LED थे। 2010 फिर से टेलीविजन के लिए एक नया दौर लेकर आया। स्मार्ट टी. वी., इंटरनेट टेलीविजन के आविष्कार के साथ ही नेटफ्लिक्स, अमेजन प्राइम वीडियो, आई प्लेयर और हुलु जैसी स्ट्रीमिंग वीडियो सेवाओं के द्वारा इंटरनेट के माध्यम से टेलीविजन कार्यक्रमों और फिल्मों का विकास और उनका प्रचार-प्रसार अधिक रफ्तार के साथ होने लगा। इसके फलस्वरूप प्रमुख निर्माताओं ने यहां तक घोषणा कर दी कि वे स्मार्ट टी. वी. का उत्पादन अधिक से अधिक संख्या में करेंगे। ध्यान देनेवाली बात यह है कि, इस समय तक आते-आते टेलीविजन अब जनसंचार का प्रमुख साधन बन चुका था। 2010 की जो सबसे बड़ी उपलब्धि रही कि वह एकीकृत इंटरनेट और वेब 2.0 फंक्शन वाले स्मार्ट टी. वी. मनोरंजन जगत के प्रमुख अंग बन चुके थे। विश्व टेलीविजन दिवस हर साल 21 नवंबर को मनाया जाता है।

9.5 : पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं-

1. इलेक्ट्रॉनिक संसाधन के सबसे सफल संसाधन के रूप में टेलीविजन का अपना अलग महत्व है।
2. वर्तमान समय में टेलीविजन ने 100 साल की यात्रा को पूर्ण किया है।
3. टेलीविजन के अविष्कारक जॉन लोगी बेयर्ड थे।
4. 1950 में सबसे पहला रिमोट कंट्रोल वाला टी. Vi. बाजार में आया था।
5. टेलीविजन के 5 प्रकार अब तक हमारे सामने आया है।

9.6 : शब्द संपदा

1. सूचना - information
2. दूरस्थ - दूर
3. दृश्य - दिखाई देने वाला

4. कठपुतली शो- puppet show

5. यांत्रिक - यंत्र से बना हुआ

6. श्रृंखला - कड़ी

7. उत्पादन - production

8. फलस्वरूप- किसी कारण

9.7 : परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

दीर्घ प्रश्न

निम्न प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. टेलीविजन का संक्षिप्त इतिहास प्रस्तुत कीजिए।

2. टेलीविजन के प्रकारों पर प्रकाश डालिए।

3. विश्व में टेलीविजन के उदय और विस्तार पर प्रकाश डालिए।

4. केबल टी.वी. के विकास यात्रा पर प्रकाश डालिए।

खंड (ब)

लघु प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 200 शब्दों में लिखिए।

1. भारत में टेलीविजन के आरंभिक समय पर प्रकाश डालिए।

2. रंगीन टेलीविजन की विकास यात्रा पर प्रकाश डालिए।

3. भारत में टेलीविजन का देशव्यापी विस्तार किस प्रकार से हुआ इस पर प्रकाश डालिए।

4. निम्न विषयों पर टिप्पणी लिखिए-

1. CRT और PLASMA T.V.

2. LED और LCD T.V.

3. जॉन लोगी बेयर्ड और यूजीन पॉली के उपलब्धियों पर प्रकाश डालिए।

खंड (स)

I. सही विकल्प चुनिए-

1. संचार शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के किस धातु से हुई है?
   (अ) चर (ब) अचर (स) सम् (द) सम्यक्

2. टेलीविजन ने वर्तमान समय में कितने सालों की यात्रा पूरी कर ली है?
   (अ) 200 (ब)100 (स) 300 (द) 1000

3. भारत के कितने नंबर के राष्ट्रपति के द्वारा टेलीविजन का उद्घाटन हुआ?

(अ) प्रथम (ब) द्वितीय (स) पंचम (द) चतुर्थ

4. भारत को टेलीविजन के साथ जोड़ने के लिए किस संस्था ने मदद की थी?

(अ) WHO (ब) UNESCO (स) RED CROSS (4) NASA

खंड (स)

I. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

1. जॉन लोगी बेयर्ड का जन्म सन् -------- में हुआ।
2. जॉन लोगी बेयर्ड का जन्म ---------- नामक स्थान में हुआ।
3. टेलीविजन का प्राचीन नाम ---------- है।
4. OLED T.V. का पूरा नाम ---------- है।
5. संचार के माध्यम के रूप में दूरदर्शन का पहला प्रयोग सन् --- में हुआ।
6. दूरदर्शन का मुख्य कार्यालय ------- में है।
7. दूरदर्शन का प्रमुख अधिकारी ---------- कहलाता है।

II. सुमेल कीजिए-

1. UNESCO	(अ)1982
2. रंगीन टेलीविजन	(आ) 1959
3. 1982	(इ) भारत में टेलीविजन का नियमित प्रसारण
4. 1983	(ई) SITE
5. 1975	(उ) 9 वे एशियाई खेल

9.8 : पठनीय पुस्तकें

1 संक्षिप्त प्रयोजनमूलक हिन्दी, लेखक – डॉ. गंगा सहाय 'प्रेमी, 'डॉ. अमित कुमार सिंह, हरीश प्रकाशन मन्दिर, आगरा – 282010 ISBN No 978-81-937879-2-2

2 जनसंचार, जनसम्पर्क एवं विज्ञापन, लेखिका – डॉ. सुजाता वर्मा, विकास प्रकाशन, कानपुर ISBN No 978-93-81279-96-0

इकाई 10 : उपग्रह चैनल

इकाई की रूपरेखा

10.1 प्रस्तावना
10.2 उद्देश्य
10.3 मूल पाठ : उपग्रह चैनल
10.3.1 उपग्रह चैनल का सामान्य परिचय
10.3.2 उपग्रह टीवी या चैनल की खोज का इतिहास
10.3.3 विश्व में उपग्रह टीवी या चैनल का आरंभ
10.3.4 भारत में उपग्रह टीवी या चैनल का आरंभ
10.4 पाठ सार
10.5 पाठ की उपलब्धियाँ
10.6 शब्द संपदा
10.7 परीक्षार्थ प्रश्न
10.8 पठनीय पुस्तकें

10.1 : प्रस्तावना

प्रिय छात्रो, प्रकृति में अनेक शक्तियाँ समाहित हैं। उनकी जानकारी हमें विज्ञान के आविष्कारों से मिल रही हैं। जल में विद्युत होती है। उससे ऊर्जा उत्पन्न करके उपयोग किया जा सकता है। इसकी जानकारी हमें वैज्ञानिक अनुसंधानों से ही मिली है। वैज्ञानिक अनुसंधानों से ही मनुष्य ने अपने जीवन के लिए कई सुविधाओं का निर्माण किया है, जिनसे मनुष्य जीवन आरामदायक हो सका है। विज्ञान के विकास से मनुष्य का जीवन विकसित हुआ है। सुखमय बन पाया है। वैज्ञानिक अनुसंधान मानव समाज के लिए उपयोगी साबित हुए हैं। जैसे कि पहिया, रेलगाड़ी, हवाई जहाज, टेलीफोन, फोटो कैमेरा, घड़ी, कंप्यूटर इत्यादि। कुछ अनुसंधानों से नुकसान होने की संभावना भी है – प्लास्टिक, मशीनों के उत्पादन के लिए स्थापित कारखाने, एटम बम, व परमाणु बम आदि। इस तरह के अनेक वैज्ञानिक आविष्कारों में से एक महत्वपूर्ण आविष्कार है कृत्रिम उपग्रह व उसका निर्माण। मनुष्य ने सौर मंडल व अंतरिक्ष की अज्ञात दुनिया की जानकारी हासिल करने के लिए अंतरिक्षयान व उपग्रह बनाने शुरू किए। कृत्रिम उपग्रहों से हमें न केवल अंतरिक्ष बल्कि हमारी पृथ्वी की भी अनसुलझी गुत्थियों को सुलझाने व अज्ञात स्थलों को खोजने में मदद मिल रही है।

प्रिय छात्रो, आगे हम उपग्रह के प्रकार, उसकी कार्यप्रणाली, उपग्रह चैनल का आरंभ व विकास का ज्ञान प्राप्त करेंगे।

10.2 : उद्देश्य

प्रिय छात्रो! इस इकाई में हम निम्नलिखित बिंदुओं पर चर्चा और ज्ञान प्राप्त करेंगे –

1. मानव निर्मित उपग्रह और उनके माध्यम से चलने वाले चैनलों की जानकारी प्राप्त करेंगे

2. उपग्रह टीवी या चैनल के आरंभ और उसके विश्व इतिहास की संक्षिप्त जानकारी हासिल करेंगे

3. भारत में उपग्रह टीवी या चैनलों की शुरुआत और उसके विस्तार के बारे में जानेंगे।

4. उपग्रह को अंतरिक्ष में भेजने वाले विश्व के अनेक देशों के अंतरिक्ष संगठन का संक्षिप्त परिचय प्राप्त करेंगे।

10.3 : मूल पाठ : उपग्रह चैनल

प्रिय छात्रो, आपने महाभारत की कहानी सुनी-पढ़ी या फिर टीवी पर देखी होगी? कौरवों और पाँडवों के बीच कुरुक्षेत्र में युद्ध हुआ था। कुरुक्षेत्र में चले का आँखों देखा हाल कौरवों के पिता धृतराष्ट्र को उनके सारथी संजय ने हस्तिनापुर में बैठकर बताया था। कुरुक्षेत्र हस्तिनापुर से लगभग 200 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। संजय धृतराष्ट्र के कक्ष में बैठकर युद्ध का सीधा प्रसारण देखते हैं, सुनते हैं और उसे महाराज को बताते हैं। यह तो ठीक वैसे ही जैसे आज हम क्रिकेट मैच टीवी, कंप्यूटर या मोबाइल पर देखते हैं। कोई न कोई माध्यम तो जरूर होगा जिसकी वजह से सारथी संजय ने युद्ध का सीधा प्रसारण देखा होगा। महाभारत की उस घटना को आज की स्थिति से तुलना करने पर आप यह अंदाजा लगा सकते हैं कि किसी आकाशीय तरंगों के माध्यम से कुरुक्षेत्र में हो रहे युद्ध को प्रत्यक्ष रूप से हस्तिनापुर के राजमहल में बैठे संजय ने देखा होगा। आज हम अपने टीवी सेट पर घर बैठे कई तरह के कार्यक्रम देखते हैं। कभी आपके मन में जानने की इच्छा हुई होगी कि यह कैसे होता है? आपने पता लगाया होगा कि यह कार्य उपग्रहों की सहायता से किया जाता है। तो फिर उपग्रह के बारे में जानने की भी इच्छा मन में जगी होगी। तो, चलिए इसे हम इस इकाई में जानने की कोशिश करते हैं।

10.3.1 उपग्रह चैनल का सामान्य परिचय

उपग्रह क्या है?

ग्रह की परिक्रमा करने वाले अन्य ग्रह को उपग्रह कहा जाता है। उपग्रह आकार में ग्रह से छोटा होता है। उदाहरण के लिए, चंद्र पृथ्वी की परिक्रमा करता है। चंद्र पृथ्वी का उपग्रह है। चंद्र एक प्राकृतिक उपग्रह है। अपने सौर मंडल के प्रत्येक ग्रह के अपने-अपने उपग्रह हैं। उन्हें उन ग्रहों के चंद्र भी कहा जाता है। पृथ्वी का एक चंद्र है जबकि बुध और शुक्र को छोड़कर अन्य छह ग्रहों के अपने-अपने चंद्र हैं - मंगल के दो, बृहस्पति के 95, शनि के 146, यूरेनस के 28, नेपच्यून के 16 और प्लूटो, जिसे अब ग्रह की परिभाषा के अनुसार आकार कम होने से ग्रह नहीं माना जा रहा है, उसके पाँच चंद्रमा हैं। इन सारे चंद्रों को प्राकृतिक उपग्रह कहा जाता है। इनके अतिरिक्त मनुष्य ने सौर मंडल संबंधी अपनी जिज्ञासाओं के समाधान हेतु अपनी मेधा शक्ति का उपयोग कर उपग्रहों का अनुसंधान एवं विकास किया है। मानव निर्मित उपग्रहों को कृत्रिम उपग्रह कहा जाता है। वर्तमान में सौर मंडल में सैकड़ों कृत्रिम उपग्रह स्थापित करके संचालित किए जा रहे हैं।

इन कृत्रिम उपग्रहों का उपयोग मौसम पूर्वानुमान, टेलीविजन सिग्नल, रेडियो और इंटरनेट संचार और ग्लोबल पोजिशनिंग सिस्टम जैसे विविध उद्देश्यों की पूर्ति के लिए किया जाता है। इनका संचालन सौर मंडल की विभिन्न परिस्थितियों, अन्य ग्रहों, उपग्रहों, पिंडों की गतिविधियों का निरीक्षण, अनुसंधान और उनके संबंध में डेटा एकत्र करने के उद्देश्य से किया जाता है। संचार के संदर्भ में कहा जा सकता है कि एक उपग्रह एक विशेष वायरलेस रिसीवर या ट्रांसमीटर की तरह काम करता है। उसे रॉकेट द्वारा प्रक्षेपित करके पृथ्वी की उस कक्षा में संचालित किया जाता है जहाँ से संचार की आवश्यकता की पूर्ति हो सके। यह पृथ्वी के चारों ओर अपनी कक्षा में घूमता है, आवश्यक सूचनाएं संचारित करने में मदद करता है। सन् 1957 में पहली बार मानव निर्मित उपग्रह अंतरिक्ष में भेजा गया था। यह अद्‌भुत व अभिनव कारनामा सोवियत संघ (अविभाजित रूस, उस समय यह यू एस एस आर के नाम से जाना जाता था) ने कजाकिस्तान के ट्यूरेटम में स्थित बैकोनूर कॉस्मोड्रोम से कर दिखाया था। उस पहले उपग्रह का नाम स्पुतनिक I था। यह देखने में लगभग बास्केटबॉल के आकार का था। एक साधारण मोर्स कोड सिग्नल को बार-बार प्रसारित करता था। अब तो प्रौद्योगिकी में इतना विकास हो चुका है कि आज के उपग्रह किसी सरल डिजिटल डेटा से लेकर जटिल टेलीविज़न प्रोग्रामिंग तक, एक साथ हज़ारों सिग्नल प्राप्त व उन्हें पुनः प्रसारित कर सकते हैं।

बोध प्रश्न

- उपग्रह किसे कहते हैं?
- कृत्रिम उपग्रहों का उपयोग किन-किन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए किया जाता है?
- पहली बार मानव निर्मित उपग्रह अंतरिक्ष में कब और किस देश ने भेजा था?
- पहले उपग्रह का नाम क्या था?

उपग्रह कैसे काम करते हैं?

प्रिय छात्रो, उपग्रह के काम करने की पद्धति या प्रणाली आपके के लिए रोचक हो सकती है। आइए जानते हैं, उपग्रह कैसे काम करते हैं?

उपग्रहों को आम तौर पर रॉकेट का उपयोग करके कक्षा में लॉन्च किया जाता है। वे अलग-अलग ऊंचाइयों पर स्थित होते हैं और अलग-अलग गति से पृथ्वी के चारों ओर अलग-अलग ट्रैक पर यात्रा करते हैं। ट्रैक को अंग्रेजी में एक्सिस और हिंदी में कक्षा कह जाता है। एक बार कक्षा में आने के बाद, पृथ्वी का गुरुत्वाकर्षण खिंचाव उपग्रह को सीधे अंतरिक्ष में जाने से रोकता है, जिसके कारण वे एक कक्षा में पृथ्वी के चक्कर लगाते हैं।

उपग्रह में आमतौर पर एक एंटीना लगा होता है। उसी एंटीना से उपग्रह डेटा प्राप्त करते हैं और भेजते हैं। उनके पास एक पावर स्रोत भी होता है - बैटरी या सौर ऊर्जा पैनल। उपग्रह पर अन्य अनेक उपकरण होते हैं जो उसके उद्देश्य पर निर्भर करते हैं। उसमें कैमरे, दूरबीन और

सेंसर होते हैं। यह भी होता है कि कोई देश अपने अंतरिक्ष अनुसंधान कार्यक्रम के तहत अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन की स्थापना करे। यह एक जटिल उपग्रह ही होता है। उसमें अंतरिक्ष वैज्ञानिकों के रहने और काम करने की व्यवस्था होती है। साथ ही शोध के लिए आवश्यक उपकरण भी मौजूद होते हैं।

उपग्रह का काम उसके उद्देश्य पर निर्भर करता है। कोई उपग्रह सौर मंडल से चित्र और अन्य डेटा एकत्र करता है और उसे पृथ्वी पर भेजता है। संचार उपग्रह पृथ्वी से भेजे गए संकेतों को पकड़ते हैं, संकेतों की शक्ति बढ़ाते हैं और उन्हें पृथ्वी पर प्राप्त करने वाले स्टेशनों पर पुनः भेजते हैं। उपग्रह लगभग किसी भी दूरी पर टेलीविज़न, रेडियो, आवाज़ और डेटा संकेतों को प्रसारित करने का महत्वपूर्ण कार्य करते हैं।

बोध प्रश्न

- उपग्रह कौन-कौन से उपकरण उपलब्ध रहते हैं?
- उपग्रह डेटा प्राप्त करने और भेजने के लिए किस उपकरण का उपयोग करते हैं?

उपग्रह का महत्वपूर्ण उद्देश्य

उपग्रह कई महत्वपूर्ण उद्देश्यों को पूरा करते हैं, जैसे कि :-

क) पृथ्वी की निगरानी और अनुसंधान : उपग्रह अंतरिक्ष से पृथ्वी के बड़े हिस्से को देख सकते हैं। । इसी कारण वे जमीन पर स्थित उपकरणों की तुलना में अधिक तेजी से और सटीक डेटा और वीडियो सिग्नल को इकट्ठा कर सकते हैं। इस जानकारी का उपयोग मौसम, जलवायु और सैन्य अनुप्रयोगों सहित विभिन्न प्रयोजनों के लिए किया जा सकता है।

ख) अंतरिक्ष डेटा संग्रह और अनुसंधान : उपग्रह अंतरिक्ष में स्थित विभिन्न ग्रहों, पिंडों, धूमकेतुओं आदि से संबंधित विविध गतिविधियों के अनुसंधान के लिए बहुत उपयोगी सुविधा हैं। हबल स्पेस टेलीस्कोप जैसी विशेष प्रणालियाँ, सौर मंडल व खगोलीय घटनाओं की छवियों को ज़मीनी दूरबीनों की तुलना में तेज़ी से और अधिक स्पष्ट रूप से कैप्चर करती हैं। वे पृथ्वी के वायुमंडल द्वारा प्रतिबंधित नहीं हैं। पृथ्वी का वायुमंडल छवि की स्पष्टता के स्तर को कम करता है।

ग) संचार : उपग्रह ज़मीनी संचार प्रणालियों की पहुँच का विस्तार करते हैं। आमतौर पर संचार के लिए लाइन-ऑफ़-विज़न सिग्नल या वायरलाइन मीडिया जैसे कि तांबे या फाइबर ऑप्टिक केबल का उपयोग किया जाता है। उपग्रह ज़मीन पर स्थित वस्तुओं, जैसे कि पहाड़ों और ऊँची इमारतों द्वारा सिग्नल अवरोध की समस्या का समाधान हैं।

उपग्रह कक्षा के प्रकार -

उपग्रह प्रणाली के तीन प्रकार हैं। उन्हें उनके द्वारा अनुसरण की जाने वाली कक्षा के प्रकार के अनुसार वर्गीकृत किया जाता है - भूस्थिर कक्षा, निम्न पृथ्वी कक्षा और ध्रुवीय कक्षा।

क) **भूस्थिर कक्षा (Geostationary orbit)** : भूस्थिर उपग्रह भूमध्य रेखा पर पृथ्वी की परिक्रमा करता है, जो लगभग 22,000 मील ऊपर है। उस ऊँचाई पर, सूर्य के सापेक्ष पृथ्वी के चारों ओर एक पूर्ण चक्कर लगाने में 24 घंटे लगते हैं। ये उपग्रह चूंकि पृथ्वी के साथ चक्कर लगाते हैं, इससे लगता है कि ये हर समय पृथ्वी की सतह पर एक ही स्थान पर स्थिर दिखाई देते हैं। मौसम उपग्रह आमतौर पर इसी प्रकार के होते हैं।

भूस्थिर उपग्रह एक समय में पृथ्वी की सतह का लगभग 40% भाग देख सकता है। यदि ऐसे तीन उपग्रह, समान अंतराल पर 120 कोणीय डिग्री पर कक्षा में भेजे जाएँ तो वे तीनों उपग्रह साथ मिलकर एक ही समय में पूरे विश्व को देख सकते हैं, चित्र, डेटा आदि प्राप्त कर नीचे जमीन पर स्थित स्टेशन तक पहुँचा सकते हैं। ये उपग्रह मौसम की जानकारी देने में अति कारगर सिद्ध होते हैं। इन्हीं से इंटरनेट सुविधा का संचालन सुलभ हो सका है। ये ऐसे है मानो कि अंतरिक्ष में कोई डिश एंटिना लगा हो।

ख) **निम्न पृथ्वी कक्षा (Low Earth orbit)** : निम्न पृथ्वी कक्षा (LEO) उपग्रह प्रणाली में सामान्यतः आकार में बड़े उपग्रहों का उपयोग किया जाता है। प्रत्येक कक्षा कुछ सौ मील की निश्चित ऊँचाई पर गोलाकार में होती है। ये कक्षाएँ उपग्रहों को भौगोलिक ध्रुवों के ऊपर या लगभग ऊपर से ले जाती हैं। इस कक्षा में उपग्रह को प्रत्येक चक्कर के लिए 90 मिनट से लेकर कुछ ही घंटे लगते हैं। उपग्रह को इस तरह से व्यवस्थित किया जाता है कि पृथ्वी की सतह पर किसी भी समय किसी भी बिंदु से कम से कम एक उपग्रह दृष्टि रेखा पर स्थित दिखाई दे।

पूरी प्रणाली सेलुलर टेलीफोन के काम करने के तरीके के समान काम करती है। दोनों में मुख्य अंतर यह है कि इस कक्षा में भेजे गए उपग्रह, सेलुलर टेलीफोन के ट्रांसपोंडर या वायरलेस रिसीवर/ट्रांसमीटर की तरह स्थिर होने के बजाय गतिशील होते हैं और पृथ्वी पर होने के बजाय अंतरिक्ष में होते हैं। एक अच्छी तरह से डिज़ाइन की गई एल ई ओ (LEO) प्रणाली, वायरलेस इंटरनेट कनेक्शन की सुविधा उपलब्ध कराने में बहुत उपयोगी है। इस प्रणाली के कारण ही ग्रह पर मौजूद किसी भी व्यक्ति को किसी भी जगह पर वायरलेस इंटरनेट कनेक्शन की सुविधा मिल जाती है। इसमें अधिक परिष्कृत एंटीनों का उपयोग किया जाता है। ये एंटीना ठीक पुराने जमाने के टेलीविज़न में लगे एंटीनों की तरह दिखाई देते हैं, जिन्हें कभी मज़ाक में खरगोश के कान कहा जाता था।

इस प्रणाली के कुछ उपग्रह पृथ्वी के चारों ओर अण्डाकार कक्षाओं में घूमते हैं। ये उस समय तेज़ी से घूमने लगते हैं जब ये पृथ्वी के समीपतम क्षेत्र या कम उँचाई की कक्षा में होते हैं। खगोल विज्ञान में पृथ्वी के समीपतम क्षेत्र को पेरिगी (Perigee) कहा जाता है। ये जब पृथ्वी के दूरतम क्षेत्र या अपनी सबसे अधिक ऊँचाई की कक्षा में होते हैं तो वे धीरे-धीरे घूमते हैं। खगोल विज्ञान में पृथ्वी के दूरतम क्षेत्र को अपोजी (Apogee) कहा

जाता है। खगोलविद पृथ्वी की कक्षा में उड़ने वाले उपग्रहों को पक्षी (Birds) कहकर भी संबोधित करते हैं। इन पक्षियों का उपयोग शौकिया रेडियो ऑपरेटर करते हैं। साथ ही वाणिज्यिक और सरकारी सेवाओं के लिए भी इस कक्षा के उपग्रह बहुत उपयोगी सिद्ध होते हैं। आकाश में इन उपग्रहों के पथ का अनुसरण करने के लिए इनमें दिशात्मक एंटीना लगाए जाते हैं।

ग) **ध्रुवीय कक्षा (Polar orbit)** : ध्रुवीय कक्षाओं में उपग्रह तीसरे प्रकार के होते हैं। ये कक्षाएँ भूमध्य रेखा के साथ संरेखित होने के बजाय उत्तरी और दक्षिणी ध्रुवों से होकर गुजरती हैं। ये कक्षा भू-समकालिक या अण्डाकार होती हैं, जिस वजह से इन कक्षाओं के उपग्रह भूमध्यरेखीय उपग्रहों की तरह ही पृथ्वी की पूरी या अधिकांश सतह को देख सकते हैं। इस कक्षा में संचालित उपग्रह सरकारी और सैन्य अनुप्रयोगों के लिए उपयोगी होते हैं।

उपग्रहों का उपयोग :

उपग्रहों का उपयोग संचार, जासूसी, ग्राउंड पोजिशनिंग सिस्टम, मौसम का पता लगाना, भूवैज्ञानिक अध्ययन, पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र का अध्ययन, सूर्य का अध्ययन, पृथ्वी की सतह का मानचित्रण, मिसाइल प्रक्षेपण का पता लगाना और पृथ्वी का वायुमंडलीय अध्ययन और टेलीविजन सिग्नल प्रसारण के लिए किया जाता है। इन अध्ययनों का उपयोग वाणिज्यिक, सरकारी और विविध सैन्य अनुप्रयोगों के लिए किया जा सकता है। उपग्रहों के कुछ विशिष्ट उपयोग निम्नलिखित हैं:

1) नेविगेशन उपग्रहों का उपयोग जहाज से जहाज संचार और जहाज की स्थिति व जगह की पहचान करने के लिए किया जाता है।
2) मौसम उपग्रह का उपयोग पृथ्वी की मौसम प्रणालियों और पैटर्न की निगरानी के लिए किया जाता है। वे दृश्य प्रकाश, परावर्तित प्रकाश और अवरक्त विकिरण को मापते हैं।
3) LEO उपग्रह भू-समकालिक उपग्रहों की तुलना में पृथ्वी के करीब परिक्रमा करते हैं। यह उपग्रह आवाज और डेटा संचार के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध हुए हैं। वाई-फाई नेटवर्क, इंटरनेट सेवा प्रदाता और आपातकालीन संचार सेवाएँ इनका उपयोग करती हैं।
4) उपग्रहों का उपयोग प्रसारण अनुप्रयोगों के लिए भी किया जाता है, जिसमें उपभोक्ताओं को रेडियो और टेलीविजन सिग्नल भेजना शामिल है।
5) अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन भी एक उपग्रह है जो अनुसंधान और विकास, पृथ्वी और अंतरिक्ष अवलोकन सहित कई सेवाएँ प्रदान करता है। अंतरिक्ष स्टेशन के लिए सबसे बड़ी चिंताओं में से एक अंतरिक्ष मलबे से बचना है, जैसे कि परित्यक्त उपग्रह, रॉकेट बूस्टर के टुकड़े और उपग्रहों के टुकड़े आदि।

बोध प्रश्न

- उपग्रह के तीन महत्वपूर्ण उद्देश्य क्या हैं?
- उपग्रह की कक्षाएँ कितनी प्रकार ही हैं और उनके नाम क्या हैं?
- उपग्रह के कुछ उपयोग बताइए।

10.3.2 उपग्रह टीवी या चैनल की खोज का इतिहास

प्रिय छात्रो, अब तक हमने उपग्रह का सामान्य परिचय प्राप्त किया। उपग्रह संबंधी इस चर्चा से हमने उसका महत्व, उसकी उपयोगिता और पृथ्वी की कक्षा के अनुसार उसके प्रकारों की जानकारी भी हासिल की। अब हम ऊपर बताए गए उपग्रहों के प्रकारों में से टीवी से संबंधित उपग्रह पर चर्चा करेंगे।

प्रिय छात्रो, टीवी अर्थात टेलीविजन अधिकतर घरों का हिस्सा है, एक मुख्य उपकरण के रूप में मौजूद है। जैसे कि गैस स्टोव, बिजली के बल्ब, फैन आदि। इस पर हम ज्ञान व मनोरंजन के कार्यक्रम देखते हैं। दुनिया भर में लगभग 25,000 से ज़्यादा टीवी चैनल हैं और भारत में दूरदर्शन, एयर टेल, टाटा स्काई आदि डीटीएच पर लगभग 1600 चैनल सूचीबद्ध हैं। इतने सारे चैनलों पर कार्यक्रम कैसे प्रसारित होते हैं, जानना अपने-आप में एक अद्‌भुत अनुभव होगा। ऊपर के खंडों में हमने जाना कि उपग्रहों के माध्यम से एंटिना, डिश या डायरेक्ट-टू-होम (DTH) और डायरेक्ट ब्रॉडकास्ट सैटेलाइट (DBS) उपकरण सिग्नल प्राप्त करके टीवी पर कार्यक्रम परिचालित किए जाते हैं। टेलीविजन या टीवी मनोरंजन, समाचार, खेल, विज्ञापन आदि प्राप्त करने का उपकरण या माध्यम है।

पृथ्वी की परिक्रमा करने वाले संचार उपग्रहों के माध्यम से टीवी के कार्यक्रम सीधे दर्शकों तक पहुँचाए जाते हैं। एक बाहरी सैटेलाइट डिश के माध्यम से सिग्नल प्राप्त किए जाते हैं और उन सिग्नलों को किसी रिसीवर टीवी सेट पर देखने के लिए कार्यक्रम को डिकोड किया जाता है। इस प्रकिया से चैनलों की एक विस्तृत श्रृंखला उपलब्ध हो जाती है। यह प्रक्रिया उपग्रह चैनल को स्थलीय या केबल सेवा की तुलना में दूरदराज के क्षेत्रों में प्राथमिक टीवी के कार्यक्रम को प्रसारित करने का एक अच्छा विकल्प बनाती है।

इंटरनेट-आधारित स्ट्रीमिंग और ओवर-द-एयर टीवी (ओटीटी) के आरंभ होने के कारण 2010 के दशक से सैटेलाइट टीवी की लोकप्रियता में धीरे-धीरे गिरावट देखी जा रही है।

आइए जानते हैं यह उपग्रह टीवी या चैनल की शुरुआत कब और कैसे हुई?

10.3.3 विश्व में उपग्रह टीवी या चैनल का आरंभ

उपग्रह चैनलों का प्रारंभिक इतिहास

सर आर्थर चार्ल्स क्लार्क CBE FRAS (16 दिसंबर 1917 - 19 मार्च 2008) एक ब्रिटिश विज्ञान कथा लेखक, विज्ञान लेखक, भविष्यवादी, आविष्कारक, समुद्री खोजकर्ता (अंडरसी एक्सप्लोरर) और टेलीविज़न सीरीज़ होस्ट थे। वे आजीवन अंतरिक्ष यात्रा के समर्थक रहे। उन्होंने ही सर्वप्रथम सन् 1945 में एक विश्वव्यापी संचार प्रणाली का प्रस्ताव रखा जो पृथ्वी की कक्षा में समान दूरी पर स्थित तीन उपग्रहों के माध्यम से कार्य करेगी। इस विषय पर उनके द्वारा लिखित विज्ञान लेख वायरलेस वर्ल्ड पत्रिका के अक्टूबर 1945 के अंक में भी प्रकाशित किया गया, जिस पर उन्हें 1963 में फ्रैंकलिन इंस्टीट्यूट का स्टुअर्ट बैलेंटाइन मेडल मिला। उन्होंने 2001: ए स्पेस ओडिसी (1968) नामक विज्ञान कथा पर आधारित एक उपन्यास लिखा था। उन्होंने स्टेनली कुब्रिक के साथ मिलकर अपने इस विज्ञान कथा पर आधारित इसी नाम से एक फिल्म भी बनाई। उपन्यास फिल्म की रिलीज के बाद प्रकाशित किया गया था। फिल्म की कथा आंशिक रूप से क्लार्क की ही विभिन्न लघु कहानियों पर आधारित है, जिसमें "द सेंटिनल" (1948 में बीबीसी प्रतियोगिता के लिए लिखी गई, लेकिन पहली बार 1951 में "सेंटिनल ऑफ इटरनिटी" शीर्षक से प्रकाशित हुई) शामिल है। 1992 तक, दुनिया भर में इस उपन्यास की तीन मिलियन अर्थात 30 लाख प्रतियां बिक चुकी थीं। आर्थर सी क्लार्क द्वारा उपग्रह निर्माण के प्रस्ताव के लगभग 17 वर्षों के बाद 23 जुलाई 1962 को पहला सार्वजनिक उपग्रह टेलीविजन संकेतों (सिग्नल) को अटलांटिक महासागर के ऊपर टेलस्टार उपग्रह के माध्यम से यूरोप से उत्तरी अमेरिका तक प्रसारित किया गया था। हालांकि वास्तविक प्रसारण से लगभग दो सप्ताह अर्थात 11 जुलाई को इसका परीक्षण किया गया था। सिग्नलों को उत्तरी अमेरिकी और यूरोपीय देशों में प्राप्त और प्रसारित किया गया जिसे 100 मिलियन से अधिक लोगों ने देखा। 1962 में लॉन्च रिले 1 उपग्रह अमेरिका से जापान तक टेलीविजन सिग्नलों को प्रसारित करने वाला पहला उपग्रह था। पहला भू-समकालिक संचार उपग्रह, सिंकोम 2, 26 जुलाई 1963 को लॉन्च किया गया था। दुनिया का पहला वाणिज्यिक संचार उपग्रह, जिसे इंटेलसैट-I के नाम से जाना जाता है और जिसका उपनाम "अर्ली बर्ड" भी है, 6 अप्रैल 1965 को भू-समकालिक कक्षा में लॉन्च किया गया था। टेलीविज़न उपग्रहों का पहला राष्ट्रीय नेटवर्क ऑर्बिटा अक्टूबर 1967 में सोवियत संघ द्वारा बनाया गया था और यह टेलीविज़न सिग्नलों को ग्राउंड डाउनलिंक स्टेशनों पर पुन: प्रसारण और वितरित करने के लिए उच्चतम अण्डाकार मोलनिया उपग्रह का उपयोग करने के सिद्धांत पर आधारित था। टेलीविज़न प्रसारण करने वाला पहला वाणिज्यिक उत्तर अमेरिकी उपग्रह कनाडा का भूस्थिर अनिक 1 था। इसे 9 नवंबर 1972 को लॉन्च किया गया था। 30 मई 1974 को एटीएस-6, दुनिया का पहला प्रायोगिक शैक्षिक और सीधा प्रसारण उपग्रह (डीबीएस) लॉन्च किया गया था। यह प्रसारण

भारतीय उपमहाद्वीप पर केंद्रित था। इसके दर्शक पश्चिमी यूरोप में अपने घर में बैठकर अपने टीवी सेटों पर सिग्नल प्राप्त करने में सक्षम थे, जो पहले से उपयोग में आने वाली यूएचएफ टेलीविजन डिजाइन तकनीकों पर आधारित थे। सोवियत भूस्थिर उपग्रहों की श्रृंखला में पहला डायरेक्ट-टू-होम टेलीविज़न ले जाने वाला उपग्रह, एकरन 1, 26 अक्टूबर 1976 को लॉन्च किया गया था।

उपग्रह टीवी का उद्योग का आरंभिक युग (1976-1980)

उपग्रह टीवी निर्माण के अनुसंधान व विकास का अपना एक रोचक इतिहास है। इसकी शुरुआत लगभग 1976 में हुई थी। प्राद्योगिकी में हुए विकास से टीवी डिश के आकार व कीमतों में कमी हुई। उपग्रह टीवी का उद्योग 1976 से 1980 तक आरंभिक स्तर का रहा। इसकी शुरुआत अमेरिका में केबल टेलीविजन उद्योग के बाद की कड़ी के रूप में हुई। अमेरिका के एचबीओ (HBO), टीबीएस (TBS) और सीबीएन (CBN), जिसे बाद में दी फैमली चैनल (The Family Channel) के नाम से जाना गया, प्रमुख टीवी चैनल हैं जो सैटेलाइट टेलीविजन का उपयोग करके कार्यक्रमों का प्रसारण किया करते थे। सैन एंड्रियास, कैलिफोर्निया के टेलर हॉवर्ड 1976 में अपने घर में बने सिस्टम के साथ सी-बैंड सैटेलाइट सिग्नल प्राप्त करने वाले पहले व्यक्ति बने।

अमेरिका की गैर-लाभकारी सार्वजनिक प्रसारण सेवा, पीबीएस (PBS) ने 1978 में अपने टेलीविजन कार्यक्रमों को उपग्रह के माध्यम से वितरित करना शुरू किया। 1979 में, सोवियत अभियंताओं ने सैटेलाइट के माध्यम से टीवी सिग्नल प्रसारित और वितरित करने के लिए मॉस्को प्रणाली विकसित की जिसके के लिए उन्होंने गोरिज़ोंट संचार उपग्रहों को लॉन्च किया। इन उपग्रहों के लिए भूस्थिर कक्षाओं का उपयोग किया। इन उपग्रहों में शक्तिशाली ऑन-बोर्ड ट्रांसपोंडर्स का इस्तेमाल किया गया था, जिससे रिसीविंग परवलयिक एंटेना का आकार 4 और 2.5 मीटर तक कम हो गया। 1979 में, संघीय संचार आयोग (FCC) ने लोगों को संघीय सरकार के लाइसेंस के बिना घरेलू सैटेलाइट टीवी स्टेशन रखने की अनुमति दी, जिससे उपग्रह टीवी प्रणाली का व्यापारिकीकरण शुरु हुआ। 1979 में सैटेलाइट टीवी स्टेशन याने कि डिश की कीमत $36,500 के आस-पास थी। आरंभिक डिश लगभग 20 फीट (6.1 मीटर) व्यास की हुआ करती थी। इसमें आठ चैनल आते थे। शुरुआती उपग्रह टेलीविजन प्रणालियाँ अपने खर्च और बड़े डिश आकार के कारण बहुत लोकप्रिय नहीं हो सकीं। 1970 के दशक के अंत और 1980 के दशक की शुरुआत में सिस्टम के सैटेलाइट टेलीविज़न डिश 10 से 16 फीट (3.0 से 4.9 मीटर) व्यास बनने लगे जिनमें फाइबरग्लास या ठोस एल्यूमीनियम या स्टील का उपयोग किया जाने लगा। कीमतों में कमी हुई। अब ये $5,000 से $10,000 में मिलने लगे। उस समय ग्राउंड

स्टेशनों से भेजे गए प्रोग्रामिंग को पृथ्वी से 22,300 मील (35,900 किमी) ऊपर स्थित भूस्थिर कक्षा में अठारह उपग्रहों से प्रसारित किया जाता था।

टी वी आर ओ/सी-बैंड सैटेलाइट युग (1980-1986)

1980-1986 को टीवीआरओ/सी-बैंड सैटेलाइट युग कहा जाता है। टीवीआरओ (TVRO) का मतलब है "टेलीविजन रिसीव ओनली" या सैटेलाइट टीवी। यह टीवी हेडएंड और प्रणाली को कार्यक्रम पहुँचाने के लिए एक उपग्रह वितरण प्रणाली (सैटेलाइट डिस्ट्रीब्यूशन सिस्टम) है। टीवीआरओ केवल आधुनिक सी-बैंड या केयू-बैंड का इस्तेमाल करता है और इसके लिए रिसीवर के साथ-साथ सैटेलाइट डिश एंटीना की आवश्यकता होती है जिसका व्यास 60 सेमी से 3 मीटर के बीच होता है।

1980 तक, सैटेलाइट टेलीविज़न अमेरिका और यूरोप में अच्छी तरह से स्थापित हो चुका था। 26 अप्रैल 1982 को, यू.के. में पहला सैटेलाइट चैनल, सैटेलाइट टेलीविज़न लिमिटेड (बाद में स्काई वन) लॉन्च किया गया था। इसके सिग्नल ईएसए के ऑर्बिटल टेस्ट सैटेलाइट से प्रसारित किए गए थे। 1981 और 1985 के बीच, कीमतों में गिरावट के साथ टीवीआरओ सिस्टम की बिक्री दर में वृद्धि हुई। रिसीवर तकनीक में प्रगति और गैलियम आर्सेनाइड एफईटी (FET) तकनीक के उपयोग ने छोटे डिश के उपयोग को सक्षम बनाया। 1984 में अमेरिका में पाँच लाख सिस्टम बेचे गए, जिनमें से कुछ की कीमत $2000 जितनी कम थी। केवल एक सैटेलाइट की दिशा में रखे जाने वाली डिश इससे भी सस्ती थी। स्थानीय प्रसारण स्टेशनों या केबल टेलीविज़न सेवा के बिना लोग बिना किसी मासिक शुल्क के अच्छी गुणवत्ता वाला कार्यक्रम देखने लगे थे। टीवीआरओ प्रणालियों की बढ़ती संख्या के साथ, कार्यक्रम प्रदाताओं और प्रसारकों में व्यापारिक प्रतिस्पर्धा शुरु हुई। इससे सदस्यता प्रणाली विकसित हुई। जनवरी 1986 में, एचबीओ (HBO) ने अपने चैनलों को एन्क्रिप्ट करने के लिए वीडियोसिफर II सिस्टम का उपयोग करना शुरू किया। HBO ने डिश मालिकों को $12.95 प्रति माह पर अपनी सेवा के लिए सीधे सदस्यता लेने के लिए आकर्षित किया जिसकी कीमत केबल ग्राहकों द्वारा भुगतान की जाने वाली कीमत के बराबर थी। इसकी देखा-देखी में एक-एक करके सभी वाणिज्यिक चैनलों ने सदस्यता पद्धति अपनाई।

डिश व टीवी चैनल का क्रांति युग (1987 से)

1987 से चैनलों में वृद्धि होने लगी और सदस्यता शुल्क में कमी आने लगी थी। उस समय अमेरिका में केवल नौ चैनल स्क्रैम्बल थे, लेकिन 99 चैनल फ्री-टू-एयर उपलब्ध थे। कुछ समय बाद एचबीओ ने सभी चैनलों को अनस्क्रैम्बल किया और $19.95 के मासिक शुल्क को $200 प्रति वर्ष कर दिया। इससे डिश की बिक्री घट गई। 1985 में डिश की बिक्री 6,00,000

से घटकर 1986 में 3,50,000 हो गई। उन दिनों जो लोगों अपनी आर्थिक स्थिति के कारण भुगतान के आधार पर टेलीविज़न सेवाएँ नहीं ले पाते थे वे डिश के माध्यम से ही टीवि प्रसारण देखा करते थे। स्क्रैम्बलिंग ने पे-पर-व्यू इवेंट्स के विकास को भी जन्म दिया। अर्थात जो कार्यक्रम देखना चाहते हैं, उसी के लिए भुगतान करें। 1 नवंबर, 1988 को एनबीसी ने अपने सी-बैंड सिग्नल को स्क्रैम्बल करना शुरू कर दिया, लेकिन अपने केयू-बैंड सिग्नल को अनएन्क्रिप्टेड रखा ताकि उसके सदस्यों की संख्या में कमी न हो। संयुक्त राज्य अमेरिका में दो मिलियन सैटेलाइट डिश उपयोगकर्ताओं में से अधिकांश सी-बैंड का उपयोग करते थे। टीबीएस (TBS) और सीबीएन (CBN) भी स्क्रैम्बलिंग पर विचार कर रहे थे। लेकिन बाद में सीबीएन ने अपना विचार बदल दिया। कंपनी ने देखा कि स्थानीय नेटवर्क से संबद्ध लोगों में से अधिकतर लोग स्क्रैम्बलिंग प्राप्त करने में असमर्थ हैं। भुगतान नहीं कर सकते हैं।

1990 से 1995 की कालवधि में उपग्रह टेलीविजन का विकास यूरोप, जापान, दक्षिण अफ्रीका, मध्य-पूर्व-उत्तरी अफ्रीका और एशिया-प्रशांत में हुआ। नित नए प्रौद्योगिकी के विकास से स्क्रैम्बलिंग की कीमतें घटने लगी और आम आदमी के लिए अधिक से अधिक चैनल उपलब्ध होने लगे। स्क्रैम्बलिंग की कीमतों में कमी असल में उपग्रह निर्माण की लागत में कमी के कारण और प्रतिस्पर्धा के कारण होने लगी थी। बड़ी-बड़ी कंपनियाँ इस क्षेत्र में निवेश करने लगी थीं। ब्रिटेन में कम बिजली के संचार उपग्रहों के इस्तेमाल से डिश का आकार भी छोटा हो गया था। यूरोप के एक छोटे से देश लक्जमबर्ग ने भी 11 दिसंबर 1988 को एस्ट्रा 1ए उपग्रह लॉन्च किया। यह एक टेलीविजन उपग्रह था। इससे चैनलों की कीमतों में भारी कमी हुई। जापान में दूर संचार मंत्रालय (एमपीटी) द्वारा नियमों में परिवर्तन करने के परिणामस्वरूप WOWOW चैनल एन्क्रिप्टेड हुआ और इसे डिकोडर के साथ एनएचके डिश से एक्सेस करना आसान हो गया।

अमेरिका में 1990 के दशक की शुरुआत में, चार बड़ी केबल कंपनियों ने प्राइमस्टार लॉन्च किया, जो मध्यम शक्ति के उपग्रहों का उपयोग करने वाली एक प्रत्यक्ष प्रसारण कंपनी थी। डिजिटल वीडियो ब्रॉडकास्टिंग - सैटेलाइट (DVB-S) उपग्रह के माध्यम से डिजिटल टेलीविजन वितरण के लिए एक मानक है। प्राइमस्टार, DVB-S मानक के साथ दक्षिण अफ्रीका, मध्य पूर्व, उत्तरी अफ्रीका और एशिया-प्रशांत में 1994-1995 में और यूरोपीय देशों जैसे फ्रांस, जर्मनी, स्पेन, पुर्तगाल, इटली और नीदरलैंड के साथ-साथ जापान, उत्तरी अमेरिका और लैटिन अमेरिका में 1996-1997 में लॉन्च किया गया था। यूनाइटेड किंगडम और आयरलैंड में डिजिटल DVB-S प्रसारण 1998 में शुरू हुआ। जापान ने 2000 में ISDB-S मानक के साथ प्रसारण शुरू किया। 4 मार्च 1996 को, इकोस्टार ने इकोस्टार 1 उपग्रह का

उपयोग करके डिजिटल स्काई हाईवे (डिश नेटवर्क) की शुरुआत की। इकोस्टार ने डिश नेटवर्क पर उपलब्ध चैनलों की संख्या 170 तक बढ़ाने के लिए सितंबर 1996 में दूसरा उपग्रह लॉन्च किया। 1990 के दशक के मध्य में, चैनलों ने डिजीसिफर कंडीशनल एक्सेस सिस्टम का उपयोग करके अपने प्रसारण को डिजिटल टेलीविज़न ट्रांसमिशन में स्थानांतरित करना शुरू कर दिया। एन्क्रिप्शन के अलावा, अमेरिका में प्राइमस्टार और डायरेक्ट टीवी जैसी डीबीएस सेवाओं की व्यापक उपलब्धता 1990 के दशक की शुरुआत से टीवीआरओ सिस्टम की लोकप्रियता को कम करने लगी थी।

डायरेक्ट-टू-होम और डायरेक्ट ब्रॉडकास्ट सैटेलाइट

पहली डायरेक्ट-टू-होम (डीटीएच) उपग्रह टेलीविजन सेवा 1994 में डायरेक्ट ब्रॉडकास्ट सैटेलाइट कॉर्पोरेशन (डीबीएस) द्वारा संयुक्त राज्य अमेरिका में शुरू की गई थी। डायरेक्ट-टू-होम (DTH) सेवा ऐसे संचार उपग्रह होते हैं जो सीधे सेवा प्रदान करते हैं। विकसित टेलीविज़न बाज़ारों में अधिकांश सैटेलाइट टेलीविज़न ग्राहक अपने प्रोग्रामिंग को डायरेक्ट ब्रॉडकास्ट सैटेलाइट (DBS) प्रदाता के माध्यम से प्राप्त करते हैं। यह पूरी तरह से डिजिटल होता है। इसमें चित्र उच्च रेजोल्युशन और ध्वनि गुणवत्तायुक्त स्टीरियो की होती है।

अधिकांश सिस्टम ट्रांसमिशन के लिए DVB-S मानक का उपयोग करते हैं। पे टेलीविज़न सेवाओं के साथ, डेटा स्ट्रीम एन्क्रिप्टेड होती है और इसके लिए मालिकाना रिसेप्शन उपकरण की आवश्यकता होती है। पे टेलीविज़न तकनीक का उपयोग केवल भुगतान करने वाला ही कर सकता है। टीवी पर कार्यक्रम देखने के लिए भुगतानकर्ता के पास मॉड्यूल और एक स्मार्ट कार्ड होता है, जिससे वह टीवी पर कार्यक्रम देखने के लिए चैनलों चलाने की मंजूरी हासिल करता है। यह उपाय उपग्रह टेलीविजन प्रदाताओं को आश्वस्त करता है कि केवल अधिकृत, भुगतान करने वाले ग्राहकों ही भुगतान टेलीविजन सामग्री चला पा रहे हैं। लेकिन साथ ही बाजार में उपलब्ध मानक उपकरणों के उपयोगकर्ताओं द्वारा भी फ्री-टू-एयर चैनल देखे जा सकते हैं। फ्री-टू-एयर चैनलों के लिए किसी प्रकार का भुगतान करने की आवश्यकता नहीं होती है।

कुछ देश ऐसी उपग्रह टेलीविजन सेवाएं संचालित करते हैं जिन्हें सदस्यता शुल्क का भुगतान किए बिना मुफ्त में प्राप्त किया जा सकता है। जर्मनी संभवतः फ्री-टू-एयर में अग्रणी है, जिसमें एस्ट्रा 19.2°E उपग्रह तारामंडल से लगभग 250 डिजिटल चैनल (83 एचडीटीवी चैनल और विभिन्न क्षेत्रीय चैनल शामिल हैं) प्रसारित होते हैं। जर्मनी ने सभी एनालॉग उपग्रह प्रसारण 30 अप्रैल 2012 को बंद कर दिए। अब केवल डिजिटल उपग्रह प्रसारण संचालित हैं। यूनाइटेड किंगडम में लगभग 160 डिजिटल चैनल हैं, जिनमें BBC चैनल, ITV चैनल, चैनल 4 और चैनल 5 के क्षेत्रीय रूपांतर शामिल हैं। ये एस्ट्रा 28.2°E उपग्रह समूह से एन्क्रिप्शन के

बिना प्रसारित किए जाते हैं, और किसी भी DVB-S या कुछ हाई डेफ़िनेशन टेलीविज़न सेवाओं के लिए DVB-S2 रिसीवर पर प्राप्त किए जा सकते हैं। इनमें से अधिकांश चैनल स्काई EPG में शामिल हैं, और फ़्रीसैट EPG में इनकी संख्या बढ़ती जा रही है। जबकि मूल रूप से उनकी डिजिटल स्थलीय टेलीविज़न सेवा के लिए बैकहॉल के रूप में लॉन्च किया गया था, बड़ी संख्या में फ़्रांसीसी चैनल 5°W पर उपग्रहों पर फ्री-टू-एयर हैं और हाल ही में DTT नेटवर्क के लिए आधिकारिक इन-फ़िल के रूप में घोषित किए गए हैं।

उत्तरी अमेरिका (संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा और मैक्सिको) में गैलेक्सी 19 पर 80 से अधिक FTA डिजिटल चैनल उपलब्ध हैं, जिनमें से अधिकांश जातीय या धार्मिक प्रकृति के हैं। अन्य FTA उपग्रहों में AMC-4, AMC-6, गैलेक्सी 18 और सैटमेक्स 5 शामिल हैं। ग्लोरीस्टार नामक एक कंपनी गैलेक्सी 19 पर FTA धार्मिक प्रसारकों को बढ़ावा देती है।
भारत का राष्ट्रीय प्रसारक, दूरदर्शन, "DD फ़्री डिश" के रूप में एक फ्री-टू-एयर DBS पैकेज को बढ़ावा देता है, जिसे देश के स्थलीय प्रसारण नेटवर्क के लिए इन-फ़िल के रूप में प्रदान किया जाता है। इसे 93.5°E पर GSAT-15 से प्रसारित किया जाता है और इसमें लगभग 80 FTA चैनल होते हैं। भारत में पहली डीटीएच सेवा 2 अक्टूबर 2003 को डिश टीवी द्वारा शुरू की गई थी। देश में पहली मुफ्त डीटीएच सेवा डीडी फ्री डिश, दिसंबर 2004 में सार्वजनिक प्रसारक प्रसार भारती द्वारा शुरू की गई थी। डिश टीवी ज़ी एंटरटेनमेंट एंटरप्राइजेज की सहायक कंपनी है।

बोध प्रश्न

- विश्व में कितने उपग्रह चैनल संचालित किए जा रहे हैं?
- भारत में प्रसारित होने वाले कितने टीवी चैनल हैं?
- डीटीएस क्या है?

विश्व के विभिन्न देशों में स्थापित उपग्रह संस्थाएँ

सरकारी अंतरिक्ष एजेंसियों की स्थापना राष्ट्रीय प्रतिष्ठा, सुदूर संवेदन सूचना का दोहन, संचार, शिक्षा और आर्थिक विकास हासिल करने के उद्देश्यों से जाती है। ये एजेंसियाँ आमतौर पर अंतरिक्ष के दोहन या अनुसंधान का काम करती हैं। सरकारी एजेंसियाँ छोटे बजट वाले प्राचीन कार्य संस्कृति वाले संगठनों से लेकर आधुनिक-विकसित क्षेत्रीय या राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय उद्यमों के स्तर तक की हैं। जैसे कि संयुक्त राज्य अमेरिका के नेशनल एरोनॉटिक्स एंड स्पेस एडमिनिस्ट्रेशन (NASA), यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी (ESA) जो 20 से अधिक घटक देशों के लिए समन्वय करती है, जापान एयरोस्पेस एक्सप्लोरेशन एजेंसी (JAXA), रूस के रोस्कोस्मोस

स्टेट कॉरपोरेशन फॉर स्पेस एक्टिविटीज़ (रोस्कोस्मोस), भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO), और चीन राष्ट्रीय अंतरिक्ष एजेंसी (CNSA)।

इस आधुनिक दुनिया में जिस तरह धरती पर प्रतिस्पर्धा का खेल चल रहा है, उसी तरह, हर देश अंतरिक्ष के बारे में सब कुछ जानने के लिए भी उत्सुक है। अधिकांश देशों ने अपनी स्वतः के अंतरिक्ष एजेंसियाँ और अनुसंधान केंद्र स्थापित कर ली हैं। इस समय (इकाई की लेखन अवधि के समय) विश्व में स्थापित सरकारी अंतरिक्ष एजेंसियाँ की संख्या 77 हैं, जिनमें से 70 राष्ट्रीय अंतरिक्ष एजेंसियाँ और सात अंतरराष्ट्रीय एजेंसियाँ हैं। इनमें से कुछ अंतरिक्ष एजेंसियाँ विश्व प्रसिद्ध हैं। प्रिय छात्रो, आइए हम वैश्विक स्तर पर शीर्ष 10 सबसे लोकप्रिय अंतरिक्ष एजेंसियों का संक्षिप्त परिचय प्राप्त करें :

1. नेशनल एरोनॉटिक्स एंड स्पेस एडमिनिस्ट्रेशन (NASA)

NASA, अमेरिकी अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन है। इसकी स्थापना 1958 में हुई थी। तब से लेकर आज तक इस संगठन ने ब्रह्मांड विज्ञान में कई बड़ी उपलब्धियाँ हासिल की हैं। यह संगठन अंतरिक्ष अनुसंधान में विश्व में सबसे अधिक लोकप्रिय अंतरिक्ष एजेंसी है।

2. भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO)

ISRO दुनिया की शीर्ष अंतरिक्ष एजेंसियों में से एक है। ISRO की स्थापना 1969 में रूसी और चीनी अंतरिक्ष एजेंसियों से भी पहले हुई थी। इसलिए, भारत के पास चीन और रूस जैसे देशों से भी पहले अंतरिक्ष तकनीक है। भारतीय अंतरिक्ष एजेंसी ने चाँद पर पानी की खोज भी की है। ISRO ने 2017 में एक ही रॉकेट (PSLV-C37) से 104 उपग्रहों को अंतरिक्ष में लॉन्च करके एक नया विश्व रिकॉर्ड बनाया था। बाद में स्पेसएक्स ने यह रिकॉर्ड तोड़ दिया। उल्लेखनीय है कि नासा जैसी अंतरिक्ष एजेंसी को भी मंगल ग्रह पर अपना अंतरिक्ष यान उतारने के लिए 2 प्रयास करने पड़े थे जबकि भारत की अंतरिक्ष एजेंसी ने पहले ही प्रयास में मंगल ग्रह पर अपना अंतरिक्ष यान सफलतापूर्वक उतारा। यह इसरो की महत्वपूर्ण उपलब्धि मानी जाती है। । इसरो ने PSLV (पोलर सैटेलाइट लॉन्च व्हीकल) रॉकेट का निर्माण किया है। यह दुनिया के सबसे बेहतरीन लॉन्च व्हीकल में से एक है।

10. रूसी संघीय अंतरिक्ष एजेंसी (RFSA)

RFSA एक रूसी अंतरिक्ष संगठन है। RFSA रोस्कोस्मोस के नाम को अधिक लोकप्रिय है। रूसी संघीय अंतरिक्ष एजेंसी की स्थापना 1992 में हुई थी। इसके एक साल बाद चीन के राष्ट्रीय अंतरिक्ष प्रशासन की स्थापना हुई थी।

4. चाइना नेशनल स्पेस एडमिनिस्ट्रेशन (CNSA)

CNSA वैश्विक स्तर पर सबसे लोकप्रिय और सबसे सफल अंतरिक्ष एजेंसियों में से एक है। इस संगठन की स्थापना NASA की स्थापना के छत्तीस साल बाद 1993 में हुई थी।

5. यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी (ESA)

यह अंतरिक्ष एजेंसी एक बहु-सरकारी संगठन है। इसकी स्थापना 1975 में 20 यूरोपीय देशों के समूह द्वारा की गई थी।

6. जापान एयरोस्पेस एक्सप्लोरेशन एजेंसी (JAXA)

जापानी सरकार की राष्ट्रीय अंतरिक्ष एजेंसी को JAXA के नाम से जाना जाता है। इसकी स्थापना 2003 में हुई थी और इसका मुख्यालय टोक्यो में है। 1 अक्टूबर 2003 को JAXA का गठन जापान के तीन संगठनों के विलय से हुआ था- अंतरिक्ष और अंतरिक्ष विज्ञान संस्थान (ISAS), राष्ट्रीय एयरोस्पेस प्रयोगशाला (NAL) और राष्ट्रीय अंतरिक्ष विकास एजेंसी (NSDAJ)।

7. स्पेस एक्सप्लोरेशन टेक्नोलॉजीज कॉर्पोरेशन (स्पेस एक्स)

स्पेसएक्स दुनिया की पहली निजी अंतरिक्ष अनुसंधान कंपनी है। जाने-माने व्यवसायी एलन मस्क ने 2002 में इसकी स्थापना की थी। स्पेस एक्स का मुख्य उद्देश्य अंतरिक्ष यात्रा की लागत को कम करना है। इस अंतरिक्ष एजेंसी का मुख्यालय हॉथोर्न, कैलिफोर्निया में है।

8. नेशनल सेंटर फॉर स्पेस स्टडीज (फ्रांस)

फ्रांस की अंतरिक्ष एजेंसी की स्थापना वर्ष 1961 में हुई थी। इसका मुख्यालय पेरिस में है। इस अंतरिक्ष एजेंसी को CNES के नाम से भी जाना जाता है। Centre national d'études spatiales, फ्रेंच भाषा में CNES का पूर्ण रूप है।

9. जर्मन एयरोस्पेस सेंटर (DLR)

इस अंतरिक्ष एजेंसी को दुनिया की सबसे पुरानी एजेंसियों में से एक माना जाता है। इस अंतरिक्ष एजेंसी की स्थापना वर्ष 1969 में हुई थी। जर्मन एयरोस्पेस सेंटर का कार्य क्षेत्र अंतरिक्ष, परिवहन, वैमानिकी, सुरक्षा, डिजिटलीकरण और ऊर्जा जैसे क्षेत्र से जुड़ा है।

10. इटैलियन स्पेस एजेंसी (ASI)

इटैलियन स्पेस एजेंसी की स्थापना 1988 में हुई थी और इस स्पेस एजेंसी का मुख्यालय रोम में है। आज यह स्पेस एजेंसी वैश्विक स्तर पर शीर्ष 10 अंतरिक्ष एजेंसियों में से एक है।

बोध प्रश्न

- विश्व में कितनी अंतरिक्ष एजेंसियाँ हैं?

- विश्व की शीर्ष 10 सबसे लोकप्रिय अंतरिक्ष एजेंसियों के नाम लिखिए।

10.3.4 भारत में उपग्रह टीवी या चैनल का आरंभ

भारतीय राष्ट्रीय उपग्रह प्रणाली

प्रिय छात्रो, आप इसरो का नाम तो सुने ही होंगे। इसरो (इंडियन स्पेस रिसर्च ऑर्गनैजेशन) भारत की अंतरिक्ष एजेंसी है। इसे हिंदी में भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन के नाम से जाना जाता है। यह संगठन भारत और मानव जाति के लिए बाह्य अंतरिक्ष से लाभ प्राप्त करने के लिए विज्ञान, इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में काम करता है। इसरो भारत सरकार के अंतरिक्ष विभाग (डिपार्टमेंट ऑफ स्पेस-डीओएस) का एक प्रमुख अंग है। डीओएस मुख्य रूप से इसरो के भीतर विभिन्न केंद्रों या इकाइयों के माध्यम से भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम को क्रियान्वित करता है।

इसरो से पहले भारत सरकार ने 1962 में डॉ. विक्रम साराभाई के सुझाव के अनुसार भारतीय राष्ट्रीय अंतरिक्ष अनुसंधान समिति (INCOSPAR) बनाई थी। इसरो का गठन 15 अगस्त, 1969 को हुआ था। इसके बाद INCOSPAR निष्क्रिय हो गई। डीओएस (DOS) की स्थापना के बाद 1972 में इसरो को डीओएस (DOS) के अधीन कर दिया गया। इसरो या डीओएस का मुख्य उद्देश्य विभिन्न राष्ट्रीय आवश्यकताओं के लिए अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी का अनुसंधान, विकास और अनुप्रयोग है। इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए, इसरो ने संचार, टेलीविजन प्रसारण और मौसम संबंधी सेवाओं; संसाधनों की निगरानी और प्रबंधन; अंतरिक्ष-आधारित नेविगेशन सेवाओं के लिए प्रमुख अंतरिक्ष प्रणालियाँ स्थापित की हैं। इसरो ने उपग्रहों को आवश्यक कक्षाओं में स्थापित करने के लिए उपग्रह प्रक्षेपण यान, पीएसएलवी और जीएसएलवी विकसित किए हैं।

इसरो का मुख्यालय बेंगलुरु में है। इसकी गतिविधियाँ विभिन्न केंद्रों और इकाइयों में फैली हुई हैं। विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केंद्र (वीएसएससी), तिरुवनंतपुरम में प्रक्षेपण वाहन बनाए जाते हैं; यू आर राव उपग्रह केंद्र (यूआरएससी), बेंगलुरु में उपग्रहों का डिज़ाइन और विकास किया जाता है; उपग्रहों और प्रक्षेपण वाहनों का एकीकरण और प्रक्षेपण सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र (एसडीएससी), श्रीहरिकोटा से किया जाता है; क्रायोजेनिक चरण सहित तरल चरणों का विकास लिक्विड प्रोपल्शन सिस्टम्स सेंटर (एलपीएससी), वलियामाला और बेंगलुरु में किया जाता है; संचार और सुदूर संवेदन उपग्रहों के लिए सेंसर और अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग पहलुओं का कार्य अंतरिक्ष उपयोग केंद्र (एसएसी), अहमदाबाद को सौंपा गया है तथा

सुदूर संवेदन उपग्रह डेटा प्राप्ति प्रसंस्करण और प्रसार का कार्य राष्ट्रीय सुदूर संवेदन केंद्र (एनआरएससी), हैदराबाद से किया जाता है।

भारतीय राष्ट्रीय उपग्रह प्रणाली (इंडियन नेशनल सैटलाइट सिस्टम - Indian National Satellite System-इन्सैट) इसरो द्वारा शुरू बहुउद्देशीय भू-स्थिर उपग्रहों की एक श्रृंखला है जो दूरसंचार, प्रसारण, मौसम विज्ञान, अनुसंधान और सैन्य अनुप्रयोगों के कार्य के लिए उपयोग होता है। 1983 में शुरु किया हुआ इनसैट, एशिया-प्रशांत क्षेत्र में सबसे बड़ी देशीय संचार प्रणाली है। यह भारत सरकार के अंतरिक्ष विभाग, दूरसंचार विभाग, भारतीय मौसम विज्ञान विभाग, आकाशवाणी और दूरदर्शन चैनल का एक संयुक्त उद्यम है। इनसैट उपग्रह भारत के टीवी और संचार आवश्यकताओं की सेवा करने के लिए विभिन्न बैंड में ट्रांसपोंडर (सी, एस, विस्तारित सी और यू) प्रदान करते हैं। इसरो अंतर्राष्ट्रीय कोसपस-सारसट (Cospas-Sarsat) कार्यक्रम के एक सदस्य के रूप में दक्षिण एशियाई और हिंद महासागर क्षेत्र में खोज और बचाव अभियान के लिए संकट चेतावनी संकेतों को प्राप्त करने के लिए उपग्रहों के ट्रांसपोंडर (ओं) का इस्तेमाल करता है।

इनसैट प्रणाली

भारतीय राष्ट्रीय उपग्रह (इनसेट) प्रणाली अगस्त 1983 में इनसैट -1 बी के प्रक्षेपण (इनसैट -1 ए, पहला उपग्रह अप्रैल 1982 में छोड़ा गया था लेकिन वह मिशन सफल नहीं हो पाया था) के साथ आरंभ हुआ। इनसैट प्रणाली से भारत के दूरदर्शन और रेडियो प्रसारण, दूरसंचार और मौसम संबंधी क्षेत्रों में एक क्रांति हुई। दूरदराज के क्षेत्रों और बंद किनारे द्वीपों के लिए टीवी और आधुनिक दूरसंचार सुविधाओं का तेजी से विस्तार सक्षम होने में इनसैट प्रणाली का बहुत बड़ा योगदान है। साथ में, प्रणाली संचार सेवाओं के लिए सी, विस्तारित सी और यू में ट्रांसपोंडर (ओं) का प्रदान करती है। कल्पना-1 एक विशेष मौसम संबंधी उपग्रह है। उपग्रहों पर नजर रखने और नियंत्रण करने के लिए हसन और भोपाल में मास्टर नियंत्रण सुविधा मौजूद है। भारत में टेलीविजन कवरेज के विस्तार के लिए INSAT एक प्रमुख उत्प्रेरक रहा है। सैटेलाइट टेलीविजन अब 100% क्षेत्र और 100% आबादी को कवर करता है। स्थलीय कवरेज भारतीय भूमि के 81 प्रतिशत से अधिक और आबादी के 92 प्रतिशत से अधिक है। दूरदर्शन देश भर में टेलीविजन सेवाएं प्रदान करने के लिए INSAT उपग्रहों का एक प्रमुख उपयोगकर्ता है। वर्तमान में, INSAT-3A, INSAT-3C और INSAT-4B के C-बैंड ट्रांसपोंडर के माध्यम से 33 दूरदर्शन टीवी चैनल संचालित हो रहे हैं। सभी सैटेलाइट टीवी चैनल डिजिटल हैं। दूरदर्शन द्वारा

निम्नलिखित उपग्रह टेलीविजन सेवाएं संचालित की जा रही हैं: राष्ट्रीय नेटवर्किंग सेवा (डीडी-1), डीडी न्यूज (डीडी-2), डीडी-स्पोर्ट्स, डीडी-उर्दू, डीडी-इंडिया, डीडी-भारती और डीडी-एचडी केरल, कर्नाटक, जम्मू और कश्मीर, तमिलनाडु, पश्चिम बंगाल, आंध्र प्रदेश, गुजरात, यूपी, असम, महाराष्ट्र, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, त्रिपुरा, ओडिशा, बिहार, मध्य प्रदेश, उत्तराखंड (उत्तरांचल), हरियाणा, मिजोरम, झारखंड, मणिपुर, अरुणाचल प्रदेश, छत्तीसगढ़, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह और लक्षद्वीप द्वीप समूह में क्षेत्रीय सेवाएं। डीडी-1 नेटवर्क, डीडी-न्यूज नेटवर्क और क्षेत्रीय सेवाओं की पूर्ति के लिए दूरदर्शन के लगभग 1415 ट्रांसमीटर इनसैट प्रणाली के माध्यम से काम कर रहे हैं। अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के लिए सी-बैंड में नियोजित 10 चैनल डीटीएच 17 सितंबर 2009 से चालू है। डीडी एचडी सेवा 3 अक्टूबर 2010 को राष्ट्रमंडल खेल 2010 की शुरुआत के साथ शुरू की गई है। एचडी टीवी सेवा, ऑन-डिमांड मूवी सेवा आदि जैसी प्रीमियम सेवाओं की शुरूआत के साथ डीटीएच सेवाएं लोकप्रिय हो रही हैं। पूरे भारत में सबसे छोटे डिश एंटीना के साथ डीटीएच टेलीविजन सेवा के परिचालन के लिए उच्च शक्ति वाले केयू-बैंड ट्रांसपोंडर का उपयोग किया जाता है। इनसैट/जीसैट और पट्टे पर दिए गए उपग्रहों के लगभग 75 केयू-बैंड ट्रांसपोंडर डीटीएच टेलीविजन सेवाओं की पूर्ति कर रहे हैं। डीडी डायरेक्ट+ सहित विभिन्न डीटीएच टेलीविजन प्रदाताओं के पास 40 मिलियन से अधिक डीटीएच कनेक्शन हैं।

बोध प्रश्न

- इसरो की स्थापना कब हुई?
- भारतीय राष्ट्रीय उपग्रह (इनसेट) प्रणाली कब और किस उपग्रह के साथ **आरंभ** हुआ?
- इसरो अंतर्राष्ट्रीय कोसपस-सारसट (Cospas-Sarsat) कार्यक्रम के एक सदस्य के रूप क्या काम करता है?

10.4 पाठ सार

उपग्रह ग्रहों की परिक्रमा करने वाले छोटे ग्रह होते हैं। चंद्र जैस ग्रह प्राकृतिक उपग्रह हैं। मानव ने भी कृत्रिम उपग्रह बनाए हैं। इन उपग्रहों का उपयोग मौसम पूर्वानुमान, संचार, और सैन्य उद्देश्यों के लिए किया जाता है। उपग्रहों को आमतौर पर रॉकेट के जरिए कक्षा में लॉन्च किया जाता है। वे अलग-अलग गति से पृथ्वी के चारों यात्रा करते हैं। उपग्रह लगभग किसी भी दूरी पर टेलीविज़न, रेडियो, आवाज़ और डेटा संकेतों को प्रसारित करने का महत्वपूर्ण कार्य करते हैं। 23 जुलाई 1962 को पहला सार्वजनिक उपग्रह टेलीविजन संकेतों को टेलस्टार उपग्रह के माध्यम से यूरोप से उत्तरी अमेरिका तक प्रसारित किया गया था, जिसे 100 मिलियन से

अधिक लोगों ने देखा। 6 अप्रैल 1965 को दुनिया का पहला वाणिज्यिक संचार उपग्रह इंटेलसैट-I को भू-समकालिक कक्षा में लॉन्च किया गया था। टेलीविज़न उपग्रहों का पहला राष्ट्रीय नेटवर्क ऑर्बिटा अक्टूबर 1967 में सोवियत संघ द्वारा बनाया गया और 9 नवंबर 1972 को लॉन्च किया गया था। 30 मई 1974 को एटीएस-6, दुनिया का पहला प्रायोगिक शैक्षिक और सीधा प्रसारण उपग्रह (डीबीएस) लॉन्च किया गया था। यह प्रसारण भारतीय उपमहाद्वीप पर केंद्रित था। सोवियत भूस्थिर उपग्रहों की श्रृंखला में पहला डायरेक्ट-टू-होम टेलीविज़न ले जाने वाला उपग्रह, एकरन 1, 26 अक्टूबर 1976 को लॉन्च किया गया था। दुनिया भर में लगभग 25,000 से ज़्यादा टीवी चैनल हैं और भारत में दूरदर्शन, एयर टेल, टाटा स्काई आदि डीटीएच पर लगभग 1600 चैनल सूचीबद्ध हैं। उपग्रह टीवी उद्योग का आरंभिक युग 1976 से1980 तक, टीवीआरओ/सी-बैंड सैटेलाइट युग 1980-1986 तक और 1987 से डिश व टीवी चैनल में क्रांति युग माना जाता है। प्राइमस्टार और डायरेक्ट टीवी जैसी डीबीएस सेवाओं की व्यापक उपलब्धता 1990 के दशक की शुरुआत से टीवीआरओ सिस्टम की लोकप्रियता को कम करने लगी थी।

पहली डायरेक्ट-टू-होम (डीटीएच) उपग्रह टेलीविजन सेवा 1994 में डायरेक्ट ब्रॉडकास्ट सैटेलाइट कॉर्पोरेशन (डीबीएस) द्वारा संयुक्त राज्य अमेरिका में शुरू की गई थी। भारत में पहली डीटीएच सेवा 2 अक्टूबर 2003 को डिश टीवी द्वारा शुरू की गई थी। देश में पहली मुफ्त डीटीएच सेवा डीडी फ्री डिश, दिसंबर 2004 में सार्वजनिक प्रसारक प्रसार भारती द्वारा शुरू की गई थी।

विश्वभर में सरकारी एजेंसियाँ छोटे बजट वाले प्राचीन कार्य संस्कृति वाले संगठनों से लेकर आधुनिक-विकसित क्षेत्रीय या राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय उद्यमों के स्तर तक की हैं। जैसे कि संयुक्त राज्य अमेरिका के नेशनल एरोनॉटिक्स एंड स्पेस एडमिनिस्ट्रेशन (NASA), यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी (ESA) जो 20 से अधिक घटक देशों के लिए समन्वय करती है, जापान एयरोस्पेस एक्सप्लोरेशन एजेंसी (JAXA), रूस के रोस्कोस्मोस स्टेट कॉरपोरेशन फॉर स्पेस एक्टिविटीज़ (रोस्कोस्मोस), चीन राष्ट्रीय अंतरिक्ष एजेंसी (CNSA) और भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO)।

इसरो भारत की अंतरिक्ष एजेंसी है। इसका का गठन 15 अगस्त, 1969 को हुआ था। डीओएस (DOS) की स्थापना के बाद 1972 में इसरो को डीओएस (DOS) के अधीन कर दिया गया। इसरो द्वारा शुरू की गई भारतीय राष्ट्रीय उपग्रह प्रणाली, एक बहुउद्देशीय भू-स्थिर उपग्रहों की एक श्रृंखला है जिसका उपयोग दूरसंचार, प्रसारण, मौसम विज्ञान, अनुसंधान और

सैन्य अनुप्रयोगों के कार्य के लिए किया जाता है। भारत में टेलीविजन कवरेज के विस्तार के लिए INSAT एक प्रमुख उत्प्रेरक रहा है। सैटेलाइट टेलीविजन अब 100% क्षेत्र और 100% आबादी को कवर करता है। स्थलीय कवरेज भारतीय भूमि के 81 प्रतिशत से अधिक और आबादी के 92 प्रतिशत से अधिक है।

10.5 : पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के बाद निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं-

1. ग्रह की परिक्रमा करने वाले दूसरे छोटे ग्रह को उपग्रह कहा जाता है।
2. सौर मंडल में पहले से प्राकृतिक उपग्रह मौजूद हैं। मानव ने कृत्रिम उपग्रह बनाए।
3. कृत्रिम उपग्रहों सौर मंडल के ग्रह की परिक्रमा करते हैं। संबंधित ग्रह की जानकारी पृथ्वी पर भेजते हैं।
4. कृत्रिम उपग्रहों का उपयोग मौसम की जानकारी पाने, सूचनाएं प्रसारित करने और सैन्य अनुप्रयोग हेतु किया जाता है।
5. उपग्रह टीवी या चैनलों का प्रसारण पृथ्वी की कक्षा में स्थापित विशेष प्रकार के उपग्रहों से संभव हो पा रहा है।

10.6 : शब्द संपदा

1. अनुसंधान = खोज, अन्वेषण, ऊहापोह, प्रार्थना, विवेचन
2. संचरण = संचार करने की क्रिया, चलना, गमन, प्रसारण, फैलाना, गतिशील करना
3. प्रणाली = व्यवस्था, पद्धति, प्रथा, परंपरा
4. संरेखन = समान रेखा में होना, संरेखित करने की क्रिया या संरेखित होने की अवस्था; विशेष रूप से एक दूसरे के संबंध में भागों (एक यांत्रिक या इलेक्ट्रॉनिक उपकरण के रूप में) की उचित स्थिति या समायोजन की स्थिति; एक लाइन में गठन
5. सापेक्ष = किसी की अपेक्षा करने वाला; जो दूसरे पर आधारित या आश्रित हो; दूसरे पर अवलंबित
6. परावर्तित प्रकाश = जब प्रकाश की किरण किसी चिकनी पॉलिश सतह से टकराती है और वापस लौट जाती है , तो इसे प्रकाश का प्रतिबिंब कहा जाता है। जो किरण वापस लौटती है उसे परावर्तित किरण कहते हैं और प्रकाश दिखाई देता है, उसे परावर्तित प्रकाश कहते हैं।
7. अवरक्त विकिरण = अवरक्त विकिरणों को ऊष्मा या थर्मल तरंगें या विद्युत चुम्बकीय तरंगें भी कहा जाता है। अंग्रेजी में इन्फ्रारेड रेडिएशन

कहते हैं। इसका तरंग दैर्ध्य (वेवलेन्थ) 1050 एनएम होता है। यह विद्युत चुम्बकीय विकिरण या तरगों का एक प्रकार है। चूंकि यह दृश्य प्रकाश से बहुत अधिक होता है, इसलिए यह सामान्य परिस्थिति में मानव आंखों को आसानी से नहीं देखाई देती हैं।

8. ट्रांसपोंडर्स = यह शब्द ट्रांसमीटर और रिस्पॉन्डर के संयोजन से बना है। विनिर्दिशिष्ट संकेत प्राप्त करके उसे बिना किसी परिवर्तन के स्वचालित रूप से प्रतिक्रिया स्वरूप संचारित करनेवाला एक विद्युत उपकरण है। दूरसंचार में, ट्रांसपोंडर एक उपकरण है जो सिग्नल प्राप्त करने पर प्रतिक्रिया में एक अलग सिग्नल उत्सर्जित करता है। एयर नेविगेशन या रेडियो फ्री लोकेशन आइडेंटिफिकेशन में ट्रांसपोंडर एक ऐसा उपकरण है जो माँगे गए सिग्नल की प्रतिक्रिया में मांग के प्रतिशत के अनुसार भेजे जाने वाला एक सिंगल लोड है। संचार उपग्रहों में ट्रांसपोंडर अपलिंक फ्रीक्वेंसी सिग्नल इकट्ठा कर उन्हें पृथ्वी पर विभिन्न डाउनलिंक फ्रीक्वेंसी पर पुनः री-ट्रांस्मिट कर देता है, सामान्यतः सिग्नल/सिग्नल्स के कंटेंट को बिना परिवर्तित किए।इन्हें उपग्रहों का हृदय भी कहा जाता हैं।

9. परवलयिक = रूपक, प्रतीकात्मक, आलंकारिक। उपग्रह के संबंध में परवलयिक, डिश या दर्पण होता है, जिसका उपयोग प्रकाश, ध्वनि या रेडियो तरंगों जैसी ऊर्जा को एकत्रित या प्रक्षेपित करने के लिए किया जाता है।

10. आवृत्ति = बार-बार होना, दुहराव, संस्करण

11. अवशोषक = सोखने वाला, अपने में समा लेने वाला

12. एनालॉग = एनालॉग शब्द ग्रीक एना से बना है, जिसका अर्थ है "तक", और लोगो, जिसका अर्थ है, अन्य बातों के अलावा, "अनुपात"। एनालॉग कुछ ऐसी चीज है जो किसी और चीज के समान है; दोनों को अनुरूप कहा जाता है। तकनीकी क्षेत्र में इसका मतलब है कि ऐसा कुछ जिसका आउटपुट उसके इनपुट के समानुपातिक या समान हो।

13. डिजिटल = डिजिटल का अर्थ है इलेक्ट्रॉनिक तकनीक का उपयोग करके डेटा को ऐसे प्रारूप में उत्पन्न करना, संग्रहीत करना और संसाधित करना जिसमें असतत मूल्यों का उपयोग किया जाता है, जिसे आमतौर पर एक और

शून्य द्वारा दर्शाया जाता है। डेटा को शून्य और एक की स्ट्रिंग के रूप में प्रेषित और संग्रहीत किया जाता है, जिनमें से प्रत्येक स्ट्रिंग को बिट कहा जाता है।

10.7 : परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

(1) उपग्रह का सामान्य परिचय लिखकर उसकी उपयोगिता और प्रकार पर प्रकाश डालिए।

(2) विश्व में उपग्रह चैनलों का आरंभ कब हुआ? उसके प्रारंभिक इतिहास अपने विचार लिखिए।

(3) डायरेक्ट-टू-होम और डायरेक्ट ब्रॉडकास्ट सैटेलाइट के बारे में आप क्या जानते हैं?

(4) विश्व की शीर्ष 10 लोकप्रिय अंतरिक्ष एजेंसियों का संक्षिप्त परिचय लिखिए।

(5) भारतीय राष्ट्रीय उपग्रह प्रणाली के संबंध में अपने विचार व्यक्त करें।

खंड (ब)

लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

(1) टीवीआरओ/सी-बैंड सैटेलाइट युग क्या है?

(2) डिश व टीवी चैनल के क्रांति युग के बारे में आप क्या जानते हैं?

(3) उपग्रह चैनल कैसे काम करते हैं?

(4) उपग्रह कक्षा के प्रकार पर संक्षिप्त जानकारी दीजिए।

(5) इनसैट प्रणाली पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

खंड (स)

I. सही विकल्प चुनिए -

1. मनुष्य ने सौर मंडल की जानकारी हासिल करने के लिए ..... का निर्माण किया।
   (अ) उपग्रह (आ) वायुयान (इ) डीश टीवी (ई) ओटीटी
2. पहली बार मानव निर्मित उपग्रह अंतरिक्ष में कब भेजा गया –
   (अ) सन् 1975 में (आ) सन् 1957 में (इ) सन् 1900 में (ई) सन् 1962 में
3. .....अमेरिका से जापान तक टेलीविजन सिग्नलों को प्रसारित करने वाला पहले उपग्रह है।
   (अ) रिले 1 (आ) इंटेलसैट-I (इ) टेलस्टार (ई) सिंकोम 2

(4) टेलर हॉवर्ड 1976 में अपने घर में बने सिस्टम के साथ सी-बैंड सैटेलाइट सिग्नल प्राप्त करने वाले पहले व्यक्ति बने। वे अमेरिका में कहाँ के निवासी थे

(अ) अलास्का (आ) टेक्सास (इ) वाशिंगन (ई) कैलिफोर्निया

(5) किस कंपनी ने अपने चैनलों को एन्क्रिप्ट करने के लिए वीडियोसिफर I I सिस्टम का उपयोग करना शुरू किया।

(अ) एचबीओ (आ) पीबीएस (इ) टीबीएस (ई) सीबीएन

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

1. मानव निर्मित उपग्रहों को ..... उपग्रह कहा जाता है।
2. ..... उपग्रह प्रणाली में सामान्यतः आकार में बड़े उपग्रहों का उपयोग किया जाता है।
3. पृथ्वी का ..... छवि की स्पष्टता के स्तर को कम करता है।
4. टेलीविज़न उपग्रहों का पहला राष्ट्रीय नेटवर्क ..... सोवियत संघ द्वारा बनाया गया था।
5. 2024 तक, ...अलग-अलग सरकारी अंतरिक्ष एजेंसियाँ अस्तित्व में हैं

III. सुमेल कीजिए –

1. संयुक्त राज्य अमेरिका	(अ) आई एस आर ओ (ISRO)
2. भारत	(आ) सी एन एस ए (CNSA)
3. जापान	(इ) ई एस ए (ESA)
4. चीन	(ई) एन ए एस ए (NASA)
5. यूरोपीय	(ऊ) जे ए एक्स ए (JAXA)

10.8 पठनीय पुस्तकें

10.8 पठनीय पुस्तकें

1) अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष अन्वेषण : रोचक एवं कौतूहलपूर्ण रिकार्ड, काली शंकर एवं राकेश शुक्ला
2) मीडिया लेखन (जन संचार माध्यम), डॉ. जगदीश शर्मा एवं डॉ. अमित कुमार सिंह
3) https://navbharattimes.indiatimes.com/india/isro-news-chandrayaan-3-aditya-l1-know-how-isro-made-history-in-2023/articleshow/106095489.cms?story=5
4) https://www.techtarget.com/searchmobilecomputing/definition/satellite

5) https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%89%E0%A4%AA%E0%A4%97%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A4%B9
6) https://www.geographynotespdf.com/%E0%A4%89%E0%A4%AA%E0%A4%97%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A4%B9%E0%A5%8B%E0%A4%82-%E0%A4%95%E0%A5%87-%E0%A4%B5%E0%A4%BF%E0%A4%95%E0%A4%BE%E0%A4%B8/
7) https://en.wikipedia.org/wiki/List_of_government_space_agencies
8) https://www.javatpoint.com/top-10-space-agencies

इकाई 11: टेलीविज़न लेखन : धारावाहिक, वृत्तचित्र

इकाई की रूपरेखा

11.1 प्रस्तावना

11.2 उद्देश्य

11.3 मूल पाठ : टेलीविज़न लेखन : धारावाहिक, वृतचित्र

11.3.1 टेलीविज़न का इतिहास

11.3.2 निजी टेलीविज़न चैनलों का विकास

11.3.3 टेलीविज़न के विभिन्न कार्यक्रम

11.3.4 पटकथा लेखन

11.3.5 पटकथा का आधार

11.3.6 धारावाहिक की पटकथा के लिए कहानी कैसी हो?

11.3.7 दर्शकों का प्रोफ़ाइल

11.3.8 धारावाहिक की पटकथा कैसे लिखें?

11.3.9 पटकथा के अंश का उदाहरण

11.3.10 धारावाहिक की पटकथा की विशेषताएँ

11.3.11 वृत्तचित्र लेखन

11.3.12 वृत्तचित्र निर्माण की प्रक्रिया

11.3.13 वृत्तचित्र का स्वरूप

11.3.14 वृत्तचित्र लेखन प्रारूप

11.4 पाठ-सार

11.5 पाठ की उपलब्धियाँ

11.6 शब्द-संपदा

11.7 परीक्षार्थ प्रश्न

11.8 पठनीय पुस्तकें

11.1 : प्रस्तावना

विश्व में टेलीविज़न का आरंभिक प्रसारण बीबीसी द्वारा 1936 में आरंभ हुआ। भारत में दूरदर्शन का आरंभ 15 सितंबर 1959 को सार्वजनिक सेवा प्रसारण में एक मामूली प्रयोग से आरंभ हुआ। 1 अप्रैल 1976 को यह सूचना और प्रसारण मंत्रालय का एक अलग विभाग बन गया और बाद में प्रसार भारती के अधीन आ गया। यह जानना सुखद है कि वर्तमान समय में दूरदर्शन के पास 66 स्टूडियो केंद्रों का एक विशाल नेटवर्क है। ये स्टूडियो केंद्र देश भर में इन-हाउस कार्यक्रम निर्माण की आवश्यकता को पूरा करते हैं। वर्तमान समय सूचना तथा मनोरंजन

के विस्फोट का समय है। इंटरनेट तथा नए माध्यमों ने सम्प्रेषण की एक नई दुनिया का रास्ता खोल दिया है। टेलीविज़न पर यूँ तो विविध कार्यक्रम दिखाए जाते हैं और सभी में पटकथा लेखन की आवश्यकता होती है। प्रस्तुत इकाई में धारावाहिक तथा वृत्तचित्र के लिए लिखी जाने वाली पटकथा पर विस्तार् से चर्चा की गई है।

11.2 : उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई को पढ़ने के बाद विद्यार्थी:

- टेलीविज़न का इतिहास बता सकेंगे।
- पटकथा लेखन की बारीकियों से परिचित हो सकेंगे।
- पटकथा के विकास की चर्चा कर सकेंगे।
- धारावाहिक की पटकथा लेखन के महत्त्वपूर्ण बिंदुओं से परिचित हो सकेंगे।
- वृत्तचित्र निर्माण के विभिन्न चरणों को जान सकेंगे।
- वृत्तचित्र लेखन और धारावाहिक लेखन में अंतर स्पष्ट कर सकेंगे।

11.3 : मूल पाठ : टेलीविज़न लेखन : धारावाहिक, वृतचित्र

11.3.1 टेलीविज़न का इतिहास:

जॉन बेअर्ड को टेलीविज़न का जनक माना जाता है। ब्रिटेन में ब्रिटिश ब्रॉडकास्टिंग कॉर्पोरेशन (बीबीसी) ने पहली टेलीविज़न सेवा 1936 में आरंभ की। इसे विश्व में टेलीविज़न का आरंभिक प्रसारक कहा जाता है। 1939 तक टेलीविज़न का प्रसारण संयुक्त राज्य अमेरिका में भी प्रारंभ हो गया था। प्रारम्भिक टेलीविज़न प्रसारण मात्र श्वेत-श्याम था। संयुक्त राज्य अमेरिका में 1953 में सर्वप्रथम कोलम्बिया ब्रॉडकास्टिंग सिस्टम (सीबीएस) ने पहला सफल रंगीन कार्यक्रम प्रसारित किया। विभिन्न लोकप्रिय कार्यक्रमों के साथ टेलीविज़न सेट अब मनोरंजन का एक महत्त्वपूर्ण माध्यम बन गया। "तस्वीर के साथ रेडियो" माने जाने वाले इस माध्यम ने धीरे-धीरे अपनी अनूठी शैली विकसित कर ली, परिणामस्वरूप वह प्रत्येक घर का अनिवार्य हिस्सा बन गया।

भारत में दूरदर्शन का आरंभ 15 सितंबर 1959 को सार्वजनिक सेवा प्रसारण में एक मामूली प्रयोग से आरंभ हुआ था। यह प्रयोग 1965 में एक सेवा बन गया जब दूरदर्शन ने देश की राजधानी नई दिल्ली और उसके आसपास के क्षेत्र में घर-घर पहुँचने के लिए सिग्नल भेजना आरंभ किया। 1972 तक सेवाओं को मुंबई और अमृतसर तक तथा 1975 तक सात और शहरों तक बढ़ा दिया गया। इस समय यह आकाशवाणी का हिस्सा था। 1 अप्रैल 1976 को यह सूचना और प्रसारण मंत्रालय का एक अलग विभाग बन गया और बाद में प्रसार भारती के अधीन आ गया।

यह जानना सुखद है कि वर्तमान समय में दूरदर्शन के पास 66 स्टूडियो केंद्रों का एक विशाल नेटवर्क है। ये स्टूडियो केंद्र देश भर में इन-हाउस कार्यक्रम निर्माण की आवश्यकता को पूरा करते हैं। इनमें राज्यों की राजधानियों के 17 मुख्य स्टूडियो केंद्र और देश के विभिन्न स्थानों में स्थित 49 अन्य स्टूडियो केंद्र शामिल हैं।

दूरदर्शन केंद्रों की प्रतिवर्ष वृद्धि को निम्नलिखित आरेख में देखा जा सकता है-

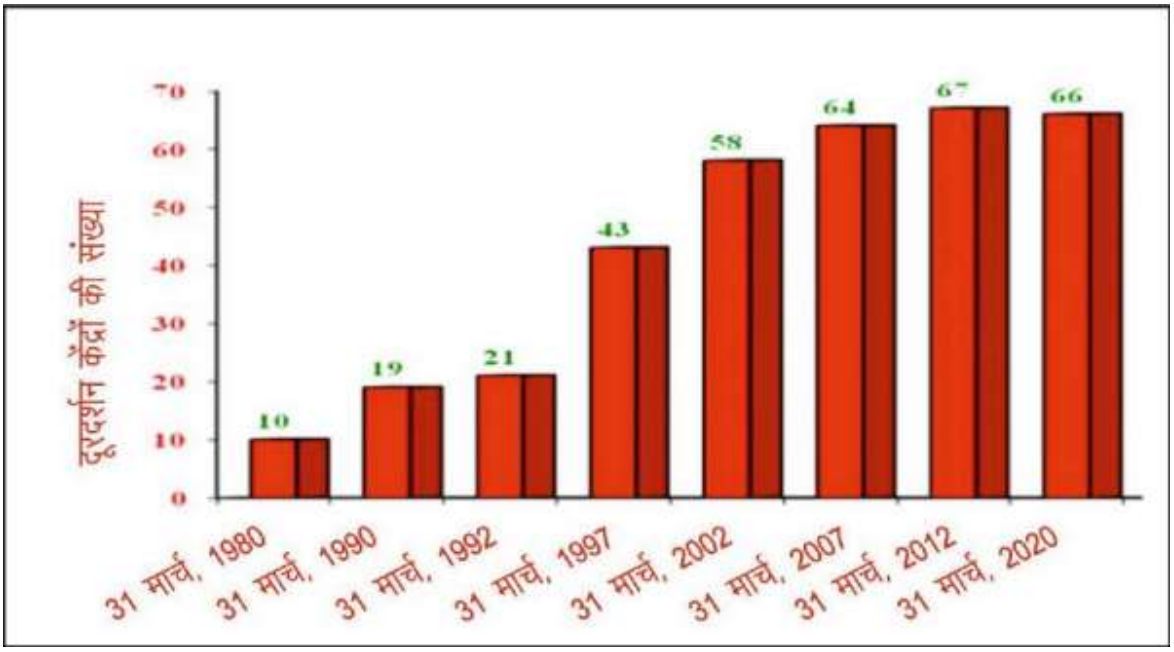

(प्रसारभारती की वेबसाइट से साभार)

भारत के टेलीविज़न के इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण घटना 1982 में आयोजित एशियाई खेलों का प्रसारण है, जब 'दूरदर्शन' ने उपग्रह इनसैट के माध्यम से पहली बार राष्ट्रीय प्रसारण किया। आज दूरदर्शन लगभग 30 चैनलों के साथ एक विशाल टेलीविज़न प्रसारक बन गया है।

बोध प्रश्न:

1. बीबीसी का पूरा नाम क्या है?
2. वर्तमान समय में दूरदर्शन के पास कितने स्टूडियो केंद्र हैं?
3. दूरदर्शन ने उपग्रह इनसैट के माध्यम से पहली बार किसका प्रसारण किया?

11.3.2 निजी टेलीविज़न चैनलों का विकास:

आज दूरदर्शन के साथ हमारे पास अन्य अनेक चैनल हैं। इनका प्रसारण एवं घर-घर तक पहुँच 'उपग्रह' के माध्यम से संभव हो सका है। प्रारंभ में 'दूरदर्शन' का एकाधिकार था। 1990 के दशक में यह स्थिति बदली। एक अमरीकी समाचार चैनल केबल न्यूज़ नेटवर्क द्वारा खाड़ी युद्ध के प्रसारण ने भारत में उपग्रह टेलीविज़न के प्रसारण का मार्ग प्रशस्त कर दिया।

हांगकांग आधारित एस टी ए आर (सेटेलाइट टेलीविज़न एशियन रीजन, स्टार) ने एक भारतीय कंपनी के साथ अनुबंध किया और ज़ी टी वी का जन्म हुआ। यह भारत का पहला निजी स्वामित्व का हिन्दी उपग्रह चैनल था। भारत का दर्शक विविध चैनलों एवं कार्यक्रमों की विविधता की प्रतीक्षा कर रहा था। 1995 में सर्वोच्च न्यायालय के एक आदेश में कहा गया कि वायु तरंगों पर भारत सरकार का एकाधिकार नहीं हो सकता। इसके पश्चात अनेक निजी चैनलों के आगमन का मार्ग प्रशस्त हुआ। निजी चैनलों के आगमन के साथ ही अनेक क्षेत्रीय चैनल भी अस्तित्व में आ गए और इसके साथ ही कार्यक्रमों की विभिन्न श्रेणियाँ जैसे- 24 घंटे के समाचार

चैनल, धार्मिक कार्यक्रम, बच्चों के कार्यक्रम, सिनेमा, धारावाहिक, वृत्तचित्र, जनजागृति के कार्यक्रम आदि दर्शकों के लिए उपलब्ध हुए।

आज टेलीविज़न जनसंचार का एक लोकप्रिय माध्यम है। यह हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन चुका है, और वर्तमान समय में तो कृत्रिम मेधा की सहायता से नित नए कार्यक्रम तथा नए प्रकार की प्रस्तुतियाँ हमें देखने को मिल रही हैं। इंटरनेट की व्यापक उपलब्धि के चलते अनेक वैकल्पिक माध्यम तथा वैविध्यपूर्ण कार्यक्रमों की शृंखलाएं दर्शकों के लिए उपलब्ध हैं, जिन्हें देखने के लिए दर्शकों को पारंपरिक टेलीविज़न कार्यक्रमों की तरह निर्धारित दिन तथा समय की प्रतीक्षा भी नहीं करनी पड़ती। इंटरनेट तथा नए माध्यमों ने सम्प्रेषण की एक नई दुनिया का रास्ता खोल दिया है। कहा जा सकता है कि वर्तमान समय सूचना तथा मनोरंजन के विस्फोट का समय है, जिसके सकारात्मक तथा नकारात्मक दोनों पहलू हैं।

बोध प्रश्न:

1. जीटीवी का जन्म कैसे हुआ?
2. सर्वोच्च न्यायालय ने ऐसा क्यों कहा कि वायु तरंगों पर भारत सरकार का एकाधिकार नहीं हो सकता?

11.3.3 टेलीविज़न के विभिन्न कार्यक्रम :

ऊपर कहा गया कि वर्तमान समय सूचना तथा मनोरंजन के विस्फोट का समय है। अब टेलीविज़न देखने के लिए परंपरागत रूप से दर्शक को अपने लिविंग रूम में जाकर बैठने की आवश्यकता नहीं है। अब टेलीविज़न दर्शक के मोबाइल में, लैपटॉप में तथा कंप्यूटर में भी उपलब्ध है। वह जब चाहे जहाँ चाहे टेलीविज़न देख सकता है। ऐसे में टेलीविज़न कार्यक्रमों का निर्माण एक बड़ी चुनौती है। यदि टेलीविज़न दर्शक को आकर्षित करने, प्रामाणिक सूचना देने तथा बाँधकर रख पाने में असफल रहा तो उसके पास अन्य वैकल्पिक माध्यम उपलब्ध हैं। दर्शक दूसरे माध्यमों पर जाने में देर नहीं लगाएगा।

टेलीविज़न पर यूँ तो विविध कार्यक्रम दिखाए जाते हैं और सभी में पटकथा लेखन की आवश्यकता होती है; यहाँ तक कि नृत्य-संगीत अथवा खाना-खजाना जैसे जीवंत कार्यक्रमों में भी *पटकथा* लेखन की आवश्यकता पड़ती है।

बोध प्रश्न:

1. वर्तमान समय में टेलीविज़न के अन्य कौन-कौन से वैकल्पिक माध्यम उपलब्ध हैं?
2. कैमरे से फिल्म के परदे पर दिखाए जाने के लिए लिखी हुई कथा को क्या कहते हैं?

11.3.4 पटकथा लेखन:

पटकथा क्या है?

पटकथा अंग्रेजी शब्द 'स्क्रीन प्ले' का हिन्दी अनुवाद है। यह कुछ और नहीं कैमरे से फिल्म के परदे पर दिखाए जाने के लिए लिखी हुई कथा है। वस्तुत: फिल्म और टीवी कार्यक्रम के आधार लेखन को ही पटकथा कहते हैं।

पटकथा लेखन एक कला है जिसे अनुभव से तराशा जा सकता है। पटकथा के माध्यम से निर्देशक, अभिनेता, कैमरा मैन, साउंड रिकॉर्डिस्ट आदि दिशानिर्देश पाते हैं। इस संबंध में दूरदर्शन पर प्रसारित किए गए कुछ धारावाहिकों जैसे-'रामायण', 'महाभारत', 'चंद्रकांता', 'मैला आँचल', 'राग दरबारी', 'मालगुड़ी डेज', 'नीम का पेड़', 'तमस', 'हम लोग', 'क्योंकि सास भी कभी बहू थी', 'ससुराल गेंदा फूल', 'यह रिश्ता क्या कहलाता है' आदि की चर्चा उपयोगी रहेगी। 'चंद्रकांता' की पटकथा कमलेश्वर ने लिखी थी। कमलेश्वर् कहते हैं- 'टेलीविज़न लेखन, जिसे मैं शब्द-सुविधा के लिए मीडिया लेखन कहना चाहूँगा, आज *सम्प्रेषण* का सबसे बड़ा माध्यम है। इसमें धारावाहिकों का लेखन एक लगभग अलग-सी विधा है, जो रचनात्मकता के सबसे निकट भी है। यह सही है कि साहित्य लेखन और मीडिया लेखन के कारणों में मौलिक अंतर है और वह इसलिए कि साहित्य एकांतिक है और मीडिया लेखन सार्वजनीन। मीडिया लेखन इसीलिए अधिक जनतान्त्रिक है। यही जनतान्त्रिकता इसकी शक्ति भी है और कमजोरी भी, क्योंकि व्यवसायगत सफलता ही इसका अंतिम पैमाना और कीर्तिमान माना जाता है।'

सम्प्रेषण क्या है?

"संप्रेषण वह कार्य है जो किसी संदेश विशेष या संदेशमाला के माध्यम से प्रेषक और गृहीता के बीच विचार संगति का जनक होता है।"

उदाहरण के लिए हम दूरदर्शन के सबसे लोकप्रिय धारावाहिक 'चंद्रकांता' की बात करते हैं। चंद्रकांता एक घंटे की अवधि का 104 एपिसोड वाला धारावाहिक था। तिलिस्मी-ऐयारी की कथा को पटकथा लेखक ने कुछ इस तरह दृश्य-श्रव्य माध्यम के नैरेटिव में बदला कि उसका जादू कुछ उसी तरह दर्शकों के सिर चढ़ा रहा जैसे वर्तमान समय में *हैरी पॉटर* का है। 'चंद्रकांता' की पटकथा के संबंध में वे कहते हैं कि एक पटकथा लेखक को टेलीविज़न पर प्रस्तुति की तकनीकी शब्दावली और 'पटकथा के व्याकरण' की जानकारी भी होनी चाहिए। सबसे पहले तो 'रीकैप' और 'और फिर...' को समझ लेना चाहिए। 'रीकैप' में पिछले एपिसोड की कहानी और घटनाओं का त्वरित विवरण शब्दों और दृश्यों में रहता है ताकि दर्शकों को पिछला कथासूत्र देकर उनकी उत्सुकता को बढ़ाया जा सके। क्योंकि अधिकांश सीरियल डेलीसोप या सिटकाम नहीं होते, वे प्रति सप्ताह ही आते हैं। 'और फिर...' यह उसकी कमेंट्री का अंतिम छोर है जो पिछले कथाक्रम को अगले एपिसोड से जोड़ देता है।

दृश्य-श्रव्य माध्यम में पात्रों के स्वगत संवादों के लिए 'वॉयस ओवर' तकनीक का इस्तेमाल किया जाता है। इसमें आवाज तो उसी पात्र की होती है किन्तु 'लिप मूवमेंट' नहीं होता। पटकथा लेखक को 'वॉयस ओवर' के तकनीकी संकेत देने होते हैं। इसी प्रकार फ़्लैश बैक के भी संकेत देने होते हैं।

फ़्लैश बैक एक वेधती हुई प्रति-स्मृति के लिए लाया जाता है ताकि पिछली किसी घटना या बात को पात्रों की प्रतिक्रिया या दर्शक की स्मृति के लिए इस्तेमाल किया जा सके या किसी भूली हुई घटना को घटनाक्रम के लिए फिर से सक्रिय किया जा सके। कमलेश्वर कहते हैं कि कोई भी व्यक्ति अभ्यास के द्वारा पटकथा लेखक बन सकता है। चूंकि यह अर्द्ध-वैज्ञानिक, अर्द्ध-तकनीकी तथा अर्द्ध-साहित्यिक काम है इसलिए यदि आप गौर से जिंदगी और अच्छी पटकथा को टेलीविज़न पर देखते हैं तो आपको समझ में आ जाता है कि ये चीजें कैसे घटित हो रही हैं और कम्पोज़ीशन्स क्या हैं? किस तरह से दृश्य बदलते हैं? एंट्रीज़ क्या हैं? कट प्वाइंट्स क्या हैं? और सबसे बड़ी बात जो धारावाहिक लेखन में है, वह यह कि यहाँ हर दृश्य अपने-आप में क्लाइमैक्स होता है। अगले दृश्य का उससे बड़ा क्लाइमैक्स खोजना होता है नहीं तो वह जमता नहीं। कभी-कभी ये क्लाइमैक्स चरित्र के माध्यम से निकलकर आते है, कभी-कभी संवाद के माध्यम से और कभी-कभी सिचुएशन के माध्यम से निकलकर आते हैं। बस यही जानकारी होनी चाहिए।

मनोहर श्याम जोशी कहते हैं कि पटकथा लेखन एक हुनर है। उनकी पुस्तक 'पटकथा-लेखन : एक परिचय' इस दिशा में एक महत्त्वपूर्ण साधन है। प्राथमिक स्तर की जानकारियों से आरंभ करके यह पुस्तक हमें पटकथा लेखन और फिल्म-टीवी की अनेक माध्यमगत विशेषताओं से रोचक ढंग से परिचित कराती है।

फिल्म और टीवी के लिए लिखी जाने वाली कथा कैमरे के सामने खेली जाती है कैमरा दर्शकों का प्रतिनिधि बनकर किसी भी पात्र या वस्तु के नजदीक जा सकता है। वह किसी पात्र के चेहरे की छोटी-से-छोटी भाव-भंगिमा, छोटी-से-छोटी वस्तु या किसी स्थान का छोटे-से-छोटा हिस्सा दिखा सकता है। वह चीजों को इतना बड़ा करके दिखा सकता है जितना कि पास आकर भी आँख से नहीं देखा जा सकता। रंगमंच के भव्य-से-भव्य मंच पर जलियाँवाला बाग का भयानक दृश्य नहीं दिखाया जा सकता, युद्ध अथवा बाढ़ के दृश्य नहीं दिखाए जा सकते, किन्तु कैमरा यह सब दिखा सकता है। अतएव यह भी कहा जा सकता है कि एक अच्छा नाटककार एक अच्छा पटकथा लेखक भी बन सकता है यह आवश्यक नहीं। टीवी के लिए लिखने के लिए दृश्य-श्रव्य माध्यम की तकनीक को समझना आवश्यक है। इसके लिए दृश्य-श्रव्य कल्पना अनिवार्य है। इसका तात्पर्य यह है कि अपने मानस-पटल पर घटनाओं को घटते हुए देख सकना और पात्रों को आपस में संवाद करते हुए सुनना। इसके लिए बेहतरीन किस्सागो होना पहली अर्हता है। घटनाओं का रस लेते हुए और रस देते हुए सजीव वर्णन करने वाली किस्सागोई दृश्य-श्रव्य कल्पना की उपज होती है।

परदे पर दिखाने के लिए किया जाने वाला लेखन छपाई के लिए किए जाने वाले लेखन से अपने माध्यम के कारण भिन्न होता है। किसी पुस्तक या पत्रिका का पाठक अपनी सुविधा के अनुसार् रुक-रुककर सामग्री पढ़ सकता है, किन्तु टीवी का दर्शक प्रसारित होने वाली सामग्री को दोबारा देख या सुन नहीं सकता। (कुछ समय पहले तक यह बात सत्य थी, किन्तु नव-मीडिया के आ जाने से अब दर्शक यूट्यूब से कोई भी धारावाहिक अपनी सहूलियत से देख सकता है।) अत: पटकथा की भाषा ऐसी होनी चाहिए जो दर्शक को एक बार सुनकर समझ में

आ जाए। पटकथा लेखक को यह प्रयास करना पड़ता है कि वह श्रोता का ध्यान तुरंत आकृष्ट कर सके।

बोध प्रश्न:

1. पटकथा की आवश्यकता क्यों पड़ती है?
2. मीडिया लेखन किस रूप में जनतान्त्रिक है?
3. 'पटकथा के व्याकरण' से कमलेश्वर का क्या अभिप्राय है?
4. 'रीकैप' तथा 'और फिर...' से आप क्या समझते हैं?
5. क्लाइमैक्स कैसे बनते हैं?
6. परदे पर दिखाए जाने के लिए किया जाने वाला लेखन छपाई के लिए किए जाने वाले लेखन से किस प्रकार भिन्न है?

11.3.5 पटकथा का आधार:

असगर वजाहत लिखते हैं कि पटकथा का आधार कहानी है। कहानी से ही पटकथा बनाने का काम शुरू होता है।

> कहानी क्या है?
>
> आमतौर पर यह माना जाता है कि जीवन की किसी छोटी-सी घटना, किसी भावना, संवेदना, समस्या के कथात्मक स्वरूप को कहानी कहते हैं।
>
> -असगर वजाहत

कहानी में एक केन्द्रीय कथानक होता है। कहानी प्राय: एक छोटे प्रसंग से शुरू होती है लेकिन अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थितियों के द्वन्द्व के कारण इसका विकास होता है। विकास का एक बिन्दु ऐसा आता है जब केन्द्रीय कथानक में एक उप-कथानक जुड़ जाता है; लेकिन उप-कथानकों का अपना कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं होता है। इनका जन्म प्राय: कहानी को गति और विस्तार देने के लिए होता है। कहानी के अंत में ये मुख्य कथानक का हिस्सा बन जाते हैं।

किसी भी कथा का मुख्य आधार पात्र होते हैं। पात्रों के बिना कथा आगे नहीं बढ़ सकती क्योंकि घटनाओं के घटने तथा उसे बताने का माध्यम पात्र ही बनते हैं। पात्र आपस में जो कुछ कहते-सुनते हैं, उसे संवाद कहा जाता है। संवादों से पात्रों का चरित्र-चित्रण भी होता है और कथा का विकास भी होता है। मुख्य रूप से कहानी का विकास द्वन्द्व के कारण होता है। द्वन्द्व केवल खलनायक के माध्यम से ही नहीं बल्कि विपरीत परिस्थितियों से भी उत्पन्न होते हैं। कहानी में स्थान को दर्शाया जाना जरूरी है। बिना वातावरण चित्रण के पात्रों द्वारा बोले गए संवाद या उनके क्रियाकलाप समझ में नहीं आते। किसी धारावाहिक या फिल्म की पटकथा

लिखते समय इन्हीं स्थानों तथा वातावरण के आधार पर पटकथा लेखक शूटिंग संकेत लिखता है।

अपने सभी तत्त्वों के साथ कहानी क्रमश: जिज्ञासाओं का समाधान करती हुई आगे बढ़ती है। द्वन्द्व की चरम अवस्था को क्लाइमेक्स या चरम उत्कर्ष कहते हैं। इसके बाद ही कहानी में समाधान होता है।

कहानी के कई प्रकार होते हैं, जिनका आधार क्रमश: विषयवस्तु, भाव प्रधानता, मनोवैज्ञानिक शैली, कहानी के किसी एक तत्त्व की प्रधानता तथा विचारधारा होता है। इन्हीं के आधार पर विभिन्न विषयों, भावों, मनोभावों, शैली एवं विचारधारा पर केंद्रित कहानी लिखी जाती है।

बोध प्रश्न:

1. कहानी किसे कहते हैं?
2. पटकथा लेखक शूटिंग संकेत किस आधार पर लिखता है?
3. धारावाहिक से आप क्या समझते हैं?

11.3.6 धारावाहिक की पटकथा के लिए कहानी कैसी हो?

धारावाहिक क्या है?

धारावाहिक ऐसी नाटकीय कथा को कहते हैं जिसे किश्तों में विभाजित करके उन किश्तों को टेलीविज़न या रेडियो पर एक-एक करके दैनिक, साप्ताहिक, मासिक या किसी अन्य क्रम के अनुसार प्रस्तुत किया जाता है।

किसी भी तरह की कहानी पर पटकथा लिखी जा सकती है और धारावाहिक बन सकता है, लेकिन पटकथा लिखने के लिए कहानी का चुनाव बहुत ही महत्त्वपूर्ण होता है। कहानी के अच्छी या खराब होने पर धारावाहिक की सफलता या असफलता निर्भर करती है। पटकथा लेखक को, वह जिस माध्यम के लिए लिख रहा है उसकी व्यावसायिकता का भी स्मरण रहना चाहिए।

11.3.7 दर्शकों का प्रोफ़ाइल:

कहानी का चयन करते समय धारावाहिक के पटकथा लेखक को स्वयं से प्रश्न करना चाहिए कि – मैंने यह कहानी क्यों चुनी? क्या कहानी दर्शकों को पसंद आएगी? इस धारावाहिक का 'टारगेट ऑडियंस' कौन है? पिछले दस-पंद्रह सालों में टीवी के दर्शकों का प्रोफ़ाइल काफी बदल गया है। अब पढ़े-लिखे, समझदार, सुरुचिपूर्ण और कलात्मकता की माँग करने वाले दर्शकों की संख्या काफी बढ़ गई है। यह बिल्कुल स्पष्ट है कि टीवी पर दिखाए गए कंटेण्ट और भाषा का प्रभाव दर्शकों पर सीधा असर करता है। दूरदर्शन पर जब रामानंद सागर द्वारा बनाए गए धारावाहिक 'रामायण' का प्रसारण हुआ तब उसकी भाषा का दर्शक अनुकरण

करता था। 'पिताश्री', 'माताश्री' जैसे सम्बोधन उन दिनों किशोरों-किशोरियों की जिह्वा पर होते थे। आज धारावहिकों, जीवंत प्रसारणों तथा वेब-सीरीज में उपयोग की जा रही भाषा चिंता का कारण है। इसलिए एक तरफ जहाँ कहानी में मनोरंजन के तत्त्व का होना, कहानी की मौलिकता, कहानी के कथानक का सीधा, स्वाभाविक होना तथा कहानी का प्रासंगिक होना आवश्यक है, वहीं संतुलित भाषा का उपयोग नितांत आवश्यक है।

बोध प्रश्न:

1. धारावाहिक की सफलता किस पर निर्भर करती है?
2. धारावाहिक की पटकथा लिखने के लिए कहानी का चयन करने के आधार कौन-कौन से हैं?

11.3.8 धारावाहिक की पटकथा कैसे लिखें?

धारावाहिक लेखन से तात्पर्य धारावाहिक की पटकथा लिखने से है। कहानी का चयन करने के पश्चात पटकथा लेखन से अभिप्राय है कि कहानी टीवी के परदे पर किस बिन्दु से आरंभ होगी? कैसे आगे बढ़ेगी? किस तरह अंत तक पहुँचेगी?

असगर वजाहत लिखते हैं कि लेखक कहानी के किसी ऐसे बिन्दु से भी पटकथा शुरू कर सकता है जो कहानी का प्रारम्भिक बिन्दु न हो। पटकथा लेखक कहानी को दृश्यात्मक रूप में देखता है और कहानी के जो प्रसंग किसी खास तरह के 'विजुअल' की माँग करते हैं उन्हें पूरा करता है। वातावरण बनाने, घटनाओं तथा पात्रों को स्थापित करने के लिए पटकथा लेखक नए 'विजुअल्स' की कल्पना करता है।

पटकथा लेखक कहानी की छोटी-बड़ी घटनाओं का स्थान और समय के अनुसार सूची बना लेता है। कहानी के प्रारंभ से लेकर अंत तक की सभी घटनाएँ स्थान और समय के अनुसार अलग कर ली जाती हैं। यह पटकथा लेखन का सर्वमान्य सिद्धांत है। एक स्थान, एक समय में घटने वाली घटना से एक दृश्य बनता है। स्थान बदल जाता है तो दृश्य बदल जाता है, समय बदल जाता है तो भी दृश्य बदल जाता है।

उदाहरण के लिए उषा प्रियंवदा की कहानी 'वापसी' में गजाधर बाबू रेलवे क्वार्टर के कमरे में रिटायरमेंट के बाद घर जाने के लिए सामान बाँधकर बैठे गनेशी से बात कर रहे हैं, यह एक दृश्य है। कहानी आगे बढ़ती है, गजाधर बाबू अपने घर पहुँच जाते हैं। बैठक में ही उनके सोने के लिए चारपाई डाल दी गई है। उनकी पत्नी भी दोपहर में कभी-कभी वहीं आकर नीचे तकिया डालकर लेट जाती हैं, यह दूसरा दृश्य है।

इसे इस आरेख के माध्यम से समझें-

दृश्य एक		
समय	घटना	स्थान
दृश्य दो		
समय	घटना	स्थान

कहानी को दृश्यों में विभाजित करते समय पटकथा लेखक प्रत्येक दृश्य में समय और स्थान को भी दर्ज करता है। रात/दिन/सुबह/शाम बताने के अतिरिक्त यदि कहानी में सही समय बताने की आवश्यकता हो तो घड़ी में समय दिखाया जा सकता है। स्थान अंदर या बाहर है, तो उसका उल्लेख कर देने से तकनीकी टीम को शूटिंग की व्यवस्था करने में मदद मिलती है।

बोध प्रश्न:

1. धारावाहिक लेखन से क्या तात्पर्य है?
2. असगर वजाहत पटकथा लेखन का सर्वमान्य सिद्धांत किसे कहते हैं?
3. एक दृश्य कैसे बनता है?

11.3.9 पटकथा के एक अंश का एक उदाहरण:

दृश्य-1

लोकेशन- इंडोर (रेलवे क्वार्टर का एक कमरा) **समय-दिन**

(गजाधर बाबू ने घर जाने के लिए सामान बाँध लिया है। दो बक्स, डोलची, बालटी आदि बाँधने में गनेशी उनकी मदद कर रहा है। वहीं पास में एक डिब्बा रखा है।)

गजाधार बाबू: यह डिब्बा कैसा है गनेशी?

गनेशी: (बिस्तर बाँधता हुआ कुछ गर्व, कुछ दुख, कुछ लज्जा से बोला) घरवाली ने साथ को कुछ बेसन के लड्डू रख दिए हैं। कहा, बाबूजी को पसंद थे। अब कहाँ हम गरीब लोग, आपकी कुछ खातिर कर पाएँगे।

(गजाधर बाबू के चेहरे पर घर जाने की खुशी के साथ इस परिचित स्नेह, आदरमय, सहज संसार से नाता टूटने का विषाद झलक रहा था।)

1.12 धारावाहिक की पटकथा की विशेषताएँ :

धारावाहिक की पटकथा खंडों में विभाजित होती है। इसमें हर दिन एक नई घटना (एपिसोड) दिखाई जाती है। ये एपिसोड धीरे-धीरे तैयार किए जाते हैं। पटकथा लेखक प्रत्येक एपिसोड में दिखाए जाने वाले प्रसंगों को इस प्रकार चुनकर दृशयात्मक प्रस्तुति के लिए तैयार करता है कि वह मुख्य कथा को आगे बढ़ाता हुआ महसूस हो और एपिसोड की समाप्ति दर्शक में जिज्ञासा जगाए कि आगे क्या होने वाला है। धारावाहिक के संवाद जितने महत्त्वपूर्ण होते हैं उतने ही उसमें प्रस्तुत मौन भी। पात्रों के आंगिक, वाचिक, सात्विक तथा आहार्य अभिनय सामान्य रूप से महत्त्वपूर्ण होते हैं। दृश्य छवियों के विभिन्न पहलुओं के रूपाकार तथा संवादों का तालमेल धारावाहिक की सफलता में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

बोध प्रश्न:

- धारावाहिक की पटकथा की दो विशेषताएँ लिखिए।

11.3.10 वृत्तचित्र लेखन

डॉक्यूमेंट्री फिल्म के लिए हिन्दी में वृत्तचित्र शब्द का प्रयोग किया जाता है। कहीं-कहीं इसके लिए दस्तावेजी फिल्म का प्रयोग भी किया जाता है। वृत्तचित्र किसी यथार्थ घटना, समस्या या परिस्थिति पर केंद्रित हो सकता है। वृत्तचित्र से तात्पर्य यही है कि इसके माध्यम से

कोई यथार्थ बात सामने आएगी। फिल्मों या धारावाहिकों से वृत्तचित्र इस अर्थ में भिन्न होता है कि फिल्में और धारावाहिक कल्पना पर आधारित होते हैं और वृत्तचित्र तथ्यों पर। 'डॉक्यूमेंट' अर्थात दस्तावेज़ ही इसका आधार होते हैं। दृश्य और श्रव्य माध्यम के लिए बनाई जाने वाली ऐसी फिल्मों के लिए डॉक्यूमेंट्री शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग 'न्यूयार्क सन' समाचार पत्र में 8 फरवरी सन् 1926 में किया गया था। जिसके संदर्भ में लिखा गया था कि डॉक्यूमेंट्री सिनेमा का एक ऐसा नया स्वरूप है जिसमें मूल अभिनेता और मूल दृश्य प्रस्तुत किए जाते हैं जिनके माध्यम से आधुनिक जीवन की तर्कसंगत व्याख्या होती है। वृत्तचित्र के अन्य व्याख्याता डिज़िगा वर्तोव ने उसे जीवन जैसा माना है। असगर वजाहत के अनुसार भारत में वृत्तचित्र का आरंभ हरीशचन्द्र सखाराम भटवाडेकर की 1899 में बनाई एक फिल्म से माना जाता है, जो मुंबई के हैंगिंग गार्डन में आयोजित दो पहलवानों की कुश्ती पर केंद्रित थी। इसके बाद इस युग में वृत्तचित्र के विषय खेल-तमाशे, जन-समारोह, त्योहार, जनता का दैनिक जीवन, पारसी नाटक की झलकियाँ आदि हुआ करते थे। दादा साहब फाल्के ने 1917 में फिल्म निर्माण कला के संबंध में एक वृत्तचित्र बनाया था।। 1920 में लोकमान्य तिलक के अंतिम संस्कारों पर केंद्रित एक वृत्तचित्र भी उल्लेखनीय है।

असगर वजाहत लिखते हैं कि भारत में वृत्तचित्र का दूसरा दौर 1948 में फिल्म डिवीजन बनाए जाने के बाद आरंभ होता है। इस युग में जनता को सूचित किए जाने और विकास कार्यक्रमों पर प्रकाश डालने के लिए वृत्तचित्र बनाए जाते थे।

बोध प्रश्न:

- वृत्तचित्र से क्या तात्पर्य है?
- भारत में वृत्तचित्र का आरंभ किस फिल्म से माना जाता है?

11.3.11 वृत्तचित्र निर्माण की प्रक्रिया

जैसा कि धारावाहिक की पटकथा लेखन के संबंध में भी हमने यह चर्चा की है कि जिस माध्यम के लिए पटकथा लिखनी है, पहले उस माध्यम को समझना आवश्यक है; वह बात यहाँ भी लागू होती है। चूँकि धारावाहिक एवं वृत्तचित्र का आधारभूत ढाँचा तथा निर्माण का उद्देश्य ही भिन्न होता है, इसलिए यह आवश्यक है कि पहले वृत्तचित्र निर्माण के चरणों को समझा जाए। असगर वजाहत ने अपनी पुस्तक 'पटकथा लेखन' व्यावहारिक निर्देशिका में इसकी क्रमवार चर्चा की है। वे लिखते हैं कि वृत्तचित्र निर्माण का पहला चरण है – विषय का चयन। विषय चुनते समय यह बात भी ध्यान में रखनी चाहिए कि विषय स्पष्ट हो और प्रभावी वर्ग की उसमें रुचि हो। विषय के महत्त्व, उपयोगिता और लोकप्रियता पर ध्यान देना भी आवश्यक है। रोचकता बनाए रखने के लिए विषय में आकर्षण होना आवश्यक है।

वृत्तचित्र निर्माण के दूसरे चरण में यह देखना होता है चयनित विषय पर लिखित अथवा दृश्य सामग्री कहाँ से मिलेगी? वृत्तचित्र का उद्देश्य क्या होगा? इसके बाद ही वृत्तचित्र का एक स्वरूप निश्चित हो पाएगा कि वह शुरू कहाँ से होगा, उसके अंतर्गत क्या-क्या दिखाया जाएगा और अंत कहाँ होगा?

वृत्तचित्र निर्माण के तीसरे चरण में उन स्थानों को तय किया जाता है, जहाँ शूटिंग की जानी है। विषय से संबंधित विशेषज्ञों की सूची बनाई जाती है, जिनके साक्षात्कार लिए जाने हैं।
उपर्युक्त तैयारी के बाद वृत्तचित्र निर्माता विषय की कच्ची रूपरेखा तैयार करके शूटिंग करते हैं। फिल्माए गए दृश्यों के आधार पर पटकथा लिखी जाती है। वृत्तचित्र की पटकथा फिल्म या धारावाहिक से भिन्न होती है। वृत्तचित्र की पटकथा कमेंट्री के रूप में होती है, जिसे वायस ओवर भी कहते हैं। यह वृत्तचित्र निर्माण का चौथा चरण है।

वृत्तचित्र का पाँचवाँ चरण कमेंट्री लेखन है। वस्तुत: *यह कमेंट्री अथवा वायस ओवर लेखन ही वृत्तचित्र लेखन है।* वायस ओवर की रिकॉर्डिंग करने के बाद सम्पादन के समय दृश्यों के साथ उसका संयोजन किया जाता है।

वायस ओवर की भाषा सीधी, सरल, प्रभावशाली तथा संप्रेषणीयता के सभी गुणों से सम्पन्न होनी चाहिए। वाक्य छोटे-छोटे होने चाहिए। भाषा में कलात्मकता का हल्का सा पुट होना चाहिए। असगर वजाहत कहते हैं कि वृत्तचित्र लेखन का सबसे महत्त्वपूर्ण चित्र यह है कि वायस ओवर दृश्य/दृश्यों का विवरण नहीं देता, उसकी व्याख्या नहीं करता बल्कि उस पर टिप्पणी करता है। उदाहरण के लिए अगर दृश्य एक अकालग्रस्त परिवार का विवरण दे रहा है तो वायस ओवर में दृश्यों को दोहराकर यह नहीं कहा जाएगा कि वह परिवार अकाल से पीड़ित है क्योंकि वह तो दर्शक स्वयं देख रहा है। वायस ओवर दृश्य को विस्तार देता है।

बोध प्रश्न:

- वृत्तचित्र निर्माण के लिए विषय चयन करते समय किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?
- वायस ओवर की भाषा की कोई तीन विशेषताएँ लिखिए।

11.3.12 वृत्तचित्र का स्वरूप

वृत्तचित्र को यथार्थपरक तथ्यों पर आधारित दृश्य-श्रव्य विवरण कहा जाता है। पहले वृत्तचित्र सिनेमाघरों में दिखाए जाते थे। सूचना और प्रसारण मंत्रालय के फिल्म प्रभाग द्वारा तैयार किए जाने वाले इन वृत्तचित्रों का उद्देश्य महत्त्वपूर्ण और जरूरी सूचनाओं को जनसामान्य तक पहुँचाना था। वर्तमान समय में टेलीविज़न के आ जाने से वृत्तचित्रों का विस्तार व्यापक हो गया है। वृत्तचित्र सत्य से साक्षात्कार कराता है इसलिए इस विषय पर मतभेद है कि उसे लिखा कैसे जाए। वृत्तचित्र में वास्तविक पात्र स्वयं अपने संवाद बोलते हैं, परिस्थितियाँ वास्तविक हैं और घटनाएँ पूरी तरह वास्तविक होती हैं, तो उसमें लेखक की क्या भूमिका रह जाती है। वृत्तचित्र का सत्य अपने आपको विकसित करता हुआ लगातार आगे बढ़ता रहता है, इसलिए किसी पूर्व-निर्धारित प्रारूप में उसे नहीं लिखा जा सकता। वृत्तचित्र के कुछ अंशों की व्याख्या करनी होती है। उपर्युक्त विवेचन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि वृत्तचित्र के निम्नलिखित तत्त्व हो सकते हैं-

1. दृश्य और श्रव्य माध्यम से तथ्यों का उद्घाटन
2. भुक्तभोगी का विवरण
3. दस्तावेजी प्रमाण

4. आँकड़े
5. साक्षात्कार
6. वायस ओवर
7. ध्वनि प्रभाव

विषय के आधार पर उपर्युक्त तत्त्वों का कम या अधिक प्रयोग किया जा सकता है। प्राय: वृत्तचित्र सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक और वैज्ञानिक विषयों पर बनाए जाते हैं।

बोध प्रश्न:

1. वृत्तचित्र के कोई पाँच तत्त्व लिखिए।
2. वृत्तचित्र के विषय कौन-कौन से हो सकते हैं?

11.3.13 वृत्तचित्र लेखन प्रारूप

वृत्तचित्र बनाने से पहले कोई निश्चित पटकथा नहीं लिखी जा सकती। वृत्तचित्र लेखन का प्रारूप कुछ इस प्रकार हो सकता है।

शॉट संख्या	दृश्य	वायस ओवर	ध्वनि प्रभाव	सेकंड में शॉट की अवधि
शॉट संख्या	शॉट का विवरण लिखा जाता है।	उस कमेंट्री का उल्लेख किया जाता है जो दृश्य के साथ दर्शक को सुनाई देता हैं।	इसके अंतर्गत ध्वनि और संगीत का विवरण दिया जाता है।	इसके अंतर्गत शॉट की अवधि का उल्लेख होता है।

वृत्तचित्र की संरचना जटिल होती है। नए-नए विषयों के कारण नई-नई चुनौतियाँ निर्माताओं के समक्ष आ रही हैं। श्रेष्ठ वृत्तचित्र बनाना एक जटिल और कठिन कला है।

बोध प्रश्न:

- ध्वनि प्रभाव से आप क्या समझते हैं?

11.4 : पाठ सार

इस पाठ को पढ़कर निम्नलिखित बिन्दु उभरकर आते हैं:

- भारत में दूरदर्शन का आरम्भ 15 सितम्बर 1959 को सार्वजनिक सेवा प्रसारण में एक छोटे से प्रयोग से आरम्भ हुआ था।
- 1982 में आयोजित एशियाई खेलों के प्रसारण हेतु 'दूरदर्शन' ने उपग्रह इनसैट के माध्यम से पहली बार राष्ट्रीय प्रसारण किया।
- 1990 के दशक में निजी टेलीविजन चैनलों का प्रसारण आरम्भ हुआ।

- हाँगकांग आधारित एस.टी.ए.आर. ने एक भारतीय कम्पनी के साथ अनुबंध किया और ज़ी.टी.वी का जन्म हुआ। यह भारत का पहला निजी स्वामित्व का हिंदी उपग्रह चैनल था।
- इंटरनेट तथा नए माध्यमों के आगमन से एक नई दुनिया का रास्ता खुला और सूचना तथा मनोरंजन का विस्फोट-सा हो गया।
- निजी चैनलों के आगमन के साथ ही कार्यक्रमों की विभिन्न श्रेणियों – सिनेमा, धारावाहिक, वृत्तचित्र, बच्चों के कार्यक्रम, आदि का प्रसारण आरम्भ हुआ।
- इन तमाम कार्यक्रमों के लिए पटकथा लेखन की आवश्यकता हुई।
- पटकथा फिल्म और टीवी कार्यक्रम का आधार लेखन बन गया।
- पटकथा के माध्यम से निर्देशक, अभिनेता, कैमरामैन, साउंड रिकोर्डिस्ट, आदि को स्पष्ट निर्देश मिलता है।
- धारावाहिकों का लेखन रचनात्मकता के सबसे निकट है।
- फिल्म और टीवी के लिए लिखी जाने वाली कथा कैमरे के सामने खेली जाती है और कैमरा दर्शकों का प्रतिनिधि बनकर वह सब कुछ दिखाता है जो रंगमंच पर वर्जित कहा जाता है।
- पटकथा का आधार कहानी होती है।
- पटकथा लेखक दर्शकों की रुचि तथा प्रसारण के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए कहानी का प्रसारण करता है।
- धारावाहिक एक प्रकार की नाटकीय कथा है जिसे किश्तों में टेलीविजन या रेडियो पर प्रसारित किया जाता है।
- धारावाहिक का प्रत्येक एपिसोड धीरे-धीरे तैयार किया जाता है।
- दृश्य-छवियों के विभिन्न पहलू तथा सम्वादों का तालमेल धारावाहिक की सफलता में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
- डॉक्यूमेंट्री फिल्म के लिए हिंदी में वृत्तचित्र शब्द का प्रयोग किया जाता है।
- वृत्तचित्र किसी यथार्थ घटना, समस्या या परिस्थिति पर केंद्रित हो सकता है।
- वृत्तचित्र लेखन से तात्पर्य कमेंट्री अथवा वायस ओवर लेखन है।
- वृत्तचित्र कलात्मक भाषा में लिखा गया यथार्थपरक तथ्यों पर आधारित दृश्य-श्रव्य विवरण है।
- वृत्तचित्र सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक और वैज्ञानिक विषयों पर बनाए जाते हैं

11.5 : पाठ की उपलब्धियाँ

इस पाठ को पढ़ने के उपरांत हमने यह जाना कि :

- देश और दुनिया में टेलीविजन सेवा का प्रसारण कब और कैसे आरम्भ हुआ।

- पटकथा लेखन कुछ और नहीं बल्कि कैमरे से फिल्म अथवा टीवी के परदे पर दिखाए जाने के लिए लिखी हुई कथा है।
- पटकथा का आधार कहानी है और अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थितियों के द्वंद्व के कारण इसका विकास होता है।
- धारावाहिक की पटकथा लिखने के लिए दर्शकों के प्रोफाइल के आधार पर कहानी का चयन किया जाता है।
- वातावरण बनाने, घटनाओं तथा पात्रों को स्थापित करने के लिए पटकथा लेखक नए 'विजुअल्स' की कल्पना करता है।
- वृत्तचित्र फिल्मों और धारावाहिकों से इस अर्थ में भिन्न होता है कि फिल्म और धारावाहिक जहाँ कल्पना पर आधारित होते हैं, वृत्तचित्र तथ्यों पर।
- वृत्तचित्र लेखन से तात्पर्य फिल्माए गए दृश्यों के आधार पर की जाने वाली कमेंट्री अथवा वायस ओवर लेखन है।

11.6 : शब्द संपदा

1. कमेंट्री = दृश्यों का शब्दों में विवरण
2. वायस ओवर = दृश्यों का शब्दों में विवरण
3. विजुअल्स = दृश्य-छवियाँ
4. ध्वनि-प्रभाव = कृत्रिम रूप से निर्मित या संवर्धित ध्वनि प्रक्रिया
5. दर्शकों का प्रोफाइल = दर्शकों की आयु, लिंग, वर्ग, शिक्षा, आदि
6. डॉक्यूमेंट्री = दस्तावेज़ पर आधारित फिल्म

11.7 : परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

दीर्घ-उत्तरीय प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में लिखिए।

1. टेलीविज़न के इतिहास पर प्रकाश डालिए।
2. पटकथा लेखन किसे कहते हैं? विस्तार से चर्चा कीजिए।

खंड (ब)

लघु-उत्तरीय प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. निजी टेलीविज़न चैनलों के विकास पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
2. धारावाहिक की पटकथा कैसे लिखें? बिन्दुवार लिखिए।

3. वृत्तचित्र निर्माण की प्रक्रिया की चर्चा कीजिए।

4. वृत्तचित्र लेखन किसे कहते हैं? उदाहरण के साथ समझाइए।

खंड (स)

I. सही विकल्प चुनिए।

1. पटकथा का आधार ---------- को कहते हैं। ( )

(अ) कैमरा (आ) सम्पादन (इ) कहानी (ई) दर्शक

2. वृत्तचित्र लेखन से तात्पर्य है- ----------।( )

(अ) पटकथा लेखन (आ) वायस ओवर लेखन (इ) कहानी लेखन

(ई) डॉक्युमेंट्री लेखन

3. दूरदर्शन ने उपग्रह इनसैट के माध्यम से पहली बार प्रसारण कब किया?()

(अ) 1990 (आ)1988 (इ) 1984 (ई) 1982

4. टेलीविज़न का जनक किसे माना जाता है? ( )

(अ) मनोहर श्याम जोशी (आ) असगर वजाहत

(इ) जॉन बेअर्ड (ई) प्रभात रंजन

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

1. कमेंट्री को ही _____ कहा जाता है।

2. पटकथा अँग्रेज़ी शब्द _____ का हिन्दी अनुवाद है।

3. कमलेश्वर टेलीविज़न लेखन को _____ कहते हैं।

उत्तर: (1. वायस ओवर 2. स्क्रीन-प्ले 3. मीडिया लेखन)

III. सुमेल कीजिए।

1. दृश्य	अ. ध्वनि और संगीत का विवरण
2. ध्वनि प्रभाव	आ. दस्तावेज़
3. फ़्लैश बैक	इ. दृश्य-छवियाँ
4. वृत्तचित्र का आधार	ई. शॉट का विवरण
5. विजुअल्स	उ. एक वेधती हुई प्रति-स्मृति

उत्तर: (1-ई, 2-अ, 3-उ, 4-आ, 5-इ)

11.8 : पठनीय पुस्तकें

1. असगर वजाहत, व्यावहारिक निर्देशिका – पटकथा लेखन, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011
2. असगर वजाहत, प्रभात रंजन, टेलीविज़न लेखन, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2022, छठाँ संस्करण
3. डॉ. जाकिर अली 'रजनीश', हिन्दी में पटकथा लेखन, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ
4. विपुल कुमार, पटकथा तथा संवाद लेखन, श्री नटराज प्रकाशन, 2018
5. सुदर्शन कुमार 'चेतन', पटकथा लेखन, श्री नटराज प्रकाशन, 2009

इकाई 12: टेलीविज़न लेखन : विज्ञापन एवं अन्य

इकाई की रूपरेखा –

12.1 प्रस्तावना
12.2 उद्देश्य
12.3 मूल पाठ : टेलीविज़न लेखन : विज्ञापन एवं अन्य
12.3.1 विज्ञापन का अर्थ, परिभाषा, क्षेत्र तथा महत्त्व
12.3.2 विज्ञापन के कार्य
12.3.3 विज्ञापन और मनोविज्ञान
12.3.4 टेलीविज़न पर दिखाए जाने वाले विज्ञापनों की विशेषताएँ
12.3.5 विज्ञापनों के गुण
12.3.6 विज्ञापनों की भाषा
12.3.7 विज्ञापनों के प्रकार
12.3.8 टेलीविज़न लेखन के अन्य स्वरूप
12.4 पाठ-सार
12.5 पाठ की उपलब्धियां
12.6 शब्द-संपदा
12.7 परीक्षार्थ प्रश्न
12.8 पठनीय पुस्तकें

12.1 : प्रस्तावना

विज्ञापन का क्षेत्र बहुत व्यापक है। प्राचीन समय में विज्ञापन जिंगल के रूप में अधिक होते थे, इसलिए हमें लंबे समय तक याद हैं। कुछ वाक्यांश, जैसे- 'बुलंद भारत की बुलंद तस्वीर', 'अटरली बटरली डेलिशस... अमूल', 'कर्रम कुर्रम... मजेदार लज्जतदार, लिज्जत पापड़', 'आया नया उजाला, चार बूँदों वाला', 'यही है राइट च्वाइस बेबी...', 'दिमाग की बत्ती जलाओ' हमें ऐसे याद रहते हैं जैसे बचपन की कविताएँ। कई बार तो उत्पाद भूल जाते हैं, किन्तु विज्ञापन याद रहते हैं। कुछ विज्ञापन ऐसे भी होते हैं जिनमें सिर्फ संगीत होता है, शब्द नहीं। कुछ विज्ञापनों में कुछेक शब्द ही होते हैं जो वर्षों मस्तिष्क पर छाए रहते हैं; जैसे- उ ला ला ला ले ओ (किंगफिशर https://www.youtube.com/watch?v=2d3aYiIiWZY) तो कुछ विज्ञापन ऐसे होते है, जो समय की चलन के हिसाब से बदलते हैं, जैसे अमूल के विज्ञापन, गीतांजलि श्री को बुकर पुरस्कार मिला तो अमूल ने उनको जीतांजलि देते हुए उनकी भूक(ख) का पुरस्कार भी उनको दे दिया। अब प्रश्न यह उठता है कि विज्ञापन यदि एक ऐसी रचना है

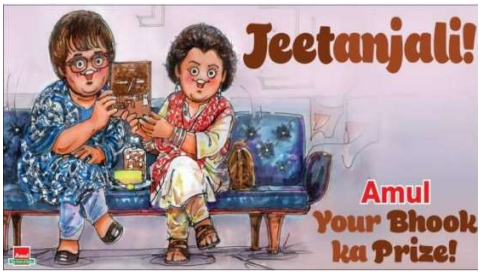

जिसमें किसी उत्पाद की बिक्री बढ़ाने अथवा किसी सेवा का लाभ उठाने के लिए सर्जनात्मक विचारों को आकर्षक रूप देकर स्मरणीय बनाया जाता है; तो क्या इस प्रकार

की सर्जनात्मकता सिखाई जा सकती है? एक विज्ञापन लेखक में कवि, गीतकार, संगीतकार, भाषाविद् की प्रतिभा होने के साथ-साथ छवियों तथा दृश्यों की काल्पनिक सृष्टि की क्षमता का होना अनिवार्य है। प्रस्तुत इकाई में विज्ञापन लेखन के इन्हीं पक्षों की चर्चा की गई है।

12.2 : उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई को पढ़ने के बाद विद्यार्थी:

- विज्ञापन का परिचय दे सकेंगे।
- विज्ञापन का महत्त्व बता सकेंगे।
- विज्ञापन के गुण बता सकेंगे।
- विज्ञापन के प्रकार बता सकेंगे।
- विज्ञापन का उद्देश्य बता सकेंगे।
- विज्ञापन की भाषा की विशेषताएँ बता सकेंगे।

12.3 : मूल पाठ : टेलीविज़न लेखन : विज्ञापन एवं अन्य

12.3.1 विज्ञापन का अर्थ, परिभाषा, क्षेत्र तथा महत्त्व

विज्ञापन का सीधा संबंध मार्केटिंग से है। यह भुगतान किया हुआ जन संचार है जो किसी संगठन, व्यापार, फर्म, उत्पाद अथवा सेवा का विवरण, उत्पाद के लाभ के बारे में जानकारी देता है और लक्षित दर्शकों तक इनकी पहुँच सुनिश्चित करता है। मार्केटिंग के जनक फिलिप कोटलर के अनुसार, विज्ञापन "किसी पहचाने गए प्रायोजक द्वारा समाचार पत्रों, पत्रिकाओं, टेलीविज़न या रेडियो जैसे मास मीडिया के माध्यम से गैर-व्यक्तिगत प्रस्तुति और विचारों, वस्तुओं और सेवाओं के प्रचार का कोई भी भुगतान किया गया रूप होता है।" (कोटलर, 1984, पृ. 58) इस परिभाषा से यह स्पष्ट हो जाता है कि विज्ञापन-

- प्रायोजित होता है।
- प्रायोजक की पहचान प्रकाशित रहती है।
- गैर-व्यक्तिगत होता है।
- जन-संचार माध्यमों द्वारा प्रसारित होता है।
- विचारों, वस्तुओं अथवा सेवाओं का प्रचार करता है।

इसे एक उदाहरण के माध्यम से समझते हैं। प्रस्तुत चित्र में प्रायोजक प्रकाशित है। यह गैर-व्यक्तिगत है अर्थात इस विज्ञापन में जो कहा गया है वह किसी विशेष व्यक्ति को संबोधित करके नहीं कहा गया है बल्कि सबके लिए है। यह एक चित्र है अर्थात मुद्रण माध्यम के लिए बनाया गया है तथा एक विशेष प्रकार के पेय के प्रचार के लिए बनाया गया है।

'विज्ञापन' जिसे अँग्रेज़ी में 'एडवर्टाइज़' कहते हैं, लैटिन के 'advertere' शब्द से व्युत्पन्न हुआ है; जिसका अर्थ है 'ध्यान या मन को एक ओर मोड़ना'। इसका तात्पर्य यह है कि विज्ञापन द्वारा विज्ञापनदाता

लोगों को अपने उत्पाद, सेवा या विचार की ओर मोड़ता है। एनसाइक्लोपीडिया के अनुसार – 'विज्ञापन एक गैर-वैयक्तिक संचार है, जो विभिन्न माध्यमों द्वारा प्रसारित किया जाता है। इसका उद्देश्य उत्पाद की प्रकृति, सेवाओं तथा विचारों के बारे में बताना है।' यह एक प्रकार का आग्रहपूर्ण संचार है, जो विज्ञापनदाता द्वारा निर्धारित उद्देश्यों के अनुरूप उत्पाद, सेवा अथवा विचार के बारे में सूचनाएँ प्रदान करता है। विज्ञापन लोगों को अनेक प्रकार से प्रभावित कर सकता है, किन्तु इसका प्राथमिक उद्देश्य उपभोक्ताओं के व्यवहार को इस प्रकार प्रभावित करना है, जैसा विज्ञापनदाता चाहता है। इस प्रकार विज्ञापन का उद्देश्य उत्पाद को आग्रहपूर्वक तथा रचनात्मकता के साथ बेचना है, फिर चाहे समय-समय पर प्रभावात्मकता बढ़ाने के लिए उसमें नमक डालना पड़े या चारकोल।

विज्ञापन का क्षेत्र बहुत व्यापक है। कहा जा सकता है कि जहाँ तक मानव जीवन का विस्तार है, वहाँ तक विज्ञापन की गुंजाइश है। आज भले ही कहा जाए कि विज्ञापन का प्रयोग व्यापारिक संगठनों द्वारा बहुतायत में किया जाता है किन्तु माँ यशोदा जब कृष्ण के बार-बार मना करने पर भी उन्हें 'काचौ दूध' पिलाती हैं और मक्खन-रोटी नहीं देतीं तो 'कॉम्पलान' वाली माँ की तरह ही कहती हैं कि देखो यदि तुम दूध पियोगे तो तुम्हारी भी चोटी बलराम भैया की तरह लंबी और मोटी हो जाएगी। अंतर सिर्फ इतना है कि माँ की ममता का भुगतान नहीं किया जा सकता इसलिए इसे आधुनिक विज्ञापन की श्रेणी में भी नहीं रखा जा सकता।

विज्ञापन का प्रयोग व्यापारिक संगठन, राजनीतिक दल, सरकारी विभाग, मेले वाले, ठेले वाले इन सबके द्वारा किया जाता है। विज्ञापन का स्वरूप विज्ञापन के माध्यम, विज्ञापनदाता तथा उसके संदेशों के आधार पर विविधता ग्रहण करता है। व्यापारिक विज्ञापनों के चित्र, दृश्य एवं शब्द दर्शकों का ध्यान आकर्षित करते हैं। विज्ञापन करना वस्तुत: वस्तु अथवा विचार को फैलाव देना है और इनकी चपेट में आने से बच पाना लगभग असंभव है। अखबारों और पत्रिकाओं में कई बार कॉपी से अधिक विज्ञापन होते हैं, रेडियो तथा टेलीविज़न भी विज्ञापनों से भरे होते हैं। इंटरनेट साइट्स पर अनचाहे ही विज्ञापन सिर उठा-उठाकर हमारी दृष्टि के दायरे में बरबस ही घुस जाते हैं। सड़कों के किनारे, रेलवे स्टेशनों पर, बस अड्डे की बेंचों पर, शॉपिंग मॉल्स में तथा और भी न जाने कहाँ-कहाँ... ये विज्ञापन हमें बुलाते हैं, लुभाते हैं और हम अनायास ही इनके दिखाए रास्ते पर चल पड़ते हैं। विज्ञापनों की व्यापकता तथा इनमें निहित रचनात्मक तत्त्व दर्शकों के ध्यानाकर्षण के लिए ही बनाए गए होते हैं।

बोध प्रश्न:

- विज्ञापन का अर्थ स्पष्ट कीजिए।
- विज्ञापन की विशेषताएँ लिखिए।
- विज्ञापन का प्रयोग कहाँ-कहाँ किया जाता है? उदाहरण के साथ स्पष्ट कीजिए।

12.3.2 विज्ञापन के कार्य

यद्यपि विज्ञापन का प्राथमिक उद्देश्य है – आग्रह करना, किन्तु इसके अन्य कई उद्देश्य हैं और यह उन्हें विविध प्रकार से प्राप्त करता है। एनसाइक्लोपीडिया के अनुसार विज्ञापन का

पहला महत्त्वपूर्ण कार्य है- पहचान, अर्थात उत्पाद की पहचान कराना तथा उसे उसके जैसे अन्य उत्पादों से अलग करना; इससे उत्पाद के बारे में जागरूकता पैदा होती है और यह उपभोक्ताओं को चयन का आधार प्रदान करता है। अभिप्राय यह है कि उपभोक्ता विज्ञापन के माध्यम से ही दूसरे उत्पादों से तुलना करके विज्ञापित उत्पाद को खरीदते हैं।

विज्ञापन का दूसरा महत्त्वपूर्ण कार्य है- उत्पाद से संबंधित सूचना का संचार, उसके गुण, विक्रय का स्थान आदि। यह सूचना संबंधी कार्य है।

विज्ञापन का तीसरा कार्य है- अभिप्रेरणा। यह ग्राहकों को प्रलोभन देकर नए उत्पाद को आजमाने की तथा उपयोग करते रहने की प्रेरणा देता है। यह आग्रह का कार्य है।

विज्ञापन के पहचान संबंधी कार्यों में विज्ञापन की वह योग्यता शामिल है जिसमें किसी उत्पाद अथवा व्यक्तित्व का एक विशिष्ट लक्षण बताया जाता है जो उसे दूसरों से अलग करता है। इसका एक प्रसिद्ध उदाहरण 'आइवरी साबुन' का विज्ञापन है। 19 वीं शताब्दी में ''प्रॉक्टर एंड गैम्बल का एक साबुन निर्माता भूल से मशीन को चालू रखकर भोजन करने चला गया। जब वह लौटा तो उसने पाया कि वहाँ झाग-ही-झाग है। उसने जब उससे साबुन की टिकिया बनाई तो वह तैरने लगी। कंपनी ने इस गलती को भुनाने का निर्णय लिया और 'आइवरी साबुन' के विज्ञापन में लिखा – 'यह तैरता है।' 'आइवरी साबुन' की इस विशेषता ने उसे एक अलग पहचान दिलाई और अन्य साबुनों से अलग बताने में सहायता की। यही नहीं, अगले सौ वर्षों से भी अधिक समय तक 'आइवरी साबुन' के विज्ञापन में उसकी इस विशेषता को शुद्धता, बाल-सुरक्षा तथा कोमल त्वचा से जोड़ा गया तथा इस प्रकार के विभिन्न विज्ञापनों ने इस शब्द पर बल दिया कि- वह 'आइवरी रूप', जिसका उद्देश्य उत्पाद के लक्षणों तथा ताज़ा तथा स्वस्थ रूप-रंग के बीच संबंध बताने पर था।

बोध प्रश्न:

- विज्ञापन के कौन-कौन से कार्य हैं? विस्तार से लिखिए।
- एक ऐसे विज्ञापन की चर्चा कीजिए, जिसमें किसी उत्पाद अथवा व्यक्तित्व की विशेषताएँ बताई गई हों।

12.3.3 विज्ञापन और मनोविज्ञान

यद्यपि विज्ञापन का इतिहास बहुत पुराना है, प्राचीन समय में डुग्गी पीटने से लेकर विज्ञापन के वर्तमान स्वरूप तक इसमें लगातार परिवर्तन हुए हैं और आज भी हो रहे हैं; किन्तु विज्ञापन तथा उपभोक्ताओं पर उसके प्रभाव का गंभीर रूप से अध्ययन बीसवीं शताब्दी में ही आरंभ हुआ। मनोवैज्ञानिकों ने पाया कि विज्ञापन संचार का एक महत्त्वपूर्ण रूप है और उन्होंने मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों और तरीकों का इसके अध्ययन में उपयोग करना आरंभ किया। हार्लो गेल जैसे विद्वानों ने इस बात को लेकर प्रयोग किया कि एक विज्ञापन किसी विशेष वस्तु को खरीदने के लिए उपभोक्ताओं को आग्रह एवं आकर्षित कैसे करता है। वॉल्टर डिल स्कॉट ने 1903 में एक पुस्तक लिखी- 'द थ्योरी ऑफ एडवर्टाइजिंग', जिसमें उन्होंने मनोविज्ञान के सिद्धांतों के आधार पर विज्ञापन को समझने का सिद्धांत प्रस्तुत किया तथा विज्ञापनों के विकास के लिए कुछ सिद्धांतों के निर्माण का सुझाव दिया। विज्ञापन को पेशे के रूप में अपनाने वाले

लोगों ने इन सिद्धांतों के आधार पर भौगोलिक अध्ययन किए, यह जानने के लिए कि उपभोक्ताओं के क्रय की प्रेरणा क्या है तथा उन्हें वही उत्पाद और खरीदने के लिए कैसे आग्रह किया जाए। मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों के माध्यम से उपभोक्ता-व्यवहार की एक समझ विकसित हुई कि वे विज्ञापन के संदेशों को कैसे ग्रहण करते हैं और क्रय का निर्णय कैसे लेते हैं। आकर्षण, सूचना-प्रसंस्करण, अभिवृत्ति निर्माण और निर्णय इन सबका संबंध उपभोक्ताओं पर विज्ञापनों का प्रभाव समझने से है। मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों का एक और उपयोग उपभोक्ताओं की आवश्यकताओं को समझने के लिए है, ताकि इसके आधार पर उत्पाद को डिजाइन किया जा सके। इन्हीं सिद्धांतों का उपयोग विज्ञापन लेखन में किया जा सकता है। विज्ञापन की भाषा का स्वरूप तथा शब्दों का चयन इस प्रकार का हो, जो सबसे पहले उपभोक्ताओं का ध्यान आकर्षित करे, फिर सूचनाएँ इस प्रकार दी जाएँ कि उपभोक्ता को लगे कि बस मुझे ऐसा ही कुछ चाहिए था, उसे लगे मुझे इसे अवश्य खरीदना चाहिए और बस, मोबाइल उसके हाथ में हो और उँगलियाँ 'ऑर्डर नाउ' पर। विज्ञापन लेखक को अपनी भाषा तथा शब्दों से कुछ ऐसा ही चमत्कार करना होता है। विज्ञापन में दिए गए संदेश कितने भी महत्त्वपूर्ण तथा आग्रही क्यों न हों, उनका कोई महत्त्व नहीं है, यदि वे सुने न जाएं। इसलिए विज्ञापन लेखक का सबसे पहला उद्देश्य होना चाहिए कि उसका लिखा हुआ लोगों का ध्यान आकृष्ट करे। सूचनाओं को सुनकर उपभोक्ता पहले तार्किक ढंग से उस पर विचार करेगा इसलिए विज्ञापन में दी गई सूचनाएं तर्कसिद्ध तथा क्रमबद्ध होनी चाहिए। उपभोक्ता का तर्कयुक्त आकलन ही उसे उत्पाद को क्रय करने का निर्णय लेने के लिए प्रेरित करेगा।

बोध प्रश्न:

- विज्ञापन और मनोविज्ञान के अंत:संबंध की चर्चा कीजिए।
- विज्ञापन लेखक मनोविज्ञान के सिद्धांतों के उपयोग से किस प्रकार का चमत्कार कर सकता है?

12.3.4 टेलीविज़न पर दिखाए जाने वाले विज्ञापनों की विशेषताएँ

- टेलीविज़न एक दृश्य-श्रव्य माध्यम है। इस माध्यम पर शब्द कम तथा दृश्य अधिक बोलते हैं।
- दृश्य-श्रव्य माध्यम होने के कारण टेलीविज़न की पहुँच उन सब तक है जो कम पढ़े-लिखे अथवा बिल्कुल भी पढ़े-लिखे नहीं हैं।
- सभी विज्ञापन माध्यमों में यह सबसे प्रबल माध्यम है। यहाँ लक्षित उपभोक्ता न सिर्फ विज्ञापनों के संदेश प्राप्त करता है, बल्कि उनके उपयोग भी देख पाता है, इसलिए विज्ञापन का उस पर दुगुना प्रभाव पड़ता है।
- पतंजलि तथा एम डी एच के विज्ञापनों ने यह सिद्ध कर दिखाया है कि विज्ञापन का मॉडल कोई भी हो; सुमधुर, संगीतात्मक विज्ञापन उत्पाद में जान डाल देते हैं। 'असली मसाले सच-सच' इसका प्रमाण है।
- हालांकि यह माध्यम अन्य विज्ञापन माध्यमों से महँगा है, किन्तु इस पर मिलने वाली अविलंब प्रतिपुष्टि विज्ञापन की सफलता-असफलता का पैमाना तय करती है।

- टेलीविज़न की एक कमी, कि इस पर एक बार जो प्रसारित कर दिया जाता है उसे दोबारा नहीं देखा जा सकता, वर्तमान समय के लिए सच नहीं है। आज यदि दर्शक से कुछ देखना छूट गया हो तो उसे यू ट्यूब से दोबारा देखा जा सकता है।

बोध प्रश्न:

- टेलीविज़न पर दिखाए जाने वाले विज्ञापनों की विशेषताएँ लिखिए।
- टेलीविज़न पर दिखाए जाने वाले विज्ञापन अन्य माध्यमों पर दिखाए जाने वाले विज्ञापनों से किस प्रकार भिन्न हैं? दो-तीन बिन्दु लिखिए।

12.3.5 विज्ञापनों के गुण

विज्ञापन में निम्नलिखित गुण अपेक्षित हैं:

आकर्षकता

आकर्षण विज्ञापन का सबसे महत्त्वपूर्ण एवं अनिवार्य गुण है। विज्ञापन लेखन करते समय यह ध्यान रखना आवश्यक है कि लेखक ऐसी भाषा का प्रयोग करे जो पढ़ने-सुनने में रुचिकर हो। बात टेलीविज़न के लिए विज्ञापन लेखन की हो रही है, इसलिए इस माध्यम की विशेषताओं को ध्यान में रखना आवश्यक है। यहाँ चित्र जीवंत भूमिका निभाते हैं, ऐसे में लेखक के लिए भाषा तथा शब्दों का चयन अत्यंत ही चुनौतीपूर्ण तथा विशेष श्रम की माँग करता है। कुछ गिने-चुने शब्द जो जनसामान्य के परिवेश को प्रस्तुत करते हों, उनका प्रयोग उपभोक्ताओं पर भावनात्मक प्रभाव उत्पन्न कर सकता है। विज्ञापन की भाषा सहज-सरल और प्रवाहमय होनी चाहिए। उदाहरण के लिए, नैरोलक पेंट का विज्ञापन देखें; यह गीतात्मक है, शब्द और संगीत मिलकर आकर्षण दुगुना कर देते हैं- जब घर की रौनक बढ़ानी हो, दीवारों को जब सजाना हो, रंगों की दुनिया में आओ, रंगीन सपने सजाओ। एशियन पेंट भले ही विक्रय के मामले में बाजी मार ले गया किन्तु विज्ञापन तो नैरोलक का ही चला। इसके शब्द 'रंगीन सपने सजाओ' आँखों के रास्ते मस्तिष्क में उतरकर सपने सजाते हैं। विज्ञापन में यदि थोड़ी-सी कविताई भी मिला दी जाए तो उसका आकर्षण बढ़ जाता है।

श्रव्यता एवं सुपाठ्यता

विज्ञापन सुनने में मधुर तथा सुपाठ्य होना चाहिए। आजकल परदे पर प्राय: देखने को मिलता है कि हिन्दी के शब्द रोमन में लिखे जाते हैं जो हिन्दी की प्रकृति के अनुकूल न होने के कारण न तो देखने में अच्छे लगते हैं और न ही सुपाठ्य होते हैं। विज्ञापनों की भाषा सरल-सुबोध होनी चाहिए। कर्णप्रिय बनाने के लिए विज्ञापनों की भाषा को कविता तथा गीतों के रूप में प्रयोग किया जाता है। गीतों की लयात्मकता विज्ञापनों को सुमधुर भी बनाती है और आकर्षक भी। विज्ञापनों की काव्यात्मकता दर्शकों के स्मृति-पटल पर अपनी छाप छोड़ जाती है जो लंबे समय तक नहीं मिटती। जैसे-

गले में खिच-खिच
गले में खिच-खिच
क्या करूँ....
विक्स की गोली लो

खिच-खिच दूर करो।

टेलीविज़न पर प्रसारित होने वाले विज्ञापनों में काव्यात्मकता के साथ-साथ संगीत का मिश्रण उन्हें और अधिक श्रव्य बना देता है। यह विज्ञापन लेखक की प्रतिभा पर निर्भर करता है कि वह कितने शब्दों का प्रयोग संगीत के साथ करता है और कितने शब्दों का प्रयोग बिना संगीत के। विज्ञापन लेखन की प्रक्रिया आरंभ करने से पहले लेखक को बहुत सारे विज्ञापनों को सुनकर यह देखना चाहिए कि उन विज्ञापनों की ऐसी कौन-सी विशेषता है जो उन्हें आकर्षक बनाती है।

स्मरणीयता

स्मरणीयता विज्ञापन का एक महत्त्वपूर्ण गुण है। विज्ञापनों की स्मरणीयता उत्पाद को भी स्मरणीय बनाती है और इसी के आधार पर उपभोक्ता कुछ उत्पादों की तुलना करके अपने लिए सर्वाधिक उपयुक्त उत्पाद खरीदने का निर्णय लेता है। विज्ञापन उत्पाद की बिक्री बढ़ाते हैं, लेकिन कई बार ऐसा देखने को मिलता है कि कोई-कोई विज्ञापन बहुत अधिक समय तक स्मृति में बना रहता है, विज्ञापन सभी को बहुत प्रिय भी होता है, किन्तु उस विज्ञापन में दिखाया गया उत्पाद उतना नहीं चलता। जैसे नैरोलक पेंट को ही ले लीजिए, इसका विज्ञापन – रंगों की दुनिया में आओ, रंगीन सपने सजाओ – जितना लोकप्रिय हुआ, पेंट उतना नहीं चला। एशियन पेंट ने बाजी मार ली।

विक्रय-क्षमता

विज्ञापनों में एक ऐसा वाक्यांश होता है, जो यह याद दिलाता है कि उपभोक्ता को कौन-सा उत्पाद खरीदना चाहिए; जैसे- 'विक्स की गोली लो, खिच-खिच दूर करो', 'पियो ग्लासफुल दूध- अमूल (ऑपरेशन फ़्लड)', 'बोले मेरे लिप्स, आइ लव अंकल चिप्स' आदि। अगर विज्ञापन में विक्रय बढ़ाने की योग्यता नहीं होगी तो विज्ञापन निरर्थक हो जाएगा।

बोध प्रश्न:

- विज्ञापन के गुणों की सविस्तार चर्चा कीजिए।
- वे कौन-कौन से तत्त्व हैं जिनसे विज्ञापन का आकर्षण बढ़ जाता है?
- विज्ञापनों को कर्णप्रिय बनाने के उपाय कौन-कौन से हैं?

12.3.6 विज्ञापनों की भाषा

विज्ञापन ब्रांड का निर्माण करता है तथा उत्पाद की विशेषताएँ बताकर लोगों को उत्पाद खरीदने के लिए राजी करता है, इसके साथ ही वह ग्राहकों को बढ़ाने का काम करता है। बदलते समय के साथ संचार माध्यमों में भी परिवर्तन हुए हैं और विज्ञापनों के स्वरूप में भी। अब विज्ञापनदाता मुद्रण माध्यम तथा रेडियो, टीवी तक ही सीमित नहीं रह गए हैं बल्कि उन्हें अब अपने उत्पाद का प्रचार करने के लिए कई नव-माध्यम भी उपलब्ध हो गए हैं। उपभोक्ता (दर्शक) भी बँट गए हैं। ऐसे में एक प्रभावी विज्ञापन लिखना तथा प्रस्तुत करना चुनौतीपूर्ण कार्य है। हालांकि विज्ञापन लेखक को विज्ञापन के भाषायी पक्ष पर ही अधिक ध्यान केंद्रित करना होता

है, किन्तु एक प्रभावी विज्ञापन कैसे तैयार किया जाता है, इसकी जानकारी लेखक को सहायक सिद्ध हो सकती है।

किसी रचना में 'क्या कहा गया है?' के साथ 'कैसे कहा गया है?' का विशेष महत्त्व होता है। विज्ञापन भी एक रचनात्मक विधा है। इसमें सीमित शब्दों में उपभोक्ता को लुभाना भी होता है, उत्पाद की विशेषताएँ भी बतानी होती हैं और परोक्ष रूप से दूसरे उत्पादों से विज्ञापित उत्पाद की तुलना (भला उसकी साड़ी मेरी साड़ी से सफेद कैसे) भी करनी होती है। इसके लिए विज्ञापन की भाषा में विचलन, समांतरता, अप्रस्तुत-विधान, तुक, लय, आज्ञार्थक-वृत्तियुक्त वाक्य, निश्चयार्थक वाक्य, क्रियाविहीन वाक्य, प्रश्नोत्तर शैली, मुहावरे आदि का प्रयोग किया जाता है। विज्ञापन की भाषा को प्रवाहपूर्ण बनाने के लिए तथा बोलचाल के निकट रखने के लिए अनेक विज्ञापनों में संकर भाषा (दिल माँगे मोर) का उपयोग भी किया जाता है। विज्ञापनों के प्रभाव को देखते हुए प्रदीप कुमार अग्रवाल ने इसे 'बाज़ारीकरण के काले जादू का सुनहरा इन्द्रज़ाल' कहा है। वे कहते हैं कि विज्ञापन एक ऐसी नायाब तरकीब है जो पूरी दुनिया को मुट्ठी में कर लेने की हिदायत देती नजर आती है। हम क्या पहनें-क्या खाएँ, क्या ओढ़ें-क्या बिछाएँ, कहाँ खर्चें-कहाँ लगाएँ, यह सारा जिम्मा अब विज्ञापन कंपनियों ने ले लिया है। इसका ऐसा असर होता है कि हम उस इंद्रजाल में फँसे बिना नहीं रह पाते। यह सब भाषा के बल पर होता है। भाषा के विद्यार्थी को स्वयं को इसके लिए तैयार करने की आवश्यकता है, और फिर... कर लो दुनिया मुट्ठी में।

बोध प्रश्न:

- ब्रांड के निर्माण में विज्ञापन की भाषा किस प्रकार सहायक सिद्ध होती है?
- 'बाज़ारीकरण के काले जादू का सुनहरा इन्द्रज़ाल' से क्या तात्पर्य है?

12.3.7 विज्ञापनों के प्रकार

विज्ञापनों का व्यावसायिक तथा सामाजिक महत्त्व है। विज्ञापन किसी उत्पाद, सेवा अथवा जानकारी के प्रभावी प्रचार के लिए दिया जाता है। विज्ञापनों का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है तथा जनमानस के दैनिक जीवन में इनकी गहरी पैठ है। केंद्र और राज्य सरकारें भी अपने संदेश तथा सरकारी योजनाओं की जानकारी जनसामान्य तक विज्ञापनों के माध्यम से पहुँचाती हैं। सरकारी, गैर-सरकारी तथा निजी सभी-क्षेत्रों में विज्ञापनों की महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

बाजार और अर्थव्यवस्था की स्थिति और संदर्भ के अनुसार विज्ञापन के स्वरूप में भी परिवर्तन आता है। इन सबके आधार पर मोटे तौर पर विज्ञापनों को निम्नलिखित तीन विभागों में बाँटा जा सकता है:

1. सूचनापरक विज्ञापन
2. कार्यपरक विज्ञापन
3. व्यापार-परक विज्ञापन

जिन विज्ञापनों को सरकार अथवा प्रशासन द्वारा जन-सामान्य को सूचित करने अथवा जागरूक करने के लिए दिया जाता है, उन्हें सूचनापरक विज्ञापन कहा जाता है। इन विज्ञापनों का मूल उद्देश्य लोक-हित तथा लोक-सेवा होता है। एड्स, स्वाइन फ्लू, कोरोना, पर्यावरण

संरक्षण, ऊर्जा-संरक्षण जैसे विषयों पर लोगों को जानकारी देने तथा जागरूक करने के लिए ऐसे विज्ञापन दिए जाते हैं। उदाहरण के लिए- 'जब तक दवाई नहीं, तब तक ढिलाई नहीं।', 'प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना, महिलाओं को मिला सम्मान', 'बेटी पढ़ाओ, बेटी बचाओ' आदि विज्ञापन सरकार की योजनाओं को जन-जन तक पहुँचाने के साथ-साथ जनता को जागरूक भी करते हैं। ऐसे विज्ञापनों की भाषा एक निश्चित प्रारूप में होती है, किन्तु हाँ, इन विज्ञापनों में भाषा के माध्यम से लक्षित जन-समूह के हृदय को छुआ जाता है इसलिए इनकी भाषा भावों से भरी होती है। जैसे 'प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना' का विज्ञापन देखिए- 'तुम जादूगर तो नहीं, पर मेरी रसोई से धुआँ गायब किया है; तुम डॉक्टर तो नहीं, पर तुमने मेरे फेफड़ों को बीमार होने से बचाया है; तुम माँ तो नहीं, पर तुमने मुझे जंगल में लकड़ी काटने जाने से रोका है; तुम्हारे कारण मेरा समय बचने लगा है और तुम्हारी वजह से मैं पैसे कमाने लगी हूँ।'- इस विज्ञापन में महिलाओं की समस्याओं के निराकरण के साथ उनके आत्मनिर्भर बनने की ओर भी संकेत है। इस प्रकार के विज्ञापन सूचनापरक विज्ञापन की कोटि में आते हैं।

कार्यपरक विज्ञापन के अंतर्गत रोजगार संबंधी विज्ञापन तथा वर्गीकृत विज्ञापन आते हैं। यद्यपि वर्गीकृत विज्ञापन मुद्रण माध्यमों में ही प्रकाशित किए जाते हैं, किन्तु रोजगार संबंधी विज्ञापन टेलीविज़न पर दिखाए जाते हैं। इनका भी एक निश्चित प्रारूप होता है। इन्हें रोजगार समाचार भी कहा जाता है।

उपरोक्त दोनों श्रेणियों में जो विज्ञापन शामिल किए जा सकते हैं, उन्हें छोड़कर शेष सभी व्यापार-परक होते हैं। विज्ञापन लेखक अपनी भाषा में कल्पना के पंख लगाकर जितनी ऊँची उड़ान भर सकता है, इस श्रेणी के विज्ञापनों में उसे छूट होती है। उपभोक्ताओं को विज्ञापित वस्तुओं/सेवाओं की जानकारी देने से लेकर उसे वस्तु खरीदने अथवा सेवा का लाभ लेने के लिए उकसाने, प्रेरित करने तथा खरीदने का निर्णय लेने तक में विज्ञापनों की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है।

बोध प्रश्न:

- सरकारों द्वारा दिए गए विज्ञापनों को किस कोटि में रखा जा सकता है तथा क्यों?
- किस प्रकार के विज्ञापन लिखने के लिए लेखक को कल्पना की उड़ान भरने की पूरी स्वतंत्रता होती है?

12.3.8 टेलीविज़न लेखन के अन्य स्वरूप

जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने में भाषा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। घर-परिवार में रिश्ते निभाने हों अथवा कार्यक्षेत्र में बढ़त हासिल करनी हो, भाषा से ही काम बनता है और भाषा से ही बिगड़ता है। लेखन का तो आधार ही भाषा है। वस्तुत: लेखन सिखाया नहीं जा सकता। व्याकरण सिखाया जा सकता है, रस, छंद, अलंकार से परिचित कराया जा सकता है, शब्दों की शक्तियों का ज्ञान भी कराया जा सकता है, किन्तु इनका कहाँ और कितने रूपों में प्रयोग हो सकता है, यह तो लेखक की अपनी प्रतिभा और कल्पना का विषय है। टेलीविज़न पर लेखन की अपार संभावनाएँ हैं; जैसे- धारावाहिक, वृत्तचित्र, विज्ञापन, समाचार, साक्षात्कार,

रिपोर्ताज आदि। लेखक को इन सबके स्वरूप तथा माध्यम की तकनीक को समझकर भाषा का उपयोग करना होता है। पटकथा लेखन के संबंध में इकाई 11 में विस्तार से चर्चा की गई है।

12.4 : पाठ सार

संक्षेप में कहा जा सकता है कि-

- विज्ञापन का क्षेत्र बहुत व्यापक है।
- विज्ञापन एक सर्जनात्मक रचना है।
- विज्ञापनों का उद्देश्य उत्पाद की बिक्री बढ़ाना है।
- विज्ञापनों में सर्जनात्मक विचारों को आकर्षक रूप देकर उन्हें स्मरणीय बनाया जाता है।
- विज्ञापन लयात्मक तथा संगीतात्मक भी होते हैं।
- विज्ञापन प्रायोजित तथा गैर-व्यक्तिगत होते हैं।
- विज्ञापन का प्रयोग व्यापारिक संगठन, राजनीतिक दल, सरकारी विभाग, मेले वाले, ठेले वाले सभी करते हैं।
- विज्ञापन के कार्य हैं- उत्पाद की पहचान कराना, उत्पाद संबंधी सूचना देना तथा ग्राहकों को प्रलोभन देकर नए उत्पाद को आजमाने की तथा उपयोग करते रहने की प्रेरणा देना।
- विज्ञापन के सिद्धांतों का आधार मनोविज्ञान होता है।
- टेलीविज़न पर दिखाए जाने वाले विज्ञापन इस रूप में विशेष होते हैं कि उपभोक्ता उस पर न सिर्फ उत्पाद का परिचय प्राप्त करता है बल्कि उनके उपयोग भी देख पाता है।
- आकर्षण, श्रव्यता, सुपाठ्यता, स्मरणीयता तथा बिक्री बढ़ाने की क्षमता विज्ञापन के गुण हैं।
- विज्ञापन ब्रांड का निर्माण करता है। यह कार्य भाषा के द्वारा ही होता है।
- विज्ञापनों के कई प्रकार हैं; जैसे- सूचना देना, जागरूक करना, रोजगार संबंधी जानकारी देना तथा वाणिज्य में बढ़ोत्तरी करना।
- टेलीविज़न लेखन के कई स्वरूप हैं, विज्ञापन उनमें से एक है। लेखन का आधार भाषा है।

12.5 : पाठ की उपलाब्धियाँ

प्रस्तुत इकाई को पढ़कर हमने जाना कि-

- विज्ञापन लेखन एक सर्जनात्मक कार्य है, जिसमें गीत, संगीत, भाषाई प्रतिभा तथा कल्पना का भरपूर उपयोग किया जाता है।
- विज्ञापन का सीधा संबंध मार्केटिंग से है तथा यह भुगतान किया हुआ जनसंचार है।
- विज्ञापन प्रायोजित होता है तथा प्रायोजक की पहचान प्रकाशित रहती है।
- विज्ञापन विचारों, वस्तुओं तथा सेवाओं का प्रचार करता है।
- यह उपभोक्ताओं को चयन का आधार प्रदान करता है। उपभोक्ता विज्ञापन के माध्यम से ही दूसरे उत्पादों से तुलना करके विज्ञापित उत्पाद को खरीदते हैं।
- सर्वप्रथम मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों के माध्यम से उपभोक्ता-व्यवहार को समझा जाता है और उसी के अनुरूप भाषा का प्रयोग करके उपभोक्ताओं का ध्यान आकर्षित किया जाता है।

- वर्तमान समय में टेलीविज़न के कई स्थानापन्न विकल्प आ गए हैं। कई दर्शक विज्ञापनों के भय से अन्य माध्यमों को अपनाने लगे हैं। ऐसे में चुनौती यह है कि उपभोक्ताओं को विज्ञापन देखने के लिए आकर्षित कैसे किया जाए।

12.6 : शब्द संपदा

1. विज्ञापन (वि+ज्ञापन)= विशेष सूचना प्रकाशन
2. प्रायोजित = भुगतान किया हुआ
3. उपभोक्ता-व्यवहार = विज्ञापन देखकर निर्णय लेने तक की प्रक्रिया
4. व्युत्पन्न = उत्पन्न हुआ

12.7 : परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

दीर्घ-उत्तरीय प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में लिखिए।

1. विज्ञापन का अर्थ स्पष्ट करते हुए उसके क्षेत्र तथा महत्त्व पर प्रकाश डालिए।
2. विज्ञापन के कार्यों की चर्चा करते हुए विज्ञापन तथा मनोविज्ञान के अंत:संबंध को स्पष्ट कीजिए।

खंड (ब)

लघु-उत्तरीय प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. टेलीविज़न पर दिखाए जाने वाले विज्ञापनों की विशेषताएँ लिखिए।
2. विज्ञापन के गुणों की बिन्दुवार चर्चा कीजिए।
3. विज्ञापन की भाषा पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
4. विज्ञापन कितने प्रकार के होते हैं? सूचनापरक विज्ञापन की श्रेणी में कौन-कौन से विज्ञापन आते हैं, उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

खंड (स)

I. सही विकल्प चुनिए।

1. विज्ञापन ---------- किया हुआ जनसंचार है। ( )

(अ) लक्षित (आ) संगठन (इ) भुगतान (ई) प्रचार

2. विज्ञापन का उद्देश्य नहीं है- ----------।( )

(अ) उत्पाद की बिक्री बढ़ाना (आ) व्यक्तिगत संचार (इ) विचारों का प्रचार करना (ई) आग्रहपूर्वक बेचना

3. विज्ञापन का कार्य नहीं है- ()

(1) उत्पाद की पहचान कराना

(2) ग्राहकों को नए उत्पाद के उपयोग की प्रेरणा देना

(3) उत्पाद का विशिष्ट लक्षण बताना

(4) दो उत्पादों की प्रत्यक्ष तुलना करना

4. विज्ञापन की किस विशेषता के आधार पर प्रदीप कुमार अग्रवाल ने इसे 'बाज़ारीकरण के काले जादू का सुनहरा इन्द्रज़ाल' कहा है? ( )

(1) आकर्षण

(2) स्मरणीयता

(3) प्रभाव

(4) सुपाठ्यता

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

1. विज्ञापन_____ का निर्माण करते हैं।
2. मार्केटिंग के जनक _____ को माना जाता है।
3. विज्ञापन का अनिवार्य गुण _____ है।

उत्तर: (1. ब्रांड 2. फिलिप कोटलर 3. आकर्षण)

III. सुमेल कीजिए।

1. एडवरतेर	अ. सूचनापरक विज्ञापन
2. जब तक दवाई नहीं, तब तक ढिलाई नहीं	आ. कार्यपरक
3. विज्ञापन का एक गुण	इ. अभिप्रेरणा
4. रोजगार संबंधी विज्ञापन	ई. ध्यान या मन को एक ओर मोड़ना
5. विज्ञापन का एक कार्य	उ. आकर्षण

उत्तर: (1-ई, 2-अ, 3-उ, 4-आ, 5-इ)

12.8 : पठनीय पुस्तकें

1. पतंजलि प्रेमचंद, आधुनिक विज्ञापन, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1997
2. सेठी रेखा, विज्ञापन : भाषा और संरचना, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2016
3. शर्मा कुमुद, विज्ञापन की दुनिया, प्रभात प्रकाशन, 2010
4. महाजन अशोक, विज्ञापन, हरियाणा साहित्य अकादमी, चंडीगढ़, 1994
5. कुलश्रेष्ठ विजय, विज्ञापन, माया प्रकाशन मंदिर, जयपुर, 1995

इकाई 13 : सिनेमा (फिल्म, चलचित्र, चित्रपट) की विकास यात्रा

इकाई की रूपरेखा

13.1 प्रस्तावना

13.2. उद्देश्य

13.3. मूल पाठ : सिनेमा (फिल्म, चलचित्र, चित्रपट) की विकास यात्रा

13.3.1 मूक सिनेमा

13.3.2. सवाक् सिनेमा

13.3.3 पार्श्व संगीत का आगमन

13.3.4 आरंभिक मुख्य फिल्म निर्माण कंपनियाँ

13.3.5 हिंदी सिनेमा और साहित्य का संबंध

13.3.6 स्वतंत्र्योत्तर फिल्में

13.3.7 साठोत्तरी फिल्में

13.3.8 70 के दशक की फिल्में

13.3.9 80 के दशक की फिल्में

13.3.10 90 के दशक की फिल्में

13.3.11 2000 के दशक की फिल्में

13.3.12 2010 के दशक की फिल्में

13.3.13 2020 के दशक की आरंभिक फिल्में

13.4 पाठ सार

13.5 उपलब्धियाँ

13.6 शब्द संपदा

13.7 परीक्षार्थ प्रश्न

13.8 पठनीय पुस्तकें

13.1 प्रस्तावना

फिल्मों के जन्मदाता फ्रांस के ल्यूमियर बंधुओं ने जुलाई 1896 में बंबई (वर्तमान मुंबई) के वाटसन होटल में फिल्मों का प्रदर्शन किया। इनसे प्रभावित होकर भारतीयों ने फिल्म निर्माण का संकल्प लिया। इसी के परिणाम स्वरुप भारत में फिल्म निर्माण आरंभ हुआ।

सन् 1912 में दादा तोड़ने ने पुंडलिक फिल्म का निर्माण किया। इसे प्रथम फीचर फिल्म मानने में विवाद रहा।

भारत की पहली फीचर फिल्म निर्माण करने का श्रेय दादा साहब फाल्के को दिया जाता है। इन्होंने सन् 1913 में राजा हरिश्चंद्र चलचित्र का निर्माण किया। यह चलचित्र भारतीय सिनेमा के लिए एक मील का पत्थर साबित हुआ। ये दोनों मूक फिल्में थी। सन् 1931 में आर्देशिर ईरानी ने पहली बोलती फिल्म आलम आरा का निर्माण किया। इस बोलती फिल्म का जन्म गाते हुए हुआ था। अर्थात फिल्म का आगाज़ गीतों के साथ हुआ था। सन् 1931 मैं बोलती फिल्म के आने के पश्चात भी सन् 1935 ई तक मूक फिल्मों का निर्माण होता रहा ।

सन् 1934-1935 में क्रमशः चलचित्र में पार्श्व संगीत व गायन का दौर आरंभ हुआ। पहले पहल व्यक्तिगत रूप से फिल्मों का निर्माण आरंभ हुआ। लेकिन फिर इसमें फिल्म कंपनियों का साम्राज्य स्थापित होने लगा।

फारसी थिएटर का प्रभाव आरंभ में कुछ फारसी थिएटर जो नाटकों का मंचन करती थी। वे कंपनियाँ अब फिल्मों का निर्माण करने लगी थी। फिल्मों के आरंभ में कथानक का एक विशाल भंडार पुराण तथा इतिहास के रूप में उपलब्ध हो गया था। दादा साहब फाल्के की सारी फिल्में पौराणिक कथानकों पर आधारित होती थी। बोलती फिल्मों का दौर भी साहित्य से आरंभ हुआ। अर्थात कथानक के विषय में इसको सामग्री उपलब्ध थी। इसके पश्चात सामाजिक कथानक का दौर आरंभ हुआ। सामाजिक समस्याएं मनोरंजन संगीत माफिया कॉर्पोरेट विश्व आदि कथानक शामिल हुए हैं।

13.2 : उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप-

1. हिंदी सिनेमा की आरंभिक मुख्य फिल्मों से परिचित हो सकेंगे।
2. हिंदी फिल्मों की आरंभिक बोलती फिल्मों से परिचित हो सकेंगे।
3. हिंदी सिनेमा के आरंभिक संगीत से परिचित हो सकेंगे।
4. हिन्दी सिनेमा की आरंभिक कंपनियों से परिचित हो सकेंगे ।
5. हिंदी सिनेमा के परिवर्तित कथनों से परिचित हो सकेंगे।
6. हिंदी सिनेमा के विकास के चरणों से परिचित हो सकेंगे।
7. हिंदी सिनेमा की आरंभिक निर्माता निर्देशकोंसे परिचित हो सकेंगे ।
8. हिंदी सिनेमा और साहित्य के प्रगाढ़ संबंध से परिचित हो सकेंगे।
9. हिंदी सिनेमा की विकास यात्रा का सिंहवालोकन कर सकेंगे।

13.3 : मूल पाठ : सिनेमा (फिल्म, चलचित्र, चित्रपट) की विकास यात्रा

सिनेमा की बात की जाए तो सिनेमा नाटकों का अगला रूप है। नाटकों में तकनीकी का मेल होने से सिनेमा बन गया। सिनेमा के आने से कलाकारों को एक तरह से अनेक तकनीकी सुविधाएं प्राप्त हो गई हैं। विशेष कर संवादों की डबिंग, लड़ाई के दृश्यों में डुप्लीकेट का प्रयोग, अनेक स्थानों पर शूटिंग की सुविधा, पार्श्व गायन, वेशभूषा तथा Re-take की सुविधा आदि। आज सिनेमा और रंगमंच यह दो प्रकार देखे जा सकते हैं। भारत में फिल्मों के प्रथम प्रदर्शक, फिल्मों के जन्मदाता फ्रांस के ल्यूमियर बंधुओं ने 7 जुलाई, 1896 ई को बंबई (वर्तमान मुंबई) के वाटसन होटल में फिल्मों का प्रदर्शन किया था। इन्हीं से प्रभावित होकर सन् 1898 में हीरालाल ने एक स्टेज शो के दृश्यों से **द फ्लावर ऑफ पर्शिया** फिल्म बनाई। सन् 1899 में हरिश्चंद्र भाटवाडेकर ने कुश्ती पर **द रेसलर** और सर्कस पर दो लघु फिल्मों का निर्माण किया। लेकिन यह फिल्में केवल छायांकन ही रही फीचर फिल्म नहीं। 18 मई, 1912 ई.में पुंडलिक फिल्म का निर्माण हुआ। यह "श्रीपद संगीत मंडली नासिक के चर्चित नाटक का फिल्म रूप था।"(रंग दस्तावेज सौ साल (खंड एक)- महेश आनंद पृ.सं.465) इस फिल्म के निर्देशक दादा साहब तोरने थे। इस फिल्म को इसलिए भारत की पहली फिल्म नहीं माना गया क्योंकि यह एक लोकप्रिय नाटक की रिकॉर्डिंग मात्र थी। इसकी कैमरामैन एक ब्रिटिश थे जिनका नाम जॉन था। इसकी नेगेटिव्स को प्रोसेसिंग के लिए लंदन भेजा गया था। सन् 1911 में धुंडी राव गोविंद फाल्के (दादा साहब फाल्के) ने एक फिल्म देखी जिसका नाम था लाइफ ऑफ क्राइस्ट। तभी से उन्होंने भी तय कर लिया कि वे भी फिल्मों का निर्माण करेंगे।

13.3.1 मूक फिल्में

ल्यूमियरमिया बंधुओ ने मूक फिल्मों से ही फिल्मों का आरंभ किया था। स्वाभाविक है कि भारतीय फिल्मों का आरंभ भी मूक फिल्मों से ही होगा और हुआ भी। प्रत्येक भाषा में आरंभिक फिल्में मूक की हुआ करती थी। भारत में पहली मूक फिल्म बनाने का श्रेय दादा साहब फाल्के को दिया जाता है। उन्होंने सन् 1913 में राजा हरिश्चंद्र फिल्म का निर्माण किया। इस फिल्म में प्रमुख भूमिका दत्तात्रेय दामोदर नायक तथा नायिका के रूप में अन्ना सालुंके पुरुष ने महिला का पात्र निभाया था। यह फिल्म भारत में काफी लोकप्रिय रही। इसके पश्चात भी दादा साहब फाल्के ने अनेक फिल्मों का निर्माण किया जिनमें प्रमुख है मोहिनी भस्मासुर (1913) लंका दहन(1917) श्री कृष्ण जन्म (1918) कालिया मर्दन (1919) आदि।

हिमांशु राय ने प्रेम सन्यास तथा **प्रपंच पाश** फिल्मों का निर्माण किया। **दिलेर जिगर** वह **गुलामी** का पतन के निर्देशक जी.पी. पवार थे। हरिलाल एम भट्ट ने पितृ प्रेम। पी.एन.राव की

मार्तंड वर्मा। **भक्त विदुर**(1921) इसका निर्देशन कांची भाई राठौड़ ने किया। भक्त विदुर प्रतिबंध का सामना करने वाली पहली भारतीय फ़िल्म थी।

इस समय सिनेमाघर में कमेंटेटर होते थे, जो पर्दे के निकट रहकर पर्दे पर चल रही घटना के अनुसार स्थानीय भाषा में कहानी समझाते चलते थे। साथ ही पर्दे के पास संगीत के वाद्य यंत्रों के साथ गायक कलाकार मौजूद रहते थे जो संदर्भ अनुसार गीत संगीत को शुमार करते रहते थे। अर्थात मूक फिल्में भी संगीत के साथ थी। इस काल में फिल्मों के विषय पौराणिक ऐतिहासिक तथा सामाजिक रहे। दादा साहब फाल्के ने पौराणिक विषयों को अपनाया और रंजीत मूवी टोन ने ऐतिहासिक विषय पर राजपूतानी, ब्रिटिश डोमिनियन फिल्म कंपनी ने चित्तौड़ की पद्मिनी आदि फिल्मों का निर्माण किया। सामाजिक फिल्मों में बाबूराव पेंटर द्वारा निर्मित **सावकारी पाश** फिल्म को मूक युग की सर्वश्रेष्ठ फिल्म कहा गया।

बोध प्रश्न

- मूक फिल्म और उनके विषय क्या रहे?
- दादा साहब फाल्के से पहले और उनके समानांतर कौन सी फिल्में बनी?

13.3.2 सवाक् (बोलती) फिल्में (1931 से आज तक)

दुनिया परिवर्तनशील है और परिवर्तन में ही विकास छुपा है। सन 1913 से मूक फीचर फिल्म का आरंभ हुआ और 1931 में उनका सवाक् फिल्मों के रूप में विकास हुआ। आज हम देखते हैं कि डिजिटल साउंड, SFX, विदेशी दृश्य आदि । ये सब हमारे लिए साधारण सी बात हो गई है। लेकिन जब ल्यूमियर बंधुओ ने केवल चलते हुए चित्रों का प्रदर्शन किया था तो दर्शकों की खुशी का ठिकाना नहीं था। अर्थात दुनिया परिवर्तनशील है। पहली सवाक् फिल्म आलम आरा का निर्माण आर्देशिर ईरानी ने सन् 1931 में किया था। बंबई (वर्तमान मुंबई) के मैजेस्टिक सिनेमा घर में 14 मार्च, 1931 ई को इसका प्रदर्शन किया गया था। इस फिल्म ने दर्शकों को मंत्र मुग्ध कर दिया था। आलम आरा फिल्म बनने से पहले यह फारसी थिएटर कंपनी का एक मशहूर नाटक था। इसके पटकथा, संवाद लेखक तथा गीतकार जोसेर्फ डेविड, मुख्य कलाकार मास्टर विट्ठल, मिस जुबेदा, पृथ्वीराज कपूर, जिल्लो तथा एल.वी प्रसाद रहे। संगीतकार फिरोज शाह एम.मिस्त्री थे। सबसे पहला गीत अभिनेता वज़ीर मोहम्मद खान द्वारा गया गया था जिसके बल थे - दे दे खुदा के नाम पर प्यारे ताकत हो गर देने की...

अगली सवाक् फिल्म थी नूरजहाँ(1931) इसके निर्देशक मोहन भवनानी रहे ।यह इंपीरियल मूवीटोन कंपनी की फिल्म थी।

रंजीत मूवीटोन की देवी देवयानी(1931) और राधा रानी(1932)।

इसके पश्चात सन् 1932 में प्रभात फिल्म कंपनी की द्विभाषी फिल्म अयोध्याचे राजा (मराठी), यह मराठी की पहली सवाक् फिल्म रही तथा इसका हिन्दी रूप अयोध्या का राजा यह भारत की पहली द्विभाषी फिल्म रही है।

प्रभात फिल्म कंपनी की भारत की पहली टेकनीकलर फिल्म सैरेंध्री सन् 1933 में आई। इसके निर्देशक वी. शांताराम थे।

न्यू थिएटर्स की राजरानी मीरा (1933) आदि प्रमुख फिल्में रही ।

प्रादेशिक भाषा में भी अनेक प्रांतो में फिल्म का निर्माण जोर पकड़ रहा था। जैसे बंगाल, मद्रास, पंजाब आदि।

बोध प्रश्न

- आलमआरा फिल्म के पात्र और पहले गायक कौन थे?

13.3.3 हिंदी फिल्मों में पार्श्व संगीत व गायन के आगमन

बंगाली फिल्म चंडीदास (1932) से पार्श्व संगीत का आरंभ हुआ । हिंदी फिल्मों में अमृत मंथन (1934) से पार्श्व संगीत का आरंभ हुआ इस फिल्म के निर्देशक वी. शांताराम थे। इसके संगीतकार के भोला रहे। रजत जयंती मनाने वाली यह पहली भारतीय फ़िल्म थी जिसका निर्माण प्रभात फिल्म कंपनी द्वारा किया गया था। बंगाली फिल्म भाग्य चक्र (1935) से पार्श्व गायन का आरंभ हुआ इसके निर्माता निर्देशक नितिन बोस थे। यह कोलकाता के न्यू थिएटर फिल्म कंपनी का निर्माण था। इसके संगीतकार आर.सी बोराल थे। इसी फिल्म कंपनी ने हिंदी फिल्म धूप छांव (1935) से हिंदी फिल्मों में पार्श्व गायन का आरंभ किया। इसके संगीतकार भी आर.सी बोराल थे। इसमें तीन गायिकाओं पारुल घोष, सुप्रोवा सरकार, तथा हरिमती दुआ द्वारा कोरस के रूप में गाया गया गीत मैं -खुश होना चाहूं खुश हो ना सकूँ...। यह हिंदी का पहला पार्श्व गीत था।

प्रसिद्ध संगीतकार के.सी.डे ने भी इसमें दो गीतों को अपना स्वर दिया-

1. तेरी गठरी से में लागा चोर मुसाफिर जाग ज़रा...

2. बाबा मन की आंखें खोल...

पार्श्व गायन के आरंभ से पूर्व गीतों की रिकॉर्डिंग शूटिंग के समय ही होती थी। वाद्य यंत्र वाले वहीं मौजूद रहते थे। इससे अभिनय, संगीत तथा गायन की सीमाएं बन्ध जाती थी।

बोध प्रश्न

- क्या सवाक् फिल्मों में आरंभ से ही पार्श्व संगीत व गीत होते थे?

13.3.4 आरंभिक मुख्य फिल्म निर्माण कंपनियाँ

सन् 1917 तक फिल्म निर्माण कंपनियाँ नहीं थी। व्यक्तिगत रूप से फिल्मों का निर्माण हुआ करता था। सन् " 1917 तक दादा साहब फाल्के अकेले चित्रपट निर्माता थे जिन्होंने 23 से भी अधिक मूल चित्रपटों का निर्माण किया।" (हिंदी चित्रपट एवं संगीत का इतिहास डॉ-विमल पृ. सं 8) सन् 1917 में दादा साहब फाल्के के साथ माया शंकर, मूल शंकर भट्ट आदि हिस्सेदारी के रूप में जुड़े पर सन् 1921 में दादा साहब फाल्के उनसे अलग हो गए।

पारसी थिएटर का रंगमंच की दुनिया में अपना नाम था। जब फिल्मों का निर्माण आरंभ हुआ तो स्वाभाविक है कि रंगमंच प्रभावित होगा। इससे फारसी थिएटर कंपनियों ने भी फिल्मों का निर्माण आरंभ कर दिया। मदन थिएटर कंपनी का नाम मदन थिएटर लिमिटेड कर लिया और फिल्मों का निर्माण आरंभ किया। ऐसे तो बहुत सी फिल्म कंपनियां आ रही हैं जिनमें मुख्य है-

13.3.4.1 कोहिनूर फिल्म कंपनी (1918)

इसके संस्थापक द्वारकाधीश नरेंद्र दास संपत थे। 1930 के दशक में यह रंजीत मूवी टोन और इंपीरियल फिल्म कंपनी जैसी बड़ी स्टूडियो में शुमार थी। इस कंपनी ने जिन मूक फिल्मों का निर्माण किया उनमें मुख्य है विक्रम उर्वशी (1920) अनसूया (1921) भक्त विदुर(1921) काला नाग (1924) टेलीफोन गर्ल (1926) आदि।

भक्त विदुर: इस फिल्म पर प्रतिबंध लगा दिया गया था। इसे असंतोष भड़काने व असहयोग को बढ़ावा देने वाला करार दिया गया।

इंपीरियल फिल्म कंपनी (1926)

इसके संस्थापक आर्देशिर ईरानी, युसूफ अली तथा दाऊजी रंग वाला थे। इसी बैनर तले पहली सवाक फिल्म आलम आरा (1931) का निर्माण हुआ था। इसी कंपनी ने भारत की पहली स्वदेशी रंगीन फिल्म किसान कन्या (1937) का निर्माण किया है। कोहिनूर फिल्म कंपनी के पतन के बाद फिल्म अनारकली (1928) से इसका आगाज हुआ। इस कंपनी के मुख्य निर्माता रहे हैं- आर.एस चौधरी, बी.पी मिश्रा और मोहन भवनानी आदि। सन 1938 में यह स्टूडियो बंद हुआ तो उसकी विरासत को सागर मूवीट्न ने जारी रखा।

इसी कंपनी ने महबूब खान जैसी हस्तियों को फिल्म उद्योग को दिया है।

संस्था की मुख्य फ़िल्में रही- ख्वाब ए हस्ती (1929) शिरीन फरहाद (1931) और बंबई की बिल्ली (1936) आदि।

13.3.4.2 सागर मूवीटोन (1929)

बंबई (वर्तमान मुंबई) की इस कंपनी की स्थापना और आर्देशिर ईरानी, चिमनलाल देसाई और अंबालाल पटेल ने की थी। इसका आरंभ इंपीरियल फिल्म कंपनी की शाखा के रूप में हुआ। गायक मुकेश ने पहली बार इसी कंपनी की फिल्म निर्दोष (1941)में अभिनय किया था। महबूब खान को इंपीरियल से सागर में स्थानांतरित किया गया। इसी कंपनी ने महबूब खान को निर्देशक के रूप में पहला मौका अल हिलाल (1935) में दिया था।

इसने मूक और सवाक् दोनों फिल्मों का निर्माण किया। मूक फिल्मों में पहली दांव पेज (1930) सवाक् फिल्मों में पहली फिल्म मेरी जॉन (1931) का निर्माण किया।

पहली सवाक गुजराती फिल्म नरसी मेहता 1931 का निर्माण इसी कंपनी ने किया था।

इस कंपनी ने हिंदी के साथ-साथ गुजराती, तेलुगु, तमिल तथा बंगाली फिल्मों का निर्माण भी किया है।

इस कंपनी की मुख्य फ़िल्में हैं- वीर अभिमन्यु (1931) चंद्रहास (1933) गृह लक्ष्मी (1934) फरजादे हिंद (1934) आदि।

13.3.4.3 प्रभात फिल्म कंपनी (1929)

इसके संस्थापक वी. शांताराम, यस. फतेह लाल, केशवराव ढैबर तथा सीताराम कुलकर्णी थे। पहले यह संस्था कोल्हापुर तथा 1933 से पुणे में रही। इसने मूक और सवाक् दोनों प्रकार की फिल्मों का निर्माण किया। मूक फिल्मों में गोपाल कृष्ण (1929) खूनी खंजर (1930) रानी साहिबा (1930) आदि।

सवाक् फिल्मों में मराठी में अयोध्याचे राजा (1932) यह मराठी की पहली सवाक् फिल्म थी। इसी को हिंदी में अयोध्या का राजा नाम से बनाया। कंपनी की अधिकतर फिल्में मराठी और हिंदी दोनों भाषाओं में होती थी।

भारत की पहली टेकनीकलर फिल्म सैरेन्ध्री (1933) प्रभात फिल्म कंपनी की रही इसके निर्देशक वी. शांताराम थे।

आज पुणे का भारतीय फिल्म और टेलिविज़न संस्थान प्रभात फिल्म कंपनी के परिसर में ही स्थित है जिसमें प्रभात संग्रहालय भी मौजूद है।

शिकागो विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में 1932 से 1949 तक की प्रभात फिल्मों का संग्रह है।

प्रख्यात निर्देशक, निर्माता तथा अभिनेता गुरु दत्त ने अपना फ़िल्मी कैरियर प्रभात कंपनी से ही आरंभ किया था। उन्होंने प्रभात की फिल्म चाँद (1944) से एक अभिनेता के रूप में अपने कैरियर का आरंभ किया था। इसी फिल्म से अभिनेता रहमान भी फिल्मों से जुड़े थे।

प्रसिद्ध अभिनेता, निर्माता तथा निर्देशक देव आनंद के फिल्मी कैरियर की शुरुआत भी प्रभात फिल्म कंपनी से हुई है। उनकी पहली फिल्म हम एक हैं (1946) थी।

13.3.4.4 रंजीत स्टूडियोस (रंजीत मूवीटोन) (1929)

बंबई की इस कंपनी के स्थापक चंदूलाल शाह और गौहर जान थे। उन दिनों तीन बड़े स्टूडियोस थे। कोहिनूर इंपीरियल तथा रंजीत। कहा जाता है कि कंपनी में लगभग 700 कर्मचारी थे जिनमें अभिनेता टेक्नीशियन तथा अन्य।

सन् 1932 में कंपनी ने सवाक् फिल्मों के आने के बाद अपना नाम रंजीत मूवीटोन कर लिया था। 1932 तक कंपनी ने 39 फिल्मों का निर्माण पूर्ण कर लिया था जो अधिकतर सामाजिक फिल्में थी कंपनी ने हिंदी के साथ-साथ पंजाबी तथा गुजराती में भी फिल्मों का निर्माण किया।

कंपनी की कुछ प्रमुख फिल्मों में- सती सावित्री (1932) गुण सुंदरी (1934) बैरिस्टर्स वाइफ (1935) अछूत (1940) तानसेन (1943) मूर्ति (1943) और जोगन (1950) शामिल है।" (wikipedia.org.)

कंपनी के संस्थापक चंदूलाल शाह के मार्गदर्शन में फिल्म उद्योग की 1939 में रजत जयंती तथा 1936 में स्वर्ण जयंती मनाई गई।

1951 में निर्मित फिल्म फेडरेशन ऑफ इंडिया के पहले अध्यक्ष चंदूलाल शाह रहे।(http://m.bharatdiscovery.org.)

उन दिनों जब पौराणिक फिल्मों का बोलबाला था, तब चंदूलाल शाह ने सामाजिक मुद्दों पर तथा स्टंट फिल्मों के निर्माण का निश्चय किया जो धारा के विरुद्ध बहना था। इस कंपनी ने लगभग 150 फिल्मों का निर्माण किया जो तत्कालीन किसी भी फिल्म कंपनी से अधिक थी। 1930 के दशक में कंपनी प्रतिवर्ष 6 फिल्मों का निर्माण करती थी।

सन् 1944 की बात है जब कपास के सट्टे में एक ही दिन में चंदूलाल शाह करीब सवा करोड़ हार गए थे। 1950 तक स्टूडियो की सारी संपत्ति गिरवी रखनी पड़ी। गौहर के नाम पर जो घर था उसे भी इंश्योरेंस कंपनी के पास गिरवी रखना पड़ा। अकेली मत जइयो (1963) उनकी आखिरी फिल्म थी। 1960 दशक के अंत में कंपनी समाप्त हो गई।

13.3.4.5 न्यू थिएटर लिमिटेड (1931)

कोलकाता की इस कंपनी के संस्थापक बी एन सरकार रहे हैं। इन्हें 1970 में दादा साहब फाल्के पुरस्कार प्राप्त हुआ था। कंपनी द्वारा निर्मित पहली मूक फिल्म देना पाओना (1931)बंगाली फिल्म थी। 1934 में आई फिल्म चंडी दास जो बंगाली फिल्म का हिंदी रूप थी संस्था की पहली हिट फिल्म मानी जाती है।

सन् 1932 में मोहब्बत के आंसू फिल्म का निर्माण किया। यह के.एल सहगल की पहली फिल्म थी।

इसी संस्था द्वारा निर्मित बंगाली फिल्म भाग्य चक्र (1935) से पार्श्व गायन का आरंभ हुआ था। इसी फिल्म के हिंदी रूप धूप छांव (1935) से हिंदी फिल्मों में पार्श्व गायन का आरंभ हुआ। इस संस्थान ने 100 से अधिक फिल्मों का निर्माण किया है, जिनमें मुख्य है- पूर्ण भगत (1933), देवदास (1935), भाग्य चक्र (1935), प्रेसिडेंट (1937), विद्यापति (1938), स्ट्रीट सिंगर (1938), दुश्मन (1939) तथा हमराही (1945) आदि ।

सन् 1944 में आई बंगाली फिल्म उदयेर पथे जिसका हिंदी रूप हमराही (1945) था। इसमें राष्ट्रगान बनने से पूर्व जन गण मन... गीत को लिया गया है।

आज़ादी के बाद कंपनी बंगाली फिल्मों तक सीमित हो गई। पूर्वी पाकिस्तान बनने के बाद बंगाली फिल्मों का बाजार फीका पड़ गया। विमल राय जैसे कई छात्र मुंबई चले गए।

बी.एन. सरकार ने कंपनी की अंतिम फिल्म बकुल (1954) को पूरा करके फिल्मों से संन्यास ले लिया। 1980 के दशक में पश्चिम बंगाल की सरकार ने कंपनी को अपने नियंत्रण में ले लिया। उसके बाद इसका उपयोग बंगाली फिल्म, दूरदर्शन धारावाहिकों की शूटिंग के लिए किया जाता रहा है।

13.3.4.6 ईस्ट इंडिया फिल्म कंपनी (1932)

यह भारतीय फिल्म निर्माण कंपनी थी। कोलकाता की इस संस्था के संस्थापक आर.एल. खेमका थे। इसकी पहली सवाक फिल्म सीता (1934) थी। इसे वेनिस के 1934 के अंतरराष्ट्रीय फ़िल्म समारोह में प्रदर्शित किया था। यह भारत की पहली फिल्म थी जो किसी अंतरराष्ट्रीय फ़िल्म समारोह में प्रदर्शित की गई थी। यह फिल्म देवकी बोस द्वारा निर्मित की गई थी। कंपनी कई भाषाओं में फिल्म का निर्माण करती थी जिसमें बंगाली, हिंदी, तेलुगु और तमिल शामिल थी।

तत्कालीन रु.75000/ के भव्य बजट में तेलुगु फिल्म सती सावित्री (1933) का निर्माण किया गया जो बहुत बड़ी हिट साबित हुई। इसका निर्देशन सी पुलय्या आने किया था।

इस कंपनी की कुछ प्रमुख फिल्में हैं- चंद्रगुप्त (1934) हत्यारा (1935) तथा सुनहरा संसार (1936) आदि।

13.3.4.7 वाड़िया मूवीटोन (1933)

इसके संस्थापक जे.बी.एच. वाडिया और होमी वाडिया थे। इस कंपनी की पहली फिल्म लाल ए यमन (1933) थी। यह जादुई करिश्मों पर आधारित फ़िल्म थी। 1935 में आई देश दीपक एक राजा रानी की कथा पर आधारित थी। इस कंपनी ने 1935 ईस्वी में हंटर वाली फिल्म का निर्माण किया जो एक आश्चर्यजनक हिट बन गई और यह बड़ी सफलता थी।

इसी फिल्म से इस फिल्म की नायिका फीयरलेस नाडिया के रूप में प्रख्यात हुई। इसमें राजकुमारी एक मुखौटा पहनकर गरीबों पर हो रहे अत्याचार का मुकाबला हंटर से करती है। ऐसे स्टंटो पर आधारित वाडिया मूवीटोन ने नाड़िया को लेकर कई फिल्मों का निर्माण किया जिनमें मिस फ्रंटियर मेल (1936) पंजाब मेल (1939) तथा डायमंड क्वीन (1940) और अन्य फिल्मों में हिंद केसरी (1935) नूरी अमन (1935) आदि हैं ।

कंपनी की अंतिम फिल्म राज नर्तकी (1941) थी। 1942 में स्टूडियो वी. शांताराम ने खरीद लिया और उसी परिसर में राजकमल कला मंदिर फिल्म प्रोडक्शन की स्थापना की।

13.3.4.8 बॉम्बे टॉकीज (1934)

बंबई (वर्तमान मुंबई) के मलाड़ क्षेत्र में हिमांशु राय और देविका रानी ने इसकी स्थापना की थी। इसे संसाधन युक्त फिल्म स्टूडियो माना जाता था। यह अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप सुविधाओं से संपन्न था।

यह कंपनी तत्कालीन विवादास्पद विषयों पर फिल्में बनाने के लिए भी प्रसिद्ध थी। जैसे ब्राह्मण का अछूत कन्या से प्रेम अछूत कन्या (1936)। अशोक कुमार व दिलीप कुमार जैसे अभिनेताओं की पहली फिल्म भी इसी संस्था की थी।

अशोक कुमार की पहली फिल्म जीवन नैया (1936) तथा दिलीप कुमार की पहली फिल्म ज्वार भाटा (1944) का निर्माण इसी संस्था ने किया था। देविका रानी व लीला चिटनीस संस्था की प्रमुख अभिनेत्रियाँ रही हैं।

संस्था की कुछ मुख्य फ़िल्में है- जवानी की हवा (1935), जन्मभूमि (1936) तथा जीवन प्रभात (1937) आदि ।

इस संस्था की कई फिल्मों का निर्देशन यूरोप के फ्रांज़ ऑस्टेन ने किया था और संगीत सरस्वती देवी ने दिया था। उदाहरण जवानी की हवा, अछूत कन्या, जन्मभूमि, जीवन नैया, इज्जत, जीवन प्रभात और प्रेम कहानी आदि।

सन् 1946 में फिल्म किस्मत संस्था की बड़ी हिट रही है। तत्कालीन सबसे लंबे समय तक चलने वाली फिल्म के रूप में इस का रिकॉर्ड है। यह रॉक्सी मूवी थिएटर कोलकाता में 3 साल से अधिक समय तक चली थी। एक करोड़ कमाने वाली फिल्म के रूप में भी इसे जाना जाता है। सन 1953 में यह टॉकीज बंद हो गई।

13.3.4.9 मिनर्वा मूवीटोन (1936)

इसकी स्थापना सोहराब मोदी ने की थी। इनको 1980 में दादा साहब फाल्के पुरस्कार प्राप्त हुआ है। इन्होंने सामाजिक मुद्दों और इतिहास पर फिल्मों का निर्माण किया। सामाजिक मुद्दे -1938 में शराब पर मीठा जहर हिंदू महिलाओं के तलाक के अधिकार पर तलाक जैसी फिल्मों का निर्माण किया। लेकिन ये सफल नहीं रही। उनके द्वारा इतिहास पर जिन फिल्मों का निर्माण किया गया वह बड़ी पसंद की गई और सफल रही। मिनर्वा की तीन ऐतिहासिक फिल्मों का इतिहास है, पुकार (1939) सिकंदर (1941) और पृथ्वी वल्लभ (1943) इन फिल्मों में सहारा मोदी ने ऐतिहासिक भव्यता को उजागर किया है।

पुकार फिल्म में जहांगीर की न्याय निष्पक्षता को दर्शाया गया है।

सिकंदर फिल्म के अंग्रेजों की छावनियों में प्रदर्शन पर रोक लगा दी गई थी। क्योंकि इसमें देशभक्ति की भावना एवं राष्ट्रीय भावनाओं का सैलाब था।

पृथ्वी वल्लभ यह फिल्म इसी नाम के के.एम. मुंशी के गुजराती उपन्यास पर आधारित थी। सन् 1953 में झांसी की रानी फिल्म का निर्माण किया। इस संस्था की अन्य मुख्य फ़िल्में हैं- भरोसा (1940) शीश महल (1950) मिर्ज़ा ग़ालिब (1954) राजघाट (1956) आदि। इस संस्था ने लगभग 28 फिल्मों का निर्माण किया।

उपर्युक्त फिल्म संस्थाओं के अतिरिक्त भी कई फिल्म कंपनियां रही हैं जिनमें से कुछ हैं- राजकमल कला मंदिर, पैरामाउंट फिल्म कंपनी, सरस्वती सिनेटोन, अजंता सिनैटाउन, सरोज मूवीटोन, प्रकाश पिक्चर्स तथा बसंत पिक्चर्स आदि।

वर्तमान की बात करें तो आज लगभग हजार फिल्म निर्माण कंपनियाँ हैं। इन कंपनियों ने विदेशों में फिल्म रिलीज़ कर फिल्म को अंतरराष्ट्रीय ख्याति अर्जित करने में अपना योगदान दिया है। इनमें मुख्य हैं- धर्मा प्रोडक्शंस, बालाजी मोशन पिक्चर्स, यशराज फिल्म, रेड चिलीज एंटरटेनमेंट, यूटीवी मोशन पिक्चर्स तथा एरोस इंटरनेशनल आदि।

बोध प्रश्न

- कोहिनूर और इंपीरियल फिल्म कंपनियों का फिल्मों के विकास में योगदान स्पष्ट कीजिए।
- सागर और प्रभात फिल्म कंपनियों का परिचय दीजिए।
- रंजीत और न्यू थियेटर फिल्म कंपनियों की विशेषताएं स्पष्ट कीजिए।

- वाडिया और बॉम्बे टॉकीज फिल्मों के विकास में क्यों विशेष हैं?
- आरंभ में ईस्ट इंडिया मिनर्वा तथा अन्य कौन-कौन सी फिल्म कंपनियां रही हैं?

13.3.5 सिनेमा और साहित्य का संबंध

साहित्य शब्द की परिभाषा देते हुए यह स्पष्ट किया गया है कि जो अभिव्यक्ति हित के भाव को साथ लेकर चलती है वह साहित्य है। साहित्यः भावः साहित्यम् फिल्म के विषय में अनेक परिभाषाएं मिलती हैं। उन सब में सत्यजीत रे द्वारा दी गई फिल्म की परिभाषा को अधिकतर उध्दृत किया जाता है, वह है- "एक फिल्म चित्र है, फिल्म शब्द है, फिल्म आंदोलन है, फिल्म नाटक है, फिल्म संगीत है, फिल्म एक कहानी है, फिल्म हजारों अभिव्यक्तिपूर्ण श्रव्य एवं दृश्य आख्यान है। आजकल हमें यह भी जोड़ना चाहिए कि फिल्म रंग है। यहाँ तक कि फिल्म का एक खंड जो मुश्किल से 1 मिनट चलता है, उन सभी आयामों को साथ-साथ प्रदर्शित कर सकता है।"(श्रव्य दृश्य संप्रेषण और पत्रकारिता- डॉ.जेम्स .एस. मूर्ति पृ.सं. 72)

फिल्म के आरंभ से ही साहित्य उसके साथ रहा है। आरंभिक फिल्मों में पौराणिक साहित्य खूब चला। दादा साहब फाल्के की अधिकतर फिल्में पौराणिक साहित्य पर आधारित रही हैं। फिल्म नाटक का ही अगला रूप है। इसलिए आरंभिक फिल्में पारसी थिएटर से प्रभावित थी। फिर साहित्यिक कृतियों पर भी फिल्में बनने लगी। प्रेमचंद की कहानी मिल मजदूर (1934) पर मोहन भवनानी ने फिल्म बनाई।

दरअसल साहित्य का फिल्मांतरण होता है तो साहित्य में परिवर्तन होना स्वाभाविक है। फिल्म में पूंजी निवेश होता है जिससे फिल्म का एक मुख्य लक्ष्य लाभ कमाना भी होता है। जबकि साहित्य मुख्यतः शिक्षितों एवं बौद्धिक वर्ग की विधा है। साहित्य के फिल्मांतरण में सिनेमा का लक्ष्य हावी हो जाता है। इससे साहित्य विधा के लेखक को लगता है कि यह उनकी रचना के साथ अन्याय हो रहा है। इसीलिए प्रेमचंद मुंबई फिल्मी दुनिया से वापस आ गए थे।

साहित्य पर अगर हूबहू फिल्म बनाई जाए तो फिल्में अधिकतर असफल होती है। फिल्म की आवश्यकताओं को समझते हुए उसमें बदलाव किया जाए तो साहित्य पर आधारित फिल्मों के सफल होने की संभावनाएँ रहती हैं। साहित्य पर आधारित फिल्में जो अधिक सफल नहीं हो सकी उनमें प्रेमचंद की रचनाओं पर बनी फिल्में सेवा सदन, रंगभूमि, गुलेरी की कहानी उसने कहा था, रेनू की तीसरी कसम राजेंद्र यादव की सारा आकाश आदि हैं।

साहित्य पर आधारित हुए फिल्में जो असफल नहीं कहीं जा सकती है उनमें चित्रलेखा, शतरंज के खिलाड़ी तथा आंधी रजनीगंधा आदि हैं। हिंदी साहित्य की अपेक्षा बंगाली साहित्य पर बनी हिंदी फिल्में अधिक सफल हुई हैं। उदाहरण बंगाली से परिणीता साहब बीवी और गुलाम व देवदास (तीन बार बनी 1935, 1955 तथा (2002) तीनों बार की फिल्में सभी सफल रही।

बोध प्रश्न

- साहित्य पर आधारित अधिकतर फिल्में क्यों सफल नहीं होती हैं?

13.3.5.1 साहित्य के प्रगतिवाद का फिल्मों पर प्रभाव

कहा जाता है कि साहित्य समाज का दर्पण है, फिल्म के साथ भी यही बात लागू होती रही है। सन 1935-36 में राजनीतिक मार्क्सवाद के साहित्यिक रूप प्रगतिवाद का विकास हो रहा था। इसी से प्रभावित होकर निर्देशक नितिन बोस ने सन् 1936 में प्रेसिडेंट फिल्म का निर्माण किया। इस फिल्म में कारखाने के मजदूरों का जीवन दर्शाया गया है। अर्थात 1936 के पश्चात फिल्मों में कल के साथ-साथ विचारों की गंभीरता के भी दर्शन होते हैं। प्रगतिवाद का ही एक पहलू IPTA (1943) है। जो जन नाट्य संघ के रूप में स्थापित हुआ। IPTA(इप्टा)(इंडियन पिपुल्स थिएटर एसोसिएशन) के सहयोग से 1946 में धरती के लाल, डॉ. कोटनीस की अमर कहानी तथा निशा नागर आदि फिल्मों का निर्माण हुआ है।

बोध प्रश्न

- क्या प्रगतिवाद से फिल्में प्रभावित थी ?

13.5.6 स्वतंत्र्योत्तर फिल्में

सन् 1947 की भारत विभाजन का असर फिल्म उद्योग पर भी पड़ा। सन् 1949 में सेंसर के नियम बदले (इससे पूर्व पहली बार भारत में 5 मार्च, 1918 ई में अंग्रेजों द्वारा सिनेमाटोग्राफी एक्ट लागू किया गया था।इस एक्ट के द्वारा वे सुनिश्चत करना चाहते थे कि कहीं फिल्मों में, उसके संवादों में व गीतों में कुछ हमारे विरोध में तो नहीं है ।) इसे सामाजिक और सांस्कृतिक वातावरण के अनुसार बनाया गया। वयस्कों के लिए A तथा जिन फिल्मों को बच्चे भी देख सकते हैं उनके लिए U प्रमाण पत्र दिया गया। फिल्म को राज्य की सूची से केंद्रीय विषय बनाया गया। आजादी के बाद सन 1960 तक जिन फिल्मों का निर्माण हुआ उनमें मुख्य है- शाहिद (1948) बरसात (1949) आवारा (1951) आनंद मठ (1952)(1952) दो बीघा जमीन (1953) मिर्जा गालिब (1954) बूट पॉलिश (1954) जागृति (1954) श्री 420 (1955) देवदास (1955) सीआईडी (1956) मदर इंडिया (1957) नया दौर (1957) मधुमति (1958) धूल का फूल (1959) तथा मुग़ल-ए-आजम (1960) आदि ।

शहिद यह दिलीप कुमार की पहली हिट फिल्म मानी जाती है। सन 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के परिपेक्ष में इस फिल्म का निर्माण हुआ था।

बरसात यह राज कपूर के बैनर को स्थापित करने वाली फिल्म साबित हुई है। नरगिस को छोड़कर कोई स्थापित कलाकार नहीं थे। पर्दे पर भी पर्दे के पीछे भी लगभग सब नए कलाकार थे। इसका संगीत आज भी लोगों को लुभाने का सामर्थ्य रखता है। जैसे यह गीत हवा में उड़ता जाए मेरा लाल दुपट्टा मलमल का...

आवारा इस फिल्म से राज कपूर को अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त हुई। " सामंतवाद संस्कारों के जकड़न और रूढ़ कानूनी तथा समाज व्यवस्था तथा आम आदमी के विद्रोह का मेलोड्रामा सिर्फ नवस्वतंत्र देश की मानसिकता ने ही आत्मसात नहीं किया अपितु सोवियत रूस, अफ्रीका और अरब राष्ट्र में भी इसका स्वागत किसी स्थानीय फिल्म की तरह हुआ।"(हिंदी सिनेमा बीसवीं से इक्कीसवीं सदी तक-संपा- प्रहलाद अग्रवाल पृ.सं. 147)

आनंदमठ यह बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय के उपन्यास पर आधारित फिल्म है। इसमें अंग्रेजों के विरुद्ध सन्यासियों के संघर्ष को दर्शाया गया है। इसमें राष्ट्रगीत वंदे मातरम को भी सुंदर ढंग से पिरोया गया है। बैजू बावरा यह प्रसिद्ध संगीतज्ञ बैजू बावरा पर आधारीत एक संगीतात्मक में फिल्म रही। दो बीघा ज़मीन यह रविंद्र नाथ टैगोर की बंगाली कविता हदुई बीघा जेमी पर आधारित है। अपने समाजवादी विषय को लेकर यह फिल्म बहुत प्रसिद्ध हुई थी। इस फिल्म को समानांतर फिल्म की नींव भी कहा जाता है। इसके निर्देशक बिमल रॉय थे।

मिर्ज़ा ग़ालिब यह फिल्म सर्वश्रेष्ठ फिल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार पाने वाली मिनर्वा मूवीटोन की फिल्म है। इसके निर्माता निर्देशक सोहराब मोदी रहे हैं। कहां जाता है कि ग़ालिब की शायरी को आम जनता तक पहुंचाने का काम इस फिल्म ने किया है। मदर इंडिया इसे एक महाकाव्यात्मक फिल्म माना गया है। यह महबूब खान की ही फिल्म औरत (1940) की रीमेक है। इस फिल्म को "भारतीय महिला के प्रतिनिधित्व के रूप में देखा गया है जो उच्च नैतिक मूल्यों और आत्म बलिदान के माध्यम से समाज के लिए माँ बनने का क्या मतलब है की अवधारणा है।"(wikipedia)

नया दौर इसमें दर्शाया गया है कि औद्योगिक क्रांति का विरोध ना करके उसके साथ चलना ही पड़ेगा, यही नया दौर है। मुग़ल-ए-आज़म यह एक अविस्मरणीय फिल्म है। इस फिल्म के निर्माण में उस समय सवा करोड़ से अधिक खर्च हुआ था और 15 वर्षों का समय लगा था। सन् 1954 से फिल्मों को राष्ट्रीय पुरस्कार देने की घोषणा की गई। फिल्मों में सामाजिक समस्याओं को प्रमुख स्थान मिलने लगा। अब पौराणिक और ऐतिहासिक फिल्में कम बनने लगी। जिनका क्रमशः मूक और सवाक फिल्मों में बोलबाला था। इस समय प्रमुख फिल्मकार सोहराब मोदी वी. शांताराम, राज कपूर, विमल राय, गुरुदत्त आदि रहे हैं।

50 के दशक के अंत तक फिल्मों पर एक फार्मूला सा हावी होने लगा था। इस समय को भारतीय सिनेमा का स्वर्ण युग भी कहा जाता है। इसमें दिलीप कुमार, मीना कुमारी, मधुबाला, नरगिस, नूतन, देव आनंद, वहीदा रहमान जैसे बेहतरीन कलाकारों का बेहतरीन प्रदर्शन रहा। गीतों में शम्मी कपूर की उछल कूद भी आ गई थी।

बोध प्रश्न

- स्वतंत्र्योत्तर फिल्मों के विषय क्या थे?

13.3.7 साठोत्तरी फिल्में

यह शब्द साहित्य से लिया गया है। साठोत्तरी साहित्य हो सकता है तो साठोत्तरी फिल्में भी हो सकती हैं। अब भी पौराणिक और ऐतिहासिक विषय काम ही रहे थे। लेकिन विषयों में विविधता और भी आ गई थी। इस काल 1961 से 1969 तक की कुछ प्रमुख हैं-

1961 में धर्मपुत्र, गंगा जमुना, जंगली काबुलीवाला आदि।

1962 में प्रोफेसर, साहब बीवी और गुलाम तथा अनपढ़ आदि।

1963 में गुमराह, पारसमणी, बंदिनी आदि

1964 में दोस्ती तथा अन्य फिल्में।

1965 में काजल, गाइड, वक्त आदि।

1966 में तीसरी कसम तथा अन्य फिल्में।

1967 में उपकार तथा ज्वैल थीफ आदि।

1968 में नीलकमल तथा संघर्ष आदि।

1969 में आराधना, भुवनशोम तथा सात हिंदुस्तानी आदि।

धर्मपुत्र यह आचार्य चतुरसेन शास्त्री के उपन्यास पर आधारित है। इसमें भारत विभाजन को विषय बनाया गया है।

गंगा जमुना यह भारत की कालजयी फिल्मों में एक मानी जाती है। इसमें भौतिकवादी विचार को दर्शाया गया है।

जंगली इस फिल्म ने शम्मी कपूर को स्टार बना दिया था। सायरा बानो की यह पहली फिल्म थी। इसमें गंभीरता पर हंसी की विजय बताई गई है।

काबुलीवाला यह फिल्म रविंद्र नाथ टैगोर की कहानी पर आधारित है। इसमें नौकरी के लिए अपने घर से दूर विदेश में जाकर पैसे कमाने की विडंबना को दर्शाया गया है। इसका गीत गंगा आयो कहाँ से गंगा जायो कहाँ... यह गुलजार का पहला गीत है जो फिल्म में आया था।

साहब बीवी और गुलाम गुरुदत्त द्वारा निर्मित यह फिल्म विमल मित्र के बंगाली उपन्यास पर आधारित है। इसमें जमींदारी और सामंतवाद के पतन को दर्शाया गया है। इस फिल्म ने चार फिल्म फेयर पुरस्कार जीते थे।

पारसमणि यह एक फंतासी संगीतमय फिल्म है। लक्ष्मीकांत प्यारेलाल संगीतकारों की यह पहली फिल्म है। इसका गीत हंसता हुआ नूरानी चेहरा ...आज भी लोगों को झूमने पर मजबूर कर देता है।

बंदिनी इसमें भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में गाँव की साधरण महिलाओं का योगदान दर्शाया गया है। गुलजार ने पहला गीत इसी फिल्म के लिए लिखा था- मोरा गोरा अंग लइलो... लेकिन रिलीज पहले काबुलीवाला फिल्म हो गई थी।

दोस्ती यह बंगाली फिल्म लालू भोलू (1959) की रिमेक थी। लेकिन उसे फिल्म से कहीं अधिक हिंदी में बनी दोस्ती प्रख्यात हुई। इसमें अंधे और लंगड़े दो दोस्तों की कहानी है। इसमें त्याग का मार्मिक चित्रण है। इस फिल्म ने पांच फिल्म फेयर पुरस्कार जीते हैं। इसके गीत कालजयी है।

उपकार यह फिल्म एक तरह से लाल बहादुर शास्त्री के जय जवान जय किसान नारे का फिल्मातरण है। जो देशभक्ति से ओतप्रोत है। इस फिल्म के आने के बाद शायद ही कोई 26 जनवरी और 15 अगस्त होगा जिसमें इस फिल्म का गीत मेरे देश की धरती सोना उगले... न बजा हो। इस फिल्म को सात फिल्म फेयर पुरस्कार मिले थे।

आराधना प्रेम में बलिदान तो कई फिल्मों में देखा जा सकता है। लेकिन यहां अंदाज बयां का जादू सर चढ़कर बोला। यह एक संगीत में फिल्म थी। इस फिल्म के बाद ही राजेश खन्ना स्टार बने थे।

भुवनशोम मृणाल सेन द्वारा निर्मित इस फिल्म से औपचारिक रूप से समानांतर सिनेमा का आरंभ माना जाता है।

सात हिंदुस्तानी यह फिल्म ख्वाजा अहमद अब्बास द्वारा निर्मित है। इसमें गोवा को पुर्तगालियों से आजाद कराने की कहानी है। यहां अमिताभ बच्चन की पहली फिल्म है। यह फिल्म हिट नहीं रही। अमिताभ बच्चन की आरंभिक फिल्में हिट नहीं रही थी। उदाहरण परवाना तथा रेशमा और शेर आदि। 1970 के पूर्व संगीत का जादू फिल्मों को हिट बनाने का एक प्रमुख तत्व संगीत बना हुआ था। जो आगे भी बड़ा पर गति कहीं-कहीं धीमी हो गई थी।

बोध प्रश्न

- 603 फिल्मों की क्या विशेषताएँ रही हैं?

13.3.8 70 के दशक की फिल्में

इस दशक को मसाला फिल्मों का दर्शक भी कहा जाता है। यहाँ तक आते-आते फिल्में पूर्णता एक उद्योग बन चुकी थी। व्यवसायिकता फिल्मों का ध्येय बन रहा था। इस समय पौराणिक, ऐतिहासिक, सामाजिक, पारिवारिक आदि पहलुओं से फिल्मों का कथानक कहीं कुछ

नया करने की फिराक में माफिया पर आधारित कथानकों की ओर बढ़ा इसे बढ़ावा देने वाले थे तत्कालीन पटकथा लेखक सलीम जावेद। इससे पहले संगीतमय युग रहा था। सलीम जावेद ने फिल्मों में माफिया की हिंसा के दौर का आरंभ किया। मुंबई अंडरवर्ल्ड की कहानियों को फिल्मों का हिस्सा बनाया। उनकी फिल्में रही जंजीर (1973) दीवार (1974) इन फिल्मों में एक पक्ष यह भी दिखाया है कि युवाओं का शासन व्यवस्था या कानून से विश्वास उठता जा रहा है। इन्हीं फिल्मों के कारण अमिताभ बच्चन स्टार बने और एंग्री यंगमैन कहलाए । सलीम जावेद द्वारा लिखी फिल्म यादों की बारात 1973 मसाला फिल्म कहलाई। इस दशक की कुछ मुख्य फ़िल्में रही 1970 की हीर रांझा तथा मेरा नाम जोकर आदि ।

1971 की आनंद तथा मेरा गांव मेरा देश।

1972 की पाकीज़ा, 1973 की बॉबी, ब्लैकमेल व ज़ंजीर आदि।

1974 की रोटी कपड़ा और मकान। 1975 की आंधी, दीवार तथा जय संतोषी माँ आदि। 1976 की कभी-कभी, 1977 की अमर अकबर एंथोनी तथा हम किसी से काम नहीं, 1978 की मुकद्दर का सिकंदर तथा काला पत्थर, 1979 की सरगम आदि।

हीर रांझा प्रख्यात कथानक का यह फिल्मांतरण है जिसको चेतन आनंद ने लिखा इसके सारे संवाद शायरी/ काव्यमय है।

मेरा नाम जोकर यह राज कपूर द्वारा निर्मित है इसका लेखन कार्य ख्वाजा अहमद अब्बास ने किया है। इस फिल्म के लिए इसके संगीतकार शंकर जयकिशन निर्देशक राज कपूर और गायक मन्नाडे को फिल्म फेयर पुरस्कार प्राप्त हुए थे।

आनंद यह फिल्म ऋषिकेश मुखर्जी द्वारा निर्मित है। इस फिल्म को सर्वश्रेष्ठ फिल्म के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुआ तथा 6 फिल्म फेयर पुरस्कार प्राप्त हुए।

पाक़ीज़ा 1970 का सबसे अधिक बिकने वाला साउंड ट्रैक के रिकॉर्ड के साथ, इस वर्ष में सबसे अधिक धन कमाने वाली फिल्म के रूप में यह प्रख्यात है। मीना कुमारी को इस फिल्म के लिए सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का फिल्म फेयर पुरस्कार प्राप्त हुआ था।

ज़ंजीर यह सलीम जावेद द्वारा लिखित और प्रकाश मेहरा द्वारा निर्मित फिल्म है। इस फिल्म के कारण अमिताभ बच्चन फिल्मों के बेताज बादशाह बन गए। इस फिल्म ने सिनेमा को आक्रामक और हिंसक दिशा की ओर अग्रसर किया।

आंधी यह फिल्म साहित्यकार कमलेश्वर के काली आंधी उपन्यास पर आधारित है। इसकी पटकथा निर्देशन और गीत गुलजार के हैं। इसमें नायिका का चरित्र इंदिरा गांधी से मेल खाता है। आपातकाल के समय इसे प्रतिबंधित कर दिया गया था। 1977 के पश्चात जनता पार्टी ने इसका प्रतिबंध हटाकर इसे दूरदर्शन पर भी दिखाया था।

दीवार यह मुंबई के माफिया पर आधारित एक एक्शन और क्राइम ड्रामा फिल्म है। एक तरह से यह Anti Hero खलनायक को नायक बनाने वाली फिल्म है।

हम किसी से काम नहीं यह नासिर हुसैन की संगीतमय फिल्म थी जो सुपरहिट रही है। यह त्रिकोणीय प्रेम कथा पर आधारित है। इसके गीत सदाबहार रहे हैं।

सरगम यह फिल्म के विश्वनाथ के तेलुगु फिल्म श्री श्री मुव्आ का रिमेक है। इसे एक फिल्म फेयर पुरस्कार प्राप्त हुआ है यह फिल्म भी मधुर गीतों से भरी है।

इस दशक को अमिताभ बच्चन के उत्थान का दर्शन कहें तो गलत ना होगा। उनकी पहली फिल्म सात हिंदुस्तानी 1969 में आई। फिर 1971 में परवाना, रेशमा और शेरा तथा आनंद 1972 में बंबई टू गोवा रास्ते का पत्थर ।

इन उपयुक्त फिल्मों के पश्चात इत्तेफाक से देवानंद के मना करने पर अमिताभ बच्चन को मिली फिल्म जंजीर ने उनके फ्लॉप फिल्मों की सारे जंजीरों को तोड़कर उनसे आजाद होकर ये हिट फिल्मों के वातावरण में सांस लेने लग। इसके बाद जो उनकी फिल्में आई वह हिट पर हिट रही। उदाहरण 1975 में दीवार 1977 में अमर अकबर एंथोनी 1978 में डॉन, मुकद्दर का सिकंदर तथा त्रिशूल, 1979 में काला पत्थर आदि। हालांकि इसी दौर में राजेश खन्ना धर्मेंद्र संजीव कुमार जैसे कई कलाकारों ने भी दर्शकों को अपनी फिल्मों से मंत्र मुग्ध किया है।

मनमोहन देसाई को जिन्होंने अमर अकबर एंथोनी बनाई उन्हें मसाला फिल्मों का जनक माना गया है।

बोध प्रश्न

- 70 के दशक को किस अभिनेता का दशक कहा जा सकता है ? और क्यों?

13.3.9 80 के दशक की फिल्में

यह समय फिल्मों में प्रेम कहानियों का रहा। प्रेम कभी पुराना और फीका नहीं होता यह अलग बात है कि समय और संदर्भ के अनुसार विषय बदल जाते हैं। सन 1973 में बॉबी फिल्म आई थी। इसी का विस्तार आगे चलकर लव स्टोरी (1981) प्रेम रोग (1982) बेताब (1983) हीरो (1983) कयामत से कयामत तक (1988) तथा मैंने प्यार किया (1989) जैसी फिल्में हिट रही। फिल्म हीरो के एक अपवाद को छोड़ दें तो यह स्टार या फिल्म से जुड़ी बड़ी हस्तियों के बच्चों का यह ज़माना था।

इस दशक की कुछ मुख्य फ़िल्में रही- 1980 की कर्ज़, कुर्बानी तथा शान। 1981 की एक दूजे के लिए, क्रांति, नसीब, उमराव जान व रॉकी आदि। 1982 की डिस्को डांसर, नमक हलाल, शक्ति व विधाता आदि। 1983 की बेताब, हीरो, वो 7 दिन व नौकर बीवी का आदि। 1984 की मशाल, सारांश व सोहनी महिवाल आदि। 1985 की राम तेरी गंगा मैली, मेरी जंग व सागर आदि। 1986 की लव 86, कर्मा, इल्ज़ाम व नाम आदि। 1987 में आई मि.इंडिया।

1988 में कयामत से कयामत तक, सलाम बाम्बे, शहंशाह व तेजाब आदि। 1989 में मैंने प्यार किया, मुज़रिम तथा परिंदा आदि। इस दशक में फिल्मों में एक नई पीढ़ी का आगाज हो रहा था। 1981 में संजय दत्त की पहली फिल्म रॉकी और कुमार गौरव की पहली फिल्म लव स्टोरी आई। 1983 में सनी देओल की पहली फिल्म बेताब और जैकी श्रॉफ की नायक के रूप में पहली फिल्म हीरो और नायक के रूप में अनिल कपूर की पहली फिल्म वो 7 दिन, 1986 में गोविंदा की पहली फिल्म लव 86, 1988 में आमिर खान की पहली फिल्म कयामत से कयामत तक और 1989 में सलमान खान की पहली फिल्म मैने प्यार किया रिलीज हुई थी।

इस प्रकार यह दशक नवागंतुकों का दशक रहा जिन्होंने आगे बॉलीवुड में अपनी कला के बल पर खूब लोकप्रियता हासिल की और हिंदी सिनेमा के विकास में अपना योगदान दिया।

सन् 1988 में दशक की विशेष बात यह रही कि इसी वर्ष तीन फिल्में बहुत लोकप्रिय हुई एक कयामत से कयामत तक जो दुखांत प्रेम कहानी है जिसे रोमियो जूलियट पर आधारित भी कहा गया है । इसने 8 फिल्म फेयर पुरस्कार जीते। दूसरी फिल्म तेज़ाब इसे एक हिंसक प्रेम कहानी नाम दिया गया। इसने 4 फिल्म फेयर पुरस्कार जीते। तीसरी फिल्में सलाम बॉम्बे यह मीरा नायर द्वारा निर्देशित फिल्म है। इसमें मुंबई की झोपड़पट्टी में जिंदगी गुज़ारने वाले बच्चों की कारुणिक स्थिति को मार्मिक में ढंग से दर्शाया गया है।

ऊपर्युक्त तीनों फिल्में बिल्कुल अलग-अलग है। एक चॉकलेटी प्रेम कहानी है तो दूसरी हिंसक प्रेम कहानी तो तीसरी झोपड़पट्टी के बच्चों की कहानी। ताज्जूब ये है कि एक समय तीन अलग-अलग वातावरण की फिल्मों को पसंद किया जा रहा था। होता यह है कि अगर कोई प्रेम कहानी पर फिल्म हिट हो जाती है तो अन्य निर्माता निर्देशक भी प्रेम कहानियों पर फिल्म निर्माण करने की बात सोचते हैं। लेकिन यहाँ तीन अलग अलग फिल्में हैं और तीनों हिट है। अर्थात दर्शकों को कब क्या पसंद आता है यह अपनी जगह है दूसरी बात यह है कि अगर कहानी में क्षमता है निर्देशक अभिनेता आदि सभी ने ईमानदारी और दिल से परिश्रम किया हो तो लोगों को फिल्म पसंद आती है। अपवादों को छोड़ दें।

बोध प्रश्न

- 80 का दशक युवा पीढ़ी का दशक रहा है। सिद्ध कीजिए।
- 1988 में भिन्न विषयों पर आधारित कौन सी तीन फिल्में हिट रही? और क्यों?

13.3.10. 90 के दशक की फिल्में

यह 20वीं सादी का अंतिम दशक था। यह फिल्मों में विविधता के साथ संगीत का सुहाना सफर भी साथ लेकर आया। इस समय फिल्मों में संगीत व गीतों का कर्णप्रिय होना फिल्मों के लिए बड़ा लाभप्रद रहा। इस दौर की मशहूर संगीतकारों की जोड़ी नदीम श्रवण की रही। संगीतमय फिल्में थी- 1990 की आशिकी, दिल । 1991 की दिल है के मानता नहीं,

साजन तथा सड़क । 1992 की बेटा, दीवाना व जो जीता वह सिकंदर । 1993 की डर, खलनायक ये सारी फिल्में बहुत ही हिट रही हैं।

फिल्म की कहानियों में भले ही विविधता हो लेकिन सभी फिल्मों को संगीत लेकर आगे बढ़ा है।

डर और खलनायक एक तरह से दीवार फिल्म की परंपरा में खलनायक को नायक बना रहे थे।

प्रवासी भारतीयों पर भी फिल्में बनने लगी थी। उन्हें फिल्मों के नायक के रूप में दर्शाया जाने लगा था। वरना अप्रवासी भारतीयों की हिंदी फिल्मों में नगण्य भूमिका हुआ करती थी। लेकिन लम्हे (1991), दिलवाले दुल्हनिया ले जायेंगे (1995) तथा परदेस (1997) में अप्रवासीय भारतीयों को नायक के रूप में दर्शाया गया।

इस दशक की फिल्मों में कहानियों में आ रहे बदलाव को देखा जा सकता है। फिल्मों में उच्च वर्ग या उच्च मध्यवर्ग का चित्रण इसका कारण था उदारीकरण, भूमिगत माफिया का फिल्मों पर प्रभाव आदि।

इस दशक की कुछ और प्रमुख फिल्में रही- 1990 की आवारगी, 1991 की घायल, हिना, हम, सौदागर व सौगंध आदि। 1992 की बेटा, रोजा, दीवाना व माया मेम साहब आदि। 1993 की बाज़ीगर हम हैं राही प्यार के व रुदाली आदि। 1994 की 1942 ए लव स्टोरी, मोहरा, मैं अनाड़ी तू खिलाड़ी आदि। 1995 की बरसात, बाम्बे, करण अर्जुन व रंगीला आदि। 1996 की द फायर, माचिस, द मेकिंग ऑफ़ महात्मा व राजा हिंदुस्तानी आदि। 1997 की बॉर्डर, दिल तो पागल है, कोयला व विरासत आदि। 1998 की दुश्मन, ग़ुलाम, करीब व प्यार किया तो डरना क्या आदि। 1999 की हम दिल दे चुके सनम, संघर्ष, सरफरोश, ताल तथा वास्तव आदि।

आवारगी इस फिल्म को आलोचनात्मक प्रशंसा मिली। इसका संगीत भी बहुत लोकप्रिय रहा विशेष कर गुलाम अली की गजल चमकते चांद को...

सौगंध इस फिल्म से अक्षय कुमार का हिंदी फिल्मों में प्रवेश हुआ।

दीवाना शाहरुख खान की पहली रिलीज हुई फिल्म है। 1992 में बेटा के बाद यह सबसे अधिक कमाई करने वाली फिल्म बनी ।

माया मेमसाब यह गुस्ताव फ्लेबर्ट के 1857 के उपन्यास मैडम बाोवेरी पर आधारित है। इस फिल्म ने राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार भी जीता है।

रुदाली इसे ए राष्ट्रीय और फिल्म फेयर पुरस्कार प्राप्त हुए हैं।

द फायर यह दीपा मेहता द्वारा लिखित और निर्देशित है। यह कामुक रोमांटिक ड्रामा है जिसमें लेस्बियन प्रेम कहानी है। यह मंटो की कहानी लिहाफ पर आधारित है।

माचिस इस गुलज़ार की फिल्म में पंजाब के आतंकवाद की कहानी है। इस प्रकार यह दशक अनेक प्रकार की विविधताओं के विषयों के बावजूद संगीतमय दशक कहलाया।

बोध प्रश्न

- 1990 के दशक में अप्रवासीय भारतीयों पर फिल्म निर्माण के क्या कारण रहे हैं?

13.3.11. 2000 के दशक की फिल्में

इस दशक के आरंभ में भी संगीतमयता कायम थी। जैसे 2000 की फिल्में मोहब्बतें और कहो ना प्यार है। 1991 की रिफ्यूजी। साथ ही सामाजिक मुद्दों पर भी फिल्में बन रही थी। उदाहरण 2001 की एक तरफ चांदनी बार तो दूसरी तरफ कंपनी। अर्थात विषयों की विविधता भी बनी रही।

इस दशक में निर्देशक मधुर भंडारकर की सामाजिक मुद्दों वाली फिल्में बहुत चर्चित रही। इन फिल्मों ने कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार भी बटोरे हैं। इनकी मुख्य फ़िल्में रही हैं- चांदनी बार (2001) पेज 3 (2005) कॉरपोरेट (2006) ट्रैफिक सिग्नल (2007) तथा फैशन (2008) आदि।

इस समय फिल्मों को हिट करने के लिए नए-नए रास्ते अपनाए जा रहे थे। जैसे फिल्म रिलीज से पहले विवादों में होना, नायक और नायिका के अफेयर की चर्चा होना। टीवी शोज में जाकर फिल्मों का प्रमोशन करना अब अनिवार्य सा होता जा रहा था। देश भक्ति फिल्मों का ज़ोर रहा। जैसे स्वदेश (2004) रंग दे बसंती (2006) चक दे इंडिया (2007)। यह देशभक्ति से ओतप्रोत फिल्में थी। इन फिल्मों में देशभक्ति का रूप अंग्रेजों से आज़ादी का नहीं बल्कि अपने देश के विकास में असाधारण योगदान देने वाला देश भक्ति का रूप रहा। इस दशक की कुछ अन्य प्रमुख फिल्में रही-

2000 ई. की फिल्में -कहो ना प्यार है, बादल, धड़कन, मेला, फ़िज़ा, गज गामिनी, हेरा फेरी, जोश, कुंवारा व क्या कहना आदि।

2001 ई.की फिल्में- अक्स, दिल चाहता है, ग़दर :एक प्रेम कथा, कभी खुशी कभी गम, लगान, नायक व यादें आदि।

2002 ई.की फिल्में- देवदास, कुछ तुम कहो कुछ हम कहें, माँ तुझे सलाम, राज़ व द लेजेंड ऑफ़ भगत सिंह आदि।

2003 ई की फिल्में- चलते चलते, बागबान मुन्ना भाई एमबीबीएस व एलओसी कारगिल आदि।

2004 ई.की फिल्में- मैं हूँ ना, धूम, मुझसे शादी करोगी, हलचल व ऐतराज आदि।

2005 ई की फिल्में- सलाम नमस्ते, गरम मसाला, मंगल पांडे, सरकार व दस आदि।

2006 ई की फिल्में- धूम-2, लगे रहो मुन्ना भाई, कभी अलविदा न कहना, फ़ना, भागम भाग व विवाह आदि।

2007 ई की फिल्में- ओम शांति ओम, तारे ज़मीन पर, हे बेबी, गुरु, भूल भुलैया, नमस्ते लंदन व सांवरिया आदि।

2008 ई की फिल्में- गजनी, रब ने बना दी जोड़ी, सिंह इस किंग, जोधा अकबर, दौड़, गोलमाल रिटर्न व सरकार राज आदि ।

2009 ई की फिल्में- अजब प्रेम की गजब कहानी, दे दना दन, व चांदनी चौक टू चाइना आदि।

कहो ना प्यार है यह रितिक रोशन और अमीषा पटेल की पहली फिल्म थी। इसने पाँच फिल्म फेयर पुरस्कार जीते।

ओम शांति ओम यह दीपिका पादुकोण की पहली हिंदी फिल्म थी। इस फिल्म ने दो फिल्म फेयर पुरस्कारों के साथ ही अनेक पुरस्कार जीते हैं।

सांवरिया यह रणवीर कपूर और सोनम कपूर की पहली फिल्म है । यह संजय लीला भंसाली द्वारा निर्मित फिल्म है।

इस दशक में कई नए चेहरे सामने आए जिन्होंने आगे चलकर हिंदी फिल्म उद्योग के विकास में अपना योगदान रेखांकित किया।

सन् 2008 में भारत में फिल्म और टीवी के लिए एक क्रांति का जन्म हुआ जिसका नाम था OTT (Over the top)। भारत में इसे रिलायंस एंटरटेनमेंट ने वर्ष 2008 में ओटीटी प्लेटफॉर्म Bigflix को लांच किया।

इस प्रकार फिल्मों के एक नए विकास का दौर सामने आता है। अब फिल्में आपके मोबाइल में मौजूद है नई भी और पुरानी भी।

बोध प्रश्न

- 21 वीं सदी के पहले दशक की सामाजिक मुद्दों वाली फिल्म :चर्चा कीजिए।

13.3.12 2010 के दशक की फिल्में

अब समानांतर और व्यावसायिक दोनों फिल्मों के बीच की लकीर धुंधली पड़ रही थी। वैसे आरंभिक फिल्मों में भी ऐसी कोई लकीर नहीं थी। वह तो 70 के दशक में फिल्मों के कुछ दो वर्ग बन गए थे।

इस समय डिजिटल क्रांति का युग था। सन् 2010 में Digivive ने NEXGTV नाम से ओटीटी मोबाइल ऐप लॉन्च किया। इसके माध्यम से वीडियो ऑन डिमांड टीवी भी देखा जा सकता था। आज तो अनेक ओटीटी प्लेटफॉर्म है। उदाहरण Amazon, Netflix, Hot

Discovery, zee5, Sony liv आदि । ओटीटी द्वारा शॉर्ट फिल्म, 3 घंटे की फिल्म तथा 12 घंटे की वेब सीरीज आसानी से उपलब्ध हो रही थी और है ।

अब फिल्में सितारों की अपेक्षा कंटेंट के बल पर चलने लगी थी। इसीलिए आयुष्मान खुराना, इरफान खान व नवाजुद्दीन सिद्दीकी जैसे कलाकारों की फिल्में भी चलने लगी जो बड़े स्टार नहीं थे।

इस दशक में बायोपिक भी खूब चले। जैसे मेरीकॉम(2014), मांझी द माउंटेनमैन (2015), नीरजा (2016), सरबजीत (2016) व पैडमैन 2018 आदि। इन फिल्मों को Content फिल्म कह सकते हैं।

सरबजीत जैसे आम आदमी को लेकर भी फिल्म बन रही थी।

नायिका प्रधान फिल्में भी इस समय चर्चित और सफल रही जिसमें तनु वेड्स मनु (2011) तथा राजी (2018) जैसी फ़िल्में हैं।

इस दशक की कई फिल्में हैं जो बॉक्स ऑफिस और दर्शन दोनों को खुश कर रही थी।

इस दशक की कुछ मुख्य फ़िल्में हैं-

2010 ई की फिल्में माइ नेम इस खान, बैंड बाजा बारात, दबंग, हाउसफुल, तीस मार खान, अतिथि तुम कब जाओगे, आदि।

2011 ई.की फिल्में - रावन डॉन-2, सिंघम, रॉकस्टार, जिंदगी ना मिलेगी दोबारा व प्यार का पंचनामा आदि।

2012 ई की फिल्में- एक था टाइगर, दबंग 2, जब तक है जान, राउडी राठौर, अग्निपथ व विकी डोनर आदि।

2013 ई की फिल्में- धूम- 3, चेन्नई एक्सप्रेस, कृष -3, दौड़-2, आशिक 2, भाग मिल्खा भाग व रामलीला आदि।

2014 ई की फिल्में- एक विलन, सिंघम रिटर्न्स, जय हो व पीके आदि।

2015 ई की फिल्में- बजरंगी भाईजान, प्रेम रतन धन पायो, दिलवाले व दृश्यम् आदि।

2016 ई की फिल्में- दंगल, सुल्तान, ऐ दिल है मुश्किल व हाउसफुल- 3 आदि।

2017 ई की फिल्में- टाइगर जिंदा है, हिंदी मीडियम, टॉयलेट: एक प्रेम कथा, गोलमाल अगेन, रईस, जुड़वा 2 व बद्री की दुल्हनिया आदि।

2018 ई की फिल्में- संजू, पद्मावत, अंधाधुन, सिंबा, दौड़-4, बागी 2 व पैडमैन आदि।

2019 ई की फिल्में- युद्ध, कबीर सिंह, उरी: द सर्जिकल स्ट्राइक, भारत, गली ब्वॉय व दबंग 3 आदि।

विक्की डोनर यह आयुष्मान खुराना की पहली फिल्म थी। यह फिल्म शुक्राणु दान और बचपन को लेकर निर्मित की गई थी।

बैंड बाजा बारात यह रणवीर सिंह की पहली फिल्म थी। यह आदित्य चोपड़ा द्वारा निर्मित फिल्म है।

प्यार का पंचनामा यह कार्तिक आर्यन की पहली फिल्म थी। कार्तिक आर्यन आगे चलकर बहुत हिट रहे।

इस दशक में दो नए सितारे उभरे जो आगे आगे खूब चले।

बोध प्रश्न

- 2010 के दशक की बायोपिक फिल्मों पर प्रकाश डालिए।
- 2010 के दशक में ओटीटी का दायरा कैसे विस्तृत हुआ?

13.3.13 2020 के दशक की आरंभिक फिल्में

इस दशक के आरंभ में ही नायिका पर आधारित फिल्मों का वर्चस्व रहा। 10 जनवरी 2020 को नायिका दीपिका पादुकोण द्वारा अभिनीत व मेघना गुलजार द्वारा निर्देशित छपाक फिल्मा आई। यह फिल्म एक आम लड़की मालती की सच्ची कहानी पर आधारित थी।

24 जनवरी 2020 को नायिका कंगना रनौत की फिल्म पंगा आई। इसका निर्देशन अश्विनी अय्यर ने किया है। यह एक कबड्डी खिलाड़ी की कहानी है।

28 फरवरी 2020 को नए का तापसी पन्नू की फिल्म थप्पड़ आई। इसके निर्देशक अनुभव सिन्हा थे। इसने सात फिल्म फिर पुरस्कार जीते हैं।

2020 में तानाजी और बागी 3 फिल्म भी उल्लेखनीय रही। इन चार वर्षो की कुछ और मुख्य फ़िल्में रही हैं।

2021 ई की फिल्में- सूर्यवंशी, बेल बॉटम, बंटी और बबली -2, राधे, और शेरशाह आदि।

2022 ई की फिल्में - आर आर आर, ब्रह्मास्त्र दृश्यम्- 2, द कश्मीर फाइल्स, भूल भुलैया 2, गंगूबाई काठियावाड़ी, राधे श्याम, लाल सिंह चड्ढा, राम सेतु, हीरोपंती, तथा धाकड़ आदि।

2023 ई की फिल्में- पठान, जवान, एनिमल, ग़दर 2, डंकी, टाइगर- 3, आदिपुरुष, OMG- 2, गांधी गोडसे : एक युद्ध, द केरल स्टोरी, IB 71 ड्रीम गर्ल 2 तथा Sam बहादुर आदि।

शेरशाह यह ओटीटी पर प्रदर्शित फिल्म रही है। इसका निर्देशन विष्णुवर्धन ने किया है। यह फिल्म परमवीर चक्र विजेता कप्तान विक्रम बत्रा के जीवन पर आधारित बायोपिक है।

आर आर आर यह राजमौली की फिल्म है जिसने बाहुबली फिल्म से अपना लोहा मनवाया है। यह मूल तेलुगु में बनी है। इसके एक गीत के लिए ऑस्कर पुरस्कार भी प्राप्त हुआ है।

द कश्मीर फाइल्स यह विवेक अग्निहोत्री द्वारा लिखित और निर्देशित फिल्म है। यह फिल्म कश्मीरी हिंदू पंडितों के साथ लिए गए वीडियो साक्षात्कार तथा वास्तविक घटनाओं पर आधारित है। यह फिल्म रिलीज होने से पहले और बाद में विवादों में रही।

गंगूबाई काठियावाड़ी यह एक बायोपिक फिल्म है। 1960 के दशक में मुंबई के कमाठीपुरा प्रांत में यह एक वेश्यालय की मुखिया रही थी। इसने यौन कर्मियों के अधिकारों के लिए काम किया था।

द केरल स्टोरी विपुल शाह द्वारा निर्मित और सुदीप्तो सेन निर्देशित यह फिल्म है। इसमें एक केरल की तीन छात्राओं की कहानी है जो धर्मांतरण कर मुस्लिम बन जाती है। यह लव जिहाद पर आधारित फिल्म है।

सन् 2023 में शाहरुख खान की लगातार तीन फिल्में रिलीज हुई जिनमें पठान, जवान तथा डंकी रही है।2024 में फाइटर फिल्म की खूब चर्चा हो रही है।

इसमें कोई दो राय नहीं है कि किसी भी अन्य माध्यम की अपेक्षा फिल्मों का प्रभाव समाज पर सबसे अधिक पड़ता है। इसीलिए फिल्म निर्माण करने वालों का दायित्व और भी बढ़ जाता है। उन्हें समाज पर इसका कोई कुप्रभाव न पड़े इसका भी ध्यान रखना अनिवार्य है।

दादा साहब फाल्के ने ईसा मसीह पर आधारित फिल्म देखी तो उनका ध्येय यही रहा था कि मैं भी अपने प्राचीन साहित्य को, कृष्ण के रूप को लोगों के समक्ष प्रस्तुत करूँगा। और उन्होंने किया भी। आरंभिक फिल्में प्राचीन साहित्य को लेकर आगे बढ़ी हैं। 1931 में बोलती फिल्मों का आगाज भी साहित्य से हुआ। मूक फिल्मों में भी सामाजिक विषय का दखल था ।जैसे सवकारी पाश (1925) एक सामाजिक फिल्म रही। इसके पश्चात सामाजिक चित्रण ने फिल्मों में अपना स्थान बना लिया।

फिर तो ऐसा रहा कि कभी फिल्म समाज के आगे है तो कभी समाज के पीछे कहीं वह आगे है तो फिल्म उसके पीछे, फिल्मों की फैंटसी, जादूगरी, अय्यारी समाज से आगे निकल गई थी। इसके पश्चात सामाजिक समस्याएं भी फिल्मों में अपनी मौजूदगी का एहसास दिलाने लगी।

कभी फिल्मों में संगीत हावी रहा तो कभी खलनायक को हीरो बनाने की दौड़ लगी। कभी प्रेम कहानी हम हुई तो कभी बॉयोपिक ने भी अपनी मौजूदगी दर्ज की आदि ।

जीवन का शायद कोई ऐसा पहलू होगा जिसकी चर्चा फिल्मों में न हुई हो। यही बात नाटक को लेकर नाट्यशास्त्रकर भरतमुनि ने कही थी कि इसमें सभी का चित्रण होगा।

"उत्तमाधममध्यानां नराणां कर्मसंश्रयम् ।

हितोपदेशजननं धृतिक्रीडासुखदिकृत ।110।

अर्थात यह जो नाट्य है इसमें प्रदर्शित किए जाते हैं सभी के कर्म चाहे वे उत्तम के हो, चाहे अधमों के या फिर मध्यवर्ती (उत्तमाधमों के मिश्रण वाले) के। किंतु इसका उद्देश्य है हित-साधक मार्ग का उपदेश, वह भी ऐसा जिसमें धृति उत्पन्न हो, विनोद भी हो और जो सुखकारी

ही हो।"(नाट्यशास्त्र खंड -1 संपादक, अनुवादक, टिप्पणीकार, महा महोपाध्याय- आचार्य रेवा प्रसाद द्विवेदी पृ. सं. 28 -29)

उपर्युक्त भरतमुनि के श्लोक में नाटक के विषय में जो कहा गया है वे बातें फिल्म पर भी लागू होती हैं। क्योंकि फिल्म भी नाटक का अगला रूप है। और बहुत सी बात फिल्मों पर लागू हो भी रही हैं। जैसे फिल्मों में उत्तम के, अधम के. मध्यवर्ती के सभी के कर्म दर्शाए जाते हैं। विनोद भी होता है और सुखकारी भी होता है। लेकिन हित साधक मार्ग का उपदेश जो ग्रहण किया जा सके। इसको प्रत्येक फिल्में नहीं तो कई फिल्मों में अनदेखा किया जा रहा है। जिसका परिणाम अराजकता में देखा जा सकता है। हित साधन को थोड़ा फिल्मों में रेखांकित किया जाए तो फ़िल्में और भी सार्थक होने की संभावना हो सकती है।

बोध प्रश्न

- 2020 के दशक के आरंभ में नायिका पर आधारित फिल्में: चर्चा कीजिए।
- द कश्मीर फाइल्स और द केरल स्टोरी फिल्मों पर प्रकाश डालिए।

13.4 : पाठ सार

हिन्दी फिल्मों का सफर भारत में पहली फिल्म राजा हरिश्चंद्र के आने से पहले ही आरंभ हो गया था। मूक फिल्मों में पौराणिक कथनको पर ज़ोर रहा। सन् 1931 में बोलती फिल्म का आरंभ भी साहित्य से ही हुआ। सन् 1934- 35 से क्रमशः फिल्मों में पार्श्व संगीत व गायन का आगमन हुआ। जो फिल्मों के विकास में मिल का पत्थर साबित हुआ। सन्1917 तक फिल्मों का निर्माण निजी तौर पर हुआ। उसके पश्चात फिल्म कंपनियों ने फिल्मों पर अपना वर्चस्व स्थापित किया। वैसे धीरे धीरे फिल्मों का बजट भी बढ़ने लगा था। आरंभ में ही दादा साहब फाल्के को फिल्म के निर्माण में आर्थिक तंगी का सामना करना पड़ा था। इस दृष्टि से फिल्म कंपनियों का आना स्वाभाविक ही था। इन फिल्म कंपनियों में कुछ मुख्य है- कोहिनूर फिल्म कंपनी (1918) संस्थापक द्वारकाधीश नरेंद्र दास संपत, इंपीरियल फिल्म कंपनी (1926) संस्थापक आर्देशिर ईरानी, युसूफ अली तथा दाऊजी रंग वाले, सागर मूवीटोन (1929) संस्थापक आर्देशिर ईरानी, चिमनलाल देसाई और डॉ. अंबालाल पटेल, प्रभात फिल्म कंपनी (1929) संस्थापक वी. शांताराम, फतेह लाल केशव ढैबर तथा सीताराम कुलकर्णी, रंजीत स्टूडियो (रंजीत मूवीटोन) (1929) संस्थापक चंदूलाल शाह और गौहर खान, न्यू थिएटर (1931) संस्थापक बी .एन.सरकार, ईस्ट इंडिया फिल्म कंपनी (1932) स्थापक आर.एल . खेमका, वाडिया मूवीटोन (1933) संस्थापक जे.बी.एच. वाडिया तथा होमी वाडिया, बॉम्बे टॉकीज (1934) संस्थापक हिमांशु राय और देविका रानी। मिनर्वा मूवीटोन (1936) संस्थापक सोहराब मोदी।

इनके अतिरिक्त भी कई फिल्म कंपनियां रही जिनमें- राजकमल कला मंदिर, पैरामाउंट फिल्म कंपनी, सरस्वती सिनेटोन, सरोज मूवीटोन तथा प्रकाश पिक्चर्स आदि।

वर्तमान में लगभग 1000 फिल्म कंपनियां हैं जो विदेशों में भी फिल्में रिलीज करती हैं जिनमें मुख्य है- धर्मा प्रोडक्शंस, बालाजी मोशन पिक्चर्स, यशराज फिल्म, रेड चिल्लीस एंटरटेनमेंट, यू.टी.वी मोशन पिक्चर्स तथा एरोस इंटरनेशनल आदि।

साहित्य एक तरह से आधार है कई कलाओं का उदाहरण -नाटक फिल्म गायन आदि। फिल्म के आरंभ से ही साहित्य फिल्मों से जुड़ा रहा है। चाहे राजा हरिश्चंद्र हो या आलम आरा हो ये फिल्म पहले साहित्य के ही रूप थे। केवल हिंदी ही नहीं अनेक भाषाओं के साहित्य का हिंदी में फिल्मांतरण हुआ है।

राजनीति के मार्क्सवाद का साहित्य में प्रगतिवाद, फिल्म में इप्टा के सहयोग से प्रगतिवाद के आधार पर फिल्मों का निर्माण किया गया है। भारत विभाजन की खाई को पाटने के लिए कई फिल्मों का निर्माण किया गया जिसमें धूल का फूल तथा धर्म पुत्र आदि है।

1950 के दशक के प्रमुख फिल्मकार रहे- सोहराब मोदी, वी. शांताराम, राज कपूर बिमल राय तथा गुरुदत्त आदि।

सन् 1954 में फिल्मों को राष्ट्रीय पुरस्कार देने की घोषणा की गई। फिल्मों में सामाजिक समस्याओं को प्रमुख स्थान मिलने लगा।

सन् 1960 के दशक की कुछ उल्लेखनीय फिल्में रही- मुग़ल-ए-आज़म, बंदिनी, गंगा जमुना, काबुलीवाला, पारसमणि तथा दोस्ती आदि। पारसमणि और दोस्ती फिल्म गीतों के लिए विशेष लोकप्रिय रही।

सन् 1970 के दशक में मसाला फिल्मों का दौर रहा। अब फिल्म निर्माण ने पूर्णतया उद्योग का रूप ले लिया था। इस दशक में माफिया पर सकारात्मक फिल्में बनी। इस समय की उल्लेखनीय फिल्में रही हैं- ज़ंजीर, दीवार, अमर अकबर एंथोनी, मुकद्दर का सिकंदर, हम किसी से कम नहीं तथा सरगम आदि।

फिल्मों के हिट होने के आधार पर इस दशक को अमिताभ बच्चन के उत्थान का दशक कहा जाए तो गलत ना होगा।

सन् 1980 के दशक की फिल्मों में प्रेम कहानी छाई रही। जैसे रॉकी, लव स्टोरी, प्रेम रोग, बेताब, हीरो, कयामत से कयामत तक तथा मैंने प्यार किया जैसी फिल्मों का बोलबाला रहा। कुछ अपवाद को छोड़ दे तो यह दशक फिल्म से जुड़ी बड़ी हस्तियों के बेटों का रहा था जिसमें संजय दत्त, कुमार गौरव, सनी देओल, आमिर खान, सलमान खान तथा गोविंदा का आगमन हुआ इस तरह यह है युवा पीढ़ी का दशक रहा।

1990 का दशक 20वीं सदी का अंतिम दशक रहा। इस दशक में चाहे जितनी विविधता वाले विषय फिल्मों के रहे हो ।लेकिन इस दशक को मधुर गीतों और संगीत का दशक माना गया। मधुर गीतों और संगीत से सजी फिल्में रही- आशिकी, दिल, दिल है के मानता नहीं, साजन, सड़क, बेटा, दीवाना, जो जीता वही सिकंदर, डर व खलनायक आदि। इसी दशक में अक्षय कुमार और शाहरुख खान ने फिल्मों में नायक के रूप प्रवेश किया।

2000 का दशक यह 21वीं सदी का पहला दशक था। मधुर गीत और संगीत यहाँ भी अपनी मधुरता को कायम रखे हुए थे। अब समस्यात्मक और कारपोरेट जगत की फिल्मों का ज़ोर रहा। इसी दशक में दीपिका पादुकोण, ऋतिक रोशन, अमीषा पटेल, रणबीर कपूर व सोनम कपूर ने फिल्मों में प्रवेश किया। अब रिलायंस एंटरटेनमेंट कंपनी ने Bigflix नाम से ओटीटी भी लॉन्च कर दिया था।

2010 के दशक में समानांतर और व्यावसायिक फिल्मों के बीच की लकीर धुंधली सी हो रही थी। जो आरंभिक फिल्म में भी नहीं थी। 70 के दशक में समानांतर सिनेमा अस्तित्व में आया था। अब ओटीटी वर्चस्व विस्तृत हो रहा था। इस समय की प्रमुख फिल्में रही- माइ नेम इस खान, दबंग, डॉन- 2, सिंघम, रॉकस्टार, एक था टाइगर, अग्निपथ, विकी डोनर, दंगल, सुल्तान व पद्मावत आदि।

इसी दशक में रणवीर सिंह कार्तिक आर्यन तथा आयुष्मान खुराना ने नायक के रूप में बॉलीवुड में प्रवेश किया।

2020 के दशक के आरंभ में नायिका पर आधारित फिल्मों का ज़ोर रहा ।नायिक आधारित मुख्य फ़िल्में हैं- छपाक, पंगा तथा थप्पड़ आदि। आर आर आर, द कश्मीर फाइल्स, गंगूबाई काठियावाड़ी लाल सिंह चड्ढा, शेरशाह, द केरल स्टोरी, ग़दर -2 व पठान आदि फिल्में चर्चा में रही। 2024 में फाइटर फिल्म की खूब चर्चा हो रही है।

13.5 : पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन का निष्कर्ष होगा।

1. पहले मूक फिल्म आई फिर सवाक् फिल्म और फिर पार्श्व संगीत व गायन।
2. दादा साहब फाल्के को हिंदी सिनेमा का जनक माना जाता है।
3. सन् 1917 तक निजी तौर पर फिल्म निर्माण होता रहा उसके पश्चात फिल्म कंपनियों का आगमन हुआ।
4. आरंभिक फिल्म कंपनियों में प्रमुख रही इंपीरियल, प्रभात, रंजीत, न्यू थियेटर, वाडिया तथा बॉम्बे टॉकीज आदि।

5. साहित्य और सिनेमा का संबंध आरंभ से ही रहा है। अनेक भाषाओं के साहित्य के साथ आज भी हिंदी फिल्मों का रिश्ता अटूट है।

6. फिल्मों का कथानक संदर्भ अनुसार परिवर्तित होता रहा है।

7. 70 के दशक में व्यावसायिक तथा समानांतर के रूप में सिनेमा के दो प्रकार देखे गए।

8. 21वीं सदी में फिल्मों के विकास में ओटीटी रूप में एक नया प्लेटफार्म प्राप्त हुआ।

13.6 : शब्द संपदा

1. सिनेमा	=	फिल्म, चित्रपट, मूवी
2. मूक फिल्म	=	शब्द व ध्वनि रहित फिल्म
3. सवाक् फिल्म	=	बोलती फिल्म
4. पार्श्व संगीत	=	पर्दे के पीछे का संगीत
5. कथानक	=	कहानी, कथा, वृतांत
6. रिटेक	=	फिर से शूटिंग करना
7. नेगेटिव	=	फोटोग्राफिक फिल्म
8. SFX	=	स्पेशल इफेक्ट्स, विशेष प्रभाव
9. कैरियर	=	आजीविका, व्यवसाय
10. फिल्म उद्योग	=	फिल्म बनाने का उद्योग
11. पौराणिक	=	पुराण की कथा, पुराण का संदर्भ
12. स्टंट	=	करतब
13. फिल्मांतरण	=	किसी कथा, कहानी या अन्य विधा को फिल्म के रूप में परिवर्तित करना
14. सेंसरशिप	=	आपत्तिजनक सामग्री का विरोध करना, प्रतिबंध
15. उदारीकरण	=	आर्थिक सुधार की दिशा में उठाया गया एक प्रमुख कदम
16. माफिया	=	संगठित अपराधी गिरोह
17. बायोपिक	=	जीवनी परक फिल्म
18. OTT(ओटीटी)	=	ओवर द टॉप (over the top)

13.7 : परीक्षार्थ प्रश्न

खंड -(अ)

दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. बोलती फिल्मों के आने के बाद क्या मूक फिल्म चलते रही थी?

2. साहित्य और सिनेमा के संबंध को दर्शाते हुए प्रगतिवाद का फिल्मों पर क्या प्रभाव रहा स्पष्ट कीजिए।

3. स्वतंत्र्योत्तर से लेकर 60 के दशक की फिल्में चर्चा कीजिए।

4. 70 आशिक और 80 के दशक की फिल्मों की विशेषताएँ बताइए ।

5. 20 वीं सदी के अंतिम तथा 21 सदी के प्रथम दशक की फिल्मों का प्रकाश डालिए।

6.2010 से 2020 के दशक की फिल्मों में क्या क्या परिवर्तन हुएँ?

खंड (ब)

लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. इंपीरियल और प्रभात फिल्म कंपनियों का परिचय दीजिए।

2. चंदूलाल शाह और रंजीत फिल्म कंपनी: चर्चा कीजिए।

3. न्यू थियेटर फिल्म कंपनी का परिचय दीजिए।

4. वाड़िया और बॉम्बे टॉकीज़ फिल्म कंपनियों का परिचय दीजिए।

खंड (स)

1.सही विकल्प चुनिए-

1. हिंदी फिल्मों में पार्श्व गायन का आरंभ किस फिल्म से हुआ? ( )

अ) भाग्य चक्र आ) आलमआरा इ) धूप छाँव ई) अमृत मंथन

2. दो बीघा जमीन फिल्म के निदेशक कौन थे? ( )

अ) वि. शांताराम आ) सत्यजीत रे इ) सोहराब मोदी ई) बिमल रॉय

3. चंदूलाल शाह किस फिल्म निर्माण कंपनी के संस्थापक थे? ( )

अ) मिनर्वा मूवीटोन आ) रंजीत मूवीटोन इ) प्रभात फिल्म कंपनीई) वाडिया मूवीटोन

4. आलम आरा फिल्म के गीत दे दे खुदा के नाम पे प्यारे ताकत होकर देने की..( )

अ) के.एल.सहगल आ) वज़ीर मुहम्मद खान इ) के.सी.डे ई) पारुल घोष

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

1. न्यू इंडिया थिएटर लिमिटेड फिल्म कंपनी..... शहर में स्थित थी।

2. सन् 1936 में निर्मित फिल्म प्रेसिडेंट के निर्देश थे.....

3. कॉर्पोरेट फिल्म रिलीज हुई थी सन्..... में।

4. मुग़ल-इ-आज़म फिल्म के निर्माण में..... वर्षों का समय लगा था।

III. सुमेल कीजिए-

1. आर्देशिर ईरानी	अ) अयोध्याचे राजा
2. मधुर भंडारकर	आ) आलमआरा
3. हमराही	इ) पेज 3
4. सोहराब मोदी	ई) जन गण मन...
5. प्रभात फिल्म कंपनी	उ) मिनर्वा मूवीटोन

13.8 : पठनीय पुस्तकें

1. हिंदी चित्रपट एवं संगीत का इतिहास -डॉ विमल
2. साहित्य और सिनेमा डॉ. जालिंधर इंगले
3. हिंदी फिल्म संगीत- अनिल भार्गव
4. हिंदी सिनेमा का अंतःकरण- विनोद दास
5. सिनेमा और साहित्य- हरीश कुमार
6.हिंदी सिनेमा बीसवीं से इक्कीसवीं सदी तक - मुख्य संपादक प्रहलाद अग्रवाल
7. रंग दस्तावेज सौ साल (खंड-1)- महेश आनंद
8. दृश्य श्रव्य संप्रेषण और पत्रकारिता -डॉ जेम्स एस.मूर्ति
9. नाट्यशास्त्र खंड-1 संपादक अनुवादक टिप्पणीकार महामहोपाध्याय - आचार्य रेवा प्रसाद द्विवेदी
10. कहानी का रंगमंच और नाट्यरूपांतरण - डॉ.करन सिंह ऊटवाल

Websites

1. Wikipedia
2. IMDb
3. Chiloka
4. Youtube
5. bharatdiscovery

इकाई 14: सिनेमा (फिल्म, चित्रपट, चलचित्र) के प्रकार

इकाई की रूपरेखा

14.1 प्रस्तावना

14.2 उद्देश्य

14.3 मूल पाठ : सिनेमा (फिल्म, चित्रपट, चलचित्र) के प्रकार

14.3.1 मूक फिल्म

14.3.2 बोलती फिल्म (सवाक्

14.3.3 गैर फीचर फिल्म

14.3.4 फीचर फिल्म

14.4 पाठ सार

14.5 उपलब्धियाँ

14.6 शब्द संपदा

14.7 परीक्षार्थ प्रश्न

14.8 पठनीय पुस्तकें

14.1 प्रस्तावना

फिल्मों का जब आरंभ हुआ तब के अनुसार देखें तो 1913 ई से मूक फिल्म तथा 1931 ई से बोलती फिल्मों का आरंभ हुआ। मूक फिल्मों में पर्दे के समक्ष बैठकर गायक व वाद्यकर मूक फिल्मों को संगीत से जोड़ते थे। इससे मूक फिल्मों का मूकपन टूटता था। बोलती फिल्में धीरे-धीरे विकसित हुई। हिंदी बोलती फिल्मों में 1934 से पार्श्व संगीत तथा 1935 से पार्श्व गायन शुमार हुआ।आगे आगे गैर फीचर फिल्म व फीचर फिल्म आदि के प्रकार इसमें जुड़ते गए जिसे पाश्चात्य फिल्मों से अपनाया जा रहा था।

गैर फीचर फिल्मों की बात की जाए तो ल्यूमियर बंधुओं ने लघु फिल्मों से फिल्मों का आरंभ किया था। भारत में राजा हरिश्चंद्र बनने से पूर्व ही कई लघु फिल्मों का निर्माण हो चुका था। समय और संदर्भ के अनुसार फिल्मों के भेद व्यावसायिक तथा समानांतर फिल्मों के रूप में हुए।

इतिहास को लोगों तक पहुंचाने का काम फिल्मों ने बखूबी निभाया है। लेकिन कहीं-कहीं इतिहास दर्शाते समय फिल्मकारों ने कल्पना को कुछ अधिक स्थान दे दिया है।

उदाहरण वर्तमान की फिल्म **गांधी गोडसे -एक युद्ध**। कभी समाज के साथ फिल्में बदलती हैं तो कभी फिल्मों के अनुसार समाज बदलता है। जैसे

करवा चौथ व्रत जो कि पंजाब का त्यौहार है फिल्मों ने उसे सारे भारत का त्योहार बना दिया है।

सामाजिक मुद्दे: ऐसा कोई युग नहीं है जब समाज में समस्याएं न रही हो। हाँ ये ज़रूर है कि समस्या के रूप बदलते रहे हैं। जैसे किसानों की समस्या,महिलाओं की समस्या तथा मज़दूरों की समस्या आदि। फिल्मों ने उपर्युक्त समस्याओं को दर्शाया है। रोमांटिक फिल्में: प्रेम कभी पुराना नहीं होता है और जब तक दुनिया रहेगी तब तक प्रेम भी रहेगा।

साहित्यिक कृतियों पर फिल्में बनाने का चलन रहा है। रहस्यात्मकता पर, जीवनी पर, भूतों पर, संगीत पर, विज्ञान पर, खेलकूद पर तथा परिवार पर आदि फिल्में निर्मित हुई हैं।

14.2 : उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आप –

- मूक और बोलती फिल्म क्या है? इसके पहलुओं से परिचित हो सकेंगे।
- आरंभिक दौर की पौराणिक फिल्मों के महत्व से परिचित हो सकेंगे।
- गैर फीचर फिल्म क्या है ?इसका परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
- फीचर फिल्मों के प्रकारों का परिचय पा सकेंगे।
- व्यावसायिक सिनेमा और समानांतर सिनेमा का अंतर समझ सकेंगे।
- समानांतर फिल्मों के उद्भव के कारणों को समझ सकेंगे।
- व्यावसायिक फिल्मों के प्रकारों का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
- ऐतिहासिक फिल्मों का इतिहास से कितना संबंध है ,इसे जान सकेंगे।
- सामाजिक फिल्मों के मुद्दों को जान सकेंगे।
- रोमांटिक फिल्मों के व्यवसाय को समझ सकेंगे।
- साहित्यिक कृतियों पर आधारित फिल्मों की समस्या को समझ सकेंगे।
- सिनेमा के घोषित व अघोषित प्रकारों से परिचित हो सकेंगे।

14.3. मूल पाठ : सिनेमा (फिल्म, चित्रपट, चलचित्र) के प्रकार

दुनिया में अधिकतर वस्तुओं के अनेक दृष्टिकोणों से अनेक प्रकार होते हैं और किए भी जाते हैं। प्रारंभ में मूक फ़िल्में थी तो विषय के अनुसार उनके भी प्रकार रहे हैं। उदाहरण पौराणिक, ऐतिहासिक तथा सामाजिक आदि। उनका विकास बोलती फिल्मों के रूप में हुआ। फिर उसमें पार्श्व संगीत व गायन का शुमार हुआ । 60 और 70 के दशक में व्यावसायिक तथा समानांतर फिल्में बनना आरंभ हुई। पहले ये भेद नहीं थे। फिल्मों में

व्यवसायिकता के वर्चस्व के कारण ही कदाचित समानांतर फिल्मों का आरंभ हुआ है। विषय के अनुसार उनके भी प्रकार रहे हैं। साहित्यिक कृतियों पर आधारित फिल्मों का अपना प्रकार रहा है। फिल्मों के विकास के साथ-साथ यह प्रकार और भी गहरे होते गए तथा उसमें नए प्रकार भी जुड़ते गए। समसामयिक समस्याओं पर आधारित फिल्में तथा रोमांटिक फिल्में आदि।

14.3.1 मूक और बोलती फिल्में

मूक फिल्में ध्वनि रहित होती थी। इसी ध्वनि की कमी की खाई को पर्दे के पास बैठे गायक व वाद्यकर पाटने की कोशिश करते थे। संगीतकार नौशाद इस विषय में कहते हैं- "मूक चित्रपट का युग था। हमारे लखनऊ में एक रॉयल सिनेमा होता था। वहाँ उस्ताद लड्डुन खाँ साहब, दोनों हाथों से हारमोनियम बजाया करते थे। उस्ताद कल्लन, तबला बजाया करते थे और गौहर नाम का लड़का ,गाया करता था। ये सभी लोग पहले चित्रपट का ट्रायल देखकर सूची बना लेते थे कि कहाँ लड़ाई ,रंज, खुशी और नृत्य है उसी के अनुसार ठुमरी, दादरा और गजलें गाते थे। कोई रंजीदा सीन हो तो उसी प्रकार का संगीत होता था। इससे फिल्म में जान आ जाती थी क्योंकि फिल्मों में डायलॉग तो होते नहीं थे।" (हिंदी चित्रपट एवं संगीत का इतिहास -डॉ. विमल पृ. सं 10) इस प्रकार ये लोग मूक फिल्मों को ध्वनि और संगीत से जोड़ देते थे।

बोलती फिल्मों के आने से सिनेमा ने अपने क्षेत्र में एक पड़ाव पार किया। अब पर्दे के समक्ष बैठकर गाने व बजाने अथवा संवाद बोलने की आवश्यकता नहीं रही है ।

इंपीरियल फिल्म कंपनी ने फिल्म **आलमआरा**(1931) बनाकर सवाक् फिल्मों का आगाज़ किया। "इस प्रथम सवाक् चित्रपट की भाषा के विषय में स्वयं निर्माता ईरानी ने उस समय दिए गए अपने भाषण में स्पष्टीकरण देते हुए कहा था- "आलम आरा की भाषा न खास उर्दू और न खास हिंदी। अर्थात दोनों की मिली जुली हिंदुस्तानी भाषा है।" यह हिंदुस्तानी हिंदी भाषा का ही एक रूप है।" (हिंदी चित्रपट एवं संगीत का इतिहास -डॉ विमल पृ. सं. 10) आरंभिक 30 के दशक की बोलती फिल्में व्यवसाय की अपेक्षा कला को महत्व देने वाली रही। उदाहरण 'मोहब्बत के आंसू' (1932), 'गुण सुंदरी' (1934), 'मील मज़दूर' (1934), 'बैरिस्टर वाइफ' (1935), 'धूप छांव' (1935), 'अछूत कन्या' (1936),' किसान कन्या '(1937) ,दुनिया ना माने' (1937), 'जेलर' (1938) तथा 'आदमी' (1939) आदि। इन फिल्मों का दर्शकों पर बहुत प्रभाव पड़ा। कई मूक फिल्मों का बोलती फिल्मों के रूप में रीमेक भी हुआ है। मूक फिल्म 'राजा हरिश्चंद्र (1913) का बोलती फिल्म के रूप में 'सत्यवादी हरिश्चंद्र' (1931), मूक फिल्म 'नूरजहाँ' (1923) का बोलती फिल्म

'नूरजहाँ' (1931) के रूप में, मूक फिल्म 'सवकारी पाश' (1925)का बोलती फिल्म 'सवकारी पाश' (1936) के रूप में आदि।

बोध प्रश्न

1. मूक फिल्मों में संगीत कैसे जुड़ता था?
2. आलम आरा के निर्देशक फिल्म की भाषा के विषय में क्या कहते हैं?

14.3.2.1 आरंभिक फिल्मों का कथानक

पौराणिक व अन्य साहित्य के साथ ही फिल्मों का आरंभ हुआ है। पहली मूक फिल्म राजा हरिश्चंद्र एक नाटक था जो खेला जा चुका था। पहली बोलती फिल्म आलमआरा भी फारसी थिएटर कंपनी का एक प्रसिद्ध नाटक था। अर्थात पौराणिक या अन्य साहित्य की कथाएं फिल्मों को कच्चा माल के रूप में उपलब्ध थी।पौराणिक कथाएँ हमारे पुराणों में वर्णित कथाएँ होती हैं जिनमें आदर्शवाद देखा जा सकता है। पौराणिक साहित्य की बात की जाए तो दादा साहब फाल्के की अधिकतर फिल्में पौराणिक साहित्य पर आधारित थी। उदाहरण ' राजा हरिश्चंद्र' (1913) ,'भस्मासुर मोहिनी' (1913), 'लंका दहन' (1917), 'श्री कृष्ण जन्म' (1918) व 'कालिया मर्दन' (1919) आदि।

इतिहास की कथाओं का खजाना भी फिल्म निर्माताओं के पास उपलब्ध था और उसका उपयोग भी फिर निर्माताओं ने किया। मूक फिल्में भी ऐतिहासिक फिल्मों का अपवाद नहीं रही हैं। इस दौर में भारत के इतिहास को दर्शाने की पूरी कोशिश की गई। उदाहरण 'सिंहगढ़' (1923), 'नूरजहाँ' (1923), 'पृथ्वीराज चौहान' (1924), 'बाजीराव मस्तानी'(1925), 'मुमताज महल' (1926) तथा 'नारा केसरी उर्फ महाराष्ट्र का शेर' (1928) आदि।

बोध प्रश्न

- पौराणिक फिल्में कौन सी हैं?

14.3.2 बोलती फिल्मों के प्रकार

फिल्मों का आरंभ मूक फिल्मों से हुआ था। आगे चलकर बोलती फिल्में बनी और बोलती फिल्मों के अनेक प्रकार बन गए। उदाहरण गैर फीचर फिल्में, फीचर फिल्में, गैर फीचर फिल्मों के भेद- लघु फिल्में, वृत्त चित्र और विज्ञापन फिल्में आदि। फीचर फिल्मों के भी व्यावसायिक तथा कला या समानांतर फिल्मों के रूप में भेद हुए। व्यावसायिक फिल्मों के भी अनेक भेद हुए ।

14.3.3 **गैर फीचर फिल्में**

किसी भी वस्तु का जब विकास होता है तो उसके एक से अधिक प्रकार भी बनते जाते हैं। यही बात फिल्मों पर भी लागू होती है। आज विशेषकर वृत्तचित्र या फिर लघु फिल्म को गैर फीचर फिल्म कहा जाता है। समय अवधि के अनुसार इसे बांटा गया है। इसमें अलग-अलग राय हैं। 40 मिनट से काम की अवधि हो तो वह गैर फीचर फिल्म मानी जाती है। आजकल 80 मिनट से अधिक हो तो फीचर फिल्म और 80 मिनट से कम की अवधि वाली फिल्म को गैर फीचर फिल्म कहा जाता है।

गैर फीचर फिल्म: व्यक्ति पर, कला पर, संस्कृति पर, सामाजिक मुद्दों पर, विज्ञान पर, साहस पर, लघु कथा पर, किसी खोज पर तथा एनिमेटेड फ़िल्म भी हो सकती है।ये फिल्में हमारी जानकारी बढ़ाने के लिए व हमें जागरुक करने के लिए होती हैं। ऐसी फिल्मों की शुरुआत मूक फिल्मों से ही हुई थी । गैर फीचर फिल्मों को वृत्त चित्र और लघु फिल्म के रूप में बांटा जा सकता है।

14.3.3.1 **वृत्त चित्र**

यह किसी व्यक्ति, स्मारक तथा सत्य घटना पर आधारित फिल्म होती है। यह फिल्में थिएटर में रिलीज नहीं की जाती है। इनको राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय फिल्म उत्सवों में और दूरदर्शन पर दर्शाया जाता है आदि। ये एक दस्तावेज या एतिहासिक रिकॉर्ड के तौर पर देखी जाती हैं। भारतीय फिल्म प्रभाग जिसकी स्थापना सन् 1948 में की गई थी। इस संस्था का मुख्य उद्देश्य भारतीय इतिहास का फिल्म के तौर पर रिकॉर्ड निर्माण करना रहा है। इसने अभी तक 800 से अधिक वृत्त चित्र और लघु फिल्मों का निर्माण किया है। यह प्रभाग मुख्यतः दूरदर्शन चॉनल के लिए वृत्त चित्रों का निर्माण करता है। इस संस्था ने सन् 2019 में मुंबई में **भारतीय सिनेमा का राष्ट्रीय संग्रहालय** की स्थापना भी की है। जो सिनेमा के विकास की जानकारी प्रदान करता है। इस संस्था के कुछ मुख्य वृत्त चित्र हैं- 'रवींद्रनाथ टैगोर' (1961) , 'एक चित्रकार की नज़र से' (1967) तथा 'महात्मा गांधी का जीवन' (1968) आदि ।

प्रख्यात फिल्म निर्देशकों ने भी अनेक वृत्त चित्रों का निर्माण किया है । उदाहरण ऋत्विक घटक ने 'बिहारी ऐतिहासिक स्थल '(1955), तपन सिन्हा ने 'जगदीश चंद्र बोस (1959), 'अमर देश (1962), ख्वाजा अहमद अब्बास ने 'ईद मुबारक (1960) 'चार शहर एक कहानी' (1968), 'भारत दर्शन' (1972). 'पापा मियाँ ऑफ अलीगढ़' (1975), 'डॉ. इकबाल' (1970), श्याम बेनेगल ने 'सुहानी सड़क' (1973), 'बाल संसार' (1974) 'सत्यजीत रे' (1985) मणि कौल ने 'चित्रकथी' (1977), 'आगमन' (1980), 'माटी

मानस' (1985), 'हजार लाइनों का रेगिस्तान' (1986), 'सिद्धेश्वरी' (1990), गौतम घोष ने 'परंपरा' (1985), 'एक घाट की कहानी' (1987), संदीप रे ने किशोर कुमार पर 'जिंदगी एक सफर' (1991), प्रकाश झा ने 'दीदी' (1994), 'सोनल' (2002) 'लोकनायक' (2004), साईं परांजपे ने 'सुई' (2009), आनंद पटवर्धन ने 'जय भीम कामरेड' (2011) तथा निशिता जैन ने 'गुलाबी गैंग' (2012) में आदि वृत्त चित्रों का निर्माण किया है।

14.3.3.2 लघु फिल्म

मूक फिल्म का आरंभ ल्यूमियर बंधुओ ने अपने लघु फिल्मों के माध्यम से किया था जिसमें- 'द अरैवल ऑफ ए ट्रेन' , 'गेम ऑफ कार्ड', 'द फीडिंग ए बेबी' तथा 'सोल्जर मार्चिंग' आदि।

हीरालाल सेन ने मूक लघु फिल्म 'द फ्लावर ऑफ़ पर्शिया'(1898) निर्मित की। एच.एस. भटवडेकर उर्फ सवे दादा ने 'द रेसलर्स'(1999) फिल्म का निर्माण किया। "1903 में हीरालाल अपने स्वयं के चित्रपटों का पूरा शो देने लगे जिनके नाम 'भारतीय इतिहास की घटनाएं', 'पौराणिक हिंदू गाथाओं के दृश्य ', 'घरेलू जीवन की झांकियाँ', 'हमारे रंगमंच के कुछ पुष्प' आदि थे।"(हिंदी चित्रपट एवं संगीत का इतिहास -डॉ विमल पृ. सं. 5) अर्थात फिल्मों का आरंभ लघु मूक फिल्मों से ही हुआ है।

बाद में लघु फिल्मों के कुछ नियम भी बन गए- फिल्म की समय अवधि 40 मिनट से कम की हो तो उसे लघु फिल्म कहा गया। इसे फिल्म निर्माण के नमूने के तौर पर भी प्रयोग किया जाता है। नए-नए निर्देशक अपनी सृजनात्मक प्रतिभा का परिचय देने के लिए भी लघु फिल्म का निर्माण करते हैं। इस प्रकार के लघु फिल्मों का निर्माण कर वे अपना पोर्टफोलियो समृद्ध करते हैं। एनिमेटेड और वृत्त चित्र भी इस भेद के अंतर्गत शुमार हो जाते हैं। अनेक संस्थाएं लघु फिल्मों की प्रतियोगिता का भी आयोजन करती है।

ये फिल्में थिएटर में रिलीज नहीं होती हैं। या तो दूरदर्शन पर और आजकल OTT पर भी आती है या फिल्म महोत्सव में ये दिखाई जाती हैं। अब तक इन फिल्मों को बनाने वाले भी सक्रिय है ।उदाहरण जैस्मीन कौर राय और अविनाश राय ने 'अमोली' (2018), रामकमल मुखर्जी ने 'केक वॉक' (2019), शान व्यास ने 'नटखट' (2020), प्रियंका बेनर्जी ने 'देवी' (2020) तथा सचिन धीरज ने 'एना की गवाही '(2020) (यह पुरस्कृत भी हैं) आदि ने लघु फिल्मों का निर्माण किया है। इसके अतिरिक्त एनिमेटेड लघु फिल्में भी होती

हैं। जैसे विजया मूले भीमसेन ने 'एक अनेक और एकता' (1974), वरुण मेहता ने 'अनजान दुनिया' (2011) और भी अनेक ऐसी फिल्में है।

14.3.3.3 विज्ञापन फिल्में

यह भी फिल्मों का एक प्रकार है। एक प्रेरक अति लघु से लघु फिल्म विज्ञापन फिल्म होती है। इसे ब्रांड आदि के प्रचार के लिए निर्मित किया जाता है। इसका उद्देश्य उपभोक्ता को आकर्षित करना होता है। अपने ग्राहकों तक पहुँचने का यह जनसंचार माध्यम है। आज के प्रतियोगिता के युग में इसका महत्व दिन प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। विज्ञापन द्वारा उक्त वस्तु की आवश्यकता महसूस करवाई जाती है। आवश्यकता के अनुसार इसके विभिन्न पहलू हैं। जैसे चलचित्र विज्ञापन, ऑडियो विज्ञापन तथा प्रिंट विज्ञापन आदि। कुछ विज्ञापन हमारे दिमाग में बैठ जाते हैं। जैसे 'लाइफबॉय है जहाँ तंदुरुस्ती है वहाँ', 'वाशिंग पाउडर निरमा वाशिंग पाउडर निरमा', 'दिल मांगे मोर'आदि। सवाल यह है कि कितने कम शब्दों में आप अपनी बात संप्रेषित कर सकते हैं। आजकल दृश्य मीडिया में कम समय में अपनी बात संप्रेषित करने का अपना महत्व है।

बोध प्रश्न

- वृत्त चित्र की समीक्षा कीजिए।
- लघु फिल्म क्या है? चर्चा कीजिए।
- गैर फीचर फिल्म के प्रकारों पर प्रकाश डालिए ।
- विज्ञापन फिल्म किसे कहते हैं ? उसका उद्देश्य क्या है?

14.3.4 फीचर फिल्में

फीचर फिल्म की कथा कितनी लंबी होनी चाहिए यह समय और स्थान पर निर्भर करता है। इस शब्द का प्रयोग लंबी फिल्मों से छोटी फिल्मों को अलग करने के लिए किया जाता था। जिन्हें मुख्य फिल्म से पहले दिखाया जाता था। उदाहरण एनिमेटेड कार्टून, न्यूज़रील, वृत्त चित्र आदि । बाद में इसमें विज्ञापन भी शामिल हो गए हैं। "एकेडमी ऑफ़ मोशन पिक्चर्स आर्ट्स एंड साइंसेज़, अमेरिकन फिल्म इंस्टिट्यूट और ब्रिटिश फ़िल्म इंस्टीट्यूट के अनुसार एक फीचर फिल्म 40 मिनट से अधिक चलती है जबकि स्क्रीन एक्टर्स गिल्ड का दावा है एक फीचर फिल्म के चलने का समय 60 मिनट या उससे अधिक है।" (http://en.wikipedia.org wiki f...) आजकल 80 मिनट से अधिक के लिए फीचर फिल्म की बात की जाती है। पहले इस अवधि के वृत चित्र को भी फीचर फिल्म कहा जाता था। आज फीचर फिल्म के अंतर्गत वृत्त चित्र नहीं आते हैं। आगे चलकर फीचर फिल्म के भी दो प्रकार बन गए।

1. कला या समानांतर फिल्म तथा 2. व्यावसायिक फिल्म या मुख्य धारा फिल्म

14.3.4.1 कला या समानांतर फिल्में

फिल्में जब आरंभ हुई थी तब फिल्मों के बीच व्यावसायिक और समानांतर वाली कोई रेखा नहीं थी। क्योंकि कला फिल्मों में अपेक्षित थी और उस दौर में फिल्में अपने आप में लोगों को लुभाने वाला एक नया उपक्रम था जो पैसा कमाने का जरिया खुद ब खुद बन गया था।

कला फिल्में यथार्थवाद से प्रभावित थी। और भारतीय फिल्मों में इस यथार्थवाद का आरंभ बाबूराव पेंटर द्वारा निर्देशित मूक फिल्म 'सावकारी पाश'(1925) से ही हो गया था। इसके पश्चात 'दुनिया ना माने' (1937) फिल्म ने इस परंपरा को आगे बढ़ाया। यह कॉन फिल्म महोत्सव में पुरस्कार पाने वाली पहली भारतीय फ़िल्म थी।

स्वतंत्रता के पश्चात फिल्म व्यवसाय के रूप में दृढ़ होता जा रहा था। हॉलीवुड फिल्मों से अधिक प्रभावित होता जा रहा था। कला का महत्व कुछ कम हो रहा था। हालांकि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कला फिल्मों ने ही भारतीय फिल्मों को पहचान दिलाई थी। इसलिए कुछ ऐसे निर्देशक भी मौजूद थे जो व्यवसाय की अपेक्षा कला को महत्व दे रहे थे। उदाहरण विमल राय, वी शांताराम, सत्यजीत राय, तपन सिन्हा, ख्वाजा अहमद अब्बास, चेतन आनंद तथा गुरुदत्त आदि। बिमल राय की फिल्म 'दो बीघा ज़मीन' (1953) यथार्थवादी फिल्मों में मील का पत्थर है।

लोक नाटक आम आदमी करते थे। लेकिन उसको व्यवसाय का साधन फारसी रंगमंच ने बनाया। ऐसे ही फिल्मों पर पूंजीपतियों का वर्चस्व होने लगा। लेकिन फिल्मों का आरंभ करने वाले दादा साहब फाल्के पूंजीपति नहीं थे।

कला फिल्मों के संरक्षण हेतु फिल्म वित्त निगम Film Finance Corporation (FFC) आगे आया। फिल्म इंस्टीट्यूट से उत्तीर्ण तथा उनके नियमों के तहत फिल्म निर्माण करने वालों को FFC कर्ज़ देने लगा ।FFC के कुछ नियम थे -फिल्म का बजट कम हो, भारत की घटनाओं या संस्कृति पर फिल्म आधारित हो आदि। इसी के अंतर्गत मृणाल सेन ने फिल्म बनाई **भुवनशोम** (1969) इस फिल्म को समानांतर फिल्म का आगाज़ कहा जाता है। इसे दर्शकों ने बहुत पसंद किया। इसके साथ ही अनेक फिल्में आई जो कला प्रधान या समानांतर फिल्म कहलाई।

समानांतर फिल्मों के मुख्यतः दो प्रकार रहें- 1.सामाजिक 2. साहित्यिक या अन्य कृतियों पर आधारित फिल्में

प्रकारांतर से साहित्यिक या अन्य कृतियों पर आधारित फिल्में भी सामाजिक फिल्में ही रही हैं।

फिल्म वित् निगम (FFC) 1975 में राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम (NFDC) हो गया। इसने भी कला फिल्मों को प्रोत्साहन करना जारी रखा। इसके द्वारा निर्मित की गई सामाजिक फिल्मों ने अनेक राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त किए हैं ।जिनमें प्रमुख है 'आक्रोश' (1980), 'गांधी' (1982), 'जाने भी दो यारो' (1984), 'मिर्च मसाला'(1988), 'सलाम बॉम्बे' (1988) ,'मैं जिंदा हूँ' (1988), 'सलीम लंगड़े पर मत रो' (1989), 'धारावी' (1992) तथा 'मम्मो' (1994) आदि ।

ऐसी समानांतर फ़िल्में और भी बनी है जो NFDC की न होते हुए भी उन्हीं मान दण्डों की थी जिनको राष्ट्रीय पुरस्कार भी प्राप्त हुए हैं जिनमें 'मंथन' (1976) व 'कलयुग' (1981) आदि हैं।

साहित्यिक तथा अन्य कृतियों पर आधारित दोनों ही प्रकार की फिल्में रही है व्यावसायिक भी और समानांतर भी। इन फिल्मों को अनेक पुरस्कार भी प्राप्त हुए हैं। ये फिल्में हिंदी तथा अन्य भाषाओं की रचनाओं पर आधारित रही हैं।

समानांतर फिल्मों ने साहित्य को उसकी गरिमा व कला के साथ प्रस्तुत करने का सराहनीय प्रयास किया है। हिंदी साहित्य को कला फिल्मों के रूप में ढालने वाले प्रमुख निर्देशक हैं मणि कौल ,सत्यजीत रे ,बासु चटर्जी, कुमार साहनी तथा श्याम बेनेगल आदि।

हिंदी साहित्य पर आधारित फिल्में

क्रम	**फिल्म का नाम**	**रिलीज वर्ष**	**रचना का नाम विधा**	**रचनाकार**	**निर्देशक**
1.	उसकी रोट	1969	उसकी रोटी (कहानी)	मोहनराकेश	मणि कौल
2.	सारा आकाश। (उपन्यास)	1969	(प्रेत बोलते हैं, 1951, सारा आकाश 59)	राजेंद्र यादव	बासु चटर्जी
3.	फिर भी	1971	तलाश (कहानी)	कमलेश्वर	शिवेंद्र मिश्र
4.	आषाढ़ का एक दिन	1971	आषाढ़ का एक दिन (नाटक)	मोहन राकेश	मणिकौल
5.	माया दर्पण	1972	माया दर्पण (कहानी)	निर्मल वर्मा	कुमार साहनी
6.	दुविधा	1973	दुविधा (कहानी)	विजयदान देथा	मणि कौल
7.	27 डाउन	1974	अठारह सूरज के पौधे(उपन्यास)	रमेश बक्शी	अवतार कृष्ण कौल
8.	चरणदास चोर	1975	चरणदास चोर (नाटक)	विजयदान	श्याम बेनेगल
9.	शतरंज के खिलाड़ी	1977	शतरंज के खिलाड़ी(कहानी)	प्रेमचन्द	सत्यजीत रे

10. सतह से उठता आदमी 1980 सतह से उठता आदमी (कहानी) मुक्तिबोध मणि कौल

11. सद्गति 1981 सद्गति (कहानी) प्रेमचन्द सत्यजीत रे

12. सूरज का सातवाँ घोड़ा 1992 सूरज का सातवाँ घोड़ा (उपन्यास) धर्मवी रभारती श्याम बेनेगल

समानांतर हिंदी फिल्मों द्वारा केवल हिंदी साहित्य ही नहीं भारतीय साहित्य भी जन सामान्य तक अपनी पहुँच बना पाया है। जिन में से कुछ है-

क्र. फिल्म का नाम रिलीज़ वर्ष रचना का नाम भाषा, विधा रचनाकार निर्देशक सं

1. भुवनशोम 1969 भुबन सोम (बंगाली, उपन्यास) बलाईचंद मुखोपाध्याय मृणाल सेन

2.भूमिका 1977 सांगत्य एका (मराठी, आत्मकथा) हंसा वाडकर श्याम बेनेगल

3.चक्र 1981 चक्र(मराठी उपन्यास) जयंत दलवी रवींद्र धर्मराज

4.मंडी 1983 आनन्दी(उर्दू कहानी) गुलाम अब्बास श्याम बेनेगल

5.पार्टी 1984 पार्टी (मराठी उपन्यास) महेश एलकुंचवार गोविंद निहालानी

6. एक डॉक्टर की मौत1990 अभिमन्यु (बंगाली कहानी) रामापद चौधरी तपन सिन्हा

7. दीक्षा 1991 घटश्राध्द (कन्नड उपन्यास) यू.आर.अनन्त मूर्ति तपन सिन्हा

8.हजार चौरासी की माँ 1998 हजार चौरासी की माँ(बंगाली उपन्यास) महाश्वेता देवी गोविंद निहालानी

9. समर 1999 Unheard voices:Stories हर्ष मंदर श्याम बेनेगल of forgotten (अंग्रेजी कहानी)

उपर्युक्त फिल्मों के अतिरिक्त और भी कई ऐसी फिल्में हैं जो भारतीय साहित्य पर निर्मित कला फिल्में है।

समानांतर फिल्में, फिल्म उत्सव में सराही जाती हैं,उन्हें पुरस्कार भी मिलते हैं, पर कमर्शियल हिट नहीं होती हैं।

कला फिल्में जिंदगी की सच्चाई को सामने लाती हैं। जो लोग सिनेमा की समझ रखते हैं। वे आज भी समानांतर सिनेमा को देखना पसंद करते हैं। पहले ऐसी फिल्मों को भारतीय न्यू वेव कहा ,फिर भुवनशोम (1969) के आने के बाद समानांतर या कला फिल्में कहा और आजकल ऐसी कलात्मक फिल्मों को ऑफ बीट फिल्में भी कहा जा रहा है।

बोध प्रश्न

- कल या समानांतर फिल्म क्या है ? समझाइए ।
- साहित्य कृतियों पर आधारित कला फिल्मों का परिचय दीजिए ।

14.3.4.2 व्यावसायिक फिल्में

नमें कला की अपेक्षा अधिकतर अतिशयोक्ति का अधिक प्रदर्शन होता है।"व्यावसायिक सिनेमा से अभिप्राय यहाँ उस सिनेमा से है जो सिनेमा या फिल्मों के नाम पर दर्शकों के आगे मारधाड़, कोरी कल्पनाएं, सेक्स और प्रेम के मिश्रण की स्वतंत्रता और उन्मुक्तता परोसता है। वैसे तो फिल्में बनती ही व्यवसाय के लिए है लेकिन व्यवसाय और शुद्ध व्यावसायिक सिनेमा में हमें अंतर वहाँ पता चल जाता है जहाँ एक ओर कोरी कल्पना होती है तो दूसरी ओर सामान्य आदमी को छूती हुई समस्याएँ।"(सिनेमा और साहित्य पृ. सं. 29) इसी व्यावसायिक सिनेमा को लोकप्रिय सिनेमा भी कहा जाता है। इस प्रकार का सिनेमा मनोरंजन को ध्यान में रखकर बनाया जाता है ।यह हॉलीवुड फिल्मों से प्रभावित रहता है ।इन्हें मसाला फिल्म तथा मुख्य धारा की फिल्म भी कहा गया है ।इन फिल्मों का फार्मूला सा बन गया है इनमें स्टार अभिनेता /अभिनेत्री हो, आकर्षक दृश्य हो ,आकर्षक गीत ,संगीत तथा नृत्य हो, कॉमेडी, मारधाड़ ,हाईटेक और भव्य सेटिंग्स हो, आजकल SFX भी होता है। देश-विदेश के मनोहारी दृश्य हो तथा इन सब को दर्शाने के लिए बड़ा बजट हो। लेकिन पैसा कमाने के चक्कर में यह फिल्म कला की उपेक्षा करती जा रही है। इसी से चिंतित होकर प्रसिद्ध अभिनेता अशोक कुमार ने कहा था-"उन दिनों में भी फिल्में खूब बनती थी। वी. शांताराम ,महबूब, केदार शर्मा, अमिय चक्रवर्ती, नितिन बोस, बिमल राय, सत्येन बोस, राज कपूर जैसे शख्स लगातार अच्छी फिल्में बना रहे थे ।उस समय तक कोई भद्दापन ना फिल्मों में, न फिल्मों के बाहर आया था... आजकल तो प्रचार ने ही कलाकार को खुदा बना दिया है। एक फिल्म के चलते ही वह राजा बन जाता है ।शेयर बाज़ार की तरह उसके भाव बढ़ते हैं ,बोलियाँ लगती है। दूसरी ओर उसकी लोकप्रियता का लाभ ये पत्र पत्रिकाएं उठाती हैं। आज के व्यावसायिक वातावरण को देखकर मैं कभी-कभी अपने आप को अजनबी महसूस करने लगता हूँ। कुछ लोगों ने इस उद्योग को इतना सस्ता और छिछला बना दिया है..".(सिनेमा और साहित्य- हरीश कुमार पृ.सं 32) फिल्म वालों की इसी निरंकुशता की वजह से आजकल अनेक फिल्मों का विरोध भी हो रहा है। लेकिन साथ ही यह भी सच है कि अच्छी फिल्में भी बन रही हैं। उदाहरण 'चक दे इंडिया' (2007), 'तारे ज़मीन पर' (2007) ,'भाग मिल्खा भाग' (2013), 'मांझी: द माउंटेन मैन' (2015) ,'पैडमैन' (2018) तथा 'आर्टिकल 370' (2024) आदि। फिर ये फिल्में चाहे जीवनी (Biopic) पर आधारित हो या सच्ची कहानी पर लेकिन अच्छी फिल्मों का बनना भी जारी है।

व्यावसायिक फिल्मों की बात करें तो एक लंबी सूची है उनमें से कुछ हैं- 'मुग़ल-ए-आजम' (1960), 'संगम' (1964), 'आराधना' (1969), 'ज़ंजीर' (1973),'शोले' (1975),'अमर अकबर एंथोनी '(1977), 'डॉन' (1978) 'कर्ज़ (1980),'नसीब (1981), 'डिस्को डांसर (1981), 'कर्मा (1986), 'चांदनी (1989), 'आशिकी'(1990),'दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे' (1995), 'कहो ना प्यार है' (2000), 'कल हो ना हो' (2003),'थ्री ईडियट्स' (2009), 'बाहुबली' (2015), 'जवान' (2023) तथा 'पठान' (2023) आदि।

व्यावसायिक फिल्में अर्थात व्यक्ति या संस्था द्वारा दर्शकों के लिए फिल्म का निर्माण करना जिसके माध्यम से आय उत्पादित की जा सके। दर्शकों को लुभाने के लिए इसमें तरह-तरह के प्रयत्न किए जाते हैं भले ही उनका यथार्थ से कोई संबंध न हो। जैसे हीरो का ऊंची बिल्डिंग से छलांग लगाने पर भी कोई चोट न लगना, एक हीरो का 10 ,20 खलनायकों से लड़कर जीतना आदि। आजकल SFX के द्वारा भी चमत्कारों का निर्माण किया जा रहा है।

हमारे जीवन के अधिकतर पक्षों को समेटते हुए फिल्म का निर्माण होता है। ऐसे तो फिल्मों के अनेक प्रकार हैं। उनमें से कुछ मुख्य है- ऐतिहासिक फिल्में, सामाजिक फिल्में तथा रोमांटिक फिल्में आदि। इनके अतिरिक्त भी फिल्मों के अनेक प्रकार देखने को मिलते हैं। जैसे एक्शन फिल्में, कॉमेडी फिल्में ,रहस्यात्मक फिल्में, भूतिया फिल्में, विज्ञान एस एफ फिल्में ,संगीतात्मक फिल्में, खेलकूद पर आधारित फिल्में व फंतासी फिल्में आदि।

बोध प्रश्न

- व्यवसायिक फिल्मों की समीक्षा कीजिए।

14.3.4.2.1 ऐतिहासिक फिल्में

ऐतिहासिक फिल्में अर्थात हमारा आशय उन हिंदी फिल्मों से हैं जिसमें भारतीय या विश्व इतिहास को दर्शाया जाता है। फिल्मों के आरंभ से ही ऐतिहासिक फिल्में बनती आ रही हैं। मूक फिल्में भी ऐतिहासिक फिल्मों का अपवाद नहीं रही हैं। मूक फिल्मों के दौर में भी फिल्मों ने भारत के इतिहास को दर्शाने की पूरी कोशिश की है। उदाहरण 'अशोक उर्फ सम्राट अशोक' (1922), 'नूरजहाँ' (1923), 'सिंहगढ़' (1923), 'पृथ्वीराज चौहान' (1924), 'बाजीराव मस्तानी' (1925), 'नारा केसरी उर्फ महाराष्ट्र का शेर' (1928) तथा 'सिराजुद्दौला'(1929) आदि।

बोलती फिल्मों के आगाज़ ने भी ऐतिहासिक कथाओं से किनारा नहीं किया, तब भी इतिहास पर आधारित फिल्में बनती रही हैं। उदाहरण 'नूरजहाँ'(1931) 'पृथ्वीराज संयोगिता' (1933) 'चंद्रगुप्त' (1934) तथा 'मुमताज बेगम' (1934) आदि।

प्रेमचंद ने कहा था-" सिनेमा की क्षमता से मुझे इनकार नहीं है। अच्छे विचार और आदर्शों के प्रचार में सिनेमा से बढ़कर कोई दूसरी शक्ति नहीं है..."(हिंदी चित्रपट एवं संगीत का इतिहास -डॉ विमल पृ. सं. 51) प्रेमचंद ने सिनेमा की क्षमता को बिल्कुल ठीक परखा था। हम कई पीढियाोें से इतिहास को नाटक या उसके अगले रूप सिनेमा के माध्यम से ही जानते हैं। एक तरह से यह दृश्य काव्य हमारी जानकारी का एक बहुत बड़ा माध्यम है। ऐसी सैकड़ो ऐतिहासिक फिल्में हैं जिनके माध्यम से हम इतिहास से रूबरू हुए हैं। प्रेमचंद आगे कहते हैं-" लेकिन सिनेमा जिनके हाथ में है उन्हें आप कुपात्र कहें, मैं तो उन्हें उसी तरह व्यापारी समझता हूँ, जैसे कोई दूसरा व्यापारी और व्यापारी का काम, जन रुचि का पथ प्रदर्शन करना नहीं, धन कमाना है।"(हिंदी चित्रपट एवं संगीत का इतिहास- डॉ विमल पृ. सं.51) अर्थात धन कमाने की फिराक में फिल्मकार कभी-कभी इतिहास को झूठलाते हैं जो कि नई पीढ़ी के लिए असमंजस पैदा कर सकता है। उदाहरण वर्तमान के फिल्म 'आर आर आर' (2022) तथा 'गांधी गोडसे -एक युद्ध' (2023) आदि।

इन दोनों फिल्मों में इतिहास को झूठलाया गया है ,जो कि एक आदर्श नहीं है। इन फिल्मों को गौण माने तो ऐतिहासिक फिल्मों ने हमें बहुत सी जानकारी भी प्रदान की है। ऐसी ऐतिहासिक फिल्मों के उदाहरण सोहराब मोदी की फिल्में हैं- जिनमें 'पुकार' (1939) 'सिकंदर' (1941) 'झांसी की रानी' (1953) 'मिर्ज़ा ग़ालिब' (1954) आदि हैं।इन फिल्मों के माध्यम से सोहराब मोदी ने इतिहास को हमारे समक्ष ज़िंदा कर दिया है।

'मिर्ज़ा ग़ालिब' (1954) सोहराब मोदी द्वारा निर्मित यह फिल्म उस दौर में बहुत प्रख्यात हुई है। इसे सर्वश्रेष्ठ फिल्म का राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त हुआ है। इस फिल्म में फिल्माई गई ग़ालिब की ग़जलें हिंदुस्तान के कोने-कोने में गूंज उठी। ग़ज़लों ने ग़ज़लकार को तलाश किया है। कहा जाता है कि इस फिल्म ने ग़ालिब की पहचान लोगों तक पहुँचाई है।

ऐतिहासिक फिल्मों में कमर्शियल हिट रही 'मुग़ल-ए-आज़म'(1960)। निर्माता निर्देशक के. आसिफ की यह अविस्मरणीय फिल्म रही है। उस दौर में फिल्मों के प्रिंट 40 से 60 तक बनाते थे। लेकिन इस फिल्म के 150 प्रिंट बने थे। इस फिल्म के युद्ध के चित्रण में भारतीय थल सेना के 8000 जवानों, 4000 घोड़ों और 2000 ऊंटों ने भाग लिया था।

सन् 1963 में 'ताज महल' फिल्म आई जो इतिहास और संगीत की जुगलबंदी रही। सन् 1982 में भारतीय और यूनाइटेड किंगडम की फिल्म कंपनी के सहयोग से बनी फिल्म गांधी विश्व प्रसिद्ध हुई। इसके निदेशक रिचर्ड एटनबरो तथा गांधी के रूप में अभिनय करने वाले बेन किंग्सले को इस फिल्म के लिए बहुत प्रशंसा मिली। इसे सर्वश्रेष्ठ फिल्म तथा अन्य वर्गों में 7 अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। इस फिल्म के अंतिम संस्कार वाले दृश्य में 3 लाख से अधिक भीड़ का इस्तेमाल किया गया है जो गिनीस बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज किया गया है।

सन् 1983 में फिल्म 'रज़िया सुल्तान' आई जो दिल्ली की रानी रज़िया की जिंदगी को उजागर करती है। लेकिन यह फिल्म बॉक्स ऑफिस पर सफल नहीं रही। 7 से 8 करोड़ के बजट की यह फिल्म लगभग दो करोड़ ही कमा सकी।

ऐतिहासिक फिल्मों की लंबी सूची है उनमें से कुछ फिल्में हैं - 'शतरंज के खिलाड़ी' (1977), 'द लेजेंड ऑफ़ भगत सिंह' (2002), 'नेताजी सुभाष चंद्र बोस :द फॉरगॉटन हीरो' (2005), 'जोधा अकबर' (200), 'बाजीराव मस्तानी'(2015), 'पद्मावत' (2018), 'मणिकर्णिका' (2019), 'केसरी' (2019) तथा 'तानाजी: द अनसंग वॉरियर' (2020) आदि।

इस प्रकार इन ऐतिहासिक फिल्मों ने इतिहास को आम लोगों तक पहुँचाया है। और आगे भी यह सफर जारी रहेगा।

बोध प्रश्न

- व्यावसायिक फिल्मों की समीक्षा कीजिए।
- ऐतिहासिक फिल्मों पर प्रकाश डालिए।

14.3.4.2.2 सामाजिक फिल्में

ये फिल्में सामाजिक समस्याओं पर केंद्रित होती हैं। एक तरह से ऐसी फिल्में समाज को जागरूक करने का दायित्व निभाती हैं। यह राष्ट्रीय चेतना का जनसंचार करती हैं। समाज में अनेक समस्याएं हैं जिन पर फिल्में बनती हैं। उदाहरण किसानों का शोषण, दहेज, मानवाधिकार, नशा (व्यसन) मानवता का पतन ,महिलाओं का उत्पीड़न, युद्ध के दुष्परिणाम, पर्यावरण रक्षण, आदि। ये सामाजिक मुद्दों की विशेषता को दर्शाती हैं, उनको संबोधित करती है। समस्या को समझ कर दर्शकों को जागरूक किया जाता है। किसी समस्या को दर्शाने के लिए इससे बड़ा जनसंचार माध्यम कोई नहीं है। हो सकता है समस्या को देखने की दृष्टि निर्देशक की अपनी हो। लेकिन समस्या का आभास तो मिल ही जाता है।

फिल्मों के आरंभ से ही सामाजिक मुद्दों पर फिल्मों का निर्माण हो रहा है। जैसे बाबूराव पेंटर द्वारा निर्देशित 'सावकारी पाश'(1925) फिल्म में किसानों के मुद्दे को उठाया गया है। इस फिल्म में मुख्य भूमिका वी. शांताराम ने निभाई थी। फिल्में एक लालची साहूकार द्वारा किसानों के शोषण का चित्रण किया गया है। समानांतर फिल्मों के आंदोलन के पूर्व भी फिल्मों में अनेक मुद्दों को उठाया गया है। जिन निर्देशकों ने अपने फिल्मों में सामाजिक मुद्दों को अहम बनाया उनमें से कुछ है- वी .शांताराम की फिल्म 'दुनिया ना माने' (1937) और 'आदमी' (1939), हिमांशु राय की 'अछूत कन्या' (1936), चंदुलाल शाह की 'अछूत '(1940), बिमल राय की 'दो बीघा ज़मीन' (1953) ,सोहराब मोदी की 'मीठा ज़हर' (1938) व 'तलाक' (1938),महबूब खान की 'औरत' (1940) इसी का पुनर्निर्माण उन्होंने 'मदर इंडिया' (1957) के रूप में किया। के.सुब्रमण्यम् की 'मज़दूर' (1934) यह फिल्म प्रेमचंद की कहानी पर आधारित है। मोती.बी. गिडवानी की 'किसान कन्या'(1937), एन.आर. आचार्य की 'नया संसार' (1941)तथा प्रकाश अरोड़ा की 'बूट पॉलिश' (1954) आदि फिल्में निर्मित हुई। इसी श्रृंखला में आगे जे.पी दत्ता ने 'गुलामी' (1985), श्री नारायण सिंह ने 'टॉयलेट: एक प्रेम कथा' (2017) आर. बल्कि ने 'पैडमैन' (2018), अनुभव सिन्हा ने 'आर्टिकल 15' (2019) ,सुदीप्ता सेन ने 'द केरल स्टोरी '(2023) तथा आदित्या सुहास जाम्भाले ने 'आर्टिकल 370' (2024) आदि फिल्मों का निर्माण किया जो सामाजिक मुद्दों पर आधारित रही हैं। सावकारी पाश (1925) मूक (1936) बोलती फिल्म निर्देशक :बाबूराव पेंटर इसमें शोषण साहूकार का चित्रण है, जो किसानों का शोषण करता है। किसानों को मजदूर बनने पर विवश करता है।

दुनिया ना माने (1937), निर्देशक : वी. शांताराम इसमें दहेज, अनमेल विवाह, विवाह में महिलाओं की इच्छाओं की अवहेलना आदि मुद्दों को उठाया गया है।

आदमी (1939) निर्देशक: वी. शांताराम इसमें मानवता को दर्शाने का प्रयास किया गया है। एक पुलिस वाले का वेश्या से प्रेम, घर में अस्वीकृति, वैश्या का अपराधी होना आदि के माध्यम से मानवता को जगाने का प्रयास किया गया है।

अछूत कन्या (1936)निर्देशक : फ्रांज़ ओस्टेन इसमें दलित लड़की की सामाजिक स्थिति को दर्शाया गया है। एक तरह से यह सुधारवादी फिल्म है।

अछूत (1940) निर्देशक :चंदुलाल शाह, इसमें ऊंची जातियों के शोषण, अस्पृश्यता पर प्रहार किया गया है। शोषण के कारण नीची जाति के लोगों का हिंदू धर्म को छोड़कर इसाई हो जाना दर्शाया गया है।

दो बीघा जमीन (1953)

निर्देशक :बिमल राय

इसमें किसनों की ज़मीन को जमींदार का जबर्दस्ती छीनना दर्शाया गया है। अदालत के माध्यम से भी किसान अपनी जमीन वापस नहीं ले पाता है।

मीठा ज़हर (1938)

निर्देशक :सोहराब मोदी

यह फिल्म शराब की लत की बुराइयों को दर्शाती है। शराबबंदी का समर्थन करती है

तलाक (1938)

निर्देशक :सोहराब मोदी

इसमें तलाक के सकारात्मक और नकारात्मक पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है।

औरत (1940)

निर्देशक :महबूब खान

इस फिल्म का पुनर्निर्माण महबूब खान ने मदर इंडिया (1957)के रूप में किया है। इसमें गांव के साहूकार द्वारा महिला के मानसिक और शारीरिक शोषण का चित्रण किया गया है।

मजदूर (1934)

निर्देशक : एम.डी .भवनानी

यह प्रेमचंद की कहानी पर आधारित है। इसमें मज़दूरों के हकों की बात की गई है।

किसान कन्या (1937)

निर्देशक : मोती .बी.गिडवानी

यह पहली स्वदेशी रंगीन फिल्म है। इससे पहले सैरन्ध्री (1933)में रंगीन दृश्य थे पर वे जर्मनी में कराए गए थे ।यह फिल्म गरीब किसानों की दुर्दशा को दर्शाती है।

बूट पॉलिश (1954)

निर्देशक: प्रकाश अरोड़ा

इस फिल्म में आदर्शोन्मुख यथार्थवाद दिखाई देता है ।इसमें भाई बहन की कहानी है। ये बचपन से संघर्ष करते हैं। भीख मांगते हैं और बूट पॉलिश करते हैं। लेकिन सुखांत के रूप में इन दोनों बच्चों को एक अमीर आदमी गोद ले लेता है।

ग़ुलामी (1985)

निदेशक: जे.पी.दत्ता

यह फिल्म राजस्थान से संबंधित जाति और सावंतवाद पर आधारित है। एक तरह से जमींदारों के खिलाफ एक क्रांति को दर्शाया गया है।

इस प्रकार देखा जा सकता है कि सामाजिक मुद्दों को अपनी फिल्मों का विषय बनाकर उसका विश्लेषण किया जाता है।

बोध प्रश्न

- सामाजिक फिल्मों का परिचय देते हुए उनका उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।
- सामाजिक फिल्मों का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

14.3.4.2.3 रोमांटिक फिल्में

सन् 1985 में एक फिल्म आई थी मोहब्बत । इस फिल्म में इन्दीवर द्वारा लिखित एक गीत है-

सांसों से नहीं कदमों से नहीं मोहब्बत से चलती है दुनिया दुनिया...

इस दिल की बात को दिमाग भी समझ ले तो जिंदगी सफल हो जाए। रोमांटिक फिल्मों में प्रेम कहानी होती हैं। यह स्नेहपूर्ण बंधन पर केंद्रित होती हैं। इसमें प्रेमालाप, प्रेम गीत तथा विवाह आदि को मुख्य रूप से दर्शाया जाता है।

ये प्रेमी एक दूसरे को पाने के लिए बहुत संघर्ष करते हैं। और ये अगर नहीं मिल पाते हैं तो अपने आपका अंत भी कर लेते हैं। जैसे इन फिल्मों में देखा जा सकता है- 'हीर रांझा','लैला मजनू','एक दूजे के लिए' तथा 'कयामत से कयामत' तक आदि। फिल्मी दुनिया में रोमांटिक फिल्मों का अपना इतिहास है। बोलती फिल्मों का आरंभ 1931 से हुआ है। लेकिन मूक फिल्मों के दौर से ही रोमांटिक फिल्मों का अपना वजूद है। उदाहरण 'हीर रांझा' इस फिल्म को "हिंदी में अनेकानेक बार फिल्माया गया है। सबसे पहले 1928 में फातिमा बेगम ने इसे मूक फिल्म की तरह बनाया। इस मूक युग में ही एक साल बाद 1929 में आर.एस चौधरी और पेसी करनी ने बनाया था। सवाक् युग में फिर उसे 1931 में जे पी अडवाणी, 1932 में ए .आर. करदार, 48 में वली, 70 में चेतन आनंद और 92 में हरमेश मल्होत्रा ने बनाया। 1956- 57 में क्रमशः हमीद बट और जे.सी. आनंद ने यही प्रेम कथा 'हीर' नाम से फिल्माई थी"। (हिंदी सिनेमा बीसवीं से इक्कीसवीं सदी तक - मु.सं. प्रहलाद अग्रवाल पृ. सं.33) इस प्रकार प्रेम कहानी फिल्मों को चलाती है।

फिल्मों का उद्देश्य ऐसी कहानियों से रूबरू कराना तो है ही साथ ही पैसे कमाना भी है। इसलिए अनेक काल्पनिक कहानियों को गढ़कर रोमांटिक फिल्मों का निर्माण करते हैं। कथानक में सफलता का राज भी यही है कि कथा के मार्मिक स्थलों को आप कितनी बेहतर तरिके से संप्रेषित कर पाते हैं।

एक बार फिल्मकार महेश भट्ट मानू में आए थे तो उन्होंने कहा था कि-'हमारी फिल्मों का टारगेट ऑडियंस 17 से 25 वर्ष के बीच के युवा हैं।' अर्थात महेश भट्ट का कहना था कि युवा जो देखना चाहते हैं हम वही निर्माण करेंगे।

रोमांटिक फिल्में जैसे कि आरंभ से ही बन रही है। उदाहरण 'बरसात (1949), 'दाग (1952) तथा 'चोरी चोरी (1956)आदि। लेकिन 80 और 90 के दशक में रोमांटिक फिल्मों का बोलबाला रहा । दरअसल 1973 में आई फिल्म बॉबी से युवा जोड़ियाोें की रोमांटिक फिल्मों का दौर आरंभ हो गया था। इस फिल्म ने युवाओं की रोमांटिक फिल्मों के लिए भूमिका बना दी थी। इसी परंपरा में 80 के दशक में 'रॉकी' (1981), 'लव स्टोरी '(1981), 'बेताब' (1983), 'हीरो' (1983), 'वो 7 दिन' (1983), 'कयामत से कयामत तक' (1988) तथा 'मैंने प्यार किया' (1989) आदि फिल्में निर्मित हुई।

90 के दशक में 'आशिकी' (1990), 'दिल' (1990) ,'सौगंध' (1991), 'दिल है कि मानता नहीं' (1991), 'दीवाना' (1992), 'कभी हाँ कभी ना' (1993), 'दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे' (1994) , 'रंगीला' (1995), 'दिल तो पागल है' (1996), 'प्यार तो होना ही था' (1998) तथा 'मोहब्बतें' (1999) आदि।

इन दो दशकों के बाद भी रोमांटिक फिल्में बनती रही हैं। उदाहरण 'बादल' (2000), 'सांवरिया' (2007), 'बैंड बाजा बारात' (2010), 'स्टूडेंट ऑफ द ईयर' (2012), 'हाफ गर्लफ्रेंड' (2017), 'धड़क' (2018), 'चंडीगढ़ करे आशिकी'(2021), तथा 'तेरी बातों में ऐसा उलझा जिया' (2024) आदि।

रोमांटिक फिल्मों की अनेक शैलियों है। उदाहरण

ऐतिहासिक रोमांस- 'मुग़ल-ए-आजम' (1960), 'जोधा अकबर' (2008) तथा 'बाजीराव मस्तानी' (2015) आदि।

अलौकिक रोमांस- 'नागिन' (1976), 'महबूबा' (1976) तथा 'कुदरत' (1981) आदि।

सुखांतक रोमांस- 'लव स्टोरी' (1981) 'बेताब' (1983) तथा 'हीरो' (1983) आदि।

दुखांतक रोमांस- 'हीर रांझा' (1970), 'लैला मजनू' (1976) तथा 'कयामत से कयामत तक' (1988)आदि।

रोमांटिक कॉमेडी- 'चलती का नाम गाड़ी' (1958) ,'पड़ोसन' (1968) तथा 'अंदाज अपना अपना' 1994 आदि।

फेंटेसी रोमांस- 'पाताल भैरवी'(1985), 'हातिम ताई' (1990) तथा 'अजूबा' (1990) आदि।

संगीतात्मक रोमांस- 'पारसमणि' (1963),'जमाने को दिखाना है' (1981) तथा 'आशिकी' (1990) आदि।

रोमांटिक थ्रिलर- 'डर' (1993) 'बिच्छू' (2000) तथा 'गैंगस्टर' (2006) आदि।

यह रोमांटिक फिल्मों की कुछ शैलिया हैं। अतः रोमांटिक फिल्मों द्वारा फिल्मकार लोगों को एक हसीन दुनिया की सैर कराते हैं। जिसमें यथार्थ कम और कल्पना अधिक होती है।

बोध प्रश्न

- रोमांटिक फिल्मों का व्यवसाय: चर्चा कीजिए।
- रोमांटिक फिल्मों के प्रकारों का परिचय दीजिए।

14.3.4.2.4 साहित्यिक कृतियों पर आधारित फिल्में

दादा साहब फाल्के ने जब 'लाइफ ऑफ क्राइस्ट' (1911) फिल्म देखी तो उन्होंने कृष्ण पर फिल्म बनाने की बात सोची अर्थात हमारे पौराणिक साहित्य पर फिल्म बनाना चाहा फिर उन्होंने 1913 में 'राजा हरिश्चंद्र' फिल्म बनाई वह भी पौराणिक साहित्य ही है। पहली सवाक् फिल्म 'आलमआरा' (1931) भी फ़ारसी कंपनी का एक नाटक था जो मंच पर खेला जा चुका था। अर्थात फिल्म के जन्म से ही साहित्य उसके साथ है। एक तरह से साहित्य के प्रचार प्रसार में फिल्म ने अपना योगदान दिया है। फिल्म के प्रचार प्रसार की क्षमता को प्रेमचंद भी स्वीकार करते थे । वे सिनेमा को स्वस्थ परंपराओं का वाहक देखना चाहते थे। " अतः प्रेमचंद फिल्म उद्योग में जून 1934 से मार्च 1935 तक लगभग 9 महीने रहे और लौट आए ।"(सिनेमा और साहित्य -हरीश कुमार पृ.सं 49) क्योंकि वे फिल्मकारो के अनुरूप अपने साहित्य से समझौता नहीं करना चाहते थे।

साहित्य और सिनेमा ये दो अलग-अलग माध्यम है। सिनेमा की अपनी मांग होती है। सिनेमा का मुख्य उद्देश्य व्यवसाय है। इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता । यह धारणा है कि साहित्यिक कृतियों पर बनी फिल्में बॉक्स ऑफिस पर नहीं चलती हैं। लेकिन ऐसा प्रत्येक साहित्यिक कृति के साथ नहीं होता है ।एक साहित्यिक कृतियों पर एक से अधिक बार फिल्में बनी है, ऐसा भी हुआ है । अर्थात इन फिल्मों ने सफलता हासिल की है। उदाहरण शरद चंद्र चट्टोपाध्याय की बंगाली कृति देवदास पर इसी नाम से हिंदी में तीन बार फिल्म बन चुकी है। 1935 में प्रथमेश बरुवा के निर्देशन में, 1955 में बिमल राय

के निर्देशन में तथा 2002 में संजय लीला भंसाली के निर्देशन में फिल्म बनी और तीनों बार सफल रही।

भगवती चरण वर्मा के हिंदी उपन्यास चित्रलेखा पर इसी नाम से दो बार फिल्म बनी है। 1941 में केदार शर्मा के निर्देशन में तथा 1964 में भी केदार शर्मा ने ही इसे दूसरी बार फिल्माया है ।

केशव प्रसाद मिश्र के हिंदी उपन्यास कोहबर की शर्त पर दो बार फिल्म बनी 1982 में गोविंद मुनिस के निर्देशन में 'नदिया के पार'1994 में सूरज बड़जात्या के निर्देशन में 'हम आपके हैं कौन' फिल्म बनी।

विजयदान देथा की कहानी'दुविधा' पर इसी नाम से 1973 में मणि कौल के निर्देशन में तथा 2005 में अमोल पालेकर के निर्देशन में 'पहेली' नाम से फिल्म बनी आदि।

मुश्किल वहाँ होती है जहाँ कृतिकार चाहते हैं कि उनकी कृति पर हूबहू फिल्म बन जाए । यह न तो व्यावहारिक होता है और न संभव है। फिल्मकार के लिए कृति एक कच्चा माल होती है। निर्देशक को उसकी पटकथा, संवाद व गीत आदि तैयार करना होता है। उसे फिल्म के अनुरूप ढालना पड़ता है तो स्वाभाविक है कि कृति में बदलाव तो होगा ही। जैसे एक गीत है - दो कदम तुम भी चलो दो कदम हम भी चले मंजिले प्यार की आएँगी चलते-चलते...

ऐसे ही कृतिकार को कहीं कहीं तो समझौता करना ही पड़ता है ।क्योंकि फिल्मों में पूंजी लगती है। उन्हें फिल्म से पैसा कमाना है । फिल्म बाज़ार से जुड़ा है। साहित्य के साथ ऐसा नहीं है। वह समाज की बेहतरी चाहता है। तुलसी ने कहा था -'मैं स्वांत सुखाय लिखता हूँ ।' अर्थात साहित्य का लेखन व्यक्तिगत होता है। फिल्म एक टीमवर्क होता है। आज का फिल्म समाज की बेहतरी को गौण तथा मनोरंजन और पैसा कमाने को अधिक महत्व देता है।

साहित्य अपने आप में श्रेष्ठ हो सकता है ।पर अगर उसे जन-जन तक पहुंचना है तो उसे सिनेमा के रूप में ढालना पड़ेगा। अधिक नहीं तो कहीं-कहीं समझौता करना पड़ेगा।

फिल्मकारो ने साहित्य को समझकर उसके साथ इंसाफ भी किया है और पैसे भी कमाए। हैं। उदाहरण 'देवदास' (2002) 'चित्रलेखा' (1941, 1964), 'रजनीगंधा' (1974) 'आँधी' (1975) आदि।

बोध प्रश्न

- साहित्यिक कृतियों पर आधारित व्यावसायिक फिल्म: चर्चा कीजिए।

हिंदी साहित्य पर आधारित फिल्में

भारत में आज़ादी से पूर्व यह महसूस किया गया की हिंदी उत्तर और दक्षिण को जोड़ती है। उस समय हिंदी का रूप हिंदुस्तानी बन गया था। हिंदी का आंदोलन उसे राष्ट्रभाषा के रूप में देखना चाहता था। दादा साहब फाल्के ने भी राजा हरिश्चंद्र हिंदी फिल्म बनाई। हिंदी फिल्मों ने हिंदी के प्रचार-प्रसार में अपना योगदान दिया है। इसलिए हिंदी के बहुत से साहित्यकार फिल्मों से प्रत्यक्ष रूप से जुड़े हैं। उदाहरण कवि प्रदीप ,प्रेमचंद ,भगवतीचरण वर्मा, आचार्य चतुरसेन शास्त्री, भीष्म साहनी, धर्मवीर भारती ,कमलेश्वर ,फणीश्वरनाथ रेणु, मन्नू भंडारी तथा राजेंद्र यादव आदि।

हिंदी के वे साहित्यकार जिनके साहित्य ने फिल्मों को अपनी ओर खींचा वे न भी रहे तो उनका साहित्य फिल्मों द्वारा जीवित रखना चाहा वे हैं- चंद्रधर शर्मा गुलेरी ,मोहन राकेश तथा मुक्तिबोध आदि। साहित्यिक कृतियाोंं ने व्यावसायिक और कला दोनों ही प्रकार की फिल्मों को प्रभावित किया है। व्यावसायिक फिल्मों के कुछ उदाहरण है-

हिंदी साहित्य पर आधारित व्यावसायिक फिल्में-

क्.सं	फिल्म का नाम	रिलीज वर्ष	रचना का नाम, विधा	रचनाकार	निर्देशक
1.	चित्रलेखा	1941	चित्रलेखा (उपन्यास)	भगवती चरण वर्मा	केदार शर्मा
2.	धर्मपुत्र	1961	धर्मपुत्र (उपन्यास)	आचार्य चतुरसेन शास्त्री	यश चोपड़ा
3.	चित्रलेखा (पुनर्निमित)	1964	चित्रलेखा (उपन्यास)	भगवती चरण वर्मा	केदार शर्मा
4.	तीसरी कसम	1966	मा रे गए गुलफाम (कहानी)	फणीश्वर नाथ रेणु	बासु भट्टाचार्य
5.	रजनीगंधा	1974	यही सच है (कहानी)	मन्नू भंडारी	बासु चटर्जी
6.	आँधी	1975	काली आँधी(उपन्यास)	कमलेश्वर	गुलज़ार
7.	नदिया के पार	1982	कोहबर की शर्त(उपन्यास)	केशव प्रसाद मिश्र	गोविंद मुनिस
8.	हम आपके हैं कौन	1994	कोहबर की शर्त(उपन्यास)	केशव प्रसाद मिश्र	सूरज बड़जात् (पुनःनिर्मित)

साहित्य का एक और रूप भी माना गया है जिसे लोकप्रिय साहित्य या लुगदी साहित्य या घासलेट साहित्य भी कहा जाता है। हिंदी के लोकप्रिय साहित्य में गुलशन नंदा का नाम प्रमुख है। गुलशन नंदा ऐसे साहित्यकार हैं जिनके उपन्यासों को पढ़ने के लिए लोग लालायित रहते थे। इनके उपन्यासों की हजारों, लाखों प्रतियों की बिक्री होती थी। इसी लोकप्रियता को देखते हुए उनके उपन्यासों पर अनेक फिल्में बनी है ।उनमें से कुछ हैं-

क्र.सं	फिल्म का नाम	रिलीज़ वर्ष	रचना का नाम	निर्देशक

1. फूलों की सेज 1964 अंधेरे चिराग इंदर राज आनंद
2. काजल 1965 माधवी राम माहेश्वरी
3. पत्थर के सनम 1967 साँवली रात राजा नवाथे
4. झील के उस पार 1973 झील के उस पार बप्पी सोनी
5. महबूबा 1976 सिसकते साज़ शक्ति सामंता

गुलशन नंदा ने और भी कई प्रसिद्ध फिल्मों की कहानी लिखी हैं।

बोध प्रश्न

1. लोकप्रिय साहित्य पर आधारित व्यावसायिक फिल्मों का परिचय दीजिए ।

हिंदी फिल्मों द्वारा केवल हिंदी साहित्य ही नहीं अपितु भारतीय साहित्य भी जन सामान्य तक अपनी पहुँच बना पाया है। जिनमें से कुछ इस प्रकार हैं-

क्र. फिल्म का नाम रिलीज़ रचना का नाम रचनाकार निर्देशक
सं वर्ष भाषा ,विधा

1. आनंदमठ 1952 आनंद मठ (बंगाली उपन्यास) बंकिम चंद्र चटर्जी हेमेन गुप्ता 2. काबुलीवाला 1961 काबुलीवाला (बंगाली उपन्यास) रवींद्रनाथ टैगोर हेमेन गुप्ता 3. गाइड 1965 द गाइड (अंग्रेजी उपन्यास) आर.के.नारायण विजय आनंद 4. सरस्वती चंद्र 1968सरस्वतीचंद्र (गुजराती उपन्यास) गोवर्धनराम माधवराव त्रिपाठी गोविंद सैरया 5.गीत गाता चल 1975 अतिथि(बंगाली कहानी) रवींद्रनाथ टैगोर हिरेन नाग

6.चितचोर 1976 चीत्ताचकोर (बंगाली कहानी) सुबोध घोष बासु चटर्जी 7.स्वामी 1977स्वामी (बंगाली कहानी) शरदचंद्र चटर्जी बासु चटर्जी 9.उमराव जान 1981 उमराव जान अदा (उर्दू उपन्यास) मिर्जा हादी रुसवा मुजफ्फर अली 8.उत्सव 1984 मृच्छकटिक (संस्कृत नाटक) शूद्रक गिरीश कर्नाड 10.इजाज़त 1987 जतुगृह (बंगाली कहानी) सुबोध घोष गुलज़ार

11.रुदाली 1993 रुदाली (बंगाली कहानी) महाश्वेता देवी कल्पना लाजमी 12.पिंजर 2003 पिंजर (पंजाबी उपन्यास) अमृता प्रीतम चंद्र प्रकाश द्विवेदी 13.उमराव जान 2006 उमराव जान अदा (उर्दू उपन्यास) मिर्ज़ा हादी रुसवा जे.पी. दत्ता

उपर्युक्त भारतीय रचनाओं के अतिरिक्त भी अनेक कृतियों पर फिल्मों का निर्माण किया गया है, किया जा रहा है और किया जाता रहेगा ।

बोध प्रश्न 1. हिंदीतर साहित्य पर आधारित व्यावसायिक फिल्मों का परिचय दीजिए।

14.3.4.2.5 व्यावसायिक फिल्मों के अन्य प्रकार

फिल्मों के इन प्रकारों को शैली भी कहा जाता है। प्रकार के अंतर्गत भी कई प्रकार होते हैं। जैसे रूपक और उपरूपक । इसे फिल्म का विषय भी कहा जा सकता है। क्योंकि प्रकार विषय के आधार पर ही बनाए गए हैं। निम्नांकित रूप से इन्हें वर्गीकृत किया जाता है। उदाहरण जीवनी परक (Biopic), एक्शन, कॉमेडी, विज्ञान एस.एफ., थ्रिलर, खेलकूद, डरावनी तथा संगीतात्मक फिल्में आदि प्रकार देखे जा सकते हैं।

जीवनी परक (Biopic): वर्तमान समय में ऐसी फिल्मों का चलन अधिक हो गया है। बहुत से प्रसिद्ध व्यक्तियों पर फिल्में बनी है और बन रही हैं। जैसे 'भाग मिल्खा भाग' (2013),'एम.एस.धोनी' (2016),'अन्ना' (2016), 'संजू' (2018) तथा 'साइना (2021) आदि।

एक्शन फिल्में: इस प्रकार की फिल्मों में हिंसा और स्टंट होते हैं। विस्फोट ,लड़ाई तथा एक दूसरे का पीछा करती गाड़ियाँ आदि। आमतौर पर माना जाता है कि मर्दाना फिल्में होती हैं। लेकिन 'हंटरवाली' (1935) फिल्म महिला केंद्रित थी और एक्शन फिल्म थी। पुरुष प्रधान एक्शन फिल्मों में 'शोले'(1975), 'दीवार' (1975),'वा'र (2019) तथा 'कल्कि' (2024) आदि हैं।

कॉमेडी फिल्में: दरअसल सभी फिल्मों में एक से अधिक शैलियाँ शामिल रहती हैं। लेकिन जिस शैली का अंश अधिक होता है उसी के अनुसार उसको नाम दिया जाता है। मुख्य अंश कॉमेडी हो तो वह फिल्म कॉमेडी फिल्म कहलाती है। जैसे 'अंदाज अपना अपना' (1994),'हंगामा' (2003), 'फिर हेरा फेरी' (2006) तथा 'वेलकम' (2007) आदि।

विज्ञान एस.एफ फिल्में: इसमें कल्पना के माध्यम से विज्ञान की कथा कही जाती है। इसमें विज्ञान के सिद्धांतों को शामिल किया जाता है। यह कथा ग्रहों के विषय में या अन्य विज्ञान के विषय से संबंधित हो सकती है। उदाहरण 'मि.इंडिया' (1987), 'कोई मिल गया' (2003), 'रोबोट' (2010) 'रा.वन' (2011) तथा 'पी.के' (2014) आदि।

थ्रिलर फिल्में: इनमें रोमांस और रहस्य होता है। ऐसी फिल्मों में तनाव, घबराहट तथा उत्तेजना का एहसास करवाया जाता है। आगे क्या होगा इसकी उत्तेजना होती है। जासूसी कहानी भी इसी वर्ग में रखी जाती हैं। उदाहरण 'वह कौन थी' (1964), 'राज़' (2002), 'हमराज़' (2002) तथा 'एक विलेन' (2014) आदि।

खेलकूद केंद्रित फिल्में : ऐसी फिल्मों का उद्देश्य खेलकूद के महत्व को रेखांकित करना होता है। खेल के प्रति युवाओं की रुचि को बढ़ावा देना होता है। खेलकूद पर कुछ मुख्य फ़िल्में हैं- 'जो जीता वही सिकंदर' (1992), 'इकबाल' (2006),'चक दे इंडिया' (2007), 'भाग मिल्खा भाग' (2013), 'मेरी कॉम' (2014),'दंगल '(2016) तथा 'सुल्तान' (2016) आदिः

डरावनी फिल्में (Horror) डरावनी फिल्मों की बात हो और रामसे ब्रदर्स का जिक्र न हो ये संभव नहीं है। रामसे ब्रदर्स डरावनी या भूतिया फिल्मों के पर्याय माने जाते हैं। उनकी कुछ प्रमुख फिल्में हैं- 'होटल' (1981), 'पुराना मंदिर'(1984), 'हवेली' (1985),'तहखाना' (1986),'वीराना'(1988) तथा 'पुरानी हवेली'(1989) आदि। रामसे ब्रदर्स के अतिरिक्त भी कई फिल्मकारों ने डरावनी या भूतिया फिल्मों का निर्माण किया है

जिनमें से कुछ निर्देशक है- राजकुमार कोहली की 'जानी दुश्मन' (1979) तथा 'विक्रम भट्ट' की '1920' (2008) आदि।

संगीतात्मक फिल्में: हमारे भारत में गीत और संगीत का इतिहास बहुत पुराना है। लिपि के आविष्कार से पहले भी मौखिक गीत के रूप में लोकगीत हमारे यहां विद्यमान थे। जो अनेक अवसरों पर वाद्ययंत्रों के साथ गए जाते थे।

फिल्में जैसे ही सवाक् हुई तभी से फिल्मों में गीत और संगीत का आरंभ हो गया था। सन् (1932) में फिल्म 'इंद्रसभा आई जिसमें 72 गीत थे। यह अब तक का विश्व रिकॉर्ड है। बहुत सी हिंदी फिल्में ऐसी हैं जिनकी प्रसिद्धि का मुख्य कारण फिल्म का गीत और संगीत ही रहा है। जैसे 'पारसमणि' (1963),'दोस्ती' (1964) तथा 'आराधना' (1969)आदि।

इसमें कोई दो राय नहीं है कि हिंदी फिल्मों में गीत व संगीत अहम रहा है ।लेकिन कुछ निर्देशकों ने अपनी फिल्मों में गीत संगीत को अधिक महत्व दिया है ।जैसे राज कपूर,नासिर हुसैन, प्रकाश मेहरा, महेश भट्ट, सुभाष घई आदि हैं।

इनमें से नासिर हुसैन संगीतात्मक फिल्मों के लिए प्रसिद्ध हैं। उनके द्वारा निर्देशित लगभग सभी फिल्में संगीत पर आधारित रही हैं। जिनमें से मुख्य है- 'तुमसा नहीं देखा'(1957),'दिल देके देखो' (1959), 'जब प्यार किसी से होता है'(1961), 'फिर वही दिल लाया हूँ'(1963),'प्यार का मौसम' (1969), 'कारवाँ' (1971), 'यादों की बारात' (1973),'हम किसी से काम नहीं' (1977), 'ज़माने को दिखाना है'(1981),'मंज़िल मंज़िल' (1984) तथा 'जबरदस्त' (1985)आदि।

निर्माता के रूप में उनकी फिल्में रही हैं- 'कयामत से कयामत तक' (1988) तथा 'जो जीता वह सिकंदर (1992) ।

'कयामत से कयामत तक फिल्म ने एक तरह से फिर से संगीतात्मक फिल्मों का दौर आरंभ कर दिया। संगीतकार आनंद मिलिंद तथा नदीम श्रवण ने 90 के दशक की फिल्मों को मधुर गीत व संगीत से सराबोर कर दिया।

जैसे अच्छे प्रबंधन के लिए चीजों को बांटा जाता है वैसे ही फिल्मों के भी अलग-अलग प्रकार बने।

ऐसे ही फिल्मों के और भी प्रकार देखे जा सकते हैं। जो विषय के अनुसार विस्तृत होते जाएंगे। लेकिन जो फिल्म के मुख्य प्रकार हैं उन सभी का जिक्र यहाँ किया गया है।

गैर फीचर फिल्मों से फिल्मों का आरंभ हुआ है। लेकिन बाद में फीचर फिल्मों का महत्व बढ़ गया। गैर फीचर फिल्मों के भी प्रकार रहे हैं तथा फीचर फिल्मों के भी अनेक प्रकार बन गए ।

बोध प्रश्न

- फिल्मों के अन्य प्रकारों पर प्रकाश डालिए।
- संगीतात्मक फिल्मों का परिचय दीजिए।

14.4 : पाठ सार

फिल्म का आरंभ एक तरह से भारत के साहित्य को प्रसारित करने के लिए हुआ था। इसे आरंभिक फिल्मों में देखा जा सकता है। मूक फिल्मों के दौर में पहले लघु फिल्में जो अपनी प्रकृति में गैर फीचर फिल्में थी,फिर फीचर फिल्में तत्पश्चात सवाक् फिल्में 1934 में पार्श्व संगीत तथा 1935 में पार्श्व गायन का आरंभ हुआ। गैर फीचर फिल्मों के प्रकारों में वृत्त चित्र , लघु तथा विज्ञापन फिल्म आदि का भी विकास होता रहा था। भारतीय फिल्म प्रभाग ने वृत्त चित्रों के निर्माण में अहम भूमिका निभाई। इसी संस्था ने सन् 2019 में मुंबई में **भारतीय सिनेमा का राष्ट्रीय संग्रहालय** की स्थापना की है।

लघु फिल्मों से चलचित्र का आरंभ भी हुआ है। समय की अवधि के अनुसार उनके प्रकार बने। नए निर्देशकों के लिए उनके लघु फिल्म उनके लिए पोर्टफोलियो का काम करने लगे। इनकी प्रतियोगिता भी होती रही है। विज्ञापन फिल्मों का मुख्य उद्देश्य ब्रांड का प्रसार करना रहा है। लघु विज्ञापन का इसमें महत्व रहा।आजकल हम विज्ञापन युग में जी रहे हैं। आप कहीं भी रहे विज्ञापन से अछूते नहीं रह सकते हैं। फीचर फिल्म इन्हें समय की अवधि और कथात्मक विकास के आधार पर नाम दिया गया है। गैर फीचर फिल्में फीचर फिल्म के आरंभ में दर्शाई जाती रही हैं। इसके दो प्रकार बने समानांतर या कला फिल्म तथा व्यावसायिक फिल्म। आज़ादी के पश्चात फिल्में हॉलीवुड की तर्ज़ पर बनने लगी। फिल्मों का बजट बढ़ने लगा। विदेश में फिल्मों की शूटिंग होने लगी। फिल्मों की मधुरता फीकी पड़ने लगी। लेकिन अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कला फिल्मों ने ही भारतीय फिल्मों को पहचान दिलाई थी। कला फिल्मों के संरक्षण हेतु FFC आगे आया। कला फिल्मों को वित्त सहायता से प्रोत्साहित किया। इसी के अंतर्गत कला फिल्मों की शुरुआत मृणाल सेन द्वारा निर्देशित **भुवनशोम** (1969) से हुई। FFC 1975 में NFDC हो गया। किसने भी कला फिल्मों को प्रोत्साहन देना जारी रखा।

साहित्यिक कृतियों पर दोनों ही प्रकार की फिल्में बनी। समानांतर भी तथा व्यावसायिक भी। व्यावसायिक फिल्मों के घोषित व अघोषित अनेक प्रकार रहें- मुख्य प्रकारों में- ऐतिहासिक फिल्में, सामाजिक फिल्में, रोमांटिक फिल्में तथा साहित्यिक कृतियों पर आधारित फिल्में आदि रहीं। अन्य प्रकारों में एक्शन फिल्में, कॉमेडी फिल्में,

खेलकूद पर केंद्रित फिल्में, रहस्यात्मक फिल्में ,भूतिया फिल्में ,फेंटेसी फिल्में तथा संगीतात्मक फिल्में आदि। ऐतिहासिक फिल्मों में इतिहास दर्शाया जाता है। जैसे 'सम्राट अशोक'(1922), 'मुग़ल-ए-आजम' (1960) तथा 'जोधा अकबर' (2008) आदि।

सामाजिक फिल्में: ये समाज पर केंद्रित होती हैं। यह जागरूकता और चेतना की वाहक होती हैं। किसी समस्या को दर्शाने के लिए इससे बड़ा कोई जनसंचार माध्यम नहीं है। जैसे -'सवकारी पाश'(1925)इसमें किसानों की समस्या को दर्शाया गया है। कला फिल्मों के आंदोलन के पूर्व भी फिल्में सामाजिक मुद्दे उठाती रही है। जैसे- 'दुनिया ना माने'(1937), 'औरत' (1940),'दो बीघा जमीन' (1953) आदि। रोमांटिक फिल्में: इसमें प्रेम कहानी होती हैं। प्रेमालाप, प्रेमगीत तथा विवाह आदि को मुख्य रूप से दर्शाया जाता है। प्रेम के लिए संघर्ष की भी भूमिका होती है। इन फिल्मों के उपरूप भी होते हैं। जैसे सुखांतक, दुखांतक, अलौकिक, ऐतिहासिक, कॉमेडी, फेंटेसी, थ्रिलर तथा संगीतात्मक रोमांस आदि।

साहित्यिक कृतियों पर आधारित फिल्में: फिल्मों के जन्म से ही साहित्य फिल्मों से जुड़ा रहा है। अनेक हिंदी के साहित्यकार भी फिल्मों से जुड़े रहे हैं। जैसे कवि प्रदीप ,प्रेमचंद, भगवतीचरण वर्मा, आचार्य चतुरसेन शास्त्री, आदि। केवल हिंदी साहित्य पर ही नहीं अपितु भारतीय साहित्य भी फिल्मों के माध्यम से जन-जन तक पहुंचा है। हिंदी साहित्य पर निर्मित फिल्मों में 'चित्रलेखा' (1941, 64), 'धर्मपुत्र' (1961) तथा 'तीसरी कसम' 1966 आदि हैं ।

साहित्य का एक और रूप है जिसे लोकप्रिय साहित्य या लुग्दी साहित्य या घासलेट साहित्य नाम दिया गया है। इस साहित्य के प्रमुख लेखक गुलशन नंदा हैं। इनके साहित्य पर अनेक फिल्मों का निर्माण हुआ हैं। अन्य भारतीय भाषाओं के साहित्य पर जिन फिल्मों का निर्माण हुआ है उनमें से कुछ है- 'आनंद मठ' (1952), 'गाइड' (1965) तथा 'गीत गाता चल' (1975) आदि।

उपर्युक्त प्रकारों के अतिरिक्त भी विषय के अनुसार फिल्मों के अन्य प्रकार भी संभव हो सकते हैं।

14.5 : पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन का निष्कर्ष होगा।

1. गैर फीचर फिल्मों से फिल्मों का आरंभ हुआ है।
2. आरंभिक फिल्मों के विषय पौराणिक और ऐतिहासिक रहे हैं

3. स्वतंत्रता के पश्चात के फिल्मों का झुकाव हॉलीवुड की फिल्मों के अनुकरण की ओर रहा। साथ ही न्यू वेव फिल्म की लहर भी आई है।

4. गैर फीचर फिल्म तथा फीचर फिल्म इन दो प्रकारों का विकास हुआ।

5. फिल्म कला की अपेक्षा व्यवसाय बनने पर 70 के दशक में फिल्मों के दो मुख्य भाग हुए समानांतर या कला सिनेमा तथा व्यावसायिक सिनेमा।

6. कला फिल्मों को वित्त द्वारा FFC तथा NFDC ने प्रोत्साहित किया।

7. कला फिल्मों ने हिंदी और भारतीय साहित्य में अभिव्यक्त सामाजिक समस्याओं पर फिल्मों का निर्माण किया।

8. व्यावसायिक फिल्मों का मुख्य उद्देश्य पैसा कमाना हो गया था। इसके कारण उसमें कृत्रिमता अधिक आने लगी।

9. व्यावसायिक फिल्मों के अनेक प्रकार बनते गए। जैसे ऐतिहासिक, सामाजिक, रोमांटिक, थ्रिलर, कॉमेडी, जीवनी परक, भूतिया तथा संगीतात्मक आदि।

14.6 : शब्द संपदा

1. सिनेमा = फिल्म ,चित्रपट, मूवी
2. मूक फिल्म = ध्वनि रहित फिल्म
3. सवाक् फिल्म = बोलती फिल्म
4. पार्श्व संगीत = पर्दे के पीछे का संगीत
5. पार्श्व गायन = पर्दे के पीछे का गायन
6. FFC = Film Finance Corporation
7. NFDC = National Film Development Corporation(राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम)
8. पौराणिक = पुराण की कथा, पुराण का संदर्भ
9. फीचर फिल्म = कथा चित्र (समय अवधि अनुसार)
10. गैर फीचर फिल्म= लघु फिल्म, वृत्त चित्र व विज्ञापन फिल्म
11. वृत्त चित्र = व्यक्ति, स्मारक, सत्य घटना पर आधारित फिल्म
12. लघु फिल्म = कम समय अवधि की फिल्म
13. विज्ञापन फिल्म= किसी वस्तु और फिल्म आदि के प्रचार के लिए निर्मित
14. व्यावसायिक फिल्म =लाभ कमाने के उद्देश्य से निर्मित फिल्म

15. कला या समानांतर फिल्म= यह फिल्म यथार्थवाद पर आधारित होती है। इसमें कला को महत्व दिया जाता है।
16. विज्ञान एस .एफ = कल्पना के माध्यम से विज्ञान की कथा दर्शाई जाती है।
17. हिंदीतर = हिंदी के अतिरिक्त अन्य भाषा
18. रिमेक = पुनः निर्माण, पुनर्निर्माण

14.7 : परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. गैर फीचर फिल्म के प्रकारों पर प्रकाश डालिए।
2. कला या समानांतर फिल्म क्या है? समझाइए।
3. सामाजिक फिल्मों का परिचय देते हुए उनका उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।
4. रोमांटिक फिल्मों की समीक्षा कीजिए।
5. साहित्यिक कृतियों पर आधारित व्यावसायिक फिल्में :चर्चा कीजिए।
6. फिल्मों के अन्य प्रकारों पर प्रकाश डालिए।

खंड (ब)

लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. वृत्त चित्र और लघु फिल्म की समीक्षा कीजिए।
2. व्यावसायिक फिल्में क्या होती है? समझाइए।
3. ऐतिहासिक फिल्मों पर प्रकाश डालिए।
4. हिंदी एवं हिंदीतर साहित्य पर निर्मित फिल्में: चर्चा कीजिए।
5. संगीतात्मक फिल्मों का परिचय दीजिए।

खंड (स)

I सही विकल्प चुनिए

1. सन् 1973 में निर्मित वृत्त चित्र 'सुहानी सड़क' के निर्देशक कौन थे? ( )

अ) ऋत्विक घटक आ) ख्वाजा अहमद अब्बास
इ) मणि कौल ई) श्याम बेनेगल

2. सन् 1971 में निर्मित फिल्म 'फिर भी' कमलेश्वर की किस कहानी पर आधारित है? ( )

अ) दिल्ली में एक मौत आ) राजा नीरंबसिया

इ) तलाश ई) नीली झील

3. सन् 1974 में निर्मित फिल्म '27 डाउन' किस लेखक के उपन्यास पर आधारित है? ( )

अ) कमलेश्वर आ) मोहन राकेश

इ) रमेश बक्षी ई) भीष्म साहनी

4. सन् 1983 में निर्मित फिल्म 'मंडी' किस भाषा की कहानी पर आधारित है?( )

अ) उर्दू आ) तेलुगू

इ) बंगाली ई) हिंदी

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

1. मुग़ल-ए-आज़म फिल्म सन् ..... में रिलीज हुई थी ।

2. सन् 1954 में निर्मित फिल्म मिर्ज़ा ग़ालिब के निर्देशक.....थे।

3. बाबूराव पेंटर द्वारा निर्मित मूक फिल्म सावकारी पाश (1925) का बोलती फिल्म के रूप में पुनर्निर्माण सन् ..... में किया गया था।

4. महबूब खान द्वारा सन् 1957 में निर्मित मदर इंडिया फिल्म , ...फिल्म का पुनर्निर्माण थी।

III. सुमेल कीजिए

1. बूट पॉलिश	अ) जेपी दत्ता
2. अछूत कन्या	आ) वी. शांताराम
3. गुलामी	इ) हिमांशु राय
4. मीठा ज़हर	ई) प्रकाश अरोड़ा
5. दुनिया ना माने	उ) सोहराब मोदी

14.8 : पठनीय पुस्तकें

1. हिंदी चित्रपट एवं संगीत का इतिहास- डॉ विमल
2. साहित्य और सिनेमा डॉ. जालिंधर इंगले
3. हिंदी फिल्म संगीत -अनिल भार्गव
4. हिंदी सिनेमा का अंतकरण- विनोद दास
5. सिनेमा और साहित्य -हरीश कुमार

6. हिंदी सिनेमा बीसवीं से इक्कीसवीं सदी तक- मुख्य संपादक. प्रहलाद अग्रवाल
7. रंग दस्तावेज सौ साल (खंड-1)- महेश आनंद
8. दृश्य श्रव्य संप्रेषण और पत्रकारिता -डॉ. जेम्स एस .मूर्ति

Websites

1. https://www.wikipedia.org
2. https://IMDb.com
3. https://chiloka.com
4. https.www.youtube.com
5. https://bharatdiscovery.org
6.https://filmdivision.nfdcindia.com
7.https://www,nfdcindia.com

इकाई 15 सिनेमा पटकथा लेखन

रुपरेखा

15.1 प्रस्तावना
15.2 उद्देश्य
15.3 मूल पाठ : सिनेमा पटकथा लेखन
15.3.1 सिनेमा पटकथा लेखन का स्वरूप
15.3.2 सिनेमा पटकथा लेखन की प्रविधि
15.3.3 सिनेमा पटकथा लेखन : स्रोत और विशेषता
15.4 पाठ सार
15.5 पाठ की उपलब्धियाँ
15.6 शब्द संपदा
15.7 परीक्षार्थ प्रश्न
15.8 पठनीय पुस्तकें

15.1 प्रस्तावना

साहित्य विचारों और भावों का वह प्रतिफलन है जिसका स्वरूप शब्द गढ़ते हैं| यानी साहित्य को आकार शब्दों से मिलता है| साहित्य के लिखित और मौखिक स्वरूप का प्रसार जनसंचार के माध्यम से द्रुत गति से हो रहा है| जन तक संदेश का संचार करने वाले माध्यम को जनसंचार माध्यम कहा जाता है| दूसरे शब्दों में संदेश भेजनेवाले (प्रेषक) और संदेश को प्राप्त करनेवाले (प्राप्तकर्ता) के मध्य संपर्क की स्थापना जनसंचार माध्यम करते हैं| इसके तीन प्रकार हैं- दृश्य माध्यम, श्रव्य माध्यम और दृश्य-श्रव्य माध्यम| इसी दृश्य-श्रव्य माध्यम के अंतर्गत सिनेमा आता है| यह इकाई सिनेमा के पटकथा लेखन पर केंद्रित है| जनसंचार माध्यम के अतिरिक्त एक नया शब्द प्रचलित है 'जन माध्यम'| जन माध्यम को दो भागों में बाँटते हैं- मुद्रित और इलेक्ट्रॉनिक माध्यम| यहाँ सिनेमा इलेक्ट्रॉनिक जन माध्यम है| सिनेमा की पटकथा अपने आरंभिक चरण में मात्र एक कथासार है| इसे सिनेमा की नींव कह सकते हैं| यह कथासार कभी किसी घटना की उद्देश्यपूर्ण विचार से ही संभव होता है|

15.2 उद्देश्य

प्रिय छात्रों! इस इकाई के अध्ययन से आप-

- सिनेमा पटकथा लेखन के स्वरूप को समझ सकेंगे|
- सिनेमा पटकथा लेखन के विभिन्न चरणों के माध्यम से उसके आधारभूत ढाँचा को जान सकेंगे|
- सिनेमा पटकथा लेखन के विभिन्न स्रोतों से अवगत हो सकेंगे|
- पटकथा लेखन की व्यावहारिक उपयोगिता को समझ सकेंगे|

15.3 मूल पाठ : सिनेमा पटकथा लेखन

15.3.1 सिनेमा पटकथा लेखन का स्वरूप

सिनेमा जनसंचार का दृश्य श्रव्य माध्यम है| सिनेमा के अनिवार्य तत्वों में से एक है पटकथा| 'पटकथा' शब्द की संरचना में पट और कथा ये दो शब्द जुड़े हुए हैं| पट का अर्थ है पर्दा और कथा मतलब कहानी| इसलिए पटकथा का अर्थ हुआ पर्दे पर दिखाई जाने वाली कहानी| यह कहानी कहाँ से उपजती है? यह आपके विचार की उपज है| हर सिनेमा का कोई-न-कोई केंद्रीय विचार होता है| इस केंद्रीय विचार को दर्शक सिनेमा के अंत में समझते हैं| एक पटकथा लेखक के मन में यह विचार पहले आता है| सिनेमा की कहानी का विस्तार बाद की बात है| पटकथा का संक्षिप्त रूप यह 'विचार' है| विचार को सामान्य बोलचाल की भाषा में 'आइडिया' तथा सिनेमा की भाषा में 'सब्जैक्ट' भी कहा जाता है| विचार/ आइडिया/ सब्जैक्ट से पटकथा की विषयवस्तु स्पष्ट हो जाती है| विचार के साथ ही सिनेमा से सीख के रूप में संदेश भी प्रेषित होता है| वह संदेश लोकोक्तियों और कहावतों से जुड़ी हो सकती है या दैनिक व्यवहार व नैतिकता से संबंधित हो सकती है| इस तरह से जनमानस में प्रचलित अवधारणा का प्रयोग आधारिका के रूप में किया जाता है| इसे प्रीमाइज भी कहते हैं| नाटक के संदर्भ में यह शब्द बहुधा सुना जाता है| सिनेमा जगत में इसे आइडिया के समकक्ष माना जाता है| इससे पटकथा की थीम (संप्रेषित संदेश) का पता चलता है| नाटक की आधारिका से पटकथा एवं अन्य नाटकों के लिए भी आइडिया मिल जाते हैं|

मनोहर श्याम जोशी के शब्दों में देखें, "सच तो यह है कि शेक्सपियर के नाटकों की आधारिकाओं का अन्य नाटककार और पटकथा लेखक जमकर इस्तेमाल करते रहे हैं| मिसाल के लिए 'मैकबेथ' की आधारिका यह है कि बहुत ऊँचा उठने की कोशिश इनसान को नीचे गिराती है| 'ओथेलो' की आधारिका यह है कि ईर्ष्यालु प्रेमी खुद को भी खत्म करता है और अपनी प्रेमिका को भी| 'किंग लीयर' की आधारिका यह है कि अपने सगे-से-सगे पर भी भरोसा करना बहुत खतरनाक होता है| इसी तरह रोमियो एंड जूलियट की आधारिका यह है कि सच्चा प्यार कभी नहीं झुकता और मरकर भी अमर रहता है|...कई फिल्मों में शेक्सपियर के नाटकों की कहानी को ही किसी अन्य परिवेश में रख कर, थोड़ा-सा भिन्न जामा पहनाकर पेश कर दिया गया है| रोमियो एंड जूलियट को ही ले लीजिए| ताजातरीन और यादगार मिसाल है, क़यामत से क़यामत तक'| हॉलीवुड में रोमियो जूलियट की कहानी को न्यूयॉर्क के गली-कूचों में आपस में लड़ते रहनेवाले गिरोहों की पृष्ठभूमि में फिल्माकर 'वेस्ट साइड स्टोरी' बनाई गई| इसमें कहानी बिल्कुल वही थी मगर सारा लड़ाई-झगड़ा, नाच-गाना आधुनिक शहरी जीवन से जुड़ा हुआ था| 'आइडिया से आइडिया निकलता है' – इस धारणा को पुष्ट करते हुए हॉलीवुड में एक और फिल्म बनी जिसमें परिवेश तो वेस्ट साइड की तरह आधुनिक है लेकिन पात्र शेक्सपियर के लिखे हुए संवाद ज्यों-के त्यों बोलते हैं- 'रोमियो एंड जूलियट'|" मान लें कि एक आधारिका है- 'लालच बुरी बला है|' इस पर कई फ़िल्में बनी हैं| इस पर कहानियों को लिखकर फिल्माया गया है| एक राजा था जिसे सोने का बहुत शौक था| उसे किसी ने वरदान मांगने को कहा तो उसने मांग लिया कि वह जिस भी सामान को छुए वह सोने का हो जाए| इस वरदान के फलस्वरूप उसके

खाने-पीने की चीजें भी सोने (धातु) की हो जाती हैं| भूख-प्यास से व्याकुल वह व्यक्ति जब अपनी बेटी को छूता है तो वह भी सोने की हो जाती है| इसी लालच का स्वरूप आप 'गोल्ड' सिनेमा में देखिए जो डब सिनेमा है| बोलेरो में रखा 200किलो गोल्ड जिसका स्रोत अज्ञात है, उसे युवक ले लेता है| यदि वह एकदम आदर्शवादी किस्म का होता तो वह एक आना भी नहीं छूता पर वह आज का युवा है| आदर्श, सच्चाई के साथ व्यावहारिकता का संदेश प्रेषित करते हुए, वह उस गोल्ड का अपने उपयोग भर हिस्सा सर्विस टैक्स के रूप में अपने पास रखकर बाक़ी जनहित के लिए सरकार के पास जमा करवाता है| एक अलग नजरिया यहाँ उभरकर सामने आता है| सिनेमा के अंतिम चरण में एक पंक्ति आती है कि अपने बागान से खानेभर फल रखकर हमलोग सारे फल बाँट देते थे क्योंकि घर में रखने से वे सड़ते| उस अलग नजरिए का जन्मदाता वह परिवेश है जिसमें उस युवक की परवरिश हुई है| यहाँ आप कह सकते हैं कि आवश्यकता से अधिक धन जमा करने की अपेक्षा उसका उपयोग जनहित में करना उचित है| यह इस फिल्म की आधारिका है| आइडिया क्या है? किसी को अकस्मात खजाना मिल जाए तो क्या हो?

आइडिया और प्रीमाइज को मिलाकर कथा का सबसे छोटा रूप (संक्षिप्ततम कथासार) बनता है जिसे कोई पटकथा लेखक किसी निर्माता-निर्देशक को सुनाता है| आइडिया को सुनाने के लिए आपको कुछ सेकेंड ही मिलते हैं| इसके बाद सिनेमा की पटकथा को संक्षेप में अधिकतम दो मिनट में सुनाने के लिए कहा जाता है| यह 'टू मिनट मूवी' का कॉन्सेप्ट भारतीय सिनेमा जगत में हॉलीवुड से आया है| इसे पटकथा का सार कहा जाता है| यह सिनेमा की कहानी का पहला और सबसे छोटा सार संक्षेप कहलाता है| इसमें आपको सिनेमा के ख़ास सीन, उनमें घटित होने वाली घटनाएँ तथा उन घटनाओं से निकलनेवाले महत्वपूर्ण तथ्यों पर प्रकाश डालना होगा| फिर इन सबको नाटक की भांति तीन अंक (आदि, मध्य और अंत) वाले ढाँचे में लिखना होगा| आप जानते हैं कि मनुष्य के जीवन के तीन चरण की भांति उसकी कहानी के भी तीन हिस्से होते हैं| ऐसे ही नाटक भी तीन अंकीय ढाँचे वाला होता है| इस ओर अरस्तू ने ही ध्यान दिलाया था|

"बाद में इन तीनों अंकों को अलग-अलग लोगों ने अलग-अलग नाम दिए हैं| हॉलीवुड वाले पहले हिस्से को 'सिचुएशन' यानी 'परिस्थिति' दूसरे को 'कॉम्प्लीकेशंस' यानी उलझाव और तीसरे अंक को 'रेजोल्यूशन' यानी निष्पत्ति पुकारते हैं| पहले अंक में आपको बताना पड़ता है कि मुख्य पात्र कौन है? और क्या मामला दरपेश है? गोया ये कौन लोग हैं और इन्होंने क्या चक्कर चला रखा है? दूसरे अंक में आपको यह दिखाना होता है कि उनके अपने-अपने चक्करों की टक्कर से क्या-क्या उलझनें पैदा हुईं और फिर कैसा महाचक्कर उठ खड़ा हुआ? इस दूसरे अंक में घटनाओं की एक झड़ी-सी लगनी चाहिए| कथानक का यही सबसे बड़ा और बेहतर हिस्सा होना चाहिए| फिर आता है तीसरा अंक जिसमें दूसरे अंक के महाचक्कर से पैदा संकट का समाधान प्रस्तुत करना होता है| संकट, चरमोत्कर्ष और समाधान को 'क्राइसेस', 'क्लाइमेक्स' और 'रेजोल्यूशन' कहा जाता है| आप अपनी कहानी का घटनाक्रम इस तीन अंक वाले ढाँचे में संक्षेप में लिख डालें तो 'टू मिनट मूवी' तैयार हो जाएगी|"(मनोहरश्याम जोशी)| यह 'टू मिनट मूवी' सिनेमा की पूरी कहानी का संक्षेपण है| सिनेमा की पटकथा की रुपरेखा को तैयार करने के लिए

इसी को दृश्यवार लिखा जाता है| इसके लिए पारिभाषिक शब्द स्टेप आउटलाइन का प्रयोग किया जाता है| पटकथा की रुपरेखा बना लेने से लेखक को सुविधा हो जाती है| तमाम काट-छांट की गुंजाइश को वह इसी में पूरा कर लेता है ताकि व्यर्थ का श्रम न हो| अब दृश्य, घटना और संवाद का एक क्रम निश्चित हो जाता है कि किस दृश्य के बाद कौन-सा दृश्य आएगा? उसमें क्या घटित होगा? कौन से संवाद बोले जायेंगे? अब पटकथा लेखन के लिए एक स्वरूप निश्चित हो जाता है| इसी निर्धारित स्वरूप के आधार पर कथा-विस्तार का कार्य पटकथा लेखक करता है| आप कह सकते हैं कि दृश्यों का शृंखलाबद्ध संयोजन करके एक अनुक्रम तैयार किया जाता है| यह अनुक्रम पटकथा की रुपरेखा है जिसे आगे तीन अंकीय ढाँचे में विस्तृत रूप में ढाला जाएगा|

बोध प्रश्न

- आइडिया से आप क्या समझते हैं?
- प्रीमाइज से आप क्या समझते हैं?
- टू मिनट मूवी का कांसेप्ट क्या है?
- पटकथा की रुपरेखा से आप क्या समझते हैं?
- 'क्राइसेस', 'क्लाइमेक्स' और 'रेजोल्यूशन' का सिनेमा की पटकथा में क्या महत्व है?

15.3.2 सिनेमा पटकथा लेखन की प्रविधि

आप जान चुके हैं कि सिनेमा की पटकथा लिखने के लिए नाटक के तीन अंकीय ढाँचे को ही आधार बनाया गया है| कथानक, चरित्र चित्रण, संवाद, वातावरण, उद्देश्य और शैली इत्यादि तत्व जिस तरह कहानी विधा में संलग्न थे; उसी तरह इनका संबंध पटकथा में भी व्याप्त है| आपने देखा पटकथा के आरंभ से पहले आइडिया और प्रीमाइज का होना आवश्यक है| इनसे ही पटकथा का जन्म होता है| कथानक में जिस तरह विचार और भाव अंतःस्यूत थे उसी तरह पटकथा में आइडिया और प्रीमाइज है| पटकथा की मूल इकाई दृश्य है| दृश्यों का निर्माण शॉट से होता है| एक दृश्य में कई शॉट लिए जा सकते हैं| इन दृश्यों का क्रमिक संयोजन किया जाता है जो सिनेमा की दृष्टि से बेस्ट हो| सिनेमा की दृष्टि से बेस्ट वही होता है जो दर्शकों की दृष्टि में बेस्ट हो| दृश्यों की यह शृंखला ही पटकथा बनाती है| यदि किसी साहित्यिक कृति की कहानी को फिल्म के लिए चुना जाता है तब उसमें भी दृश्य, बिंब एवं संवाद संबंधी आवश्यक बदलाव किए जाते हैं| इन बदलावों को व्यावहारिक तौर पर जानने के लिए आपसे अपेक्षा की जाती है कि आप उन साहित्यिक कृतियों को पढ़ें जिनका सिनेमांकन किया गया है एवं उस पर बनी सिनेमा को भी देखें| इससे आप पटकथा लेखन का गुर जान सकेंगे|

हिंदी भाषा के सिनेमा के कुछ पटकथा लेखक एवं उनके द्वारा लिखित सिनेमा-पटकथा के नाम यहाँ दिए जा रहे हैं, देखें- सलीम जावेद (दीवार, शोले, जंजीर), जावेद अख्तर (लगान, कल हो ना हो), अभिजीत जोशी (लगे रहो मुन्नाभाई, थ्री इडियट, पी के), ख्वाजा अहमद अब्बास (नया संसार, नई दुनिया, आवारा, श्री 420), जूही चतुर्वेदी (विकी डोनर, पीकू), वजाहत मिर्जा (मदर इंडिया, मुगले आजम)|

कुछ सिनेमा के नाम देखें जो साहित्यिक कृतियों पर बनी हैं| 'ओंकारा', 'अंगूर' और 'मकबूल' क्रमशः शेक्सपियर की कृति ओथेलो, द कॉमेडी ऑफ़ इरर्स और मैकबेथ पर बनी फिल्म

है| 'तेरे मेरे सपने', 'सरकार', 'गाइड', 'पिंजर', 'चोखेर बाली' इत्यादि सिनेमा का आधार जो साहित्यिक कृतियाँ हैं, उनके नाम क्रमशः इस प्रकार हैं - 'द सिटाडेल' (ए.जे.क्रोनिन), गॉड फादर (मारियो पूजो), द गाइड (आर.के नारायण), पिंजर (अमृता प्रीतम), चोखेर बाली (रवींद्रनाथ टैगोर)| शरतचंद्र चट्टोपाध्याय के उपन्यास 'देवदास' और 'परिणीता' पर उसी नाम से सिनेमा बनाए गए| मन्नू भंडारी के उपन्यास आपका बंटी पर बनी सिनेमा का नाम 'समय की धारा' है| इसी तरह सच्ची घटनाओं और चरित्रों पर आधारित सिनेमा भी हैं, जैसे- नीरजा, चक दे इंडिया, पद्मावत, जोधा-अकबर, बाजीराव मस्तानी, राजी, शेरशाह, नो वन किल्ड जेसिका, गुरु, संजू, माँझी द माउंटेन मैंन, मैरीकॉम, सरबजीत, बैंडिट क्वीन इत्यादि|

इनकी पटकथा के स्वरूप पर आप गौर कीजिए| अलग पात्र, अलग वातावरण, अलग संवाद, अलग उद्देश्य, अलग भाषा-शैली- इनका यह अलगपन ही इन्हें ख़ास बनाता है| मौलिक लेखन सफल पटकथा लेखन की पहली शर्त है| नकलचीपन आइडिया लेने तक ठीक है क्योंकि विचार तो कुछ देख-सुन कर या सोच कर ही उत्पन्न होता है| अब उस विचार को एक नए मौलिक रूप में संपूर्ण नाटकीयता के साथ पेश करना ही पटकथा लेखक की चुनौती है|

सिनेमा में कैमरा दर्शकों का प्रतिनिधि है| यही शॉट के माध्यम से दृश्यों को संयोजित करता है| कैमरे के आगे आने से पहले दृश्य को पटकथा में अंकित किया जाता है| दृश्य में पात्रों की मनःस्थिति, उसकी काया भाषा, उसकी बाह्यपरिस्थिति एवं उसकी अपनी भाषा को स्पष्ट किया जाता है| यह दृश्य एक उद्देश्य के लिए लिखा जाता है| एक उदाहरण द्वारा इसे देखें-

तमिल कहानीकार ना.पार्थसारथी की कहानी 'बँधुआ दलिद्दर' जिसकी पटकथा मन्नू भंडारी ने लिखी है उसका एक अंश यहाँ कथा-पटकथा पुस्तक से उद्धृत किया जा रहा है, देखें-

(नया दृश्य)

(मुत्तरसु अपने कमरे में| सामने चिट्ठियों का ढेर....जिन्हें वह पढ़ता जा रहा है| अडैक्कलम परिवार का प्रवेश| डरते हुए हाथ जोड़कर खड़ा हो जाता है|)

इस दृश्य में भी संवाद होते हैं| अडैक्कलम परिवार को न काम मिलता है न घर| उन्हें सौ रूपये देकर झिझककर घर से निकलने के लिए मुत्तरसु कह देता है| इसके बाद दृश्य समाप्त हो जाता है| पटकथा लिखते हुए दृश्य के समाप्त होने पर दृश्य समाप्त लिखा जाता है| फिर अगले दृश्य की शुरुआत नया दृश्य लिखते हुए किया जाता है| जैसा आगे दिखाया गया है|

(दृश्य समाप्त)

(नया दृश्य)

(अडैक्कलम एक फैक्ट्री के आगे भर्ती की लंबी लाइन के बीच में खड़ा है| थोड़ी देर में भीतर से एक चपरासीनुमा आदमी आता है|)

चपरासी: ठेकेदार साहब को आज टैम नहीं....अर्जेंट काम...सो भर्ती-वर्ती नहीं होगी....भागो सब यहाँ से|

(लाइन भीड़ में बदल जाती है|....सबके चेहरे की हताशा-निराशा को दिखाते हुए कैमरा अडैक्कलमके चेहरे पर स्थिर हो जाता है| चेहरा सपाट-भावहीन सिर्फ आँखों में तराइयाँ|)

कट

(एक मिल के दरवाजे पर काफी भीड़ जमा है.....फाटक पर ताला लगा है| अडैक्कलम किसी आदमी के सामने चिरौरी करते हुए...)

अडैक्कलम: हमको काम चाहिए .....जो भी बोलेगा करेगा .....पर काम देओ....साब ....दो दिन से भूखा...

आदमी : दीखता नहीं मिल में तालाबंदी हो रही है....हम सब मजदूर ही बेकार बैठे.....सभी तो बेकार मर रहे .....कहीं कोई कम नहीं.....

(कैमरा मजदूरों के चेहरे से होता हुआ अडैक्कलम के चेहरे पर टिक जाता है| वह धम्म से जमीन पर बैठकर घुटनों में सिर छिपा लेता है| पत्नी पीठ पर हाथ फेरते हुए|)

पत्नी: मैं बोली तुमको .....अपना भगवान के पास चलो| वो लाया हमको वो काम भी देगा| काम नहीं मिलता.....भीख भी नहीं मिलती| कैसे रहेगा? तुम वहीं जाओ|

कट

(मुत्तरसु की कोठी के दरवाजे पर बंदूक लिए चौकीदार खड़ा है| अडैक्कलम परिवार आता है| डरते-डरते अडैक्कलम आगे बढ़ता है....हाथ जोड़कर गिरगिराते हुए|)

अडैक्कलम: हमको भीतर जाना ...साहब से मिलना|

चौकीदार: (ऊपर से नीचे देखते हुए) भाग यहाँ से .....आ जाते हैं जाने कहाँ के चोर उचक्के...

अडैक्कलम: नहीं-नहीं हम चोर नहीं.....साहब तो हमको लाया .....काम छुड़ा के लाया| पर इधर तो काम मिलता ही नहीं कहीं|

सामाजिक समस्या का चित्रण आप उपर्युक्त उदाहरण में पाते हैं| समकालीन समस्यायों को आधार बनाकर भी पटकथा लिखी जाती है| रुपरेखा बना लेने के बाद उसके विस्तार की बारी आती है जिसे तीन अंक में बाँट कर लिखना है| दर्शकों में रोचकता पैदा करने के लिए कहानी का आरंभ एक नाटकीय मोड़ से करना आवश्यक होता है| इसे प्लॉट पॉइंट कहते हैं| उपर दिए गए उदाहरण में अडैक्क्लम भोपाल शहर में मजदूरी कर रहा था| उसके सिर पर छत भी थी| मुत्तरसु जो राजनेता है अच्छी जिंदगी देने के बहाने उसे वहाँ से ले आता है| अब वह मारा-मारा फिर रहा है| न काम है न घर| दर्शक सोचता है अब क्या होगा? रोचकता जो यहाँ पैदा हो रही है उसमें वातावरण की भूमिका साफ़ दिखाई दे रही है| बाहरी घटनाओं के फलस्वरूप उत्पन्न पात्रों का मानसिक उद्वेलन द्रवित करनेवाला है| घटनाओं का विवरण देना पटकथा के लिए आवश्यक है| यह विवरण बिंब प्रधान हो सकते हैं| हृदय में अनुभूति इन बिंबों से जगनी चाहिए| जानने की उत्कंठा पटकथा में बरक़रार रहनी चाहिए| इसे दूसरे अंक में विविध पात्रों के आपसी द्वंद्व द्वारा तीव्रता मिलती रहनी चाहिए| इसके लिए उपकथानक एवं सहायक चरित्रों का प्रयोग किया जाता है| "सिटीजन केन' के अंतिम दृश्य में हम बर्फ पर चलनेवाली गाड़ी को जलता हुआ देखते हैं और पाते हैं कि उसपर भी वही नाम 'रोज' लिखा हुआ है जो पहले दृश्य में मरते हुए आदमी ने पुकारा था| इस तरह फिल्म के अंत और आरंभ में

परस्पर संबंध जुड़ जाता है"(मनोहरश्याम जोशी)| सिनेमा के अंत का आभास आरंभ में देना अच्छा रहता है| दूसरे अंक में जहाँ कथा अपने उठान पर होती है वहीं तीसरे अंक में उसका उत्कर्ष समाधान प्रस्तुत करता है| पटकथा संकट से समाधान तक की यात्रा का लिखित स्वरूप है जो विभिन्न उतार-चढ़ाव से होते हुए गंतव्य तक पहुँचती है|

बोध प्रश्न

- सिनेमा पटकथा लेखन की प्रविधि क्या है?
- साहित्य और सिनेमा में क्या संबंध है?

15.3.3 पटकथा लेखन : स्रोत और विशेषता

पटकथा एक कथासार है| इस का प्रमुख तत्व कथा है| यह कथा जहाँ-जहाँ से मिल सकती है वो सभी स्रोत पटकथा का स्रोत है| अक्सर कथा हम अपने आस-पास घटने वाली घटनाओं से उठाते हैं| घर-परिवार और समाज पर अपना प्रभाव छोड़ गए लोगों के चरित्र में कहानियाँ ढूँढ ली जाती है| कहानी के पात्रों के चरित्र के अनुरूप ही नायक-नायिका या खलनायक का चयन किया जाता है| इस प्रक्रिया को टाइप कास्टिंग कहते हैं| चरित्र की बात आती है तो मिथकीय, पौराणिक, ऐतिहासिक, राजनीतिक जैसे विशिष्ट प्रभाव वाले चरित्रों के साथ ही समाज के कमजोर तबके के अति सामान्य लोगों की कहानी भी असरदार मालूम होती है| सिनेमा की पटकथा के लिए इनका चयन किया जाता है| सामान्य को विशेष बनाकर यानी हाशिए को केंद्र में लाकर दिखाया जाता है| पटकथा लेखक को चरित्रों की पहचान होनी चाहिए| चरित्र-चित्रण की कला में उसे निष्णात होना चाहिए| क्योंकि चरित्रों के आपसी द्वंद्व से ही कहानी को गति मिलती है| चरित्र चित्रण करने के लिए लेखक को अपने कथा के पात्रों के बारे में बहिरंग और अंतरंग की पूरी जानकारी होनी चाहिए| नायक का संघर्ष, उसके संघर्ष में उसका सहयोग करनेवाले पात्र एवं बाधा डालनेवाले पात्र या खलनायक से उसका प्रतिद्वंद्व, ढोंगी चरित्र; ये सारी स्थितियाँ उपयुक्त वातावरण को ध्यान में रखकर पटकथा में लिखी जाती है| सुखांत सिनेमा में नायक की जीत होती है| दुखांत सिनेमा में इसका उल्टा भी हो सकता है| सिनेमा में प्रायः दो तरह के चरित्र देखे जाते हैं- आर्कटाइप और स्टीरियोटाइप| आर्कटाइप चरित्र जिन्हें विराट माना जाता है; ये मिथकीय और पौराणिक चरित्र होते हैं, जैसे- राम, कृष्ण| स्टीरियोटाइप चरित्र का संबंध आम जीवन से होता है| ये हमारे बीच के अतिसामान्य लोग होते हैं| इनका "वर्णन एक विशेषण और एक संज्ञा से कर दिया जाता है| जैसे पियक्कड़ पिता, अमीर अय्याश बूढा, सहनशील पत्नी, कामुक स्त्री, शर्मीली लड़की, दबंग लड़की, मस्तमौला लड़का, ईमानदार इंस्पेक्टर, भ्रष्ट नेता वगैरह|"

यदि इन पात्रों में पटकथा लेखक कोई विशिष्टता डालता है या इन्हें एक नए परिवेश में पेश करता है; तभी वह सफलता पाता है| 'चेहरे' फिल्म में अदालत की सारी व्यवस्था को एक घर के माहौल में फिल्माया गया है| एक जज है, दो वकील हैं, जेलर है, जल्लाद है और घर में आने वाले अजनबी को उसकी सहमति मिलने के बाद मुजरिम मानकर उसपर मुकदमा चलाया जाता है तथा सजा भी सुनाई जाती है| इस मुकदमे को वे लोग एक खेल की तरह लेकिन पूरी सच्चाई के साथ खेलते हैं| समूचे मुकदमे की रिकार्डिंग की जाती है ताकि केस को कोर्ट और क्राइम

ब्रांच में भेजा जा सके| मुजरिम पर जुर्म साबित होने पर उसे मौत की सजा सुनाई जाती है| वह रिकार्डेड टेप को लेकर घर से भागता है| सभी उसके पीछे भागते हैं| वह गलत दिशा में जाने लगता है| उसके पीछे आनेवाले लोग उसे उधर जाने से रोकते हैं| वह बेतहाशा भागता है और अचानक बर्फ से ढँका हुआ वह भाग टूटने लगता है और वह उसमें ही गिरकर अपनी जान से हाथ धो बैठता है| 'बुरा कर बुरा होगा' वाली बात यहाँ सच होती है|

हमारे आस-पास एवं मिथकीय आख्यानों के अतिरिक्त उपन्यास, कहानी, पत्र-पत्रिकाएँ, इतिहास, लोककथा इत्यादि भी पटकथा के बेहतर स्रोत हैं| इसमें पात्रों की मनःस्थिति और परिस्थिति पर बल होता है अतः मनोविज्ञान एवं समाजशास्त्र की पुस्तकों से भी पटकथा लेखन की प्रचुर सामग्री प्राप्त की जा सकती है| लेखक की तर्कशक्ति, उसकी परिपक्वता, उसका अनुभव संसार और उसकी संवेदना ही कथा को धार देते हैं| स्तरीय पटकथा लेखन की कुछ विशिष्टताओं को मनोहरश्याम जोशी ने उजागर किया है, वे इस प्रकार हैं-

- पटकथा लेखन के लिए मिथकीय तेवर को आदर्श माना जाता है|
- बताओ मत दिखाओ| हर पात्र का मोटिवेशन स्पष्ट करें| गौण पात्रों का मोटिवेशन स्पष्ट करने के लिए शब्दों का सहारा लिया जा सकता है| मुख्य पात्र का मोटिवेशन बिंबों के जरिए दिखाना चाहिए|
- अमेरिकी उपन्यासकार फिज्गेराल्ड का कथन है, "करेक्टर इज एक्शन" यानी कर्म ही चरित्र है| पात्रों के चरित्र घटनाओं को प्रभावित करते हैं और घटनाएँ पात्रों के चरित्र को| दूसरी बात यह कि पात्रों के कर्म से ही, उनके आपसी द्वंद्व से ही सब कुछ घटित होता है और कथानक विकसित होता है|
- द्वंद्व चार प्रकार के होते हैं- स्वभावगत या संबंधगत द्वंद्व, सामजिक द्वंद्व, परिस्थितिजन्य द्वंद्व, अंतर्द्वंद्व|
- सहायक पात्रों का पटकथा में उतना ही उपयोग करें जितना कहानी को बढाने के लिए आवश्यक हो|
- दर्शक पात्र की बाहरी विशेषताओं से उसकी भीतरी विशेषताओं का अनुमान लगाते हैं| अतः आप अपने पात्र की किसी बाहरी विशेषता को उसकी भीतरी विशेषता का प्रतीक भी बना सकते हैं| शेक्सपियर के प्रसिद्ध नाटक 'रिचर्ड थर्ड' का नायक विकलांग है और यह विकलांगता उसके चरित्र की खामियों का बाहरी प्रतीक भी है|
- कथावाचक की शैली ही पटकथा लेखन की शैली है|
- पटकथा अनिश्चित वर्तमान काल में लिखी जाती है| पटकथा लिखने के लिए इस ता है, ती है, ते हैं वाली भाषा को हृदयंगम कर लीजिए| प्रेमचंद की कहानी 'पूस की रात' पर आधारित पटकथा का एक दृश्य देखें-

  दृश्य-1, बाहर/झोपड़ी का दरवाजा/दिन

  'हम दिखाते हैं कि एक तगड़ा-सा गरीब अधेड़ आदमी हल्कू दरवाजे पर दस्तक दे रहा है और उससे थोड़ी दूर पर एक अन्य व्यक्ति हाथ में लाठी लिये मूंछें ऐंठता खड़ा है|

दरवाजा आवाज करके खुलता है| झाड़ू हाथ में लिये अधेड़ मुन्नी नजर आती है| हल्कू भीतर जाता है| लठैत व्यक्ति दरवाजे पर खड़ा हो जाता है|'

- बिली वाइल्डर की मशहूर कामेडी फिल्म 'सम लाइक इट हॉट' नाटकों जैसे लंबे-लंबे दृश्यों के बावजूद पटकथा की दृष्टि से आदर्श मानी जाती है| फिल्म चाइना टाउन के लिए लिखी गई उनकी रॉबर्ट टाउन पटकथा आदर्श मानी जाती है|
- पटकथा लेखन के लिए सिनेमा की भाषा का ज्ञान होना आवश्यक है|

बोध प्रश्न

- पटकथा लेखन के मुख्य स्रोत कौन से हैं?
- पटकथा लेखन की विशेषताएँ क्या-क्या हैं?

15.3.4 सिनेमा की तकनीकी भाषा

आप समझ चुके हैं कि सिनेमा की पटकथा पर्दे पर दिखाए जाने के लिए लिखी जाती है| इसके अंतिम चरण में सिनेमा की शूटिंग पटकथा का निर्माण किया जाता है| इसके लिए सिनेमा की भाषा का ज्ञान होना अपेक्षित है| अपनी कहानी को तर्कसंगत रूप से प्रस्तुत करने के लिए सिनेमा की भाषा की आवश्यकता पड़ती है| अध्ययन में सुविधा की दृष्टि से सिनेमा की भाषा से संबंधित कुछ शब्दावली यहाँ कई स्रोतों से संकलित करके दी जा रही है, देखें-

शॉट- यह सिनेमा की मूल इकाई है| यह कम-से-कम 1 से 2 सेकेंड का होता है|

क्लोज अप शॉट- इसे संक्षेप में CU कहते हैं| कैमरा बहुत नजदीक रखा जाता है|

मीडियम शॉट- इसे संक्षेप में MS कहते हैं| मनोविज्ञान स्पष्ट करने के लिए लिया जाता है|

लांग शॉट- इसे संक्षेप में LS कहते हैं| कैमरा एक जगह रहता है|

एक्सट्रीम लॉन्ग शॉट- इसमें कैमरा को बहुत दूर रखा जाता है|

मीडियम लांग शॉट- इसे संक्षेप में MLS कहते हैं|

मीडियम क्लोज शॉट- इसे संक्षेप में MCS कहते हैं|

सीन- सीन का अर्थ है दृश्य| इसे घटित होनेवाली गतिविधियाँ भी कह सकते हैं| यह पटकथा की मूल इकाई है| इसकी सुसंगत शृंखला से ही पटकथा का निर्माण होता है|

सीक्वेंस- एक निश्चित क्रम में घटित होनेवाली गतिविधियों का क्रमबद्ध संयोजन सीक्वेंस या अनुक्रम कहलाता है| इसकी संख्या प्रायः 35 से 45 तक होती है|

कट/ कट टू - एक सीन से दूसरे सीन के बीच के तात्क्षणिक परिवर्तन के लिए 'कट' का प्रयोग किया जाता है| यह प्रारंभिक कड़ी को सीधे जोड़ता है| एक सीन को एक जगह से हटाकर दूसरी जगह जोड़ने का निर्देश देने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है|

फेड आउट- शॉट धीरे-धीरे पर्दे के काला होने तक गहराता है, इसे फेड आउट कहते हैं|

फेड इन- यह सीन के अंत को चित्रित करता है या स्थान या समय में परिवर्तन दिखलाता है| इसमें नए शॉट का दृश्य धीरे-धीरे हल्का होता है|

डिजॉल्व- इसका प्रयोग डिजॉल्व सुपरइम्पोजिशन यानी क्षणिक धुंधलापन दिखाने के लिए किया जाता है| इसके लिए एक फेड आउट और एक फेड इन का प्रयोग किया जाता है| पहले शॉट के खत्म होने और दूसरे शॉट के दिखाई देने की प्रक्रिया एक साथ ही हो जाती है|

सुपर कम्पोजीशन- कहानी से संबद्धता बताने के लिए एक ही समय पर दो प्रतिबिंबों का पर्दे पर एक साथ दिखाई देना|
वाइप- वह रेखा जो एक चित्र को दूसरे चित्र से विस्थापित करती हुई पर्दे के साथ चलती है, उसे वाइप कहते हैं|

सिनेमा की दुनिया के ये तकनीकी शब्द पटकथा लेखन के क्षेत्र में आपकी राह आसान बनाएँगे| सिनेमा के दृश्यों में निरंतरता बनाए रखने के लिए इस भाषा की आवश्यकता होती है| इसे और समझने के लिए आप डॉ. जेम्स एस मूर्ति के विचार देखें| उनका कहना है, "फिल्म, मौलिक रूप से प्रतिबिंबों एवं संकेतों की भाषा है एवं इसका व्याकरण मौखिक भाषा के समान है| परंतु इसका अपना ही व्याकरण एवं वाक्य-विज्ञान होता है, जिसमें फिल्म तकनीक के मूल तत्व अंतर्निहित होते हैं| एक फिल्म चित्रात्मक निरंतरता में बनी होती है, शब्दकोष निरंतरता की व्याख्या अलग-अलग हिस्सों की अबाध गहरी एकता के रूप में करता है| चित्रात्मक निरंतरता की इस प्रकार कुल मिलाकर परिभाषा होगी- एक संतुलित रूप से शृंखलाबद्ध सुसंगत चलचित्र कथा का सृजन करने के लिए चलचित्र अनुक्रमों का उचित संयोजन एवं विकास|"
सिनेमा की भाषा के ज्ञान का उपयोग आप पटकथा लेखन में कर सकते हैं, जिससे बिना जाहिर किए ही निर्देशक के सामने यह जाहिर हो जाएगा कि आप इस क्षेत्र की जानकारी रखते हैं|

बोध प्रश्न

- सिनेमा की तकनीकी भाषा से आप क्या समझते हैं?

15.4 पाठ सार

पटकथा के आरंभ से पहले आइडिया और प्रीमाइज का होना आवश्यक है| कथानक में जिस तरह विचार और भाव अंतःस्यूत थे उसी तरह पटकथा में आइडिया और प्रीमाइज है| पटकथा की मूल इकाई दृश्य है| दृश्यों का निर्माण शॉट से होता है| एक दृश्य में कई शॉट लिए जा सकते हैं| इन दृश्यों का क्रमिक संयोजन किया जाता है जो सिनेमा की दृष्टि से बेस्ट हो| सिनेमा की दृष्टि से बेस्ट वही होता है जो दर्शकों की दृष्टि में बेस्ट हो| दृश्यों की यह शृंखला ही पटकथा बनाती है| पटकथा परदे पर दिखाने के लिये लिखी गई कहानी है| यह नाटक की तरह तीन अंक में लिखी जाती है| इसमे प्लाट पॉइंट यानी कथानक बिंदु का चयन किया जाता है| सिनेमा पटकथा के पहले अंक में पात्रों का परिचय प्रभावी ढंग से दिया जाता है| रोचक वातावरण की सृष्टि के साथ कथानक में जिज्ञासा उत्पन्न करनेवाले तत्वों को समाविष्ट किया जाता है| कहानी में गति उत्पन्न करनेवाली घटनाओं का उल्लेख किया जाता है| इससे सिनेमा की आधारिका का आभास मिल जाता है| आरंभ में ही अंत का भी पूर्वाभास दे दिया जाता है| इसे इंट्रोडक्शन सीन कहते हैं| दूसरे अंक में इस कथानक को विस्तृत आयाम दिया जाता है| जिसमें विभिन्न घटनाओं, पात्रों और क्रियाकलापों का समावेश किया जाता है| एकरसता से रोचकता भंग होती है| इससे बचने का उद्देश्य दूसरे अंक में जोरों पर होता है| तीसरे अंक में कहनी अपने सर्वोच्च उठान पर होती है| यह पटकथा का अंतिम अंक चरमोत्कर्ष के साथ समाधान भी प्रस्तुत करता है| पटकथा लेखन के तीन अंकीय ढांचे को तैयार करने में संवाद और बिंब का भी महत्व रहता है| पटकथा लेखक से अपेक्षा की जाती है कि वह अनुभवी, परिपक्व,

चरित्र निर्माण की कला में निष्णात एवं अपने परिवेश के प्रति जागरूक हो तथा विषय की अंदरूनी समझ रखता हो| पटकथा लेखन रोजगारपरक विधा है|

15.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से आप निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त कर सकते हैं-

1. पटकथा अपने आरंभिक चरण में मात्र एक कथासार है| यह अनिश्चित वर्तमान काल में लिखी जाती है|
2. पटकथा का संक्षिप्त रूप फिल्म का केंद्रीय विचार है| इसे 'आइडिया', 'वन मिनट सिनोप्सिस' तथा 'सब्जैक्ट' भी कहा जाता है| इससे पटकथा की विषयवस्तु स्पष्ट हो जाती है| प्रीमाइज से पटकथा के थीम का पता चलता है|
3. आइडिया और प्रीमाइज को मिलाकर संक्षिप्ततम कथासार बनता है|
4. 'टू मिनट मूवी' का कॉन्सेप्ट भारतीय सिनेमा जगत में हॉलीवुड से आया है| इसे पटकथा का सार कहा जाता है| यह सिनेमा की कहानी का पहला और सबसे छोटा सार संक्षेप कहलाता है|
5. 'टू मिनट मूवी' लिखते समय लेखक का ध्यान पटकथा के स्वरूप से अधिक सिनेमा के कहानीपन पर होना आवश्यक है| ट्रीटमेंट (15-40 पेज तक) लेखन के लिए भी साहित्यिकता की प्रधानता ही प्रमुख शर्त है| इससे पता चलता है कि कथा निरूपण में नाटकीयता कितनी प्रभावशाली है| ट्रीटमेंट में आंबियांस और हाइलाइट्स की प्रधानता होती है|
6. 'आप फिल्म के लिए जो 'टू मिनट मूवी' या 'ट्रीटमेंट' लिखें उसे राइटर्स एसोसिएशन के सदस्य बनकर पंजीकृत अवश्य करा लें|' (मनोहरश्याम जोशी)

15.6 शब्द संपदा

1. आंबियांस- वातावरण
2. हाइलाइट्स- सिनेमा में आकर्षण की सारी संभावनाएँ, जैसे- कोई ख़ास दृश्य, संगीत, नृत्य, तकनीक का प्रयोग, कोई विशेष घटना, एक्शन सीन, कोई जगह, पात्र का चरित्र चित्रण, इत्यादि जो सिनेमा में जान डाल देते हैं; हाइलाइट्स कहलाते हैं| ट्रीटमेंट में इनका उल्लेख किया जाना आवश्यक होता है|
3. ट्रीटमेंट- कथा निरूपण का तरीका बताना, इसके अंतर्गत पात्रों के सभी संभावित परिस्थितियों एवं मानसिक स्थिति के साथ वातावरण एवं घटनाओं के क्रम का विवरण फिल्मांकन की दृष्टि से दिया जाता है| यह कहानी का साहित्यिक पक्ष है|
4. स्टेप आउटलाइन- पटकथा की रुपरेखा, कहानी का सिनेमाई पक्ष, दृश्य के बाद दृश्य का क्रमिक अंकन, वन लाइनर
5. बहिरंग- भाषा, वेशभूषा, बोलने-उठने-बैठने-चलने का तरीका, खान-पान, रहन-सहन, व्यवहार इत्यादि बाह्याचार चरित्र का बाहरी पक्ष है जिसे बहिरंग कहते हैं|

6. अंतरंग- जीवन दर्शन, दूसरों के प्रति व्यवहार, दृष्टिकोण, प्राकृतिक स्वभाव
7. शूटिंग पटकथा- इसमें कैमराकोणों, कैमरा की गति और प्रकाश व्यवस्था के साथ सिनेमांकन से संबंधित सभी मुद्दों के लिए निर्देश दिया जाता है|
8. संक्षिप्ततम- सबसे छोटा

15.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए|

1. मूकपट ने बोलपट का रूप ले लिया| इस पंक्ति का विश्लेषण उदाहरणसहित करें|
2. 'आइडिया से आइडिया निकलता है'-इसे उदाहरण सहित स्पष्ट करें|
3. सिनेमा पटकथा लेखन की प्रविधि क्या है?
4. सिनेमा पटकथा के तीन अंकीय ढाँचे का सोदाहरण विश्लेषण करें|
5. साहित्यिक कृतियों पर आधारित सिनेमा की तुलनात्मक समीक्षा करें|
6. सिनेमा जनसंचार का कौन सा माध्यम है? इसकी जीवन में क्या उपयोगिता है?

खंड (ब)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए|

1. मीडिया में सिनेमा की क्या आवश्यकता है?
2. पटकथा लेखन से आप क्या समझते हैं?
3. सिनेमा की तकनीकी भाषा से आप क्या समझते हैं?
4. सिनेमा की तकनीकी भाषा का उदाहरण सहित परिचय दें|
5. पटकथा लेखन के विविध स्रोत कौन-से हैं?
6. पटकथा लेखन की विशेषताओं पर प्रकाश डालें|

खंड (स)

I. सही विकल्प चुनिए-

1. पटकथा की मूल इकाई क्या है? ( )
   (अ) शॉट (आ) दृश्य (इ) आइडिया (ई) सभी
2. 'कॉमेडी ऑफ़ इर्रस' पुस्तक के लेखक कौन हैं? ( )
   (अ) शेक्सपियर (आ) चेतन भगत (इ) रस्किन बांड (ई) कोई नहीं
3. 'अंगूर' सिनेमा किस पुस्तक पर आधारित है? ( )
   (अ) गॉड फादर (आ) द गाइड (इ) कॉमेडी ऑफ़ इर्रस (ई) ओथेलो
4. प्लॉट पॉइंट को क्या कहा जाता है? ( )
   (अ) कथानक बिंदु (आ) नाटकीय मोड़ (इ) अ और आ (ई) कोई नहीं

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

1. सिनेमांकन से संबंधित मुद्दों का निर्देश .....पटकथा में दिया जाता है|
2. स्टेपआउट लाइन पटकथा की .....है|
3. .....का अंतरंग और .....जानना पटकथा लेखक के लिए आवश्यक है|
4. .....की तकनीकी भाषा का ज्ञान .....को होना चाहिए|
5. .....और प्रीमाइज को मिलाकर ..... कथासार बनता है|
6. आइडिया से पटकथा की .....स्पष्ट हो जाती है|
7. दृश्यों की शृंखला से .....का निर्माण होता है|
8. .....मौलिक रूप से प्रतिबिंबों एवं संकेतों की भाषा है|

III. सुमेल कीजिए-

1. शॉट	(अ) धीरे-धीरे पर्दे के काला पड़ने तक गहरा होना
2. टाइप कास्टिंग	(आ) कथा निरूपण का तरीका
3. ट्रीटमेंट	(इ) क्षणिक धुंधलापन
4. डिजॉल्व	(ई) चरित्र के अनुरूप पात्र चयन
5. फेड आउट	(उ) टकराहट
6. दूसरा अंक	(ऊ) सिनेमा की मूल इकाई

15.8 पठनीय पुस्तकें

1. पटकथा लेखन एक परिचय – मनोहरश्याम जोशी
2. दृश्य श्रव्य संप्रेषण और पत्रकारिता – जेम्स एस मूर्ति
3. पटकथा लेखन व्यावहारिक निर्देशिका - असगर वजाहत
4. पश्चिम और सिनेमा - दिनेश श्रीनेत

इकाई 16 सिनेमा संवाद लेखन

इकाई की रूपरेखा

16.1 प्रस्तावना
16.2 उद्देश्य
16.3 मूल पाठ : सिनेमा संवाद लेखन
16.3.1 सिनेमा संवाद लेखन का स्वरूप
16.3.2 सिनेमा संवाद लेखन का प्रकार
16.3.3 सिनेमा संवाद लेखन की विशेषताएँ
16.4 पाठ सार
16.5 पाठ की उपलब्धियाँ
16.6 शब्द संपदा
16.7 परीक्षार्थ प्रश्न
16.8 पठनीय पुस्तकें

16.1 प्रस्तावना

पटकथा लेखन सिनेमा उद्योग का एक अंग है| इससे ही जुड़ा हुआ क्षेत्र संवाद लेखन का है| सिनेमा उद्योग में सिनेमा की पटकथा लिखने की पूरी प्रक्रिया में मोटे तौर पर तीन चरण सामने आते हैं| एक कथा, दूसरा पटकथा लेखन और तीसरा संवाद लेखन| इसके बाद शूटिंग पटकथा (स्क्रिप्ट) लिखने की बारी आती है| यह पटकथा लेखक नहीं लिखता है| यह निर्देशन के क्षेत्र से संबंधित है| कथा और संवाद लेखन का काम पटकथा लेखक से भी लिया जा सकता है| सिनेमा में संवादों की वैसी ही आवश्यकता है जैसे जीवन में बोली की| पर बिना भाव और विचार के बोली की क्या बिसात! संवाद 'बोली तथ्य और भाव' का संघात है|पहले सिनेमा में मौन संवाद होता था| वहाँ हाव-भाव तो था पर बोली नहीं थी| "इस असुविधा ने एक नई भाषा को जन्म दिया| जिसमें तस्वीरें ही खुद बोलती थीं| चित्रों के सहारे कहानी कह देने की यह कला कैमरे के पास-दूर, इधर-उधर जा सकने से मिलनेवाले तरह-तरह के चित्रों और इस तरह खींचे हुए चित्रों को उनमें संबंध पैदा करनेवाले क्रम से जोड़ने की युक्ति से विकसित हुई| मूकपट के दौर में दिग्दर्शकों ने इस कला में इतनी महारत हासिल कर ली कि बगैर संवाद सुने भी ज्यादातर कहानी दर्शकों की समझ में आने लगी| जहाँ बहुत जरुरी हुआ केवल वहीं संवाद को कार्ड में लिखकर फिल्मा लिया गया| और पात्र के ओंठ खुलने के बाद दिखा दिया गया| बोलते बिंबों का कमाल कुछ वर्षों पहले कमल हासन की मूक फिल्म 'पुष्पक' में देखा गया| उसमें तो कहीं कोई संवाद का कार्ड तक न था|

जब चित्र के साथ-साथ ध्वनि भी अंकित की जाने लगी तब मूकपट ने बोलपट का रूप ले लिया| इससे संवादों का महत्व बढ़ा लेकिन इतना भी नहीं कि रंगमंच की तरह हर बात संवादों के माध्यम से कही जाने लगे|" (मनोहर श्याम जोशी)| सिनेमा में संवाद से कहीं अधिक दृश्य और बिंब बोलते हैं| दूसरे शब्दों में दृश्य और बिंब की सहायता से संवाद की प्रभावोत्पादकता बढती है|

16.2 उद्देश्य

प्रिय छात्रों! इस इकाई के अध्ययन के उपरांत आप-

- सिनेमा के संवाद लेखन की प्रक्रिया को जान सकेंगे|
- सिनेमा के संवाद की स्वरूपगत विभिन्नता से परिचित हो सकेंगे|
- सिनेमा के संवाद में प्रयोग की जाने वाली भाषा और शैली को जान सकेंगे|
- सिनेमा संवाद लेखन की व्यावहारिक उपयोगिता से अवगत हो सकेंगे|

16.3 मूल पाठ : सिनेमा संवाद लेखन

16.3.1 सिनेमा संवाद लेखन : स्वरूप और प्रकार

संवाद का अर्थ है बातचीत करना| दो व्यक्तियों की आपस में बातचीत हो सकती है| दो से अधिक व्यक्तियों के मध्य परस्पर वार्तालाप हो सकता है| इस बातचीत के जरिए लोग अपने विचार और भावनाओं को ही व्यक्त करते हैं| अरबी भाषा में संवाद के लिए 'हीवार' (hiwar) शब्द है| इस शब्द की उत्पत्ति 'ह, व और र' के मिलने से हुई है| इसका अर्थ है एक अवस्था से दूसरी अवस्था में जाना| यानी संवाद में बदलने की क्षमता होती है| किसी से बात करके आप कभी हल्का महसूस करते हैं| कभी कुछ सुनकर आपको क्रोध आ जाता है| कभी कुछ सोचकर भी मनुष्य की मानसिक अवस्था में परिवर्तन होता है| यह परिवर्तन संवाद की प्रतिक्रिया के फलस्वरूप उभरकर सामने आता है| हर रोज घर-परिवार में, कार्यस्थल या मनोरंजन स्थल पर घटता हुआ दिखाई देता है| सिनेमा में इसी की चित्रात्मक प्रस्तुति दी जाती है| संवाद न सिर्फ मानसिक अवस्था को परिवर्तित करता है वरन बड़े-बड़े सामाजिक परिवर्तनों की जड़ में संवाद छिपा है|

अंग्रेजी में संवाद को 'डायलॉग' कहा जाता है| इसकी उत्पत्ति ग्रीक शब्द 'Dialogos' से हुई है| इसे आप इस तरह देख सकते हैं - {dia (द्वारा) + logos(शब्द)}| शब्दों के द्वारा संवाद किया जाता है| शब्दों के अतिरिक्त इसमें संकेतों और प्रतीकों का भी व्यवहार किया जाता है| संवाद केवल शाब्दिक व्यापार नहीं है| यह केवल बातचीत या विमर्श तक सीमित नहीं है| संवाद कभी तीक्ष्ण बाण है, कभी कोमल स्पर्श है, कभी षडयंत्र है, कभी सुंदर मैत्री, कभी अनंत ज्ञान की यात्रा का सुहावन मार्ग! अखिल विश्व और विज्ञान का रहस्य भी संवाद से ही उजागर होता है| संवाद के बिना दुनिया की कल्पना कीजिए! जिन्हें वाक् शक्ति नहीं मिली होती है, वे भी बात करते हैं! उनकी भाषा संकेतात्मक होती है| इशारों में वे अपनी बात को कहते और समझाते तथा समझते हैं| इसमें काया भाषा का भरपूर उपयोग होता है| सामान्य लोगों की बातचीत में भी काया भाषा का प्रयोग किया जाता है| सिनेमा में काया भाषा का उपयोग चरित्र चित्रण करने या भावना व्यक्त करने के लिए किया जाता है|

संवाद विषय का अध्ययन करनेवाले विद्वानों ने इसके कुछ सामान्य सिद्धांत बताए हैं, वे इस प्रकार हैं- विश्वास, खुलापन, ईमानदारी और समानता| यह सिद्धांत घृणा को हटाने के उद्देश्य से मानव समूह पर अध्ययन करने के बाद दिया गया है| सिनेमा भी मनुष्य की दुनिया की ही कहानी कहता है| विश्वास, खुलापन, ईमानदारी और समानता के कई रंग सिनेमा में उभरते हुए नजर आते हैं| इसी अर्थ में सत्यजीत रे की सिनेमा की परिभाषा उपयुक्त ठहरती है, देखें-

"एक फिल्म चित्र है, फिल्म शब्द है, फिल्म आंदोलन है, फिल्म नाटक है, फिल्म संगीत है, फिल्म एक कहानी है, फिल्म हजारों अभिव्यक्तिपूर्ण श्रव्य एवं दृश्य आख्यान है| आजकल हमें यह भी जोड़ना चाहिए कि फिल्म रंग है| जहाँ तक कि फिल्म का एक खंड जो मुश्किल से एक मिनट चलता है, उस सभी आयामों को साथ-साथ प्रदर्शित कर सकता है|" सिनेमा की इस व्यापक छवि में संवाद, दृश्य और बिंब का महत्व समान है| सिनेमा की गतिशीलता इन्हीं तत्वों पर निर्भर करती है| इसके साथ ही एक्शन और ड्रामा अपने चरम पर जाते हैं|

अरब डैनिश कार्यक्रम द्वारा संवाद के संबंध में जो शोध सामने आया है वह भी सिनेमा संवाद लेखन के व्यावहारिक प्रयोग से संबंधित है| उसमें इस तथ्य का खुलासा हुआ है कि अरब संस्कृति में संवाद की जड़ें बहुत गहरी समाई हुई हैं| अरब सभ्यता की पहली शताब्दी से ही बातचीत में संवाद (Dialogue in Communication) विषय पर अबु हिलाल अल-अस्करी, अल-जाहिज, इब्न अल-मुकफ्फा सहित कई विद्वानों ने इसका अध्ययन किया है|

अबु हिलाल अल-अस्करी ने संवाद में भावनाओं के महत्व को उभारा और सम अनुभूति (empathy) पर बल दिया| इसे परिभाषित करते हुए कहा कि संवाद के निहितार्थ का संबंध वक्ता के हृदय से होता है, "the arrival of the meaning that holds the speaker's heart." दूसरों के साथ संवाद प्रारंभ करने से पहले व्यक्ति को अपने विचारों और भावनाओं की जानकारी होनी चाहिए| पहले व्यक्ति आंतरिक संवाद स्थापित करता है फिर वह बोलता है एवं दूसरों को सुनता है| दूसरों की परिस्थिति में खुद को अटा कर देखता और सोचता है| अगर उसकी जगह मैं होता तो क्या होता या क्या करता? उन्होंने इस समअनुभूति को संवाद का महत्वपूर्ण औजार कहा| अल-जाहिज ने संवाद को अनमास्किंग की प्रक्रिया कहा| नकाब उतारकर एक-दूसरे के भीतरी सच से रूबरू होने की प्रक्रिया संवाद है| एक-दूसरे को एक-दूसरे की तह तक जानने की प्रक्रिया संवाद है| इब्न अल-मुकफ्फा ने संवाद में मौन के महत्व को रेखांकित किया| इसे संवाद का सर्वाधिक महत्वपूर्ण तत्व माना| बहुत बार मनुष्य का मौन ही बहुत कुछ कह जाता है| जिसे वाणी अभिव्यक्त नहीं कर सकती, उसे मौन विस्तार से बता जाता है| समअनुभूति, अनमास्किंग और मौन का महत्व सिनेमाई संवादों में बखूबी उभारा जाता है| इन्हें सिनेमा के संवाद की विशेषता के रूप में भी देखा जा सकता है| सिनेमा के संवाद का स्वरूप बहुत व्यापक है| इसमें संसार के हर चरित्र का चित्रण, हर भाव का चित्रण, हर परिवेश और परिस्थिति का चित्रण करने की चेष्टा देखी जा सकती है| यह चेष्टा मनुष्य तक सीमित नहीं है| सिनेमाकार अपनी कल्पना की उड़ान में विविध लोकों की यात्रा कर मनुष्येतर श्रेणियों तक का संवाद लिख डालते हैं, जैसे- ब्रह्मास्त्र, भेड़िया इत्यादि| ब्रह्मास्त्र सिनेमा में मिथक और कल्पना को सामयिक परिवेश के अनुरूप पेश किया गया है| यह ब्रह्मास्त्र के तीन टुकड़ों को जोड़ने की कहानी है| वायु, जल, अग्नि जैसे तत्व जो प्राचीन काल में अस्त्र-शस्त्र के रूप में प्रयोग किए जाते थे; उनका जन्म मानव रूप में हुआ है| इसमें खलनायक भी इसी तरह मनुष्यों के स्तर से परे शक्तियों वाले हैं| यहाँ संवाद और एक्शन बहुत बार आपको मनुष्य की दुनिया से अलग दीखते हैं| 'भेड़िया' सिनेमा में पर्यावरण रक्षण का उद्देश्य सामने आता है| एक मनुष्य दिन में लोगों के साथ रहता है| सबके व्यवहार को देखता है| उनमें से ही जो पर्यावरण को नुकसान

पहुँचाना चाहते हैं, उनको वह मनुष्य रात में भेड़िया बनकर खा लेता है| इस हकीकत का पता उस भेड़िया में बदल जाने वाले मनुष्य को भी नहीं रहता| सिनेमा में विषय की भिन्नता होती है| इसी के अनुरूप संवाद का स्वरूप वैविध्य भरा और व्यापक होता है| रोमांस, डर, घृणा, हत्या, सच, घर-परिवार और समाज में समय-समय पर होनेवाली हलचल और टकराहट की रोमांचक प्रस्तुति सिनेमा में की जाती है| दृश्य, बिंब और संवाद की त्रयी ही इनमें कौतूहल जगाने में सफल होते हैं| मूकपट का बोलपट में परिवर्तन से संवाद का महत्व साफ़ दिखाई दे रहा है| अलग-अलग समस्या के चित्रण में अपनी सिद्धहस्तता और समस्या की मौलिकता और खोजे गए समाधान से संवाद सफल होते हैं| फातिमा सना शेख की 'धक-धक' एक कॉमेडी सिनेमा है| यह हाइ प्रोफाइल दुनिया की कहानी नहीं है| साधारण लोगों की कहानी है| चार महिलाएँ अपने सपनों को पूरा करने के लिए एक साथ दुनिया की असाधारण यात्रा पर निकलती हैं| इसमें यह दिखाने की कोशिश की गई है कि अपने सपनों को पूरा करने के लिए एक कदम उठाने की जरूरत होती है| इसकी कहानी पारिजात जोशी ने लिखी है| सिनेमा को देखकर आप संवाद का विश्लेषण कर सकते हैं| विषय के अनुरूप संवाद का स्वरूप बदलता है| विषय का चयन दर्शक वर्ग की रूचि के अनुरूप किया जाता है| पात्र के अंतरंग-बहिरंग के साथ उसके परिवेश और संस्कृति का प्रभाव संवाद पर पड़ता है| इसलिए सिनेमा में हर वर्ग की बोलचाल की भाषा का प्रयोग देखने को मिलता है| यहाँ अपशब्द का प्रयोग भी दृश्य की जरूरत को बताकर किया जाता है| सिनेमा के संवाद का भाषिक प्रयोग शिष्ट-अशिष्ट के मापदंड के दायरे से बाहर है| पात्र, परिस्थिति और परिवेश के अनुरूप शब्दों का चयन किया जाता है| इनमें अभिव्यंजना की शक्ति प्रबल होती है| कुछ संवाद कालजयी हो जाते हैं| उनमें से ही कुछ बहुपरिचित संवाद यहाँ उदाहरण हेतु प्रस्तुत किए जा रहे हैं, देखें-

"फूल तो मुरझा जाते हैं लेकिन कांटे दामन थाम लेते हैं|"(मुग़ल-ए-आजम,(1960) वजाहत हुसैन, मिर्जा चंगेजी)

"प्रेम नाम है मेरा, प्रेम चोपड़ा|" (बॉबी (1973), जैनेंद्र जैन)

"टेंशन लेने का नहीं सिर्फ देने का|" (मुन्नाभाई एम बी बी एस (2003), अब्बास टायरवाला)

"उसका तो ना बैडलक ही ख़राब है|" (रंगीला (1995), नीरज वोरा, संजय छैल)

"आपके पाँव देखें, बहुत हसीन हैं, इन्हें जमीन पर मत उतारिएगा, मैले हो जाएँगे|" (पाकीजा (1972), कमाल अमरोही)

बोध प्रश्न

- अरब संस्कृति में 'बातचीत में संवाद' विषय का व्यापक अध्ययन किया गया है| स्पष्ट करें|
- संवाद शब्द की उत्पत्ति के बारे में बताएं|
- सिनेमा क्या है?
- सिनेमा और संवाद का पारस्परिक संबंध क्या है?
- समअनुभूति से आप क्या समझते हैं?
- सिनेमा में संवाद को प्रभावित करने वाले तत्व कौन से हैं?

16.3.2 सिनेमा संवाद लेखन के प्रकार

आप कह सकते हैं कि दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच का परस्पर वार्तालाप संवाद कहलाता है|बहुत बार यह संवाद सामान्य बातचीत से कहीं अधिक गंभीर चर्चा-परिचर्चा का रूप ले लेता है| इस संवाद के कई कारण हो सकते हैं| और यह भी आवश्यक नहीं कि जिनके मध्य संवाद हो रहा है; वे पहले से एक-दूसरे के परिचित हों| अपरिचित लोगों के मध्य परस्पर परिचय प्राप्त करने के लिए भी संवाद होता है| किसी अज्ञात परिस्थिति का जायजा लेने के लिए भी संवाद किया जा सकता है| कहीं भीड़ इकट्ठी देखकर आप भीड़ के किसी भी व्यक्ति से यह पूछ लेते हैं कि वहाँ क्या घटित हुआ है| संवाद का एक कारण है- सामान्य जानकारी प्राप्त करना| सिनेमा की दुनिया में भी सामान्य जानकारी की अहमियत है| बिना पात्र और परिस्थिति के बारे में बताए न तो कोई शॉट लिया जा सकता है ना ही कोई दृश्य लिखा जा सकता है| पात्र के अंतरंग और बहिरंग से जितना पटकथा लेखक परिचित होता है, उतने ही प्रभावी ढंग से वह अपने पात्रों को परदे पर उतारने के लिए संवाद लिखता है| सामान्य जानकारी लेने और देने वाले संवाद पटकथा की कथा के लिए ठोस भूमि के समान हैं| बहुत बार सिनेमा के शुरुआत में ही परिस्थिति और पात्रों का हल्का-फुल्का ब्यौरा दे दिया जाता है| यह ब्यौरा जो देता है उसकी केवल आवाज सुनाई देती है| इस आवाज को अपनी आवाज से जो वह कहता है वह दृश्य हमारे सामने उपस्थित होता है| दृश्य में इस वॉइस ओवर और इंगित पात्रों के हाव-भाव की साम्यता से रोचकता और सजीवता पैदा होती है|

उदाहरण : सर्कस (2022) - वॉयस ओवर-मुरली शर्मा
लगान (2001) -वॉयस ओवर-अमिताभ बच्चन
ब्रह्मास्त्र, राधेश्याम (2022)- वॉयस ओवर-अमिताभ बच्चन
थ्री इडियट (2009)- वॉयस ओवर-आर. माधवन
लूडो (2020)- वॉयस ओवर-अनुराग बासु और राहुल बग्गा

असगर वजाहत ने संवाद के चार प्रकार की चर्चा की है- 'सामान्य जानकारी लेने-देने वाले संवाद, औपचारिक कार्य व्यापार की सूचना देनेवाले संवाद, विचार व्यक्त करनेवाले एवं भावना व्यक्त करने वाले संवाद'| सामान्य संवाद के बारे में चर्चा की जा चुकी है| किसी काम या उद्योग-व्यवसाय के सिलसिले में भी संवाद होता है| इसे कार्य-व्यापार से संबंधित सूचना लेने या देनेवाले संवाद कहा जाता है| इनका संबंध किसी भी सरकारी-गैरसरकारी कार्यक्षेत्र से हो सकता है| इस संवाद को औपचारिक कार्य-व्यापार वाले संवाद कहा जाता है| 'जलसा' सिनेमा से कुछ संवाद यहाँ उद्धृत किए जा रहे हैं, देखें-

उदाहरण :

रोहिणी : प्लीज एक टिप, मैं आपका नाम नहीं लूँगी| मैं आपका नाम नहीं लूँगी| (थोड़ा रुककर) मेरा बॉस है ना माया मेनन, उनकी मेड की बेटी की एक्सीडेंट केस में, एक टिप सर प्लीज| (थोड़ा रुककर) गोल्डन चांस है सर, ये स्टोरी क्रैक कर लिया न तो अच्छा इम्प्रेशन हो जाएगा सर| ....मेरे मदर को भी इधर लेके आना है| मेरा मदर मेरी दीदी के साथ रहता है| मेरा जीजा पीता है| मारता-पीटता है|

पुलिस ऑफिसर : नो कमेंट्स

आपने देखा कि औपचारिक बातचीत में आप चाहे जितनी भी संवेदना घुसेड़ दीजिए, होगा वही जो होना होगा| सिनेमा में संवेदना का घुसेड़ना एक कला है, रोचकता पैदा करने की| इससे पात्र भी हाइलाइट होता है| व्यक्तिगत या कार्य संबंधी जानकारी लेने या देने संबंधी संवाद में में वर्णनात्मक एवं विवरणात्मक शैली का प्रयोग किया जाता है|

विचारात्मक संवाद: संवाद विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम हैं| संवाद की अगली श्रेणी है विचारों और भावनाओं की अभिव्यक्ति करने वाले संवाद| विचार और भाव का संबंध मनुष्य से है| ऐसे संवादों में मनुष्य का चरित्र उभरकर सामने आता है| उसकी सोच का पता चलता है| यानी जीवन के विविध आयामों के प्रति उसके दृष्टिकोण से परिचय होता है| नीचे दो उदाहरण दिए गए हैं| पहले में रुकसाना और उसकी सहेली की बातचीत है| बातचीत के लहजे से पता चल रहा है कि इनकी आर्थिक पृष्ठभूमि कमजोर है| इनका नजरिया प्रगतिशील जैसा है| यहाँ लड़की को पढ़ाए जाने के पक्ष में अपनी बात रखते हुए, रुकसाना की सहेली यह भी पूछ ही लेती है, "आलिया इतनी रात को बाहर क्या कर रही थी?" यहाँ समाज में लड़कियों के प्रति लोगों के विचार को दिखाया जा रहा है| रुकसाना ने उसे कुछ जवाब न देकर उसका प्रतिकार किया| दूसरे उदाहरण में रुकसाना और उसके पति की बातचीत दी गई है| आलिया के एक्सीडेंट के लिए दबे जुबान में उसका पति कहता है, "अपनी बच्ची भी तो रात को बाहर थी ना!" रुकसाना तीखे तेवर के साथ उसकी बात का विरोध करते हुए पूछती है,"तो! ठोक देंगे उसे?" रुकसाना मजबूत मन और स्वतंत्र विचारों वाली महिला है| स्त्री के मौलिक अधिकारों के पक्ष में खड़ी दिखाई देती है| घूमने-फिरने की स्वतंत्रता सबको है| संवाद में आँखों के सामने दृश्य उपस्थित कर देने की क्षमता होनी चाहिए|

उदाहरण 1:

रुकसाना की सहेली : अपन तो लड़कियों को पढ़ानेवाले में से हैं न, रुकसाना! आलिया का तो एक साल गया न कॉलेज का| रोजी-डॉली तुम बाहर जाओ, इमाद के साथ बैठो| मैं पूछ रही थी .....इनके अब्बू पूछ रहे थे कि आलिया इतनी रात को बाहर क्या कर रही थी?

रुकसाना : नर्स बुला रही है मुझे|

उदाहरण 2 : रुकसाना और उसके पति की बातचीत देखें:

सलीम: अपनी बच्ची भी तो रात को बाहर थी ना!

रुकसाना: तो! ठोक देंगे उसे?

इस श्रेणी में कुछ अन्य संवाद देखिए-

"मारी छोरियाँ छोरों से कम हैं क्या?" (दंगल सिनेमा, संवाद नितेश तिवारी)

"उठा ले रे बाबा"| (हेरा फेरी, नीरज वोरा)

"एक बार जो मैंने कमिटमेंट कर दी ...उसके बाद तो मैं खुद की भी नहीं सुनता|" (वांटेड, शिराज अहमद)

"जिनके घर शीशे के हो, वो दूसरों के घरों पे पत्थर नहीं फेंकते|" (वक्त, अख्तर उल इमान)

भावात्मक संवाद : सिनेमा में संवाद भावों की अभिव्यक्ति करते हैं| भाव मनुष्य की भावनाओं में अभिव्यक्त होता है| भावना का संबंध हृदय से है| सुख-दुख के क्षण में हृदय में उत्पन्न हुई प्रतिक्रिया ही भाव है| भाव हमेशा दृष्टिगोचर नहीं होते| स्थिति की नजाकत के अनुरूप इसे बहुत बार मन में ही रोक लिया जाता है| इसका असर मनुष्य के क्रियाकलापों पर पड़ता है| भावों की अभिव्यक्ति में काया भाषा का भी प्रयोग होता है| यानी बातचीत के साथ अन्य अंग भी भाव का प्रभाव उत्पन्न करने के लिए संचालित होते हैं, जैसे- किसी को चुप कराने के लिए हाथों से आँसू पोंछना, प्रेम जताने के लिए हल्के से मुस्कुराना, क्रोध जताने के लिए हाथों की मुट्ठी बांध लेना, दांत किटकिटाना, आलस्य दिखाने के लिए अंगराई लेना, किसी को अनदेखा-अनसुना करने के लिए उस ओर नहीं देखना इत्यादि|

उदाहरण:

"पुष्पा, आई हेट टीयर्स"| (अमर प्रेम सिनेमा, संवाद रमेश पंत)

"मोगैम्बो खुश हुआ|" (मिस्टर इंडिया, सलीम जावेद)

"बाबू मोशाय, जिंदगी बड़ी नहीं लंबी होनी चाहिए|" (आनंद, गुलजार)

"जा सिमरन जा जी ले अपनी जिंदगी|" (दिलवाले दुल्हनियाँ ले जाएँगे, जावेद सिद्दीकी)

उपर्युक्त संवादों में क्रमशः प्रेम, हर्ष, जीवन की गहरी समझ और रूढ़ सोच से मुक्ति का भाव नजर आ रहा है| इन संवादों के अनुरूप ही वक्ता की शारीरिक चेष्टा को आप सिनेमा में देख सकते हैं| कुछ और भावों को समझने के लिए जलसा सिनेमा से ही दो उदाहरण यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है|

पहला उदाहरण:

"माँ : दैट गर्ल रोहिणी, तुम्हारा ऑफिस से, वो हॉस्पिटल आई थी, शी गॉट सम सैंडविचेज|

माया : थ्रो इट माँ|

माँ : यू ओके?.....कोई इन्फेक्शन नहीं होगा, फौजी का ग्रैंडसन है वो.....एंड डोंट वरी मेरे पेरेंट्स पर नहीं गया है वो, ...ओवर-प्रोटेक्ट करके रखा है तुमने| कहाँ जा रही है? माया! ....अभी खाना है| चलो अभी खा लेते हैं| ...आयुष बाहर आओ| तुम्हारी मम्मा को अभी खाना है|

माया : थ्रो इट माँ

माँ : आई वुडनॉट

माया : माँ थ्रो इट

माँ : आई वुडनॉट थ्रो इट

माया : आई सेड थ्रो इट

माँ : पागल हो गई है .....माया डोंट यू डेयर वाक आउट ओं मी ..."

यहाँ पात्र माया मेनन के संवादों से चिंता, डर, गुस्सा, ओह अब क्या होगा जैसी भावना साफ़ दिखाई दे रही है| उसकी माँ उसके हिट एंड रन केस से वाकिफ नहीं है| वह नहीं जानती कि रोहिणी उस केस की स्टोरी कर रही है? इसलिए उसे माया का व्यवहार अटपटा लगता है| वह मजबूत है और जैसे बचपन में माया को डांटा होगा, एकदम वही तेवर आज भी प्रतिष्ठित और

सफल माया के सामने है| वृद्ध होने का अर्थ बेचारा बनना नहीं है| इन संवादों की स्वाभाविकता बरकरार रहने का कारण- पात्रों का अभिनय, उनके हाव-भाव और उनकी काया भाषा है| इसे भावों का सफल संघात कह सकते हैं|

दूसरा उदाहरण :

"पुलिस 1: क्या कह रहे हैं डॉक्टर? कैसी है अपनी बच्ची?
सलीम : टाइम लगेगा...लेकिन होश आ गया है|
पुलिस 2: होश आ गया है ....ठीक है.....अब सब अच्छा ही होगा
पुलिस 1: कितना मिलता है पर डे
सलीम: 1800 रूपये
पुलिस 1: मैं क्या बोलता है सलीम, केस छोड़ो न सेटलमेंट करते हैं? मान लिया अपुन ने वो ड्राइवर को पकड़ा, अपर लिमिट छह महीना है...क्या है बच्ची बच गई है ...किस्मत...लक.
पुलिस 2: एक्सपीरियंस से बोलता हूँ ऐसा ही होता है| बहुत ताकतवर लोग हैं ..देखो एकदम कड़क लॉयर खड़ा करेंगे सामने ...इसलिए मैं बोलता हूँ अपन भी अपना फायदा देखेंगे
पुलिस 1: पर जल्दी बताना क्या है ना ..ऐसा मैटर जितनी जल्दी सुलझ जाए ...अच्छा रहता"

यहाँ भी पुलिसवाले जो सलीम की मदद करते दिखाई दे रहे हैं| क्या यहाँ वास्तव में मदद का चक्कर है? पहले सामान्य जानकारी बच्ची की तबियत और सलीम की आय के बारे में, वे लेते हैं| इतने के बाद की बातचीत कार्यव्यापार संबंधी बातचीत कही जाएगी| लेकिन इस बातचीत के पीछे जो भाव है| वह क्या है? पुलिसवालों की अपनी 'असुरक्षा की भावना' उनसे यह सब करवा रही है| अपने भीतर के इस असुरक्षा के भाव को वे प्रकट होने से रोक रहे हैं| यदि एक्सीडेंट केस सॉल्व होगा तो सीसीटीवी फुटेज सामने आएगा| फिर एक्सीडेंट से कुछ समय पहले का उनका कारनामा भी सामने आएगा| यह उनकी छवि के लिए खतरा है| सलीम समझता है ये उसकी मदद कर रहे हैं| उसके मन में भी सेटलमेंट करें या न करें का उहापोह है| इस सिनेमा का अंत एक गंभीर विचार पर लाकर छोड़ता है- माया का डर, रुकसाना का दर्द, दोनों बच्चों की हँसी और समुद्र की लहरों का किनारा- सब एकसाथ मिलते हैं, रात के सन्नाटे में| उपर्युक्त उदाहरण में पात्रों का मानसिक अंतर्द्वंद्व उभरकर सामने आया है| जलसा सिनेमा के संवाद लेखक हैं- 'अब्बास दलाल और हुसैन दलाल'|

इसके अतिरिक्त लोकसंस्कृति, लोककथन, लोकभाषा और शैली का प्रयोग भी सिनेमा के संवादों में किया जाता है| एक मुहावरेदार भाषिक प्रयोग का उदाहरण 'टिकू वेड्स शेरू' सिनेमा में खलनायकों के संवाद में देखिए-

"पहला : आप तो ईद के चाँद हो गए|
दूसरा : क्या करें कोरोना काल था|"

आंतरिक संवाद: आरंभ में भी आंतरिक संवाद की चर्चा की गई है| सिनेमा में मनुष्य का खुद से ही बात करते हुए दिखाना आंतरिक संवाद है| ऐसा करनेवाला पात्र आवश्यक नहीं कि किसी गंभीर स्थिति का ही अभिनय कर रहा हो सकता है| किसी हास्य या व्यंग्य की स्थिति में, क्रोध

या प्रेम की स्थिति में, प्रफुल्लता या शोक की स्थिति में, संयोग या वियोग की स्थिति में –इस आंतरिक संवाद का प्रयोग सिनेमा में प्रदर्शित भाव के साथ आपको एकाकार कर देता है|

मौन संवाद : मौन संवाद में प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति लिखी जाती है| पहले बताया जा चुक है कि संवाद के एक महत्वपूर्ण औजार के रूप में इसका प्रयोग किया जाता है| यह संवाद दृश्य को अविस्मरणीय बना देता है| जैसे सिनेमा पाथेर पाचाली में दादी का मरना और उसके लोटे का लुढककर पानी में गिर जाना| दादी की मृत्यु के प्रतीक के रूप में लोटे का विसर्जन दिखाया गया है| "नायक अशोक कुमार, जिसे नायिका की ससुराल में चोर समझकर पकड़ लिया गया था और दाग दिया गया था, नायिका से अंतिम विदा ले रहा होता है| नायिका उससे कहती है एक अधूरा वाक्य, " अगर कोई अगला जन्म होता होगा तो ..." और बात अधूरी छोड़कर चली जाती है| नायक पूछता ही रह जाता है|-"तो तरु? तो तरु?"" (मनोहरश्याम जोशी, मशाल सिनेमा का अंतिम दृश्य)|

संकेतात्मक संवाद: इस संवाद में बिना कुछ बोले संकेतों से बात की जाती है| किसी दृश्य में किसी ने किसी पात्र को छिपा रखा है| कोई और तीसरा पात्र वहाँ आ जाता है तब पहला पात्र उस छिपे हुए पात्र को संकेत से चुप रहने, दूसरी तरफ से निकलने या और भी कोई संकेत दे सकता है| इस तरह के संवाद का प्रयोग हर प्रकार के सिनेमा में किया जाता है| गंभीर से गंभीर और हँसते-हँसते लोट-पोट होनेवाले दृश्यों में ये संकेतात्मक संवाद बहुत प्रभावी होते हैं| इन संवादों के पीछे की ध्वनि से इनमें सौंदर्य उत्पन्न होता है जो प्राकृतिक भी हो सकती है या कृत्रिम भी हो सकती है|

बोध प्रश्न

- संवाद से आप क्या समझते हैं?
- सिनेमा में संवाद के क्या कार्य हैं?
- सामान्य संवाद से आप क्या समझते हैं?
- कार्यव्यापार वाले संवाद का उदाहरण दीजिए|
- विचारात्मक एवं भावनात्मक संवाद से आप क्या समझते हैं?

16.3.3 सिनेमा संवाद लेखन की विशेषताएँ

सिनेमा संवाद लेखन में भी वही विशिष्टताएँ समाविष्ट होती हैं जो सामान्य संवाद लेखन की विशिष्टताएँ हैं| संवाद लेखन की इन विशेषताओं को आपने हिंदी व्याकरण की किताब में बहुत बार पढ़ा है| साहित्य अध्ययन के समय इसके व्यावहारिक स्वरूप से भी आप परिचित हुए हैं| वासुदेवनंदन प्रसाद ने अच्छे संवाद लेखन की कुछ विशेषताओं का उल्लेख किया है| उनके शब्दों को यहाँ बिंदुवार यथावत प्रस्तुत किया जा रहा है| इनका प्रयोग आप सिनेमा के संवाद लेखन की विशेषताओं के रूप में भी कर सकते हैं|

- संवाद में प्रवाह, क्रम और तर्कसम्मत विचार होना चाहिए|
- संवाद देश, काल, व्यक्ति और विषय के अनुसार लिखा होना चाहिए|
- संवाद सरल भाषा में लिखा होना चाहिए|

- संवाद में जीवन की जितनी अधिक स्वाभाविकता होगी, वह उतना ही अधिक सजीव, रोचक और मनोरंजक होगा|
- संवाद छोटे और स्पष्ट होने चाहिए| तभी उसके प्रति पाठकों का आकर्षण बढ़ेगा|
- संवाद का आरंभ और अंत रोचक हो|

दर्शकों का आकर्षण भी सिनेमा के प्रति तभी बढ़ता है जब संवाद छोटे और स्पष्ट हों| बड़े और लंबे संवाद उबाऊ लगते हैं| इस तरह से मौलिक संवाद लेखन करने के लिए आपको परिवेश और पात्र के साथ उनसे जुड़े व्यवहार तथा उनके बोलचाल की भाषा का ज्ञान अवश्य होना चाहिए| इसके लिए स्वयं संवाद लेखक का जुड़ाव समाज से होना एक अपरिहार्य शर्त है| साथ उसका अनुभव संसार भी व्यापक होना चाहिए| लेखनी जब अनुभव को व्यक्त करती है तो हर एक शब्द भीतर तक छू जाने की ताकत लिए खड़ा होता है| यही आपकी सिनेमा का दर्शक जुटाता है| सच को जन तक संप्रेषित करने का माध्यम है सिनेमा संवाद लेखन| हर शख्स का अपना सच होता है आप उसके भीतर पैठ कर जमा कीजिए कच्ची सामग्री फिर अपनी परिपक्वता से उसे पर्दे पर उतारे जाने वाले संवादों की शक्ल में ढालिए| ध्यान रहे कि आपकी परिपक्वता और आपके अनुभव संसार से संवादों की संप्रेषणीयता बाधित न हो| सिनेमा में संवाद स्वाभाविक हो| आवश्यक नहीं कि हिंदी की सिनेमा में केवल हिंदी ही हो| पात्र जिस पृष्ठभूमि से होगा उसकी भाषा वैसी ही होगी| संवाद लिखने से पहले पात्र के चरित्र पर शोध करके उसके अनुकूल संवादों का प्रयोग करना उचित होता है| एक टपोरी-सा लगनेवाले व्यक्ति के लिए टपोरी वाली भाषा का व्यवहार ही उचित है| युग में घट रहे और भविष्य में संभावित तथा बीते अतीत की कहानियाँ सिनेमा का कथानक बनती हैं| सिनेमा का संवाद लेखन युगांकन है, चरित्रांकन है| इससे समस्यायों का शब्दचित्र निर्मित होता है और विभिन्न घटनाओं से होते हुए कई छुए-अनछुए पहलुओं तक आम जन की पहुँच बनाता है| इसलिए सिनेमा संवाद लेखन में दृश्य, घटना, पात्र की मनःस्थिति और बाह्यस्थिति तथा समय के साथ पूरा तालमेल बिठाया जाता है| सिनेमा के संवाद से पात्र की भाषा, वेशभूषा, बोलने-उठने-बैठने-चलने का तरीका, खान-पान, रहन-सहन, जीवन दर्शन, दूसरों के प्रति व्यवहार, दृष्टिकोण और प्राकृतिक स्वभाव का पता चलता है|

बोध प्रश्न

- सिनेमा संवाद लेखन एवं सामान्य संवाद लेखन की समानता और असमानता का वर्णन करें|

16.4 पाठ सार

अरब के विद्वानों ने बातचीत में संवाद विषय पर काम किया है| इसलिए माना जाता है कि संवाद की जड़ें अरब संस्कृति में गहरी जुड़ी हुई हैं| सभ्यता जब विकसित होती है तब शोध होता है| संवाद जीवन का अनन्य अंग है| इसका महत्व सभ्यता के आरंभ के साथ ही पहचाना गया| सिनेमा के कई प्रकार होते हैं| उसके विषय के अनुरूप संवादों को भी अलग-अलग शैलियों में लिखा जाता है| आत्मकथात्मक, चित्रात्मक, पूर्व दीप्ति, संवादात्मक, वर्णनात्मक, नाटकीय, पत्रात्मक, डायरी इत्यादि साहित्यिक शैलियों का प्रयोग संवाद लेखन में किया जा सकता है|

विषय चयन के बाद कथानक को गतिशील बनाए रखने के लिए उनमें घटनाओं का समावेश किया जाता है| इन घटनाओं को आगे संवाद से बढ़ाया जाता है| कथानक के अनुरूप घटनाओं के संयोजन एवं उसकी गतिशीलता में जब जो शैली उपयोगी हो उसका प्रयोग किया जा सकता है| यहाँ शैली प्रधान नहीं है| सिनेमा के संवाद लेखन में कथानक का क्रम, संप्रेषणीयता और उसका प्रवाह प्रधान है| संक्षिप्तता, सरलता तथा व्यावहारिकता संवाद के गुण हैं|

सिनेमा में संवाद का प्रयोग कई प्रकार से किया जाता है| सिनेमा में संवाद के कार्य के आधार पर उसे मुख्यतः चार कोटियों में वर्गीकृत किया गया है- सामान्य संवाद, कार्यव्यापार संबंधी संवाद, विचारात्मक संवाद, भावात्मक संवाद| इसके अतिरिक्त भी संवाद होते हैं, वे हैं- संकेतात्मक संवाद, मौन संवाद, आंतरिक संवाद| इन्हें मुख्य संवादों के प्रभाव को बढ़ानेवाले संवाद के रूप में देखा जा सकता है| ध्वनि, बिंब, संगीत और अभिनय से संवाद का प्रभाव बढ़ता है| चरित्र या व्यवस्था की बखिया उधेड़ने के लिए व्यंग्यात्मक संवादों का प्रयोग किया जाता है| सिनेमा के संवाद में भाषा पात्र, परिवेश और समय के अनुकूल रखी जाती है|

16.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से आप निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त कर सकते हैं-

1. संवाद न सिर्फ मानसिक अवस्था को परिवर्तित करता है वरन बड़े-बड़े सामाजिक परिवर्तनों की जड़ में संवाद छिपा है|
2. अरब सभ्यता की पहली शताब्दी से ही बातचीत में संवाद (Dialogue in Communication) विषय पर अबु हिलाल अल-अस्करी, अल-जाहिज, इब्न अल-मुकफ्फा सहित कई विद्वानों ने इसका अध्ययन किया है|
3. शब्दों के अतिरिक्त संवाद में संकेतों और प्रतीकों का भी व्यवहार किया जाता है|
4. संवाद सिनेमा के कथानक को गतिशील करता है|
5. सिनेमा में संवाद का प्रयोग पात्र, वातावरण और स्थान के अनुरूप किया जाता है|
6. सिनेमा में संवाद का प्रयोग कई प्रकार से होता है, जैसे - सामान्य संवाद, कार्यव्यापार संबंधी संवाद, विचारात्मक संवाद, भावात्मक संवाद, मौन संवाद, संकेतात्मक संवाद और आंतरिक संवाद इत्यादि|
7. सिनेमा में संवाद के प्रभाव को बढ़ाने के लिए अन्य ध्वनि, बिंब, संगीत और काया भाषा का प्रयोग किया जाता है|
8. सिनेमा के संवाद सरल, संक्षिप्त, रोचक, संप्रेषणीयता के गुणों से पूर्ण तथा दृश्य को जीवंत कराने में सक्षम होते हैं|

16.6 शब्द संपदा

1. दिग्दर्शक- निर्देशक
2. संघात- मिला हुआ रूप
3. काया भाषा- आंगिक भाषा, शारीरिक अंगों की चेष्टाएँ एवं हाव-भाव
4. आंतरिक संवाद- स्वयं से बात करना
5. मौन- बिना आवाज के, शब्दहीन

6. अविस्मरणीय – जिसे भुलाया न जा सके, जो हमेशा याद रहे

7. पूर्व दीप्ति- किसी घटना से प्रभावित होकर अतीत को याद करना

16.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए|

1. सिनेमा में संवाद का स्वरूप कैसा होता है?
2. सिनेमा में संवाद के महत्व को बढ़ाने वाले कौन से तत्व हैं?
3. सिनेमा में संवाद के प्रयोग के आधार उसके वर्गीकरण पर प्रकाश डालिए|
4. सिनेमा में संवाद की विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए|
5. आंतरिक संवाद और मौन संवाद से आप क्या समझते हैं?
6. काया भाषा का सिनेमा के संवाद में क्या महत्व है?

खंड (ब)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए|

1. संवाद से आप क्या समझते हैं?
2. काया भाषा से आप क्या समझते हैं?
3. वायस ओवर से आप क्या समझते हैं? उदाहरण सहित लिखें|
4. संकेतात्मक संवाद से आप क्या समझते हैं?
5. सिनेमा के संवाद से पात्र का चरित्र किस प्रकार उजागर होता है? स्पष्ट करें|

खंड (स)

I. सही विकल्प चुनिए-

1. सिनेमा के संवाद में साहित्यिकता की प्रधानता होती है| ( )
   (अ) हाँ (आ) नहीं (इ) पता नहीं (ई) केवल अ
2. सिनेमा में संवाद कथानक को गतिशील करता है| ( )
   (अ) हाँ (आ) नहीं (इ) केवल अ (ई) कोई नहीं
3. मिस्टर इंडिया का संवाद किसने लिखा है? ( )
   (अ) सलीम जावेद (आ) गुलजार (इ) रमेश पंत (ई) सभी
4. 'जलसा' सिनेमा का संवाद लेखक कौन है? ( )
   (अ) अब्बास दलाल (आ) सलीम जावेद (इ) अ और ई (ई) हुसैन दलाल

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

1. सिनेमा में संवाद से पात्र का ..... और .....उजागर होता है|

2. ध्वनि और .....संवाद के प्रभाव को बढ़ाते हैं|
3. सिनेमा के संवाद की भाषा .....,.....,..... के अनुकूल होती है|
4. मूकपट ने .....का रूप ले लिया|
5. लगान सिनेमा में .....अमिताभ बच्चन ने दिया|
6. सरलता और .....सिनेमा के संवाद का गुण है|
7. शब्दों के अतिरिक्त संवाद में ..... और ..... का भी व्यवहार किया जाता है|
8. पाकीजा के संवाद लेखक ..... हैं|
9. थ्री इडियट में .....आर. माधवन ने दिया|

III. सुमेल कीजिए-

1. अबु हिलाल अल-अस्करी	(अ) मौन
2. अल-जाहिज	(आ) पटकथा लेखन व्यावहारिक निर्देशिका
3. इब्न अल-मुकफ्फा	(इ) आनंद
4. मनोहरश्याम जोशी	(ई) समअनुभूति
5. असगर वजाहत	(उ) अनमास्किंग की प्रक्रिया
6. गुलजार	(ऊ) पटकथा लेखन एक परिचय

16.8 पठनीय पुस्तकें

1. पटकथा लेखन एक परिचय- मनोहरश्याम जोशी
2. The Dialogue Handbook – Mette Lindgren Helde
3. पटकथा तथा संवाद लेखन – कुमार विपुल
4. कथा-पटकथा – मन्नू भंडारी
5. पटकथा लेखन व्यावहारिक निर्देशिका - असगर वजाहत